ख़ुत्बाते हिंद

(जिल्द दोम)

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़्क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी दामत बरकातुहुम

के दौरा-ए-हिंद अप्रैल 2011 ई० के बयानात का मजमूआ

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ.

ख़ुत्बाते हिंद

(जिल्द दोम)

हज़रत मौलाना हाफ़िज़ ज़ुलफ़िक़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी दामत बरकातुहुमुल आलिया के दौरए हिंद अप्रैल 2011 ई० के बयानात का मजमूआ

मुरत्तिब

बिलाल सज्जाद नोमानी

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

NEW DELHI-110002

फ़ेहरिस्ते ख़ुत्बात

दिल सियाह होने की तीन अलामतें हैं

दिल मुनव्वर होने की तीन अलामतें हैं

रहमतुल लिल आलमीन सल्ल०

मुस्बत और मन्फ़ी तर्ज़े फ़िक्र के नताइज

दुआ की अहमियत

ख़ालिक़ से मांगने और मख़्लूक़ से मांगने में फ़र्क़

दिल पर मेहनत करना ज़रूरी है

मुहब्बत भरी ज़िंदगी के लिये छः बातों से बचें

अच्छा इंसान बनने के लिये छः चीज़ों से बचना ज़रूरी है

तक़्वा इख़्तियार कीजिये

दीन ख़ैरख़्वाही का नाम है

मग़फ़िरत के दस अस्बाब

इत्तिबाए सुन्नत में ही कामियाबी है

तेरे हाथों में हो क़ुर्आन और तू दुनिया में रहे परेशान?

अर्ज़े नाशिर

अह्क़र के लिये यह अम्र बाइसे सआदत व इफ़्तिख़ार है कि दुनियाए इस्लाम की बरगुज़ीदा इल्मी व रूहानी शख़्सियत हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद फ़क़ीर नक़्शबंदी मद्दज़िल्लुहुल आली से अप्रेल 2011 ई0 में बिलमुशाफ़ा ज़ियारत और बैअ़त का शर्फ़ हासिल हुआ। अल्हम्दु लिल्लाह! तक़रीबन एक घंटा तक क़िब्ला मुहतरम ने गिरांक़द्र नसाइह और अपनी दुआओं से नवाज़ा जिसके लिये तहे दिल से हज़रत का मम्नून व मशकूर हूं।

अह्क़र की यह ख़ुशक़िस्मती है कि हिंद व पाक के जलीलुलक़द्र उलमा व दीनी शख़्सियात से बराहे रास्त सरपरस्ती व रहनुमाई हासिल रही है। मुहतरम पीर साहब के शाहकार ख़ुत्बात के मुतालए के बाद उनसे मुलाक़ात की शदीद ख़्वाहिश दिल में पैदा हुई, इस इरादे से पाकिस्तान के सफ़र का भी इरादा किया लेकिन बमिस्दाक़-

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है

मेरी पाकिस्तान रवानगी से पहले ही हज़रत हिंदुस्तान तशरीफ़ ले आए। और न सिर्फ़ मुझे उनसे मुलाक़ात का मौक़ा और उनके दस्ते हक़ परस्त पर बैअ़त की सआदत नसीब हुई। बल्कि इदारा फ़रीद बुक डिपो की क़ुर्आनी व दीनी इशाअ़ती ख़िदमात की पसंदीदगी के तौर पर अपनी तमाम मत्बूआत को हिंदुस्तान में शाए करने के हुक़ूक़ व इख़्तियारात अता फ़रमा दिये। यह मेरे और इदारा फ़रीद बुक डिपो के लिये बहुत बड़ा एज़ाज़ है।

इरादतमंद

(अलहाज) नासिर ख़ान

(मैनेजिंग डाइरेक्टर)

अगले सफ्हा पर आप जो ख़िताब मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, वह नई देहली के "मस्जिद अब्दुल नबी" में, 15 अप्रेल 2011 ई0 बरोज़ जुम्आ नमाज़े जुम्आ से पहले हुआ था, मजलिस में उलमा, ख़्वास व अवाम की कसीर तादाद मौजूद थी।

कुर्आन को समझने की भी कोशिश कीजिये

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

اعوذ بالله من الشيطان الرجيم، بسم الله الرحمٰن الرحيم

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِر

سبحان ربك رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العلمين

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارك وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارك وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارك وسلم

कुर्आन क्या है?

कुर्आन अज़ीमुश्शान किताबे हिदायत है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इसे भेजा "لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْر" ऐ मेरे हबीब! ताकि आप इंसानों को अंधेरों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ ले जाएं, तो कुर्आने मजीद फ़ुर्क़ाने हमीद इंसानों को अंधेरों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ ले जाने वाली किताब है, गुमराही में पड़े हुओं को सीधा रास्ता दिखाने वाली किताब है, क़अ़रे मज़ल्लत में पड़े हुओं को औजे सुरय्या पे पहुंचाने वाली किताब है, अल्लाह से बिछड़े हुओं को अपने अल्लाह से मिलाने वाली किताब है, यह किताबे हिदायत है।

इसकी एक खूबसूरत बात यह है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इसका समझना आसान बना दिया है, कुछ किताबें समझने में मुश्किल होती हैं, मगर अल्लाह तआला का फ़रमान "وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرْ" और तहक़ीक़ हमने कुर्आन को समझने के लिये आसान कर दिया, है कोई तुम में से समझने वाला?

जो बंदा भी कुर्आन पाक पढ़ेगा जैसा उसका Background (मैदाने कार) होगा उसको कई मिसालें नज़र आएंगी, अगर कोई डाक्टर गुफ़्तगू करे तो उसकी गुफ़्तगू से अंदाज़ा होता है कि यह मैडिकल से तअल्लुक़ रखने वाला बंदा है, इंजीनियर गुफ़्तगू करते तो उसकी बातों से अंदाज़ा होता है कि इंजीनियरिंग बैकग्राउंड है, तो कुर्आन मजीद किताबे हिदायत है, यह साइंस की किताब नहीं है, लेकिन कहीं कहीं साइंसी इशारे ज़रूर मिलते हैं।

कुर्आने करीम में साइंसी इशारत

बअ़ज़ लोगों को यह ग़ल्ती हुई कि वह कुर्आन मजीद की हर आयत से साइंस साबित करते फिरते हैं, यह ग़लत है, ऐसा नहीं होना चाहिये, हां साइंसी इशारात कहीं कहीं मिलते हैं जो कुर्आन मजीद की सदाक़त की दलील है।

कुर्आन में पहला साइंसी इशारा

दो तीन छोटी छोटी मिसालें जिनको एक बच्चा भी समझ सकता है, अल्लाह तआला कुर्आन मजीद में इर्शाद फ़रमाते हैं: "وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ" हमने पानी से हर चीज़ को ज़िंदगी बख़्शी, तो जहां भी Life (ज़िंदगी) होगी, वह पानी की वजह से होगी, इसलिये इंसान को Dehydration (नमी का फ़ुक़दान) हो जाए तो वह भी मर जाता है, Plant (पौदे) और दरख़्त को Dehydration हो जाए तो वह भी ख़ुश्क हो जाता है, तो पानी ज़िंदगी का जुज़्वे लाज़िम है, इसके बग़ैर ज़िंदगी का तसव्वुर नहीं होता, यह अजीब बात है कि हवा ज़िंदगी के लिये इतनी लाज़मी नहीं है, कुछ Bacteria (जरासीम) ऐसे हैं कि उसको हवा की ज़रूरत ही नहीं, उसके बग़ैर भी वह ज़िंदा रहता है Multiply (नस्ल में इज़ाफ़ा) होता है, मगर पानी के बग़ैर कोई चीज़ ज़िंदा नहीं रह सकती, अब

यह चौदह सौ साल पहले फ़रमाया गया, जब साइंस की बुन्याद ही नहीं थी और उस हस्ती ने कहा जो ज़िंदगी भर किसी के सामने शागिर्द बन कर नहीं बैठे दुनिया के किसी इदारे में नहीं पढ़ा, आसान नहीं है यह कह देना कि हर चीज़ को पानी से ज़िंदगी दी गई, और साइंसदान इसकी तसदीक़ करते हैं, आज Most modern scientific world है, (साइंसी तरक़्क़ी के उरूज का दौर) चुनांचे पिछले दिनों मरीख़ पर मिशन भेजने की बातें हुईं कि वहां पर लाइफ़ है या नहीं, तो पूरी दुनिया के साइंसदान आपस में मिल बैठे Criteria (ज़ाबता) किया है Litmus test (मीज़ान) क्या है कि पता चले कि वहां ज़िंदगी है या नहीं, तो सब ने मुत्तफ़िक़ा फ़ैसला किया कि पानी को ढूंढो अगर वहां पानी Molecule (कुछ हिस्सा) मिल गया तो Life (ज़िंदगी) होगी और अगर पानी Molecules न मिला तो Life (ज़िंदगी) नहीं होगी, इतनी साइंसी रीसर्च के बाद इस नतीजे पर पहुंचे जो क़ुर्आन ने चौदह सौ साल पहले बता दी थी।

दूसरा इशारा

एक फ़्रांसीसी Sailor (समुंद्री माहिर) था, उसने ज़िंदगी के 45 साल समुंदर के अंदर सफ़र करने में गुज़ार दिये Navy (बहरिया) में काम करता था, रिटायर्ड हो गया, उसने कलिमा पढ़ा तो किसी ने उससे पूछा कि आपने कलिमा कैसे पढ़ लिया? कहने लगे कि मैं रिटायर्ड आदमी था, वक़्त गुज़ारना मुश्किल था, मेरा एक दोस्त था जो अरबी था और कभी कभी मेरी उससे Chating (बातचीत) होती रहती थी, मैंने उसे बताया कि मैं Retirement की Life (ज़िंदगी) गुज़ार रहा हूं, बड़ा बोर होता हूं, वक़्त काटना मुश्किल होता है, उसने मुझे क़ुर्आन पाक की अंग्रेज़ी Translation (तर्जुमा)

कापी भेजी, मैंने पढ़नी शुरू कर दी, एक जगह पहुंच कर उसमें समुंदर का तज़किरा था, अब समुंदर का तज़किरा चूंकि मेरी ज़िंदगी का Experience (तजुर्बा) है, मैंने ज़िंदगी के 45 साल उन जगहों को और उन कैफ़ियात को देखा है, मैंने जब ग़ौर किया तो एक ऐसी बात की गई थी कि समुंदर में जिसने सफ़र कभी न किया हो, वह यह बात कर ही नहीं सकता, बात यह थी कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त एक जगह कुफ़्फ़ार के दिल के अंदर जो जुल्मत है, अंधेरा है, उसके बारे में फ़रमाते हैं: "فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّن فَوْقِهِ سَحَابٌ" समुंदर में एक वक़्त होता है जब समुंदर बिल्कुल ख़ामोश होता है, Silent होता है और एक वक़्त होता है कि लहरों पे लहरें होती हैं, तूफ़ान होता है, इसे High tide (हाई टाईड) का टाइम कहते हैं, तो उसने कहा कि मैंने तजुर्बा किया कि जब High tide का वक़्त होता है लहरों पे लहरें, उस वक़्त अगर आसमान पे बादल आ जाएं तो समुंदर के अंदर Visibility (कुछ दिखाई देने की सलाहियत) Zero (सिफ़र) हो जाती है, दो मीटर समुंदर की सतह से नीचे जाएं तो अपना हाथ भी नज़र नहीं आता, इतना कामिल अंधेरा होता है, मगर मैंने तो 45 साल समुंदर में गुज़ारे, तब मुझे तजुर्बा हुआ, जब मैंने कुर्आन पाक के अंदर Exact (हूबहू) इसको Mention (तज़किरा) किया हुआ पढ़ा तो मैंने सोचा कि मुसलमानों के पैग़म्बर ने सफ़र किया होगा और उनको तजुर्बा हुआ होगा, लेकिन जब मैंने तहक़ीक़ की तो पता चला कि मुसलमानों के पैग़म्बर ने पूरी ज़िंदगी समुंदर का सफ़र नहीं किया, तो मेरी अक़्ल ने कहा कि जिस बंदे ने ज़िंदगी में समुंदर का सफ़र ही नहीं किया वह समुंदर के बारे में ऐसी बात बताए जो Exact (बिल्कुल सही) हो, यह कैसे मुम्किन है? तो मालूम हुआ कि यह उनका कलाम नहीं,

जिस परवरदिगार ने इस काइनात को बनाया यह उस परवरदिगार का कलाम है।

तीसरा इशारा

हम तालिबे इल्म थे कुर्आन पाक में पढ़ा कि "فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ" अल्लाह ने क़ारून को और उसके घर को ज़मीन में धंसा दिया और किताबों में लिखा है कि वह क़्यामत तक धंसता जाएगा, अब एक तालिबे इल्म होने के नाते ज़ह्न में ख़्याल आया कि अगर वह धंसता ही रहे तो Speed (रफ़्तार) कितनी ही थोड़ी हो तो ज़मीन का Diameter (क़तर) तो महदूद है, तो कभी न कभी दूसरी तरफ़ से निकल आएगा, अब चूंकि अक़्ल छोटी थी, इतनी तालीम भी नहीं थी, स्कूल की इब्तिदा थी, मगर ख़्याल आता था कि कभी तो दूसरी तरफ़ से बाहर निकलेगा, मगर किताबों में लिखा था कि निकल नहीं सकता, फिर हम छटी या सातवीं जमाअत में पहुंचे तो हमारे उस्ताज़ ने हमें Law of Newton motion (हरकत के क़ानून न्यूटन) पढ़ाए तो हम बैठ के हिसाब करने लगे Calculation लगाई कि इतनी थोड़ी रफ़्तार से अगर वह जा रहा हो Law of motion यह है और ज़मीन का Diameter (क़तर, नीचे सतह की गहराई) इतना है तो इतने साल बाद तो दूसरी तरफ़ से निकल आना चाहिये, समझ में नहीं आती थी, मगर अपने आप को हम तसल्ली दे देते थे कि मैं नासमझ हूं, छोटा हूं, मुझे क्या पता, लेकिन जब अगली क्लास बढ़ी तो एक दिन हमें हमारे टीचर ने Pendulum (पैन्डूलम) के बारे में पढ़ाया, फिर एक दिन उन्होंने (ज़ोर) Momentum के बारे में हम को पढ़ाया तो उस दिन उन्होंने हमारी क्लास को एक Question (सवाल) दिया जिसने हमें हैरान करके रख दिया टीचर ने Question (सवाल) यह दिया

कि फ़र्ज़ करो तुम्हारे पास एक मशीन है जो ज़मीन के सेन्टर में ऊपर से नीचे तक पूरा सूराख़ कर देती है, उसके अंदर तुम एक सिक्का डालते हो तो बताओ कि वह सिक्का दूसरी तरफ़ से नीचे कब निकलेगा? हमारे ज़ह्न में तो पहले से यह बात गर्दिश कर रही थी, फिर हिसाब शुरू कर दिया कि वह सिक्का इतनी तेज़ी से जाएगा इतना उसका Acceleration (रफ़्तार) है, और टाइम निकालना था कि इतना सफ़र वह कितने वक़्त में करेगा? तो हमने कहा कि इतने अर्से के बाद निकल आएगा, टीचर ने सारी क्लास के लड़कों के जवाब पर निशान लगा दिया कि सब ग़लत है, हम हैरान हुए कि यह तो Law of motion Newton से हमने Calculate हिसाब किया है, तो टीचर ने समझाया कि देखो ज़मीन के अंदर बीच में Center of gravity है, कशिश का मर्कज़ है, जब सिक्का डालेंगे तो वह Coin (सिक्का) नीचे की तरफ़ खींचेगा, रफ़्तार बढ़ती जाएगी, जब वह Center (वुसत) में पहुंचेगा तो वह वहां रुकेगा नहीं, क्योंकि उसका एक Momentum (ज़ोर) बन चुका होगा, इस Momentum (ज़ोर) की वजह से वह नीचे की तरफ़ बढ़ता चला जाएगा, मगर कुछ दूर जाने के बाद अब उसकी रफ़्तार घटनी शुरू हो जाएगी क्योंकि Force (दबाव) उल्टी हो जाएगी, अब उसका ऊपर खींचेगी और ज़मीन से निकलने से पहले पहले वह फिर वापस ऊपर खेंचेगा, मगर वुसत में रुकेगा नहीं, ऊपर की तरफ़ चढ़ेगा, रफ़्तार कम होती जाएगी, फिर कशिश का मर्कज़ उसको अपनी तरफ़ खींचेगा तो फिर से वह नीचे की तरफ़ रवाना हो जाएगा तो उन्होंने कहा कि Pendulum की तरह वह सिक्का पूरी ज़िंदगी ज़मीन के अंदर घूमता रहेगा, कभी ज़मीन से बाहर नहीं निकल सकता, क़ुर्आन मजीद

ने चौदह सौ साल पहले कह दियाः "فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ"।

चौथा इशारा

नबी सल्ल0 के ज़माने में लोहे का इस्तेमाल बहुत कम था, उस वक़्त अभी साइंस की बुन्याद नहीं पड़ी थी, लोग मैकेनिकल इंजीनियरिंग नहीं जानते थे, इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग नहीं जानते थे, पहिया दरयाफ़्त नहीं हुआ था, टायर नहीं बना था, उस वक़्त जब कि लोहे का इस्तेमाल ज़िंदगी में इतना थोड़ा है, क़ुर्आन मजीद ने एक बात कही कि "وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ" हमने दाऊद अलै0 के लिये लोहे को नर्म कर दिया था "فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ" लोहे में बड़ी ताक़त होती है "وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ" और इंसानों के लिये बड़े फ़ाइदे हैं। अब यह बात चौदह सौ साल पहले कही गई जब लोहे का ज़िंदगी में इस्तेमाल बहुत कम था, आज इस वक़्त साइंसी तरक़्क़ी याफ़्ता दौर में आप आंखों से देख सकते हैं कि जो मुल्क स्टील टैक्नोलोजी में सबसे आगे है वह पूरी दुनिया के अंदर Dominate (ग़ल्बा हासिल करना) कर रहा है, अल्लाह ने चौदह सौ साल पहले बता दियाः "مَنَافِعُ لِلنَّاسِ" अब यह तो हमें समझना है, अल्लाह तआला ने तो इशारे दे दिये कि तुम मुनाफ़ा उठाना चाहते हो तो क्यों भीक मांगते हो, क्यों लोगों की तरफ़ देखते हो, तुम मेहनत करो, तुम्हें इसमें मुनाफ़े मिल जाएंगे। तो इस क़िस्म के साइंसी इशारात बहुत आम हैं।

पांचवा इशारा

साइंस की दुनिया में पिछले तीन सौ साल एक Theory (उसूल) का ग़ल्बा रहा, इसको कहते हैं: ''डार्विन थियोरी'' Theory of Evolution, इसने यह कहा कि इंसान बंदर से बना है, लुब्बे लुबाब Chimpanzee से इंसान बना है, चूंकि

Chimpanzee और इंसान के दर्मियान बहुत थोड़े Protein का फ़र्क़ है, तक़रीबन एक जैसे हैं तो उसने कहा कि इंसान पहले पानी था, फिर उससे मछली बनी, फिर उससे परिंदे बने फिर फ़लां बना फिर बनते बनते Chimppanzee से बनमानस बना, फिर बनमानस से इंसान बना पूछा गया कि बनमानस की दुम क्या हुई? तो उसने कहा कि हज़ारों साल के मौसमी असर के बाद दुम ख़त्म हो गई, पूछा गया कि जिस्म के बाल कहां गए? जवाब मिला कि हज़ारों साल में ख़त्म हो गए, पूछा गया कि भाई Chimpanzee में तो अक़्ल नहीं होती और इंसान के अंदर तो अक़्ल है और जब उसका Time test लिया गया, तो इंसान के ज़ह्न में Brain (दिमाग़) के Evolve (नशो नुमा) होने का टाइम सबसे थोड़ा है, तो Question (सवाल) यह है कि दुम ख़त्म होने में हज़ारों साल लगे, बाल ख़त्म होते होते हज़ारों साल लग गए, और Brain (दिमाग़) के बनने में बहुत थोड़ा सा टाइम? वह जिस्म का अज़्व जो सबसे ज़्यादा Complicated (पेचीदा), वह जिस्म का अज़्व जो अपनी तख़्लीक़ में शाहकार है वह थोड़े से टाइम में कैसे बन गया? जब यह Question (सवाल) किया गया तो साइंसदानों ने जवाब दिया कि यहां पर कोई Missing link (किसी बात का पता नहीं लग सका) है, हमने कहा हां तुम्हारा link तो पहले ही Missing है, तो तुम्हें क्या पता चलेगा, मगर इसको आज तक दुनिया इसी तरह मानती रही कि इंसान बंदर से बना, मगर दर्मियान में कोई Gap (ख़ाली जगह है), जो समझ में नहीं आता, फिर इंसान बन गया।

Genetic engineering आ गई, Genetic engineering ने आके डार्विन थियोरी की जड़ें काट के रख दीं,

उसने कहा कि देखो अगर डार्विन थियोरी को माना जाए कि Survival of filtest और Law of natural selection कि दुनिया में करोड़ों Chimpanzee थे, वह इंसान बन गए, तो साइंस ने कहा कि नहीं, Life (ज़िंदगी) जो शुरू हुई है वह एक जान से शुरू हुई है, क्या वह औरत थी? साइंस ने कहा, नहीं अगर औरत होती तो कभी उससे मर्द नहीं बन सकता था, हां मर्द से औरत का बनना मुम्किन है, पूछा गया कैसे? तो साइंस ने सबूत दिये, और खूब दिये, उन्होंने कहा, देखो मर्द के अंदर Chromosomes होते हैं और औरत के अंदर भी Chromosomes होते हैं 23, औरत के अंदर Chromosomes "XX" होते हैं और मर्द के Chromosomes "XY" होते हैं, जब दोनों आपस में मिलते हैं तो "XX" जुदा हो जाते हैं, Separate हो जाते हैं, "XY" जुदा हो जाते हैं तो चार हिस्से बन जाते हैं, अब चारों हिस्से एक दूसरे से दोबारा मिलते हैं, अगर मर्द के "X" ने औरत के "X" हिस्से को आपस में मिलाया तो बच्ची पैदा होती है, और अगर मर्द के "Y" ने औरत के "X" को मिला लिया तो बेटा पैदा हो जाता है, चुनांचे साइंस ने सबूत दिये, Test tube baby के ज़रीआ उन्होंने X और Y को मिला कर बता दिया कि देखो Baby boy पैदा हो रहा है, XX को मिला कर दिखा दिया कि देखो Baby girl पैदा हो रही है, तो साइंसी तौर पे सबूत मिल गए कि अल्लाह का बनाया हुआ कुदरती निज़ाम ऐसा ही है, तो Genetic engineering ने आकर यह कहा: कि अगर शुरू में औरत होती तो उसके तो Chromosomes होते ही "XX" हैं, Y पार्ट तो होता नहीं, तो मर्द पैदा नहीं हो सकता, हां अगर शुरू में मर्द हो तो XY से डबल

X वाला बंदा औरत पैदा होना यह आसान काम है, तो साइंस ने इस बात को तसलीम कर लिया कि Life (ज़िंदगी) एक बंदे से और एक जान से शुरू हुई, और वह मर्द था, फिर उस मर्द से उसकी औरत बनी, फिर औरत और मर्द के ज़रीआ इंसान आगे दुनिया में फैल गए, अब ज़रा क़ुर्आन मजीद की आयत सुन लीजिये और ख़ुद ग़ौर कीजिये कि कितनी ख़ूबसूरती से अल्लाह ने क़ुर्आन में इसको लिखा है: "يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ" चौदह सौ साल पहले बताया जा रहा है कि देखो Life (ज़िंदगी) का आग़ाज़ कैसे हो रहा है, वह ज़ात जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया "وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا" और अल्लाह ने उसका जोड़ा बनाया, बीवी बनाई "وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَّنِسَاءً" फिर उन दोनों के ज़रीआ अल्लाह ने मर्दों और औरतों को दुनिया में फैला दिया, वह जो साइंस की दुनिया आज मान रही है क़ुर्आने करीम ने इसका इशारा चौदह सौ साल पहले कर दिया था।

छटा इशारा

एक छोटी सी मिसाल और अर्ज़ करके बात आगे बढ़ाते हैं, जब हम यूनिवर्सिटी में पढ़ा करते थे तो दह्‌रिये क़िस्म के लड़के सवाल करते कि यह क्या बात हुई मुसलमान नेक अमल करे तो दुनिया में भी अज्र मिलता है और आख़िरत में भी मिलेगा, और काफ़िर अगर नेक अमल करे तो दुनिया में तो उसको अज्र मिल जाएगा कि अल्लाह तआला रहमान हैं, मेहनत को नहीं ज़ाए होने देते, लेकिन आख़िरत में इसको कोई अज्र नहीं मिलेगा, तो वह सवाल करते थे कि ऐसा क्यों है? चूंकि हम छोटे थे, जवाब तो आता नहीं था, अलबत्ता हमने अपनी तरफ़ से जवाब देने के लिये एक दलील गढ़ी, मैंने लड़के को कहा कि अच्छा आप ऐसा करो कि पांच ज़ीरो लिखो,

उसने 5 ज़ीरो लिख दिये, (00000) मैंने कहा कि अब शुरू में एक लगा के चार ज़ीरो लगा दो, उसने ऐसा कर दिया, (10000) मैंने कहा कि उसकी Value (क़ीमत) कितनी है? कहता है कि ज़ीरो और इसकी Value कितनी है? कहता है Ten thousand (दस हज़ार), मैंने कहा मस्ला क्या है कि वह भी पांच हिंदसे, यह भी पांच हिंदसे, जितना टाइम उसमें लगा, इतना टाइम इसमें लगा, आप कहते हो कि इसकी Value सिफ़र, और इसकी Value है दस हज़ार, क्यों नाइंसाफ़ी है? कहने लगा असल वजह यह है कि पहले के अंदर सारे हिंदसे ज़ीरो हैं तो उसकी Value ज़ीरो आई, और दूसरी के शुरू में One (एक) डाल दिया था तो One (एक) ने ज़ीरो की Value को बढ़ा दिया, हमने कहा यही फ़र्क़ है कि काफ़िर इस One (एक) उस अकेले अल्लाह की तौहीद का इक़रार करना भूल जाता है और ज़ीरो लगा देता है तो उसकी सारे हिंदसे ज़ीरो हो गए, और मोमिन अल्लाह की तौहीद पर ईमान ले आता है, तो उसकी Value होती है।

लेकिन इस बात को तक़्वियत ज़रा बाद में मिली, वह इस तरह कि हमने Weight (वज़्न) का फ़ार्मूला पढ़ा, Weight का फ़ार्मूला है W=MxG कि वज़्न किसी चीज़ का भी निकालना हो तो उसकी Mass को Gravitational force के साथ मल्टीप्लाई करो फ़र्ज़ करो कि मेरा वज़्न ज़मीन के ऊपर एक सौ किलो है, अगर मुझे आप चांद पर ले जाएं तो वहां पर मेरा वज़्न रह जाएगा मुश्किल से चालीस किलो, वजह यह है कि वहां Gravitational force थोड़ी है, अगर मुझे मिर्रीख़ पर ले जाएं तो मेरा वज़्न वहां आएगा चार सौ किलो, यूं कि उसकी Gravitational force ज़मीन से बहुत ज़्यादा है, अगर मुझे

आप ख़ला में ले जाएं तो मेरा वज़न होगा सिफ़र किलो, चांद पर चालीस किलो, मिर्रीख़ पर पांच सौ किलो, तो पूछो कि भाई! उसका वज़न किधर ग़ायब हो गया, वह कहेंगे कि ख़ला के अंदर Gravitational force ज़ीरो होती है, जब ज़ीरो से किसी चीज़ को मल्टीप्लाई करते हैं तो उसका जवाब ज़ीरो होता है, जब हमने साइंस का यह मस्ला पढ़ा तो हमें अपना एक मस्ला साफ़ हो गया, हमने कहा कि इसका मतलब यह कि मोमिन जो नेकी का काम करता है उसके दिल में ईमान की Gravitational force है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के साथ मुहब्बत की एक Gravitational force है, लिहाज़ा क़्यामत के दिन जब आमाल को तोलेंगे तो आमाल का वज़न होगा और काफ़िर तो ईमान लाता ही नहीं तो उसकी Gravitational force कितनी हुई? लिहाज़ा उसके दुनिया में ज़मीन और आसमान के ख़ला को भरने के बराबर भी आमाल होंगे तो जब ज़ीरो से मल्टीप्लाई करेंगे तो क्या बनेगा? अब यह तो कुदरत का बनाया हुआ क़ानून है, समझ में आने वाली सीधी बात है, कुर्आन मजीद ने चौदह सौ साल पहले कह दिया कि नहीं कि हम काफ़िरों के अमल तोलेंगे नहीं, फ़रमाया क़्यामत के दिन काफ़िरों के अमल देखेंगे लेकिन "فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا" वज़न ही नहीं होगी, बेवज़न हो जाएगा, तो आम आदमी जब कुर्आन मजीद पढ़ता है और उसमें यह चीज़ें देखता है तो हैरान होता है, दिल गवाही देता है कि वाक़ई यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का कलाम है।

कुर्आन मजीद को समझने का पहला मेअ्यार

शाह वली अल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह0 ने लिखा है कि कुर्आन मजीद को समझने के दो Level (सतह) हैं, एक अवामुन्नास का

Level (सतह), मेरे और आप के समझने का Level इतना है कि हमारे सामने कोई कुर्आन पढ़ रहा हो तो हमें पता चले कि फ़लां क़ौम का तज़किरा हो रहा है, जन्नत का तज़किरा है, जहन्नम का तज़किरा है, फ़लां काम करने का हुक्म है, फ़लां काम से मना किया गया, यह First level of understanding (फ़हम की अव्वल सतह) यह आम बंदे के लिये है, और इसको अल्लाह ने बहुत आसान कर दिया है।

कुर्आन मजीद को समझने का दूसरा मेअ़यार

एक है High level of understanding, (फ़हमे कुर्आन का आला मेअ़यार) वह उलमा का है कि वह एक आयत को पढ़ें और उसमें से मसाइल को Extract (इस्तिख़राज) करें Induce (निकाल कर लाना) करें, मगर इस लेवल तक जाने की हर बंदे को ज़रूरत ही नहीं, हमें तो First level चाहिये और वह बड़ा आसान है।

ज़रा सुनिये आजकल कुर्आन पाक CD पर आ चुका, उसके अलफ़ाज़ गिने जा चुके, कुर्आन मजीद के कुल अलफ़ाज़ चौरासी हज़ार छः सौ से कुछ ज़्यादा हैं, लेकिन उसमें ज़्यादा अलफ़ाज़ वह हैं जो बार बार Repeat (दोहराए) हुए हैं जैसे "يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا" 88 मर्तबा आया, "أَقِيمُوا الصَّلوٰةَ" 700 मर्तबा से ज़्यादा आया। तो बहुत सारे अलफ़ाज कई कई बार आए हुए, अगर Repeatation (बार बार आना) को हम एक लफ़्ज़ समझें तो पूरे कुर्आन मजीद में जो मुख़्तलिफ़ अलफ़ाज़ इस्तेमाल हुए हैं उनकी तादाद कुल दो हज़ार बनती है, दो हज़ार अलफ़ाज़ के इस्तेमाल से कुर्आन मजीद अल्लाह ने बना दिया, जिन लोगों को उर्दू ज़बान बोलना या समझना आता है तो कुर्आन मजीद के दो हज़ार में से

पांच सौ अलफ़ाज़ उर्दू ज़बान में इस्तेमाल होते हैं, इंसान, हैवान, अर्श, कुर्सी, क़लम, किताब, रूह, बदन, मौत, हयात, क़ब्र, क़्यामत, जन्नत, जहन्नम, सौम, सलात, हज, ज़कात, ज़ुह्द, तक़्वा, तवक्कुल, तसलीम, नज़अ़ यह सब उर्दू में इस्तेमाल होते हैं और कुर्आन पाक के भी अलफ़ाज़ हैं तो पांच सौ अलफ़ाज़ को निकाल दें तो बाक़ी रह गये पंद्रह सौ, क्या क़्यामत के दिन हम अल्लाह तआला को यह Excuse (मअ़ज़रत) कर सकेंगे कि या अल्लाह! हमारे पास 1500 (पंद्रह सौ) अलफ़ाज़ के मआनी समझने का वक़्त नहीं था, जिन लोगों ने यूनीवर्सिटियों में एम एस सी की Bio पढ़ी, Chemical engineering पढ़ी और मैडिकल साइंस पढ़ी IT पढ़ी, अल्लाह पूछेंगे कि तुझे जो मैंने Trillions of brain cell (खरबों दिमाग़ी ख़ल्या) दिये थे, इतनी मुश्किल चीज़ों को तो समझता था तो क्या 1500 (पंद्रह सौ) अलफ़ाज़ नहीं समझ सकता था? तू दिन में 5 अलफ़ाज़ का तर्जुमा समझता, तो एक साल के अंदर कुर्आन आराम से समझ लेता। अलबत्ता खुद अपने आप समझना शुरू न करें, खुद समझेंगे तो उल्टा समझ बैठेंगे, चूंकि बग़ैर उस्ताज़ के इंसान जो भी समझता है, वहां ग़ल्ती कर जाता है, इसीलिये जब कालिज में मैडिकल साइंस पढ़ लेते हैं तो उनको प्रेक्टिस नहीं करने देते, कहते हैं कि भाई House job! करो, माहिर डाक्टरों की ज़ेरे निगरानी तुम ट्रेनिंग लो, ताकि तुम ग़ल्ती न कर सको, वर्ना तो बंदे मारोगे, तो जिस तरह मैडिकल साइंस में House job ज़रूरी है, कुर्आन मजीद को भी किसी आलिम की ज़ेरे निगरानी समझना ज़रूरी है, क़रीब की जो मस्जिद हो, कोई अच्छे आलिम हों, आप उनसे राबता करें और आप उनसे कहें कि हज़रत! मुझे कुर्आन मजीद का लफ़्ज़ी तर्जुमा समझा दें, हमने तो देखा है कि साल की क्या बात, कालिज

और यूनीवर्सिटियों के बच्चे चालीस दिनों पूरे कुर्आन पाक का तर्जुमा पढ़ लेते हैं, कुर्आन समझने के लिये अल्लाह ने इतना आसान बना दिया, अल्लाह ने इर्शाद फ़रमायाः "وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ" हमने कुर्आन को समझने के लिये आसान कर दिया, है कोई समझने वाला? आज की इस मजलिस में हम दिलों में यह अहद करें कि हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के कुर्आन को समझने के लिये अपने आप को फ़ारिग़ करेंगे, उलमा से हम राबता करेंगे और एक घंटा नहीं आधा घंटा सही अगर Daily (रोज़ाना) हम देना शुरू करेंगे तो एक वक़्त आएगा कि हम कुर्आन पढ़ रहे होंगे, हमें मुआफ़ी का पता चल रहा होगा फिर कुर्आन मजीद पढ़ने का मज़ा आएगा, अल्लाह तआला हमें यह नेअ़मत आसानी से अता फ़रमाए।

وآخرُ دعْوانا أنِ الْحمد لِلّٰه ربِّ الْعالمين

☆☆☆

अगले सफ्हा पर आप जो ख़िताब मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, वह हैदराबाद के मिनार गार्डन, में हुआ था, हज़रते वाला एक अलग कैबिन से ख़िताब फ़रमा रहे थे, और ख़्वातीन का इंतेज़ाम क़द्रे दूर ही पर था, तारीख़: 16 अप्रेल 2011 ई० बरोज़ हफ्ता, वक़्त: साढ़े ग्यारह बजे दिन, मुहतात तख़मीना के मुताबिक़ मस्तूरात की तादाद 25 से 30 हज़ार बताई गई है।

मस्तूराते मजलिस

हमारी परेशानियों की वजह हमारे गुनाह हैं!

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

اعوذ بالله من الشيطان الرجيم، بسم الله الرحمٰن الرحيم

مَنْ يَّعْمَلْ سُوْءً يُجْزَبِهٖ. وقَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى فِى مَقَامٍ آخر: مَا اَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ. وقَالَ تعَالٰى فِى مَقَامٍ آخر: ظَهَرَ الْفَسَادُ فِى الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَيْدِى النَّاس

سبحان ربک رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العلمين

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى آل سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى آل سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى آل سيدنا محمد وبارک وسلم

नेकी और गुनाह के असरात

जो भी आमाल हम करते हैं या तो वह गुनाह बनते हैं या नेकी बनते हैं, उसूल यह है कि अगर इंसान अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की नाफ़रमानी करे या नबी सल्ल0 की सुन्नत से रू गर्दानी करे, तो यह गुनाह कहलाता है, और अगर वह काम अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के फ़रमान के मुताबिक़ हो, नबी सल्ल0 की सुन्नत के मुताबिक़ हो, तो वह अमल नेकी कहलाता है। गुनाह की अपनी तासीर है, नेकी की अपनी तासीर है, गुनाह करने से इंसान की ज़िंदगी में बेबरकती आती है, नेकी करने से इंसान की ज़िंदगी में बरकत आती है, गुनाह करने से इंसान परेशान होता है, नेकी करने से इंसान पुर सुकून होता है, गुनाह करने से इंसान को नाकामी मिलती है, नेकी करने से इंसान

को कामियाबी मिलती है, गुनाह करने से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त नाराज़ होते हैं, नेकी करने से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त खुश होते हैं, गुनाह करने से इंसान जहन्नम का मुस्तहिक़ बनता है, नेकी करने से इंसान जन्नत का मुस्तहिक़ बनता है, जिस तरह दरख़्त को अपने फल वज़नी मालूम नहीं होते, इंसान को भी अपने गुनाह बुरे मालूम नहीं होते, इतनी बात है कि दूसरे बंदे के बारे में दिल में शक आ जाए कि वह गुनाह करता है तो इंसान उससे नफ़रत करने लगता है, जबकि अपने बारे में यक़ीन होता है कि मैं फ़लां फ़लां गुनाह करता हूं, फिर भी इंसान अपने नफ़्स से मुहब्बत करता है।

गुनाह का एक ही इलाज

गुनाह की मिसाल कैंसर के ज़ख़्म के मानिंद है, किसी के जिस्म में कैंसर का ज़ख़्म हो तो उसका एक ही इलाज है कि उसको Operate (आप्रेशन) करवा दिया जाए, और उसको जिस्म से निकाल दिया जाए। गुनाह का एक ही हल है कि उसको छोड़ दिया जाए, अगर कैंसर के ज़ख़्म को रहने दिया जाएगा तो यह फैलेगा, हत्ता कि इंसान मौत के मुंह में चला जाएगा, इसी तरह गुनाह अगर ज़िंदगी में बाक़ी रहेगा तो इंसान जहन्नम के मुंह में चला जाएगा। शुरू में गुनाह का छोड़ना आसान होता है, वक़्त के साथ साथ जब आदत पुख़्ता होती है तो फिर गुनाह का छोड़ना मुश्किल काम होता है, चुनांचे इब्तिदा में गुनाह कच्चे धागे के मानिंद होता है और इंतिहा में जहाज़ के लंगर की तरह मज़बूत होता है।

गुनाह से दिल का सुकून ख़त्म हो जाता है

आप दुनिया में देखें कि मुख़्तलिफ़ चीज़ों की अपनी अपनी तासीर है, बर्फ़ ठंडी होगी, आग गर्म होगी, पानी इंसान के जिस्म को गीला करेगा, इसी तरह गुनाह के अंदर भी एक तासीर है कि वह

इंसान के दिल को परेशान करता है, किसी बंदे को गुनाह करने का मौक़ा मयस्सर हो, रोकने वाला भी कोई न हो, समझाने वाला भी कोई न हो और वह पूरी आज़ादी के साथ गुनाह करे, तो भी गुनाह उसके दिल को परेशान रखेगा, कितनी ही कामियाबी से गुनाह क्यों न किया जाए, गुनाह इंसान के दिल को परेशान कर देता है। चुनांचे एक मर्तबा एक कारख़ानादार साहब ने रात को तीन बजे फ़ोन किया, कहने लगे कि हज़रत! जो चाहते हैं खाते हैं, पीते हैं, जहां चाहते हैं सोते हैं, दुनिया की हर नेअ़मत मौजूद है, पता नहीं क्या बात है कि दिल परेशान रहता है, तो इस आजिज़ ने जवाब दिया कि जिस चीज़ से सुकून मिलता था, आपका ख़ज़ाना उस नेअ़मत से ख़ाली है, दुनिया के माल पैसे से सुकून मिलता तो क़ारून दुनिया का सबसे पुरसुकून शख़्स होता, सुकून तो मिलता है अल्लाह की याद से

न दुनिया से न दौलत से न घर आबाद करने से
तसल्ली दिल को होती है ख़ुदा को याद करने से

जिन लोगों को नेकी की ज़िंदगी नहीं नसीब होती, वह इयर कंडीशन कमरों में कम्बल में लिपट के पड़े होते हैं, नींद नहीं आती, और जो नेकी वाली ज़िंदगी गुज़ारते हैं हमने देखा कि वह लोग ख़ुश्क रोटी खाते हैं, मगर पुरसुकून ज़िंदगी गुज़ारते हैं। एक मर्तबा हम को मस्जिद का आर सी सी लिन्टर डालना था, तो मज़दूर Day and night (दिन रात) काम करते रहे, दोपहर के वक़्त थोड़ी देर छुट्टी हुई तो सब Rest (आराम) करने लगे तो हमने एक मज़दूर को देखा कि कंकरी के ऊपर बग़ैर तकिया के वैसे ही धूप के अंदर पड़ा हुआ मिट्टी में सो रहा था, उसको देख कर मुझे ख़्याल आया किः

कितनी तसकीन है वाबस्ता तेरे नाम के साथ
नींद कांटों पे भी आ जाती है आराम के साथ

इसी तरह जो लोग अल्लाह की याद में ज़िंदगी गुज़ारते हैं उनके दिल पुरसुकून होते हैं, अब जिन लोगों के पास नेकी वाली ज़िंदगी नहीं होती, ज़ाहिर में कारें भी हों, बहारें भी हों, रोटी भी हो, बोटी भी हो, इसके बावजूद उन लोगों की ज़िंदगियों में सुकून नहीं होता, परेशान रहते हैं।

माद्दी सुहूलियात के बावजूद इंसान परेशान क्यों है?

आप ग़ौर करें कि आज की ज़िंदगी में माद्दी सुहूलियात की इंतिहा है, खाने में इतनी Dishes (खाने की क़िस्में) कि गिननी मुश्किल हो जाती हैं, पीने के लिये इतने जूस हैं कि इंसान हैरान होता है, मकानात देखो, तो महल के मानिंद, सवारियां देखो, तो कारें एक से बढ़ कर एक, बिजली की नेअ़मत, पंखे की नेअ़मत, Refrigerator (फ़्रिज) की नेअ़मत, सफ़र करने के लिये रेलगाड़ी, जहाज़, टेलीफ़ोन की सुहूलत, तो कितनी सुहूलतें ज़िंदगी में आ गईं, मगर इंसान की ज़िंदगी में सुकून पैदा न हुआ, इसकी वजह यह कि इन चीज़ों से सुकून नहीं मिलता, सुकून अल्लाह तआला की याद से मिलता है, जितनी माद्दी सुहूलतें आज हैं, इससे पहले कभी नहीं थीं, और जितना इंसान परेशान आज है, इससे पहले कभी नहीं था, तो इसे बात पर ग़ौर करना चाहिये कि यह परेशानी किस वजह से है। इसी लिये दो लफ़्ज़ बहुत कसरत से इस्तेमाल होने लग गए हैं एकः Depression (ज़ह्नी तनाव, उलझन) और दूसरा Tension (तफ़क्कुरात, परेशानी), यह दोनों अंग्रेज़ी के लफ़्ज़ हैं, हमारी उर्दू ज़बान में इसका कोई हम मअ़नी लफ़्ज़ ही नहीं, तो मालूम होता है कि हमारे बुज़ुर्गों की ज़िंदगियों में यह दोनों बीमारियां नहीं थीं, अगर होतीं तो उन्होंने इसके लिये कोई नाम तजवीज़ कर दिया होता, जब यह अंग्रेज़ी ज़बान से अलफ़ाज़ चले तो हमारी ज़बान

में इसी तरह मुंतकिल हो गए, तो डिप्रेशन और टेन्शन यह ख़ारजी चीज़ें हैं जो बाहर आई हैं और यह उन लोगों को होती हैं जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से ग़फ़लत भरी ज़िंदगी गुज़ारते हैं, वर्ना जिस बंदे की नेकी वाली ज़िंदगी हो उसको डिप्रेशन और टेन्शन से कोई काम ही नहीं होता, आज हर बंदा चाहता है कि मैं लंगोट बांध के मैदान में उतरूं और परेशानियों को ख़त्म करूं, लेकिन एक परेशानी ख़त्म नहीं होती कि दूसरी आ जाती है, और दूसरी ख़त्म नहीं होती कि तीसरी, ऐसा लगता है कि जैसे तसबीह का धागा टूट गया और एक के बाद एक दाना नीचे गिरता आ रहा है, कोई न कोई परेशानी कहीं न कहीं इंसान को चैन से नहीं रहने देती।

आराम की हर चीज़ के बावजूद एक ख़ातून की शिकायत

चुनांचे एक मर्तबा एक ख़ातून हमें मिलने के लिये आईं, पर्दे के पीछे उनको बैठा के पूछा कि क्या बात कहना चाहती हैं, वह कहने लगी कि मेरा ख़ाविंद बड़ा Industrialist (बड़ा बिज़नेस करने वाला) है, अरबों पति इंसान है और वह मुझे बहुत मुहब्बत प्यार से रखता है, महल नुमा घर है, ज़िंदगी की हर सुहूलत अल्लाह ने दी हुई है, घर के ख़र्चे वही उठाता है, किचन के ख़र्चे, ड्राईवर, गार्ड, गाड़ी का पेट्रोल, जो चीज़ भी है, यह सब ख़र्चे वही उठाता है, और मुझे मेरे जेब ख़र्च के लिये दो हज़ार डालर Per month (हर महीना) देता है, मैं बहुत ज़्यादा परेशान हूं कि मेरे ख़र्चे पूरे नहीं होते हैं। उसकी यह बात सुन के मुझे हैरानी हुई कि यह ख़ातून कह रही है कि ख़ाविंद ने मुझे इतने मुहब्बत प्यार से रखा हुआ है और साथ ही ख़र्चों के लिये दो हज़ार डालर Per month (हर महीना) देता है इसके बावजूद यह कहती है कि मेरे ख़र्चे पूरे नहीं होते। तो मैंने उसको यह बात समझाई कि तुम्हें अगर दो की जगह चार हज़ार भी

मिल जाएं तो भी तुम्हारी परेशानी ख़त्म नहीं होगी, वह कहने लगी क्यों? तो बताया इसलिये कि आप की ज़िंदगी में न पर्दा है, न शरीअ़त का अमल है, एक आम रस्मी रिवाजी सी ज़िंदगी है, तो ऐसी ज़िंदगी से तो इंसान को कभी भी सुकून नहीं मिल सकता, अगर आप सुकून चाहती हैं तो आप को चाहिये कि बापर्दा ज़िंदगी गुज़ारें, नेकूकारी की ज़िंदगी गुज़ारें, आप को सुकून मिल जाएगा, चुनांचे वह औरत चली गई, फिर दो महीने के बाद उसने फ़ोन किया और कहने लगी कि मैं इस क़दर पुरसुकून ज़िंदगी गुज़ार रही हूं कि मैं आप को पूरे अलफ़ाज़ में बता भी नहीं सकती और यह भी कहना चाहती हूं कि वह जो दो हज़ार डालर मुझे मेरे मियां देते थे, मेरे ख़र्चे तो पांच सात सौ में पूरे हो जाते हैं और बक़िया मैं ग़रीबों, बेवाओं और यतीमों में तक़सीम कर देती हूं, अब मैं बहुत पुरसुकून ज़िंदगी गुज़ार रही हूं।

दिलों का सुकून नेकियों के साथ वाबस्ता है

चुनांचे सुकून मिलता है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की याद से, सुकून मिलता है नेकूकारी करने से, अगर इंसान गुनाह करेगा तो गुनाह इंसान को किसी न किसी तरह परेशान रखेगा, चाहे उसके पास उहदा हो, कुर्सी हो, माल हो, दुनिया की शोहरत हो, मगर उसका दिल बेसुकून होगा, दिल का सुकून मिलता है अल्लाह तआला की याद के साथ, अल्लाह तआला ने क़ुर्आन मजीद में फ़रमा दियाः "اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ" जान लो! अल्लाह तआला की याद के साथ दिलों को इतमीनान वाबस्ता है।

गुनाह की वजह से हर चीज़ में बेबरकती

जब इंसान गुनाह करता है, मनमानी की ज़िंदगी गुज़ारता है तो अल्लाह तआला उसके रिज़्क़ में, वक़्त में, सिहत में से बरकत

निकाल लेते हैं, सिहत में से बरकत निकल जाती है कि घर का कोई न कोई बंदा डाक्टर के पास जाता रहता है, कभी ख़ुद बीमार, कभी बीवी बीमार, कभी बच्चे बीमार, कोई न कोई ऐसा होता है कि डाक्टर के पास जाता ही रहता है। जब वक़्त में से बरकत निकाल ली जाती है तो काम की कोई नहीं सिमटता, इंसान कोशिशें करता रह जाता है कि मैं यह काम कर लूं, वह काम कर लूं, लेकिन सारे काम अधूरे रह जाते हैं और इंसान के हाथ से वक़्त निकल जाता है और जब रिज़्क़ में से बरकत निकल जाती है तो घर के जितने बंदे होते हैं सारे नौकरियां कर रहे होते हैं मगर ख़र्चे फिर भी पूरे नहीं होते, इसकी वजह यह है कि अल्लाह तआला बरकत निकाल लेते हैं।

रिज़्क़ में बरकत का एक दिलचस्प वाक़िआ

सहाबा रज़ि0 नेकूकारी की ज़िंदगी गुज़ारते थे, तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनके रिज़्क़ में बरकतें अता फ़रमाई थीं, चनांचे एक वाक़िआ मैं अक्सर दोस्तों को सुनाता हूं कि एक सहाबी रज़ि0 क़ज़ाए हाजत के लिये बाहर तशरीफ़ लग गए, जहां वह पेशाब करने के लिये बैठे वहां क़रीब में ज़मीन के अंदर एक सूराख़ था, चूहे के सूराख़ का बिल कहते हैं, इस बिल में से चूहा निकला, और उसके मुंह में दीनार थे, उसने बाहर रख दिया, फिर गया, फिर दूसरा दीनार रख दिया, फिर तीसरी मर्तबा तीसरा दीनार निकाल के लाया, यह सहाबी रज़ि0 जब अपनी ज़रूरत से फ़ारिग़ हुए तो यह हैरान हुए कि उनके सामने तीन चार दीनार पड़े थे, उन्होंने उनको उठा लिया, सहाबा रज़ि0 की एक ख़ूबसूरत आदत थी कि हर नई पेश आने वाली बात को वह नबी सल्ल0 से पूछा करते थे, चुनांचे उन्होंने नबी सल्ल0 से आकर पूछाः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! मेरे साथ यह

वाक़िआ पेश आया, आप बताइये मेरे लिये इन पैसों का इस्तेमाल जाइज़ है या नहीं? तो नबी सल्ल0 ने बतलाया कि यह अल्लाह ने तुम्हें ग़ैब से रिज़्क़ देने का बंदोबस्त किया है। जब हम यह वाक़िआ पढ़ते हैं तो सोचते हैं कि सहाबा रज़ि0 को "बिलों" से रिज़्क़ मिलता था और आज हमें महीने में जो रिज़्क़ मिलता है वह सब "बिलों" में चला जाता है, यह बिजली का बिल, यह गैस का बिल, यह डीज़ल का बिल, यह इंशोरेंस का बिल, यह डाक्टर का बिल, हम "बिलों" में ही सब कुछ दे बैठते हैं, हमारे हाथ में कुछ नहीं बचता, इसकी वजह यह होती है कि रिज़्क़ के अंदर बरकत नहीं होती।

बरकत का एक और वाक़िआ

जुनैद बग़दादी रह0 के पास एक आदमी आया कहने लगा कि हज़रत! मैं हज के लिये जा रहा हूं, तो हज़रत ने उसको चवन्नी दी कि यह ले जाओ, ज़रूरत होगी तो ख़र्च कर लेना, चुनांचे वह अपने साथ चवन्नी लेकर चला, जब गांव के बाहर निकला तो एक क़ाफ़िले वाले जा रहे थे, सलाम दुआ हुई, उन्होंने कहा कि तुम को अगर हज पर जाना है तो एक ऊंट हमारे पास ख़ाली है, उस पर बैठ जाओ, यह ऊंट पे सवार हो गए, क़ाफ़िले वाले सारा रास्ता उनकी मेहमान नवाज़ी भी करते रहे और उन्होंने बड़े अच्छे तरीक़े से हज अदा किया, वापस आने लगे तो एक और क़ाफ़िले वाले ने कह दिया कि हमारे साथ एक हाजी साहब आए थे, वह फ़ौत हो गए, उनका ऊंट ख़ाली जाएगा, आप जाना चाहते हैं तो हमारे साथ आ जाएं, वह उनके साथ हो लिये, अब वापसी में उन क़ाफ़िले वालें ने उनकी ख़ूब ख़िदमत और मेहमान नवाज़ी की, हत्ता कि उनको लाकर उन्होंने गांव में उतार दिया, यह जुनैद बग़दादी रह0 को मिलने के लिये आए, हज़रत ने पूछा कि सुनाओ भाई हज कैसा रहा, कहने लगा

हज़रत अजीब बात है कि हर सुहूलत भी अल्लाह ने दी और मेरा खर्चा भी कुछ नहीं हुआ तो जुनैद बग़दादी रह0 ने फ़रमायाः अच्छा फिर मेरी चवन्नी वापस कर दो। तो जिनके रिज़्क़ में बरकतें होती हैं तो उनकी चवन्नी भी ख़र्च नहीं होती।

सिहत में बरकत

हम कई लोगों को जानते हैं कि जिनको अल्लाह ने ऐसी सिहत दी कि डाक्टर के पास जाना ही नहीं पड़ता, हमें एक मर्तबा एक बूढ़े मियां मिले जिनकी उम्र 82 साल थी, वह कहने लगे कि मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी में एक मर्तबा भी Tablet (दवा की गोली) अपने मुंह में नहीं डाली, 82 साल की ज़िंदगी में कभी डाक्टर के पास जाने का मौक़ा ही नहीं मिला, ऐसी सिहत में बरकत होती है, रिज़्क़ में बरकत होती है, वक़्त में बरकत होती है, और जब इंसान गुनाह करता है तो इन बरकतों से महरूम हो जाता है, फिर इंसान परेशान रहता है, एक परेशानी ख़त्म होती है कि दूसरी शुरू, दूसरी ख़त्म नहीं होती है कि तीसरी शुरू, कोई न कोई सूरत परेशानी की बनती ही रहती है।

अल्लाह की नाफ़रमानी से माहौल मुख़ालिफ़ बन जाता है

हमने फ़ाइव स्टार होटल में देखा कि अगर वहां पर खाने का इंतेज़ाम हो तो Buffet system (बूफ़े सिस्टम) कहलाता है, इसमें खाने के लिये सालन वाले टिरे एक जगह पर पड़े होते हैं, और उनके नीचे मोमबत्ती जलाई होती है तो वह आग उस सालन को गर्म रखती है, तो जितनी देर खाना रखा रहता है, वह खाना गर्म रहता है। बिल्कुल यही मिसाल है कि जो इंसान गुनाह करता है, अल्लाह तआला उसकी ज़िंदगी में कोई Heat source (गर्मी पहुंचाने वाली चीज़, मुराद दिल जलाने का सबब) और Heat source उस बंदे को बिल्कुल परेशान रखता है, जैसे मोमबत्ती में या चिराग़

में तेल डालते रहें तो देर तक जलता रहेगा, यह हमारे गुनाह उस चिराग़ का तेल हैं, जिस चिराग़ ने हमें बेचैन किया हुआ है, हम अपने हाथों से ख़र्चा भी करते हैं, तकलीफ़ भी उठाते हैं, लेकिन गुनाह करके उल्टा अपने आप को परेशान कर लेते हैं, किसी की ज़िंदगी में बीवी Heat source (दिल जलाने का सबब) बन जाती है, नाक में दम कर देती है, Cooperate (तआवुन) नहीं करती, सुनती नहीं, मानती नहीं, ज़िद करती है, आगे से ज़बान दराज़ी करती है, इंसान परेशान रहता है, किसी की ज़िंदगी में ख़ाविंद Heat source बन जाता है, बीवी नेक है, अच्छी है, ख़ूबसूरत है, मगर ख़ाविंद बाहर लोगों के पीछे भागता फिरता है और घर की तरफ़ तवज्जो नहीं होती, बीवी ख़ून के आंसू रोती है, इंतेज़ार में पड़ी रहती है, और ख़ाविंद उसकी तरफ़ आंख उठा के नहीं देखता, जितनी मर्ज़ी तैयार होकर साफ़ सुथरे कपड़े पहन कर बैठी हो, ख़ाविंद की ज़बान से तारीफ़ का एक जुम्ला नहीं निकलता, अल्लाह ने उसकी बीवी के गुनाहों की वजह से ख़ाविंद को Heat source बना दिया। कई जगहों पे मां बाप के लिये औलाद Heat source बन जाती है, मां बाम ख़ुद तो अच्छे हैं, मगर बेटा नाफ़रमान, कभी ख़ुद तो अच्छे हैं, लेकिन बेटी ग़ैर मुस्लिम की तरफ़ मुतवज्जो हो गई तो ख़ून के आंसू रोते हैं, कभी घर के लोग ठीक नहीं हैं, कोई बीमार हो जाता है, जो सब के लिये परेशानी का सबब बन गया, किसी के लिये पड़ोसी Heat source बन जाता है, कोई न कोई ऐसा सबब बन जाता है जो इंसान को परेशान करता रहता है।

अल्लाह की नाफ़रमानी का असर मातहतों पर

फ़ुज़ैल बन अयाज़ रह0 फ़रमाते थे कि मैंने जब भी अल्लाह तआला की नाफ़रमानी की तो मैंने उसका असर, या तो बीवी में

देखा, कि बीवी ने मेरी नाफ़रमानी की, या औलाद में देखा, कि औलाद ने मेरी नाफ़रमानी की, या अपने नौकरों में देखा, कि मैंने काम कहा लेकिन उन्होंने काम नहीं किया, या फिर अपनी सवारी के जानवर में देखा, कि मैं सवार हुआ और वह सही तरह मुझे लेके चलता नहीं था, तो कहीं न कहीं मैंने इस नाफ़रमानी का असर देखा, इसका नतीजा यह निकला कि हम जो भी ख़िलाफ़े शर्अ़ काम करते हैं वह हमारी ज़िंदगी में कहीं न कहीं Reflect (वापस) होता है, हमने ख़ुदा की नाफ़रमानी की तो हमारे मातहत हमारी नाफ़रमानियां करते हैं, इसलिये आप देखेंगे कि आज अक्सर बाप औलाद के बारे में शिक्वे करते हैं कि हज़रत! क्या बताएं बच्चे तो अफ़लातून बन गए हैं, सुनते ही नहीं हैं, मानते भी नहीं हैं, और सच बात तो यह है कि आज के दौर में औलाद अपने बाप से ऐसे नफ़रत करती है जैसे कोई बाप (गुनाह) से नफ़रत किया करता है, उसकी बुन्यादी वजह क्या होती है कि मां बाप की ज़िंदगी में नमाज़ें नहीं, सुन्नत का एहतिमाम नहीं, बस आम रस्म व रिवाज की ज़िंदगी है, उसी पे जी रहे हैं, और ज़िंदगी परेशानी में है।

तो गुनाह की एक सज़ा तो आख़िरत में मिलेगी, मगर एक सज़ा इस दुनिया में भी है और वह यह कि गुनाह करने वाला बंदा सुकून की ज़िंदगी नहीं गुज़ार पाता, परेशानी की ज़िंदगी गुज़ारता है, अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं: "مَنْ يَّعْمَلْ سُوْءًا يُّجْزَ بِهٖ" जो कोई भी गुनाह करेगा उसको उसका बदला मिल कर रहेगा। इसकी मिसाल ऐसे कि जो भी बिजली को हाथ लगाएगा झटका पड़ कर रहेगा, इसी तरह गुनाह बिजली के मानिंद हैं, बिजली के नंगे तार को हाथ लगाने से जैसे झटका पड़ता है ऐसे ही गुनाह को हाथ लगाने से परेशानी का झटका पड़ता है, हम उसको महसूस नहीं करते और हम

आमिलीन के पास भागते फिरते हैं और वह इंसान की तवज्जो ही किसी और तरफ़ कर देते हैं कि लगता है कि किसी ने कुछ किया हुआ है और हमारे ज़हन में पहले से Stories (कहानियां) बनी हुई होती हैं, कि हां फूफी ने कुछ कर दिया, ख़ाला ने कुछ कर दिया, हमसाया ने कुछ कर दिया, फ़लां ने कुछ कर दिया, और फिर हम लोगों को छोटा खुदा बना लेते हैं, किसी ने हमें परेशान नहीं किया हुआ है, हमारी बदआमालियों ने हमें परेशान किया हुआ है, हम अपने अमलों की तरफ़ देखें और गुनाहों से पक्की सच्ची तौबा कर लें तो परेशानियां खुद बखुद ख़त्म हो जाएंगी।

सज़ा की पहली सूरतः नकीर

हमारे मशाइख़ ने लिखा कि गुनाह की सज़ा तीन सूरतों में मिलती है पहली सूरत को कहते हैं: "नकीर"। नकीर का मतलब नक़द सज़ा, बच्चे ने नाफ़रमानी की तो थप्पड़ पड़ा, बंदे ने नाफ़रमानी की तो अल्लाह तआला ने उस पे कोई मुसीबत भेज दी, इसलिये फ़रमायाः "مَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ" तुम्हें जो भी मुसीबत पहुंचती है वह तुम्हारे हाथों की कमाई है, तुम काम ऐसे करते हो जो उल्टा तुम्हारी परेशानियां का सबब बनते हैं।

तकब्बुर का इबरतनाक अंजाम

चुनांचे बअ़ज़ मर्तबा तो गुनाह की नक़द सज़ा इसी दुनिया में मिल जाती है, एक Landlord (ज़मीनदार) का वाक़िआ आप को सुनाएं, बहुत इबरतनाक वाक़िआ है, उसके पास इतनी बड़ी ज़मीन थी कि रेलगाड़ी के दो स्टेशन उसकी ज़मीन के अंदर बने हुए थे, यअ़नी एक स्टेशन भी उसकी ज़मीन में था, वहां से गाड़ी चलती थी तो जिस अगले स्टेशन पर रुकती थी वह भी उसी की ज़मीन में था, हज़ारों Hectare (एक्टर) उसके पास Agriculture land

(काश्तकारी ज़मीन) के थे, एक दिन अपने दोस्तों के साथ शहर के चौक पे खड़ा था और बातें कर रहा था, उसके दोस्त ने कह दिया कि मैं परेशान हूं, आमदनी कम है, मेरे ख़र्चे पूरे ही नहीं होते, तो उसने बड़े तकब्बुर से जवाब दिया कि तुम लोग परेशान रहते हो कि पैसा आएगा कहां से? और मैं परेशान रहता हूं कि पैसा लगाऊंगा कहां से? फिर उसने कहा कि मेरी तो चालीस नस्लों को भी पैसों की कोई फ़िक्र नहीं, उसका तकब्बुर का यह बोल अल्लाह तआला को नापसंद आया, चुनांचे चंद दिन के बाद वह बीमार हो गया और 6 महीने के अंदर इस दुनिया से रुख़्सत हो गया, उसका एक ही बेटा था, उस लड़के की उम्र थी 18 साल, वह उसकी सारी जाइदाद का वारिस बन गया, जवानी थी, फिर माल की बोहतात, तो ऐसे में बुरे लोग दोस्त बन जाते हैं चुनांचे दूसरे नौजवानों ने उसको शराब और शबाब के रास्ते पे लगा दिया चुनांचे उसने शराब पीनी शुरू कर दी और Model (माडल) लड़कियों के साथ वक़्त गुज़ारना शुरू कर दिया, बैंक में करोड़ों रूपया था, उसने ख़ूब लुटाया, ख़ूब अय्याशी की, एक दो साल के बाद उसको किसी ने बाहर का रास्ता दिखाया कि वहां के क्लबों में तो हुस्न और भी ज़्यादा होता है, चुनांचे यह बाहर मुल्क जाता और वहां के क्लबों में रात गुज़ारता, बस उसका एक ही काम था उसको अपनी नफ़सानी ख़्वाहिश पूरी करने के लिये रोज़ नए से नए चेहरे चाहिये थे, लोग समझाते लेकिन किसी की बात पे कान ही न धरता, जब उसने दो चार साल ख़ूब अय्याशी में वक़्त गुज़ारा तो बैंक में जितना एकांउट था सब का सब ख़त्म हो गया, अब यह करता कि ज़मीन का टुकड़ा बेचता, जो पैसे मिलते तो बाहर का Tour (दौरा) लगाता, फिर ज़मीन का टुकड़ा बेचता, उसने अपनी ज़िंदगी के आठ दस साल इसी तरह ख़ूब अय्याशी में गुज़ारे,

सारी सारी रात जागने की वजह से और सारी सारी रात जिन्सी कामों में मशगूल रहने की वजह से आठ दस साल में उस बच्चे की सिहत इतनी ख़राब हो गई कि यह हड्डियों को ढांचा बन गया, एक वक़्त आया कि उसने अपना मकान भी बेच दिया, अब उसके पास कुछ नहीं था जो उसकी मिलकियत होता, नशा का भी आदी था, ज़रूरत होती तो यह लोगों से भीग मांगता, आप ग़ौर कीजिये कि शहर के जिस चौक पे बाप ने खड़े होके तकब्बुर का बोल बोला था कि "तुम कहते हो कि पैसा आएगा कहां से? और मैं सोचता हूं कि पैसा लगाऊंगा कहां पे? मेरी तो चालीस नसलों को परवाह नहीं" उसी बाप का बेटा उसी चौक के अंदर खड़ा होकर लोगों से भीग मांगा करता। तो बसा औक़ात अल्लाह नक़द सज़ा देके दिखा देते हैं। कई लोगों को देखा कि गुनाहों से इसलिये बचते हैं कि गुनाह करते हैं तो यह ठीक नहीं होता, वह ठीक नहीं होता, चलो कम अज़ कम गुनाह से तो बचे।

सज़ा की दूसरी सूरतः ताख़ीर

गुनाह की सज़ा की एक दूसरी सूरत को कहते हैं ताख़ीर कि इंसान की गुनाहों पे सज़ा तो मिलती है मगर कुछ अर्से के बाद, टाइम Delay (ताख़ीर से) होता है, इसकी मिसाल सुन लीजिये, जुनैद बग़दादी रह0 का एक शार्गिद था, हाफ़िज़े कुर्आन था, उनके साथ जा रहा था, एक जगह पर एक नसरानी लड़का खड़ा था जो बहुत खूबसूरत था, अब ख़ादिम की नज़र उस लड़के पर पड़ी तो वह अच्छा लगा, तो यह जुनैद बग़दादी रह0 से कहने लगाः हज़रत! ऐसी शक्लों को भी अल्लाह जहन्नम में डाल देंगे? हज़रत ने फ़रमाया कि लगता है कि तुमने बदनज़री की है, तौबा कर लो, कहने लगा कि नहीं, मैंने बदनज़री तो नहीं की, बस मैं वैसे ही पूछ रहा हूं, उसने

तौबा न की, उस बदनज़री के एक गुनाह की वजह से यह ख़ादिम जो हाफ़िज़े क़ुर्आन था 20 साल के बाद क़ुर्आन मजीद को भूल गया, इसको ताख़ीर कहते हैं कि इंसान को नक़द तो सज़ा नहीं मिलती, कुछ टाइम के बाद सज़ा मिलती है।

गुनाह को फ़ौरी सज़ा नहीं मिलती इसकी मिसाल कि पांच सात साल के बाद कारोबार ठप्प हो गया, फिर कहते हैं हज़रत! एक वक़्त था मिट्टी को हाथ लगाते थे तो सोना बन जाती थी, आज तो मैं सोने को हाथ लगाता हूं तो मिट्टी बन जाता है, यह इसलिये कि अल्लाह की नेअ़मतों का जब वक़्त था उस वक़्त हमने नेकी करने के बजाए गुनाह को इख़्तियार किया तो कुछ अर्से के बाद अल्लाह ने दी हुई नेअ़मतों को वापस ले लिया, जो परवरदिगार नेअ़मतें देना जानता है वह परवरदिगार लेना भी जानता है।

इसकी एक और मिसाल कि इंसान जवानी में ख़्वाहिशात भरी ज़िंदगी गुज़ारता है, फिर औलाद बड़ी हो जाए तो औलाद तो मां के साथ होती है ऐसे वक़्त में जबकि औलाद मां का साथ दे रही हो और बीवी ख़ाविंद की नाफ़रमान बन जाए तो जितना उस बंदे को बुढ़ापा ख़राब होता है उतना इबरतनाक अंजाम कहीं नहीं हो सकता, यह जवानी की कोताहियों की सज़ा अल्लाह ने बुढ़ापे में दी।

सज़ा की तीसरी सूरतः ख़ुफ़िया तदबीर

तीसरी सूरत को कहते हैं ख़ुफ़िया तदबीरः कि अल्लाह तआला गुनाह करने की वजह से बंदे से ख़फ़ा हो जाते हैं, वह फिर इस तरह सज़ा देते हैं कि उसे पता भी नहीं चलता, मिसाल के तौर पे हर काम अधूरे रह जाएं, कहते हैं कि हज़रत! बस मैं डील करता हूं और डील होते होते रह जाती है, कारोबार चल ही नहीं रहा है, हज़रत! मैंने चार कंट्रीज़ एक्सपोर्ट किये, एक फ़लां जगह रुक गया, दो फ़लां

जगह रुक गए और मुझे उससे वापस पैसे ही नहीं मिलते, यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की खुफ़िया तदबीर होती है कि बंदे के कामों को ऐसे नामुकम्मल कर दिया जाता है कि उसको काम मुकम्मल करने की तौफ़ीक़ करने की तौफ़ीक़ ही नहीं हो पाती।

घर मैं तीन तीन जवान बच्चियां हैं, रिशते ही नहीं आते, बच्चियां शक्ल की भी अच्छी हैं, अक़्ल की भी अच्छी, लिखी पढ़ी भी हैं, लोग आते हैं और देख के तारीफ़ें भी करते हैं और वापस जाके दोबारा नाम ही नहीं लेते, अब जिस आदमी के घर में तीन बच्चियां जवान हों और उसके पास बच्चों के रिशते न आएं तो मां बाप का जो दिल दुखी होती है दूसरा बंदा इसका अंदाज़ा नहीं लगा सकता, यह तो नहीं हो सकता कि खुद हाथ पकड़ के किसी के पास छोड़ आए, उसकी तो तमन्ना यही होती है कि कोई मेरे पास आके रिशता मांगे, लेकिन कोई आता ही नहीं, बच्ची अलग रोती है, मां अलग रोती है, बाप परेशान होता है, यह अल्लाह तआला की खुफ़िया तदबीर होती है कि उसके कामों को हमें मुकम्मल नहीं होने देना है, जिस काम में हाथ डाले वह अधूरा ही रहता है, यह अल्लाह तआला की खुफ़िया तदबीर है।

और कई मर्तबा इंसान अमलों से ऐसे महरूम होता है कि उसको पता भी नहीं चलता, बनी इस्राईल का एक आलिम था वह कहीं Involve (मुतअल्लिक़) हो गया, अब डरता भी था कि मैं गुनाहे कबीरा करता हूं, कहीं मेरे ऊपर इसका अज़ाब न आए तो वह इर्दगिर्द ज़रा देखता कि जो नेअ़मतें उसके पास थीं वह सारी उसी तरह हैं तो वह हैरान भी होता कि मैं गुनाह भी कर रहा हूं और नेअ़मतें भी सलामत हैं तो एक दिन उसने कहा या अल्लाह! तू कितना हिल्म वाला है, मैं तो गुनाह कर रहा हूं और आपने अपनी

नेअ़मतें उसी तरह बाक़ी रखी हुई हैं, तो इल्हाम हुआ कि मेरे बंदे नेअ़मतें तेरे ऊपर इसी तरह नहीं हैं तू नेअ़मतों से महरूम हो रहा है, तुझे इसका पता नहीं चल रहा है, कहने लगाः या अल्लाह मैं किस नेअ़मत से महरूम हुआ तो इल्हाम हुआ कि जिस दिन से तूने कबीरा गुनाह करना शुरू किया, रात के आख़िरी पहर में मुनाजात में जो तू रोया करता था हमने उस दिन से उस नेअ़मत से तुझे महरूम कर दिया, तब उसे पता चला कि वाक़ई गुनाह के दिनों में मुझे रोना ही नहीं आता था, क्या पता कि यह गुनाह की सज़ा हो कि तकबीरे ऊला की तौफ़ीक़ नहीं होती, यह गुनाह की सज़ा है कि तहज्जुद की तौफ़ीक़ नहीं होती, आज तो हम यह सोचते हैं कि हम तहज्जुद नहीं पढ़ते, ऐसी बात नहीं है, यूं सोचें कि मेरे आमाल ऐसे हैं कि तहज्जुद का वक़्त जो अल्लाह के प्यारे बंदों के उठने का वक़्त होता है उस वक़्त अल्लाह तआला मेरी शक्ल को देखना भी पसंद नहीं फ़रमाते, तो फ़रिशते भेज के मुझे थैलियां दे के सुला देते हैं कि पड़े रहो मैं नहीं चाहता कि इस वक़्त तुम्हारी शक्ल देखूं।

गुनाह के सिलसिले में एक उसूली बात

इसी लिये एक उसूल की बात याद रखें कि जब इंसान पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नेअ़मतों की बोहतात हो और फिर वह गुनाहों में पड़ा हुआ हो तो यह ख़तरे की घंटी होती है कि अब रस्सी खिंचेगी और उस बंदे का गला दबा दिया जाएगा लिहाज़ा बेहतर यह है कि इंसान नेअ़मतों की मौजूदगी में अल्लाह से सुलह कर ले, अल्लाह की नाफ़रमानी को छोड़ दे, अल्लाह से दोस्ती कर ले, और अल्लाह के फ़रमांबरदार बंदों में शामिल हो जाए।

दिल की कैफ़ियत को मालूम करने की अलामात

हमारे अकाबिर को अल्लाह तआला जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए

कि उन्होंने Explain (तफ़सील से बयान किया) कर दिया कि नेकी से इंसान का दिल मुनव्वर होता है, गुनाहों से इंसान का दिल सियाह होता है, दिल मुनव्वर हो तो इसकी भी अलामात हैं और दिल सियाह हो तो इसकी भी अलामात हैं तो यह एक Litmus test (फ़ैसल मीज़ान) मिल गया, हर इंसान खुद देख सकता है कि मेरा दिल मुनव्वर है या मेरा दिल सियाह है।

दिल सियाह होने की तीन अलामतें हैं

पहली अलामतः गुनाहों की झिझक ख़त्म होना

पहली अलामत कि गुनाहों की झिझक ख़त्म हो जाती है, गुनाह करना कोई Big deal (बड़ी बात) नज़र नहीं आता, नौजवान लड़का कहता है मैं तो ग़ैर महरम से बड़े आराम से बात कर लेता हूं, लड़की कहेगी कि It is not a big deal for me at all (यह तो मेरे लिये कोई बड़ी बात नहीं) मैं तो लड़कों से आराम से बात कर लेती हूं, यह जो झिझक ख़त्म हो गई, यह जो शर्म ख़त्म हो गई, यह दिल के सियाह होने की पहली अलामत है।

दूसरी अलामतः नेकी करना बोझ महसूस होना

दूसरी अलामत यह है कि नेकी करना बोझ महसूस होता है, तहज्जुद में उठना बोझ, फ़ज्र में उठना बोझ, तिलावत करना बोझ, मस्जिद में जाके नमाज़ पढ़ना बोझ, कोई मस्जिद में ले भी जाए तो मस्जिद से बहार निकलेगा तो ऐसे जैसे तबीअत में निशात आ जाएगा कि पता नहीं किसी मुसीबत से मैं बाहर आ गया।

तीसरी अलामतः नसीहत बुरी लगना

तीसरी बात कि इंसान को नसीहत बुरी लगती है, अगर कोई बंदा से नेकी की बात कर दे कि भाई नमाज़ पढ़ा करो तो जवाब दे

कि अच्छा जी मुझे अपनी क़ब्र में जाना है, तुम्हें अपनी क़ब्र में जाना है, बीवी को कहो कि नमाज़ की पाबंदी किया करो तो वह कहे कि तुम्हारी बहन बड़ी नमाज़ें पढ़ती है?

मैं उसे समझ रहा हूं दुशमन, जो मुझे समझाए है

जो समझाए वह बुरा लगता है, मां समझाए तो वह बुरी, बाप समझाए तो वह बुरा, बीवी कोई अच्छी बात करना चाहे तो वह बुरी, तो यह तीन अलामतें बताती हैं कि दिल सियाह हो चुका है।

दिल मुनव्वर होने की तीन अलामतें हैं

पहली अलामतः चेहरे पे नूर होना

पहली अलामत कि नेकी करने वाले बंदे के चेहरा पे नूर होता है, चेहरा पे ताज़गी होती है, उम्र चाहे जितनी हो जाए मगर चेहरे पे नेकी का नूर होता है, आपका अगर फ़र्क़ देखना हो तो कभी यह Pop star (मौसीक़ी वाले गाने बजाने वाले,) के चेहरों को भी देख लें हवाईयां उड़ी हुईं, बाल बिखरे हुए, चेहरे पे ऐसी नुहूसत होती है कि आंखों से इंसान को नज़र आती है, इनमें से अक्सर की मौत Drugs (नशाआवर अशया) की कसरत इस्तेमाल की वजह से होती है। और दूसरी तरफ़ अल्लाह वालों के चेहरों को देखें, ऐसी मअ़सूमियत और ऐसी जाज़बियत कि इंसान का दिल खिंचता है, देखते देखते तबीअ़त नहीं भरती। तो दिल मुनव्वर होने की यह पहली अलामत है।

दूसरी अलामतः दिल में सुरूर होना

और दूसरी अलामत यह कि इनके दिल में सुरूर होता है, वह अपने अल्लाह से राज़ी होते हैं, ख़ुश होते हैं, अल्लाह जिस हाल में उन्हें रखता है वह उस हाल में अपने मौला से राज़ी होते हैं, पुरसुकून

ज़िंदगी होती है।

तीसरी अलामतः कामों में अल्लाह की मदद होना

और तीसरी बात यह कि उनके कामों में अल्लाह तआला की मदद होती है, चुनांचे जो काम वह करना चाहें कड़ियां जुड़ती चली जाती हैं और काम खुद बखुद हो जाते हैं, ऐसा लगता है कि कोई ग़ैबी ताक़त उनके कामों को सीधा कर देती है। लिहाज़ा कोशिश करें कि हम अपने सियाह लोगों को मुनव्वर बनाएं, गुनाहों से तौबा कर के अल्लाह से अपना तअल्लुक़ जोड़ें और एक नई ज़िंदगी गुज़ारने का आज दिल में इरादा करें।

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ़ रह0 ने एक अजीब बात लिखी है, वह फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन मजीद में अल्लाह तआला का फ़रमान है: "مَنْ يَّعْمَلْ سُوْءً يُّجْزَبِهٖ" जो भी गुनाह करेगा उसको बदला मिल कर रहेगा, तो फ़रमाते हैं कि गुनाह का बदला आग में जलना है, लिहाज़ा जो बंदा भी गुनाह करेगा उसके उस गुनाह की वजह से आग में जलना पड़ेगा, मगर फ़रमाते हैं कि आग दो क़िस्म की है, एक आग तो यह है कि दुनिया में उस गुनाह पर नदामत हो, शर्मिंदगी हां, और इंसान का दिल कुढ़े कि मैंने क्यों गुनाह किया, उसको नदामत की आग कहते हैं, अगर वह बंदा इस दुनिया की नदामत की आग में अपने आप को जला ले तो आख़िरत की आग से आज़ाद हो जाएगा और अगर दुनिया की आग में नहीं जलेगा तो फिर उस बंदे को यक़ीनन जहन्नम की आग में जलना पड़ेगा, अब दोनों में से जो आसान हो वह इख़्तियार कीजिये, हम वह लोग हैं कि धूप की गर्मी तो हम से बर्दाश्त नहीं होती, जहन्नम की गर्मी कैसे बर्दाश्त करेंगे, औरतें खाना बनाते हुए कभी उंगली जला बैठें तो एक एक महीने तक उसकी दर्द नहीं जाती, उंगली के जलने पे इतनी

तकलीफ़ और दर्द होता है, तो जब पूरा जिस्म आग में जल रहा होगा तब क्या हाल होगा, और उस वक़्त तो वहां कोई साथी भी नहीं होगा--

अब तो घबरा के यह कहते हैं कि मर जाएंगे
मर के भी चैन न पाया तो किधर जाएंगे

तो आज वक़्त है कि हम अपने गुनाहों से सच्ची पक्की तौबा कर लें, अपने अल्लाह से दोस्ती कर लें, अल्लाह के फ़रमांबरदार बंदों में शामिल हो जाएं और आइंदा नेकूकारी की ज़िंदगी गुज़ारें, अल्लाह तआला हमें अपने मक़्बूल बंदों में शामिल फ़रमाए।

وآخر دعْوانا أنِ الْحمد للّٰهِ ربِّ الْعالمين

अगले सफ़्हा पर आप जो ख़िताब मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, वह हैदराबाद के ईदगाह बिलाल हाकी ग्राउंड, के वसीअ़ व अरीज़ मैदान में हुआ था, तारीख़: 16 अप्रेल 2011 बरोज़ हफ़्ता, वक़्त: बअ़द नमाज़े इशा, मुहताते तुख़मीना के मुताबिक़ हाज़िरीन की तादाद 90 हज़ार से एक लाख बताई जाती है।

रहमतुल लिल आलमीन सल्ल0

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

اعوذ بالله من الشيطان الرجيم، بسم الله الرحمٰن الرحيم

اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَآوٰى

سبحان ربک رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العلمين

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

इन्आम से पहले इम्तिहान

घरों में Medicine (दवाओं) की बोतलों पे यह इबारत लिखी होती है: Shake well before use नीज़ Juices (जूस,) बोतलों पर भी यह लिखा होता है Shake well before use कि इस्तेमाल करने से पहले उसको अच्छी तरह हिला लें। यूं समझ लीजिये कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां भी सुन्नत यही है कि जिस बंदे को इन्आम से नवाज़ना होता है इन्आम देने से पहले उसको अच्छी तरह आज़माते हैं।

इब्राहीम अलै0 को मंसबे इमामत मिलने से पहले आज़माइश

इसकी दलील भी क़ुर्आने अज़ीमुश्शान में है, अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं: "وَاِذِ ابْتَلٰى اِبْرَاهِيْمَ رَبُّهٗ بِكَلِمَاتٍ" और याद करो उस वक़्त को जब आज़माया इब्राहीम को उसके रब ने चंद बातों में "فَاَتَمَّهُنَّ" और वह उसमें कामियाब हुए "فَاَتَمَّهُنَّ" का मअ़नी है "مائة فى المائة" Cent per cent (सद फ़ीसद) कि इब्राहीम अलै0 100% से कामियाब हो गए और रब्बे करीम ने फ़रमाया:

"اِنِّى جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا" ऐ मेरे इब्राहीम! मैं आपको इंसानों का इमाम बनाता हूं, देखिये इमामत का मंसब अता करना था तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इमामुन्नास बनाने से पहले उनको आज़माया, क्योंकि जब भी कोई नेअ़मत मिलती होती है उससे पहले अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त आज़माते हैं।

पिछली उम्मतों की आज़माइश

पहली उम्मतों में भी आज़माइश इतनी हुई कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रमायाः "مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَاءُ وَالضَّرَّاءُ وَزُلْزِلُوْا" उनको तंगदस्ती, मुफ़्लिसी, और तकालीफ़ पहुंची, और उनको झिंझोड़ कर रख दिया गया "حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ آمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ" हत्ता कि अल्लाह के रसूल और ईमान वाले यह पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी।

सहाबए किराम रज़ि० की आज़माइश

सहाबा रज़ि० के साथ भी यही मुआमला हुआ, कुर्आन मजीद में हैः "هُنَالِكَ ابْتُلِىَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا" अल्लाह तआला ने खूब आज़माया फिर उनको ऐसी नेअ़मत मिली कि फ़रमायाः "رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ" तो यह एक दस्तूर है, यह सुन्नते खुदावंदी है कि जब किसी को नेअ़मत से नवाज़ना चाहते हैं तो उसको अच्छी तरह झिंझोड़ते हैं, आज़माते हैं।

हुज़ूर सल्ल० के दादा अब्दुल मुत्तलिब पर आज़माइश

अल्लाह के प्यारे हबीब सल्ल० को जब इस दुनिया में तशरीफ़ लाना था तो आपकी तशरीफ़ आवरी से पहले अल्लाह तआला ने तीन क़रीबी रिशतादारों को आज़माया, सब से पहले आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब को आज़माया—उनका नाम "शैबा" था, इसकी वजह यह थी कि सर के अंदर कुछ बाल पैदाइशी सफ़ेद थे जो मां के

पेट से पैदा हुए थे, तो बचपन से ही बालों की एक लट सफ़ेद थी, इस वजह से उनका नाम शैबा रखा गया, बहुत ज़्यादा वह खूबसूरत थे---अल्लाह की शान कि बचपन में वह यतीम हो गए, तो उनकी वालिदा सलमा मदीना तय्यबा से थीं, वह ख़ाविंद की वफ़ात के बाद वापस अपने मैके मदीना तय्यबा आ गईं, तो यह भी अपनी वालिदा के साथ आ गए, मैके में गुर्बत बहुत थी, न खाना मिलता था न पहनना मिलता था, इसलिये अब्दुल मुत्तलिब का लड़कपन बहुत गुर्बत में गुज़रा। एक मर्तबा एक हारिसी क़बीला का शख़्स मदीना तय्यबा गया, उसने देखा कि कुछ नौजवान तीर अंदाज़ी कर रहे हैं, और उनमें एक लड़का ऐसा है कि जब निशाना लगाता है तो बिल्कुल सही सही निशाना लगाता है और निशाना ठीक लगने के बाद वह बड़ी खुशी से कहता है कि मैं उस ख़ानदान का शख़्स हूं जिस ख़ानदान के हर बंदे का निशाना ठीक जगह पर लगना उसे ज़ेब देता है, तो उसने पूछा कि यह कौन है? उसे बताया गया कि यह क़ुरैश की औलाद है, यतीम हो गया, और अब यह अपनी वालिदा के साथ गुर्बत की ज़िंदगी गुज़ार रहा है, वह उनके चचा मुत्तलिब के दोस्त थे, चुनांचे वह हारिसी शख़्स वापस मक्का मुकर्रमा गया और उसने वहां जाकर अब्दुल मुत्तलिब को कहा कि तुम्हारा भतीजा इतनी गुर्बत की ज़िंदगी गुज़ार रहा हैं, तुम लोग इतने अमीर लोग हो, उमरा में से हो, तुम अपने भाई के बेटे की किफ़ालत नहीं कर सकते? अपने भाई के बेटे को नहीं पाल सकते? उसने मुत्तलिब को इतना उकसाया कि उसने क़सम खा ली कि जब तक मैं अपने भतीजे को वापस नहीं ले आऊंगा मैं चैन से नहीं बैठूंगा, चुनांचे मुत्तलिब मदीना गए, उसकी वालिदा से बात की मैं अपने भाई के बेटे को वापस मक्का मुकर्रमा ले जाना चाहता हों, वह मां थी, पहले तो वह घबराई

कि मैं बच्चे की दूरी बर्दाश्त नहीं कर सकूंगी, फिर लोगों ने समझाया कि तेरे बेटे की परवरिश अच्छी हो गई, कुछ बन जाएगा, तेरे लिये तो खुशी का बाइस होगा, चुनांचे मां आमदा हो गई, मतलब अपने छोटे भतीजे को अपनी सवारी पर बिठा के ले आए, जब मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए तो लोगों ने देखा कि आगे मुत्तलिब हैं और पीछे एक नौजवान लड़का है, तो लोगों ने समझा कि यह अपने लिये वहां से कोई गुलाम लाया है, चुनांचे उनका नाम अब्दुल मुत्तलिब पड़ गया, हालांकि यह चचा के गुलाम तो नहीं थे, मगर नाम अब्दुल मुत्तलिब पड़ गया। तो यह नबी सल्ल० के दादा, जब मक्का मुकर्रमा में उन्होंने रहना शुरू किया, चूंकि उनके अंदर क़ाइदाना सलाहियतें थीं, यह मुआमला फ़नहमी रखते थे, Crisis management (हंगामी हालात से निमटने की सलाहियत) उनको आती थी, Decision making (कुव्वते फ़ैसला) बहुत अच्छी थी, लोगों के साथ अच्छे अख़्लाक़ के साथ पेश आते थे, चुनांचे जब यह जवान हुए तो कुरैश के लोगों ने मुत्तफ़िक़ा तौर पर उनको बैतुल्लाह का इंचार्ज बना दिया, और बैतुललाह की कुंजियां अब्दुल मुत्तलिब के हाथ में आ गईं, यूं अब्दुल मुत्तलिब बैतुल्लाह के कुंजी बिरादर बन गए। वक़्त अच्छा गुज़रने लगा।

हुजूर सल्ल० के वालिद अब्दुल्लाह पर आज़माइश

दूसरी आज़माइश उनके बेटे पर आई, उनके कई बेटे थे, जिन में से एक का नाम थाः अब्दुल्लाह, जो छोटा भी था, सबसे ज़्यादा खूबसूरत भी था। वह आज़माइश ऐसे आई कि अब्दुल मुत्तलिब ने सुन रखा था कि अल्लाह के घर के क़रीब कोई जगह है जहां ज़मज़म का कुंवां था, वक़्त के साथ वह बंद हो गया और उस ज़माने में सबसे बड़ी प्राबलम पानी का न होना था, न पीने को पानी

मिलता था, न जीने को पानी मिलता था, लोग बहुत मुश्किल में थे, अब्दुल मुत्तलिब को शौक़ हुआ, उन्होंने मुख़्तलिफ़ जगहों से ज़मीन की खुदाई शुरू कर दी, यह अकेले ज़मीन खोदते रहते, कोई उन्हें बेवकूफ़ समझता, कोई दीवाना समझता, गर्मी के मौसम में पसीना बह रहा है और यह ज़मीन खोद रहे हैं, चाहते थे कि मुझे वह कुंवा मिल जाए जिस से ज़मज़म निकला था, चुनांचे जब उन्होंने खूब मेहनत कर ली और कुंवा न निकला तो उन्होंने मन्नत मांगी कि अगर अल्लाह तआला ने ज़मज़म का पानी मुझे अता कर दिया और वह कुंवा मिल गया तो अपने बेटों में से एक बेटे को अल्लाह के नाम पे कुर्बान करूंगा, अल्लाह की शान कि कुछ अर्सा गुज़रा कि उन्होंने खोदते खोदते एक चट्टान देखी वह चट्टान असल में कुंवे के मुंह पर रख के किसी ने बंद किया हुआ था, चट्टान तोड़ने की देर थी कि नीचे से पानी निकल आया, यह बात अह्ले मक्का के लिये सबसे ज़्यादा खुशी का बाइस थी कि ज़मज़म का पानी मिल गया, आबादी खुशी के साथ वहां आबाद हो जाएगी, चुनांचे लोग बड़े खुश थे कि हमारे कबीले के सरदार ने पानी को ढूंढ लिया, मगर अब्दुल मुत्तलिब दिल में ग़मज़दा भी बड़े थे कि अब मुझे अपनी औलाद में से किसी बेटे को कुर्बान करना पड़ेगा, चुनांचे उन्होंने सब बच्चों के नाम लिखे और कुर्आ डाला कि मैं किस बच्चे को अल्लाह के नाम पे कुर्बान करूं, अल्लाह तआला की शान देखिये कि अब्दुल्लाह जो बच्चों में सबसे ज़्यादा खूबसूरत था, ज़्यादा प्यारा था, छोटा था, उसी के नाम कुर्आ पड़ गया, चुनांचे अब्दुल मुत्तलिब ने फ़ैसला कर लिया कि मैं अब्दुल्लाह को अल्लाह के नाम पे कुर्बान करूंगा, लोगों ने सुना तो उन्होंने आके समझाया कि नहीं, अब्दुल्लाह को तुम कुर्बान न करो, अब्दुल्लाह के बदले ऊंट अल्लाह के रास्ते में कुर्बान कर दो,

चुनांचे अब्दुल मुत्तलिब ने कुर्आ डालना शुरू किया कि मैं अब्दुल्लाह को कुर्बान करूं या दस ऊंटों को? कुर्आ अब्दुल्लाह के नाम निकला, दोबारा कुर्आ डाला कि मैं अब्दुल्लाह को कुर्बान करूं या बीस ऊंटों को? कुर्आ अब्दुल्लाह के नाम निकला, फिर तीस ऊंट, फिर चालीस ऊंट, जब सौ ऊंट की तादाद पहुंची तब कुर्आ निकला कि सौ ऊंट कुर्बान कर दिये जाएं, तो अब्दुल मुत्तलिब ने अब्दुल्लाह की जगह सौ ऊंटों की कुर्बानी की, और हज़रत अब्दुल्लाह "ذبیح اللّٰه" कहलाए, अल्लाह के नाम पे कुर्बान होने वाले। चुनांचे एक मर्तबा एक आराबी नबी सल्ल0 की ख़िदमत में आया, कहने लगा "يا ابن الذَّبِيحَين!" ऐ दो ज़बीह होने वालों के बेटे! तो नबी सल्ल0 मुस्कुराए, फ़रमायाः हां! मेरे अज्दाद में दो ज़बीह अल्लाह थे, एक इस्माईल अलै0 ज़बीहुल्लाह थे और एक मेरे वालिद अब्दुल्लाह ज़बीहुल्लाह। यह अब्दुल्लाह पर आज़माइश थी।

हुज़ूर सल्ल0 की वालिदा पर आज़माइश

तीसरी आज़माइश नबी सल्ल0 की वालिदा माजिदा पर आई, उनका नाम था आमिना, मदीना तय्यबा की रहने वाली थीं, जब अब्दुल मुत्तलिब ने अपने बेटे की शादी करने का इरादा किया तो उन्हें नबी ज़ुहरा में से रिशता लेने का ख़्याल आया, चुनांचे वह अपने बेटे के लिये गए और आमिना का रिशता पसंद किया और ले कर आए, अल्लाह की शान देखिये कि बच्चा भी जो जवान था और बच्ची की भी इब्तिदा जवानी की उम्र थी, शादी हो गई, अभी 6 महीने मियां बीवी दोनों घर में इकट्ठे रहे कि इतने में एक क़ाफ़िले को शाम तिजारत का सफ़र करना था, तो अब्दुल्लाह ने सोचा कि अब तो मैं शादीशुदा हो गया, मुझे चाहिये कि मैं कोई तिजारती सफ़र करूं, जो उसमें से बचेगा तो घर की ज़रूरतें पूरी होंगी,

अब्दुल्लाह ने तिजारत की नियत कर ली, आमिना के लिये यह बड़ी ग़मनाक ख़बर थी कि 6 महीने शादी को हुए और अभी ख़ाविंद की जुदाई! और उस ज़माने के सफ़र कोई महीना 15 दिन के नहीं होते थे, महीनों के सफ़र होते थे, लम्बी जुदाई हुआ करती थी, चुनांचे जब अब्दुल्लाह रुख़सत होने लगे तो उस वक़्त आमिना उम्मीद से भी थीं, ग़म से भी थीं, उनकी नमनाक आंखों को देख कर उनका दिल रखने के लिये अब्दुल्लाह ने कहा कि देखें! मैं सफ़र पे जा रहा हूं, मैं आप को बहुत Miss करूंगा, आप मुझे बहुत याद आएंगी, मेरे साथ एक वादा करो कि जब क़ाफ़िला वापस लौट कर आएगा तो तुम जब ख़बर सुन लेना तो बन संवर के तुम आके दरवाज़े के अंदर खड़ी हो जाना, मैं जैसे ही दरवाज़ा पे पहुंचूं तुम मुझे اهلاً وسهلاً कहना, असल में तो अब्दुल्लाह उनके ग़म को थोड़ा कम करना चाहते थे, तो बीवी ने वादा कर लिया कि जब आप वापस आएंगे तो मैं आपका इंतेज़ार दरवाज़ा के क़रीब आके करूंगी, अब्दुल्लाह चले गए, अल्लाह की शान देखें कि तिजारती सफ़र बहुत अच्छा रहा, मक्का मुकर्रमा से पहले मदीना जाते थे, मदीना से आगे शाम जाते थे और वापसी पर फिर मदीना आता था, फिर मक्का मुकर्रमा, जब यह लोग सफ़र से वापस आ रहे थे तो सफ़र में हज़रत अब्दुल्लाह बहुत बीमार हो गए, बुख़ार हो गया, तबीअत कमज़ोर हो गई, जब मदीना तय्यबा पहुंचे तो वहां चूंकि सुसराल थी, तो बनू ज़ुहरा वालों ने कहा कि इस हालत में सफ़र बहुत ज़्यादा तकलीफ़ का बाइस है, आप अब्दुल्लाह को हमारे पास छोड़ दो, हम उनका इलाज व मुआलिजा करेंगे, ख़िदमत करेंगे, सिहतमंद होंगे तो पहुंचा देंगे, चुनांचे बाक़ी क़ाफ़िला वाले दो चार दिन क़याम के बाद मक्का मुकर्रमा चल पड़े और हज़रत अब्दुल्लाह वहीं मदीना मुनव्वरा में रह गए, जब यह क़ाफ़िला मक्का

मुकर्रमा पहुंचा तो मक्का मुकर्रमा के अंदर एक खुशी थी, हर घर के अंदर औरतें खुश थीं कि हमारे मियां आ रहें हैं, बच्चे खुश थे कि हमारे अब्बू आ रहे हैं, जब क़ाफ़िला के पहुंचने की ख़बर मिली तो बीबी आमिना भी खुश हुई, नहाईं, अच्छे कपड़े पहने, चाहतीं थीं कि मैं दरवाज़ा के क़रीब जाकर अपने ख़ाविंद का इस्तिक़्बाल करूं, और मैं अपना वादा पूरा करूं, लेकिन दरवाज़ा के क़रीब खड़े बहुत देर गुज़र गई, हज़रत अब्दुल्लाह आते ही नहीं थे, पता करवाया कि कहां हैं, लोगों ने कहा कि क़ाफ़िला के सब लोग तो घरों को चले गए, पीछे तो कोई नहीं बचा, फिर पता करवाया कि हज़रत अब्दुल्लाह कहां हैं? इत्तिला मिली कि वह बीमार थे, मदीना तय्यबा रह गए और आ नहीं सके, बीबी आमिना के लिये यह बहुत ग़म की ख़बर थी कि जिस ख़ाविंद के इंतेज़ार में इतनी देर खड़ी रहीं वह अभी भी घर नहीं पहुंचे, चुनांचे क़रीब के रिश्तादारों ने सोचा कि हम मदीना जाते हैं और हज़रत अब्दुल्लाह को वापस लेकर आते हैं, मगर अल्लाह की शान कुछ और चाहती थी, उन लोगों के जाने से पहले हज़रत अब्दुल्लाह की वहां मदीना तय्यबा में वफ़ात हो गई, जब वफ़ात हुई तो हज़रत अब्दुल्लाह की उम्र 18 साल थी, बीबी आमिना की उम्र 16 साल थी, हामिला भी थीं और अभी चंद महीने उनको उम्मीद के गुज़रे थे, अब ज़रा अंदाज़ा लगाइये कि जिस लड़की की उम्र 16 साल हो और वह हामिला भी हो, उसको अपने ख़ाविंद की वफ़ात होने की इत्तिला मिले तो उसके दिल पर यह कितना बड़ा ग़म हुआ करता है, बीबी आमिना की यह आज़माइश बहुत बड़ी थी, चुनांचे वह ग़मज़दा रहती थीं, आंखों में से आंसू आ रहे थे, ख़ाविंद भी जुदा हो गया और 16 साल की उम्र में शादी के बाद चंद महीने ही ख़ाविंद के पास रहने का मौक़ा मिला। बहरहाल तीन क़रीबी

रिशतादारों के ऊपर आज़माइश आई, एक दादा पर, दूसरी वालिदा माजिदा और तीसरी वालिदा के ऊपर, तीनों पर आज़माइशें आने के बाद फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने हबीब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद मुज्तबा सल्ल0 को इस दुनिया के अंदर भेजा।

हुज़ूर सल्ल0 की विलादत से पहले अलामात का ज़ुहूर

बीबी आमिना उम्मीद से तो थीं ही, वह बड़ी हैरान होती थीं कि अब मुझे सात महीने मुकम्मल हो चुके, न मुझे उबकाई आई, न मुझे कोई और अलामत महसूस हुई, लेकिन यह Confirm (यक़ीनी) था कि बतन में बच्चा परवरिश पा रहा है, अलबत्ता आम औरतों को जो अलामात महसूस होती हैं कि खाना अच्छा नहीं लगता, तबीअत अच्छीन नहीं रहती, उनको इनमें से कोई अलामत भी महसूस नहीं होती थी, मगर एक दो चीज़ें वह और भी नोट करती थीं कि जब बीबी आमिना चलने लगतीं तो दरख़्तों की टहनियां उनकी तरफ़ झुक जाती थीं, ऐसे लगता था कि टहनियां भी झुक कर बीबी आमिना को सलाम कर रही हैं, कभी कभी वह यह भी देखतीं कि रात के वक़्त में बैतुल्लाह जाने के लिये वह अपने घर से निकलीं तो आसमान के सितारे क़रीब आ गए, यूं लगता था कि आसमान के सितारे भी उनको सलाम कर रहे हैं, मगर एक बात बड़ी पक्की थी, वह यह कि घर की ज़रूरत के लिये जब वह ज़मज़म भरने के लिये जाती थीं तो ज़मज़म का पानी जो आम तौर से नीचे होता था, जब बीबी आमिना वहां पहुंचतीं तो पानी बिल्कुल किनारे के क़रीब आ जाता था, उनको डोल डाल कर खींचना नहीं पड़ता था, वह ऊपर से ही पानी ले लेती थीं, और यह बात इतनी आम थी कि मक्का मुकर्रमा की और लड़कियां भी पानी भरने जातीं तो वह बीबी आमिना को पकड़ के खड़ा कर देती कि आमिना! आप न हिलो, पानी ऊपर है, हमें भर

लेने दो, वर्ना पानी नीचे हो जाएगा। तो बीबी आमिना भी यह तमाम अलामात महसूस करतीं और उनको भी Feel (महसूस) होता कि मेरे बतन में जो बच्चा है लगता है कोई बड़ा बाबरकत है, लेकिन ज़ाहिर में मियां फ़ौत हो चुके थे, घर के अंदर ख़र्चे की कमी थी, अब एक सुर्ख़ सितारा आसमान के ऊपर चमकने लगा, पहली किताबों में एक निशानी बताई गई थी कि जब नबी आख़िरुज़्ज़मां दुनिया में तशरीफ़ लाएंगे तो उनके आने से पहले सुर्ख़ सितारा चमकेगा, जब सुर्ख़ सितारा चमकना शुरू हुआ तो यहूदी अह्ले किताब के घरों के अंदर तो ग़लग़ला मच गया कि अब उस नबी के पैदा होने का वक़्त क़रीब है, चुनांचे मदीना तय्यबा में जितनी औरतें उम्मीद से थीं उन्होंने उनका पता करवाया, फिर यह पता करवाया कि किसके वहां बच्चे की विलादत क़रीब है, पता चला कि सैकड़ों औरतें हामिला हैं मगर अभी तो सब को कई महीने बाक़ी हैं तो, फिर उन्होंने मक्का मुकर्रमा में पता करवाया, उनको पता चला कि बनू हाशिम में अब्दुल मुत्तलिब के यहां जो बीवी थी वह उम्मीद से है और विलादत भी क़रीब है, चूंकि उनका रिशता बनू इस्माईल से मिलता था इस पर उन यहूदियों के ऊपर बड़ा ग़म हुआ, मगर अल्लाह तआला को जो मक़्सूद था वही होकर रहा।

जिस रात नबी सल्ल0 की विलादत बा सआदत होनी थी घर के अंदर चिराग़ में डालने के लिये तेल भी नहीं था, बीबी आमिना के घर में तंगदस्ती इतनी थी कि चिराग़ जलाने के लिये तेल भी मौजूद नहीं था, मगर आप सल्ल0 की विलादत सुब्ह सेहरी के वक़्त हुई, सेहरी के वक़्त विलादत का मक़्सद यह था कि लोगो! रात का अंधेरा जब चला जाता है तो सुब्ह की सफ़ेदी आ जाती है, यह ऐसे मेहमान दुनिया में तशरीफ़ लाए हैं कि आज के बाद ज़ुल्म और शिर्क

की रात ख़त्म हो जाएगी और अब दुनिया के अंदर ईमान का उजाला आ जाएगा।

कुछ अलामतें और भी थीं एक तो यह कि फ़ारिस का जो बादशाह किस्रा था, उसके महल के चौदह कंगरे गिर गए, तो ताबीर पूछी, उन्होंने कहा कि कोई ऐसा बच्चा पैदा हुआ है जो आप से तख़्त व ताज छीन लेगा, लेकिन चौदह नस्लों के बाद, वह बड़ा खुश हो गया, हालांकि उसको नहीं पता था कि उसके बाद उसके जो जानशीन बनेंगे वह थोड़े अर्से में मरते जाएंगे, चुनांचे उस्मान ग़नी रज़ि0 के ज़माने में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने यह अलामत भी पूरी कर दी।

एक और बात हुई कि किस्रा ने यह ख़्वाब देखा कि उसके घोड़े हैं और उन घोड़ों को ऊंटों वाले लोग जज़ीरए अरब से बाहर निकाल रहे हैं, तो ताबीर देने वाले ने ताबीर दी कि अरब लोग इतने मज़बूत बन जाएंगे कि यह बाहर से जाने वाली ताक़तों और कुव्वतों को वापस धकेल देंगे। ईरान के अंदर एक आतिश कदा था जिसके आग एक हज़ार साल से मुसलसल जल रही थी, उस रात वह आग भी अचानक बुझ गई। यह अलामात थीं जिसके ज़रीआ रब्बुल इज़्ज़त ने मख़्लूक़ को यह पैग़ाम पहुंचा दिया कि देखो! अब दुनिया को हिदायत देने वाले, दुनिया के लिये शम्ए हिदायत बन कर आने वाले दुनिया में आ रहे हैं, अब कुफ़्र और शिर्क का वक़्त ख़त्म हो गया, अब ईमान का वक़्त शुरू हो गया। चुनांचे जब नबी सल्ल0 की विलादत बा सआदत हुई तो आप सल्ल0 लेटे हुए थे, आपने बिस्तर के ऊपर सज्दा भी किया और आप सल्ल0 को आप के दादा ने जब देखा तो बड़े खुश हुए कि मेरा पोता इतना खूबसूरत है, फिर वह आप को लेकर बैतुल्लाह गए, उस ज़माने का दस्तूर यही था कि जब

भी बच्चा पैदा होता था तो औरतें हुसूले बरकत के लिये सब से पहले उसे बैतुल्लाह भेजती थीं कि वहां उसके लिये दुआ की जाए, चुनांचे अब्दुल मुत्तलिब अपने पोते को लेकर गए मगर उन्हें क्या पता था कि मैं हुसूले बरकत के लिये जिस बच्चे को लेकर जा रहा हूं यह बच्चा तो जहानों के लिये रहमतुल लिल आलमीन बन के आ रहा है।

हुज़ूर सल्ल० का इस्मे गिरामी मुहम्मद

अब एक बात और कि जिस बंदे ने बच्चा देखा उसने कहाः अब्दुल मुत्तलिब इतना ख़ूबसूरत बच्चा तो कभी देखा नहीं, इतना प्यारा बच्चा तो कभी देखा नहीं, यह तो बड़ा Cute (दिलकश) नज़र आता है, यह तो बहुत Beautiful (ख़ूबसूरत) है, जब सब ने तारीफ़ें कीं तो अल्लाह ने अब्दुल मुत्तलिब के दिल में नाम डाला कि मैं इसका नाम वह रखूं जिसकी बहुत ज़्यादा तारीफ़ें की गईं, चुनांचे उन्होंने "मुहम्मद" नाम तजवीज़ किया मुहम्मद का मतलब होता है कि वह ज़ात जिसकी दुनिया में इतनी तारीफ़ें की जाएं कि मख़्लूक़ में से किसी की इतनी तारीफ़ें न की गई हों, बहुत प्यारा नाम है। फिर एक नाम अहमद भी रखा गया कि वह ज़ात जो अल्लाह तआला की इतनी तारीफ़ें करे कि इतनी तारीफ़ें किसी और ने की ही न हो, आप सल्ल० मुहम्मद भी थे और आप सल्ल० अहमद भी थे।

जिसका रब उसी का सब

जब दुनिया में पैदा हुए तो आप यतीम थे, अल्लाह ने दुनिया में दिखा दिया कि लोगो! यतीम का तो बाप नहीं होता, लोग समझते हैं बेसहारा होता है, लेकिन याद रखो जिस का "अब" नहीं होता उसका रब होता है और जिसका रब होता है फिर उसी का सब हुआ करता है।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने हबीब सल्ल0 को क्या नेअ़मतें अता फ़रमाईं, चुनांचे आसमान के सितारे झुकने में भी हिक्मत थी, यह Message (पैग़ाम) दिया गया कि देखो आसमान की मख़्लूक़ भी अगर उसके सामने झुक रही है तो ऐ ज़मीन पर बसने वालो! तुम्हें भी उसके सामने ज़ानूए अदब तह करना पड़ेगा, फिर यह भी बताना था कि जो उसकी शागिर्दी को इख़्तियार करेंगे वह उसी तरह शान पाएंगे, जिस तरह आसमान के सितारे होते हैं वह लोग ज़मीन के सितारे कहलाएंगे, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "أَصْحَابِیْ كَالنُّجُوْمِ بِأَيِّهِمُ اقْتَدَيْتُمْ اِهْتَدَيْتُمْ" फिर यह भी बताया कि देखो जब आसमानी मख़्लूक़ भी उनका एहतिराम कर रही है तो दुनिया वालो! तुम्हें सरदारी उस वक़्त मिलेगी जब तुम लोग उनके क़दमों में आओगे, तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने चंद बातों के ज़रीआ दुनिया को यह पैग़ाम दे दिया।

नबी सल्ल0 की पैदाइश को कुछ दिन हुए थे कि अजीब बात हुई कि मक्का मुकर्रमा से कोई सौ डेढ़ सौ किलोमीटर दूर एक बस्ती है, जो बनू सअ़द की बस्ती कहलाती है, उसकी चंद औरतों ने आपस में मशवरा किया कि हम चलें और मक्का मुकर्रमा से कुछ बच्चे अपने पास ले आएं, उनको यहां पालेंगे और जब वापस ले जाएंगे तो हमें उनके वालिदैन से इन्आम मिलेगा तो एक Income (आमदनी) का ज़रीआ बन जाएगा।

इस ज़माने में अपने बच्चों को इस तरह दीहातों में भेज दिया जाता था, इससे एक तो उनको बीमारियां नहीं होती थीं जैस वाईरस की बीमारियां होती हैं, चूंकि मक्का मुकर्रमा जो था यह चौराहा था मुख़्तलिफ़ मुल्कों के क़ाफ़िले यहां से गुज़रते रहते थे और क़ाफ़िलों से Virus type (एक से दूसरे में मुंतक़िल हो जाने वाली) की

बीमारियां भी आती रहती थीं, तो लोग छोटे बच्चों को वहां रखने से ज़रा घबराते थे, वह दीहात भेज देते थे। और एक बात और भी है कि यहां बाहर के क़ाफ़िलों के आने की वजह से बच्चों की ज़बान इतनी शुस्ता नहीं होती थी जो अरबों की होनी चाहिये थी, तो दीहात में भेजने से वह साहिबे ज़बान भी अच्छे बन जाते थे।

चुनांचे दस औरतों ने नियत की कि हम मक्का मुकर्रमा जाती हैं, उनमें एक औरत थी जिनका नाम था हलीमा, वह भी अपने ख़ाविंद के साथ चल पड़ी, उसके पास एक ऊंटनी थी और एक गधी थी लेकिन दोनों कमज़ोर थे, क्योंकि खाने को कुछ मिलता नहीं था, अब बाक़ी औरतों की सवारियां तो ताज़ा दम थीं, वह आगे निकल जातीं और हलीमा पीछे रह जातीं तो बाक़ी औरतों को रुक कर हलीमा के आने का इंतेज़ार करना पड़ता, चार पांच मर्तबा वह मुख़्तलिफ़ जगहों पर रुकीं और हलीमा का इंतेज़ार किया, फिर उन्होंने कहाः हलीमा! हमारा सफ़र भी खोटा हो रहा है, अगर इजाज़त दो तो हम पहले चली जाती हैं, तुम बाद में आ जाना, हलीमा ने कहा जाओ, चुनांचे वह बाक़ी 9 औरतें जो थीं वह सब की सब जल्दी मक्का मुकर्रमा आ गईं, हलीमा कमज़ोर सवारी की वजह से पीछे रह गईं।

मक्का मुकर्रमा से आने वाली औरतों ने कोशिश की कि अमीर लोगों के बच्चे अपनी गोद में लें, एक दो औरतें हज़रत आमिना के यहां आईं, बच्चे को देखा पूछा कि वालिद क्या करते हैं, बताया गया कि उसके वालिद तो फ़ौत हो चुके, उन्होंने सोचा कि जब बाप ही सर पे नहीं है अब हमें इन्आम कौन देगा, चुनांचे यतीम समझ कर छोड़ के आगे चली गईं, अब उनके इस अमल से बीबी आमिना को बड़ा दुख हुआ और वह सोचने लगीं कि काश! मेरा ख़ाविंद ज़िंदा

होता, वह मेरे बच्चे को परवरिश देने में खुद मदद करता, फिर बच्चा ज़रा बड़ा होता तो उंगली पकड़ के मेरे बच्चे को अपने साथ मस्जिद में और बैतुल्लाह में ले जाता, बच्चे के सर पे बाप का साया होता वह बच्चे को खिलौने लाके देता मगर रब्बे करीम को कुछ मंजूर था कि आमिना! तुम क्यों परेशान होती हो कि उसको वालिद खिलौने लेके नहीं देता, उस बच्चे ने तो वह शान पाई है कि आने वाले वक़्त में हम आसमान के चांद को उसके लिये खिलौना बना देंगे, यह उंगली का इशारा करेगा और चांद के दो टुक्ड़े हो जाएंगे, इसके वालिद इसको क्या बाज़ारों की सैर करवाते, वक़्त आएगा कि हम इस बच्चे को अर्श पर बुलाएंगे और हम उसको यहां पर जन्नत की सैर करवाएंगे, आमिना! तो क्यों परेशान होती है, बहरहाल बीबी आमिना ग़मज़दा थीं।

हलीमा सअ़दिया की सआदतमंदी

जब हलीमा सअ़दिया पहुंचीं तो पता चला कि मक्का मुकर्रमा में एक ही बच्चा है, मालूम किया वालिद क्या करते हैं, पता चला कि वालिद तो वफ़ात पा गए, तो हलीमा सअ़दिया के दिल पर भी यह बात अजीब सी लगी, वह फ़रमाती हैं कि मैंने सोचा मैं ज़रा बच्चे का चेहरा तो देखूं, बच्चा लेटा हुआ था और उसके ऊपर कपड़ा डाला हुआ था, हलीमा फ़रमाती हैं कि मैंने जैसे ही कपड़ा थोड़ा सा हटाया बच्चे ने मुस्कुरा कर आंखें खोलीं और मेरी तरफ़ देखा, उसकी मुस्कुराहट में कुछ ऐसी जाज़बियत थी कि मैंने उसको बोसा दिया और उठा कर सीना से लगा लिया, मैंने दिल में सोचा कि उसके वालिद से इन्आम मिलेगा या नहीं, हलीमा! तुम इस बच्चे को पालोगी तो इसकी मुस्कुराहट तो तुम्हें मिला करेगी, अब हलीमा लेने के लिये तैयार हो गई।

हुजूर सल्ल0 का हुस्न बेमिसाल

तो हलीमा ने तारीफ़ की, कहने लगी आमिना! तुम्हारा बच्चा तो बड़ा खूबसूरत है, मैंने तो कभी गांव में ऐसा खूबसूरत बच्चा नहीं देखा, इस पर बीबी आमिना ने फ़रमायाः हलीमा! तू गांव की रहने वाली है, तूने गांव में कोई ऐसा खूबसूरत बच्चा नहीं देखा, मैं तो शहर की रहने वाली हूं, मैंने शहरों में कोई ऐसा खूबसूरत बच्चा नहीं देखा, अब्दुल मुत्तलिब क़रीब में थे, उन्होंने कहा कि आमिना! तू शहर में ज़िंदगी गुज़ारती है और मैं तो मुल्कों का सफ़र कर चुका हूं, मैंने मुल्कों में भी ऐसा खूबसूरत बच्चा नहीं देखा, इस मौक़ा पर अगर जिब्रईल अलै0 से पूछा जाता कि आप भी ज़रा अपने Comment (तब्सिरा) दे दीजिये तो जिब्रईल अलै0 कहते कि अब्दुल मुत्तलिब! आप तो चंद मुल्कों में फिरे हो, मैं तो सारी दुनिया को देख चुका हूं--

आफ़ाक़हा गर दीदा अम   महृर बतां वरज़ीदा अम
बिस्यार खूबां दीदा अम   अमातू चीज़े दीगरी

मैंने ऐसा खूबसूरत बच्चा पूरी दुनिया में कहीं नहीं देखा, और अगर इस मौक़ा पे तसव्वुर यह सोचे कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त क्या फ़रमाएंगे तो शायद अल्लाह तआला यह फ़रमातेः हलीमा! तूने गांव में ऐसा न देखा, आमिना! तूने शहर में न देखा, अब्दुल मुत्तलिब तूने मुल्कों में न देखा! जिब्रईल तूने दुनिया में कहीं न देखा, मैं परवरदिगार बतलाता हूं, मैंने अपनी पूरी मख़्लूक़ में ऐसा खूबसूरत कोई नहीं देखा--

वल्लैल सियाही जुल्फ़ों की   चेहर वज़्जुहा उसका
सारे जहां का प्यारा है   आप मुहिब्ब हैं खुदा उसका
रब ने बनाया जब उसको   खुद आप कहा सुब्हानल्लाह

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जब अपने हबीब सल्ल० को बनाया तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को ख़ुशी हो गई, वाक़ई अल्लाह के ख़ज़ाने में उन जैसा खूबसूरत कोई और था ही नहीं।

अब हलीमा बच्चा लेने के लिये तैयार, आमिना बच्चा देने के लिये तैयार, अल्लाह की शान पे कुर्बान जाएं अल्लाह ने अपने हबीब सल्ल० को किन औरतों के हाथों में दिया? अल्लाह तआला ने मां उस को बनाया जो आमिना थीं, यअ़नी अमानत की हिफ़ाज़त करने वाली थीं कि यह मेरी अमानत है, और परवरिश करने वाली वह जो हलीमा यअ़नी हिल्म वाली थीं, इसलिये कि बच्चे को परवरिश देने वाली औरत में अगर हिल्म न हो तो वह बात बात पे डांटेगी।

वालिदा की दुआओं का सम्रा

बीबी आमिना ने बच्चे को दुआएं दीं और उसको अल्लाह के सिपुर्द करके हलीमा सअ़दिया की गोद में दे दिया---याद रखना कि जब भी मां दुआएं देकर किसी बच्चे को रुख़्सत करती है अल्लाह तआला की सिफ़त है कि हमेशा उस बच्चे को चार चांद लगा दिया करते हैं, यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां दस्तूर है, ज़रा सोचिये मूसा अलै० की वालिदा ने अपने बच्चे को दुआओं के ज़रीआ दरया के अंदर डाल कर रुख़्सत किया, जब चले थे तो मूसा थे, लौट कर आए तो कलीमुल्लाह बन गए। हज़रत इस्माईल अलै० को उनकी वालिदा ने इब्राहीम अलै० के कहने पे नहलाया कि बड़े की मुलाक़ात के लिये जा रहे हैं और दुआओं से रुख़्सत किया, जब चले तो इस्माईल थे और जब लौट कर आते तो इस्माईल ज़बीहुल्लाह बन चुके थे। और इधर शैबा को देखिये कि मां ने उनको उनके चचा के साथ मदीना से रुख़्सत किया, चला तो शैबा था मक्का मुकर्रमा पहुंचा तो अब्दुल मुत्तलिब बना, फिर अल्लाह ने बैतुल्लाह की चाबी

उनको दिला दी, चुनांचे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रहमत का एक वक़्त आया कि जब वह वालिये बैतुल्लाह बन गए, तो कोई मूसा कलीमुल्लाह बना, कोई इस्माईल ज़बीहुल्लाह बना, कोई वालिये बैतुल्लाह बना, यह बच्चा मां की दुआएं लेकर रुख़्सत हो रहा है, लोग नहीं जानते थे कि एक वक़्त आएगा कि यही बच्चा लौटेगा तो मुहम्मद रसूलुल्लाह बनेगा। आज के नौजवान बच्चे अपनी वालिदा की दुआओं की अहमियत को नहीं समझ पाते, दिल दुखा देते हैं, उनके सामने ज़बानदराज़ी करते हैं, दुख देते हैं, हालांकि अगर यह वालिद की ख़िदमत करें और दुआ लें तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उनके नसीब खोल दे, अल्लाह तआला उनकी परेशानियों को ख़त्म करे। नबी सल्ल0 के पास एक सहाबी रज़ि0 आते हैं कि बड़ा गुनाह हो गया फ़रमाया कि वालिदा ज़िंदा हैं? कहाः जी! ज़िंदा हैं, फ़रमाया जाओ, वालिदा से दुआ करवाओ, वालिदा की दुआ के ज़रीआ अल्लाह तेरे बड़े गुनाह को भी मुआफ़ फ़रमा देंगे।

अब हलीमा सअ़दिया ने उस बच्चे को अपने सीने से लगाया और बाहर निकली, ख़ाविंद इंतेज़ार में था, ख़ाविंद ने कहा कि हलीमा! किस बच्चे को ले आईं? इसका वालिद क्या करता है? उन्होंने बतलाया कि वालिद तो इसका फ़ौत हो चुका, तो हलीमा के ख़ाविंद ने कहा किः "عَسَى اللّٰهُ أَنْ يَجْعَلَ لَنَا فِيْهِ بَرَكَةً" उम्मीद करते हैं कि अल्लाह तआला हमारे लिये इसमें बरकत डाल देंगे।

हुज़ूर सल्ल0 को पीछे बैठा कर ऊंटनी चलने पर राज़ी नहीं

अब हलीमा के ख़ाविंद सफ़र के लिये तैयार हो गए, उन्होंने पहले हलीमा को बैठाया, फिर हलीमा की गोद में बच्चा था, फिर आगे वह ख़ुद बैठे, सवारी को उठाना चाहा तो सवारी उठ ही नहीं रही है, बड़े हैरान कि सवारी को क्या हुआ, उठ क्यों नहीं रही है,

खुद नीचे उतरे, जैसे ही नीचे उतरे सवारी उठ गई, फिर बैठाया कि मैं ऊपर बैठूं, जब ऊपर बैठते हैं तो सवारी नहीं उठती, इस तरह दो दफ़्आ ऐसा करने के बाद उन्होंने कहा हलीमा! तुम ज़रा आगे बैठो, हलीमा को आगे बैठाया, उसकी बोद में बच्चा था, वह खुद पीछे बैठे, जैसे ही पीछे बैठे सवारी उठ खड़ी हुई और चलने के लिये तैयार हो गई। अल्लाह तआला को बताना मक़्सूद था कि यह बच्चा जो पूरी काइनात का सद्रे मक़ाम रखता है, तुम इसको अपनी पीठ के पीछे बैठा के सफ़र कैसे कर सकते हो? आगे बैठाना पड़ेगा, उसको उसका मक़ाम देना पड़ेगा, अब जो सवारी चली तो भागती जा रही है, भागती जा रही है, हत्ता कि औरतें जो बहुत पहले से चली थीं, वह अभी रास्ते में थीं कि यह सवारी उनके क़रीब से होके आगे गुज़रने लगी, बनू सअ़द की वह औरतें बड़ी हैरान हुईं पूछने लगीं: हलीमा! तूने सवारी बदल ली? हलीमा ने मुस्कुरा कर देखा और जवाब दिया: मैंने सवारी तो नहीं बदली, अलबत्ता मेरी सवारी का सवार बदल गया।

बनू सअ़द के हर घर में खुशबू फूट पड़ी

हदीसे मुबारक के अंदर आता है कि हलीमा सअ़दिया जब बच्चे को लेकर पहुंची तो बनू सअ़द के घरों में से कोई घर ऐसा नहीं था जहां से गुलाब के फूलों की खुशबू न आ रही हो, पूरी बस्ती के अंदर खुशबूएं थीं, जैसे किसी ने रूम फ़्रेशनर पूरी बस्ती के अंदर छिड़क दिया हो, यह मलाइका के ज़रीआ अल्लाह ने अपने महबूब सल्ल0 के इस्तिक़्बाल का मुआमला कर दिया कि हर घर से खुशबू आ रही थी।

बकरियों के सूखे थन दूध से लबरेज़ हो गए

एक और बात अजीब थी कि जब हलीमा सअ़दिया अपने घर

पहुंचीं, उसकी चंद बकरियां थीं, जो दूध ही नहीं देते थीं, आज जब जाके देखा कि उन बकरियों के थन दूध से भरे हुए, उनके ख़ाविंद ने दूध निकालना शुरू किया, घर के जितने बर्तन थे सारे के सारे दूध से भर गए, ख़ाविंद कहने लगे हलीमा! लगता है इस बच्चे के अंदर बड़ी बरकतें हैं, हलीमा के ख़ाविंद बड़े ख़ुश हो गए और घर के अंदर एक नई ज़िंदगी शुरू हो गई।

ग़रीब घराने में परवरिश कराने में अल्लाह की हिक्मत

देखें अगर अल्लाह तआला चाहते तो अपने हबीब सल्ल0 की परवरिश महल में भी करवा सकते थे, अल्लाह ने बअ़ज़ अंबिया की परवरिश महल में करवाई, मूसा अलै0 को महल में पाला, यूसुफ़ अलै0 को महल में पाला, अपने हबीब सल्ल0 को भी महल में पाल सकते थे, मगर अल्लाह तआला तो दिखाना चाहते थे कि देखो! यह बच्चा उस घर में जा रहा है जहां बकरियों के थनों में दूध नहीं होता, अब अगर उस घर के अंदर बरकतें आ रही हैं तो आंख से देखकर सोचने वाले फ़ैसला करलें कि यह बरकतें सारी उस वजूदे मसऊद की वजह से हैं जिसको उस घर के अंदर भेजा गया है।

हुज़ूर सल्ल0 का दूध पीने में भी इंसाफ़ का मुआमला

बीबी हलीमा ने एक और बात भी नोट की, उसकी परवरिश में एक और बच्चा भी था तो वह देखती कि यह बच्चा यअ़नी मुहम्मद सल्ल0 उसको उन्होंने पहली दफ़अ़ा जिस तरफ़ से दूध पिलाया बच्चा फ़क़त उधर से ही दूध पीता था, दूसरी तरफ़ से दूध पिलाने भी लगती तो दूध नहीं पीता था, वह बड़ी हैरान हुइ कि यह क्या मुआमला है, चुनांचे उनके दो तरफ़ के दूध में तक़सीम हो गई, एक तरफ़ से एक बच्चा दूध पीता और दूसरी तरफ़ से दूसरा बच्चा दूध पीता, यह इसलिये था कि अल्लाह तआला बताना चाहते थे कि देखो

कल जिस हस्ती को सारी काइनात को इंसाफ़ की तालीम देनी है, कोई यह भी इल्ज़ाम न लगा सके कि छोटे होते हुए यह अपने दूध शरीक भाई के हिस्से का दूध पी जाया करते थे, इसलिये अल्लाह ने पहले से तक़सीम कर दी ताकि मेरे महबूब सल्ल0 पे धब्बा लगने का इम्कान ही न रहे, एक तरफ़ से दूध पीते थे।

बकरियां चराने के दौरान पेश आने वाले चंद वाक़िआत

नबी सल्ल0 चार साल हलीमा सअ़दिया के घर रहे, इन चार सालों में एक दो और अजीब वाक़िआत हुए, हलीमा की बेटी थी जिसका नाम था शीमा, जवानुल उम्र थी, वह बकरियों को चराने के लिये जाया करती थी, एक दिन देर हो गई और वह बकरियों को लेकर नहीं गई, हलीमा ने कहाः बेटी! आज तू बकरियां चराने नहीं ले गई? शीमा ने कहाः अम्मां! बकरियां ज़्यादा हैं, मैं अकेली हूं, इनके पीछे पीछे भाग भाग के मैं थक जाती हूं, मेरे साथ कोई और भी हो तब मैं जाऊंगी, उसने कहाः बेटी! मैं भी बूढ़ी हूं, तेरा बाप भी बूढ़ा है, तू ही घर में जवानुल उम्र है, यह मशक़्क़त का काम तो तुम ही कर सकती हो, हम तो मदद नहीं कर सकते, उसने कहाः अम्मां! यह जो मेरा भाई मुहम्मद है, उसको मेरे साथ कर दें, हलीमा ने कहाः क्या बात कर रही हो! तुम बकरियों के पीछे भागोगी या भाई को संभालोगी? उसने कहाः अम्मां! अगर भाई को भेजेंगी तो मैं बकरियां चराने जाऊंगी, नहीं भेजेंगी तो मैं बकरियां चराने नहीं जाती, मुझसे नहीं संभाली जातीं तो पूछाः भाई को ले के जाओगी तो कैसे संभालोगी? कहा कि अम्मां! मैं एक दिन भाई को साथ लेकर गई थी, मैंने दो तीन चीज़ें अजीब देखीं, एक बात तो यह कि जितनी देर में बाहर रही बादल ने मेरे ऊपर साया किया रहा, मुझे धूप नहीं उठानी पड़ी, मुझे अल्लाह ने साया दिया, और दूसरी चीज़ मैंने यह

नोट की कि एक दो राहिब क़रीब़ से गुज़र रहे थे उन्होंने उस बच्चे को देखा तो वह आए, उन्होंने बच्चे को प्यार किया, कहने लगे कि उसके चेहरे पे बड़ा नूर नज़र आ रहा है, यह बड़ी हस्ती बनेगा। मुझे यह बात भी बड़ी अच्छी लगी कि लोग मेरे भाई की तारीफ़ें कर रहे थे। और अम्मां! तीसरी बात यह है कि जब मैं गई तो मैं भाई को एक जगह पर गोद में लेकर बैठ गई, मेरी बकरियां खुद बखुद चरने लगीं, उन्होंने जल्दी जल्दी घास चर लिया और फिर जिस जगह मैं बैठी थी वह सारी बकरियां वहीं आकर बैठ गईं, अम्मां! मैं भी भाई का चेहरा देखती रही और मेरी बकरियां भी मेरे भाई का चेहरा देखती रहीं, अल्लाहु अक्बर। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने हबीब सल्ल0 को क्या हुस्न व जमाल अता फ़रमाया था!

وَأَحْسَنُ مِنْكَ لَمْ تَرَقَطُّ عَيْنِى   وَأَجْمَلُ مِنْكَ لَمْ تَلِدِ النِّسَاءُ
خُلِقْتَ مُبَرَّأً مِنْ كُلِّ عَيْبٍ   كَأَنَّكَ قَدْ خُلِقْتَ كَمَا تَشَاء

हुज़ूर सल्ल0 की वालिदा हज़रत आमिना की वफ़ात

एक दिन ऐसा हुआ कि फ़रिशते आए और उन्होंने नबी सल्ल0 का सीनए अनवर खोला और उसको धोया, इस वाक़िआ से बीबी सअ़दिया ज़रा घबरा गईं कि इस बच्चे के साथ कुछ हो न जाए, बेहतर है कि मैं इसको इसकी मां के पास पहुंचा आऊं, चुनांचे चार साल की उम्र में हलीमा सअ़दिया ने नबी सल्ल0 को उनकी वालिदा के पास वापस पहुंचा दिया, बीबी आमिना ने उनको दो साल मक्का मुकर्रमा में रखा, जब 6 साल की उम्र हो गई तो उस वक़्त बीबी आमिना ने इरादा किया कि मैं अपने मैके से मिलने के लिये मदीना तय्यबा जाती हूं, चुनांचे नबी सल्ल0 को लेकर वह अपने मैके मिलने के लिये आईं और एक बांदी भी साथ थी जो ख़िदमत करती थी, अब अललाह की शान देखिये कि जब वह मदीना तय्यबा पहुंचीं तो

उनके दिल में ख़्याल आया कि मैं अपने ख़ाविंद की क़ब्र पर जाऊं, कुछ पढ के बख़्श दूंगी, चुनांचे वह अपने ख़ाविंद हज़रत अब्दुल्लाह की क़ब्र पर पहुंचीं, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि मैं 6 साल की उम्र का था, छोटा था, जब मैं वहां गया तो मेरी वालिदा के होंट हिल रहे थे, शायद वह कुछ बातें कर रही थीं, मेरी वालिदा की आंखों से आंसू जारी हो गए और वालिदा को रोता देख कर मैं भी रोने लग गया, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि क्या गुफ़्तगू थी वह तो याद नहीं, यक़ीनन यही गुफ़्तगू होगी कि अब्दुल्लाह! आप ने मुझसे वादा किया था कि मैं लौट कर आऊंगा, मैं तो आप का इंतेज़ार करती रही, आप मक्का मुकर्रमा भी न आए और आपने दुनिया से आंखें ही बंद कर लीं, अब्दुल्लाह! तुम एक निशानी मुझे दे कर गए थे, मैं आज अपने इस बेटे को लेकर आई हूं, काश! आप ज़िंदा होते, इस बच्चे के चेहरे को देखते, यह कितना खूबसूरत है, आपका भी दिल ख़ुश होता, बीबी आमिना ऐसे ही ख़्यालात में मगन होंगी, मगर ख़ाविंद का ख़्याल आकर आंखों में आंसू आ गए, अल्लाह के नबी सल्ल0 फ़रमाते हैं कि अपनी वालिदा को रोता देखकर मेरी आंखों में भी आंसू आ गए। फिर बीबी आमिना ने वापसी का सफ़र किया, अब ज़रा अल्लाह की शान देखिये कि जब वापसी का सफ़र करना था तो अबूआ के मक़ाम पर पहुंचीं तो वहां बीबी आमिना की भी वफ़ात हो गई, नबी सल्ल0 की हालत और कैफ़ियत देखिये कि वालिद पहले वफ़ात पा चुके थे, 6 साल की उम्र है और अब वालिदा भी वफ़ात पा चुकीं, वह जो साथ में बांदी थी, उसने नबी सल्ल0 को लिया और लेकर मक्का मुकर्रमा आई, इधर अब्दुल मुत्तलिब का यह हाल था कि वह अपने पोते की जुदाई से बहुत ज़्यादा उदास थे, रोज़ाना मक्का मुकर्रमा से बाहर रास्ते पर निकल कर घंटों इंतेज़ार करते थे

कि मेरी बहू कब आएगी और मेरे पोते को कब लेकर आएगी, मगर आमिना तो आती ही नहीं थी, एक दिन ऐसा लगा कि कोई आ रही है और आने वाली देखी भाली लग रही थी, अंदाज़ा लगाया तो वह उसकी बांदी थी तो अब्दुल मुत्तलिब हैरान हुए, अब्दुल मुत्तलिब ने बांदी से पूछा कि आमिना कहां है? उस वक़्त बांदी ने कहा कि यह वह बच्चा है कि उसके वालिद का साया पहले ही सर से उठ गया, अब रास्ते में उसकी वालिदा भी फ़ौत हो गई, मैं उस अकेले बच्चे को लेकर आप के पास आई हूं। चुनांचे नबी सल्ल0 अपने दादा की किफ़ालत में रहने लग गए, एक वक़्त आया कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने दादा को भी बुला लिया, फिर आप अपने चचा के पास आ गए।

हुज़ूर सल्ल0 को हर ज़ाहिरी सहारे से महरूम करने का मक़्सद

यह असल में सहारे थे, लोगों का सहारा बाप होता है, मां होती है, दादा होता है, चचा होता है, अल्लाह तआला ने आप की मुबारक ज़िंदगी में यह सारे सहारे तोड़ने शुरू कर दिये, बताना यह मक़्सूद था कि जिसको दुनिया के अंदर वहदानियत का पैग़ाम देना है, दुनिया कहेगी ख़ुद तो सहारों से परवरिश पाते रहे और दुनिया के अंदर नफ़ा उठाते रहे, अब हमें ग़ैर का सहारा लेने से मना करते हैं; अल्लाह ने फ़रमाया कि देखो मेरे महबूब को कोई धब्बा न लगा सके, मैं एक एक कर के सब सहारों को तोड़ देता हूं और फिर बता देता हूं कि लोगो! तुम्हारी नज़र में यह जो यतीम था, अल्लाह ने उसकी परवरिश की और अल्लाह ने उसको दुर्रे यतीम बना कर दिखा दिया।

रज़ाई बहन के साथ हुज़ूर सल्ल0 का सुलूक

फिर नबी सल्ल0 को अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने दुनिया में यह शान अता फ़रमाई कि एक वक़्त आया आपको अल्लाह ने वह्ये

सआदत से फ़राज़ फ़रमाया, आपने फिर कलिमा की तालीम देनी शुरू की, वह मक्का वाले जो बहुत मुहब्बत करने वाले समझे जाते थे वही मुख़ालिफ़ बन गए, फिर एक वक़्त आया कि नबी सल्ल० ने हिज्रत फ़रमा ली, फिर एक वक़्त आया कि नबी सल्ल० को अल्लाह तआला ने मक्का का फ़ातेह बनाकर वापस भेज दिया, फिर हुनैन का मैदान आया, वहां पर अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्ल० को बहुत ज़्यादा माले ग़नीमत अता किया, चालीस हज़ार बकरियां थीं, 6 हज़ार क़ैदी थे, अल्लाह की शान देखिये! उन क़ैदियों में नबी सल्ल० की बहन शीमा भी आई, चुनांचे नबी सल्ल० तशरीफ़ फ़रमा हैं, एक सहाबी रज़ि० आकर कहते हैं कि ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल०! एक औरत है वह कहती है कि मैं आपके नबी की बहन हूं, उनसे मिलना चाहती हूं, नबी सल्ल० सुन कर हैरान हुए कि मैं तो अब्दुल्लाह का अकेला बेटा हूं, मेरी बहन तो कोई नहीं, कौन है जो कहती है कि मैं बहन हूं, फिर आप ने फ़रमायाः अच्छा उसे आने दो, शीमा उस वक़्त बहुत उम्र रसीदा हो चुकी थीं, वह आई और कहने लगीं कि मैं आपकी दूध शरीक बहन हूं, आपकी परवरिश हलीमा सअ़दिया ने की और मैं आपको गोद में ले के उस वक़्त लोरी दिया करती थीः "رَبَّنَا أَبْقِ لَنَا مُحَمَّدًا" अल्लाह! हमारे मुहम्मद को सलामत रखना, मैं आपकी इज़्ज़तों की दुआएं मांगती थी, मुझे नहीं पता था कि एक वक़्त आएगा कि अल्लाह आपको इतनी इज़्ज़तें देंगे कि मैं भी क़ैदी बन कर आप के हाथों में यहां पहुंच जाऊंगी। फिर हलीमा ने दिखाया कि देखिये! फ़ला जगह पर जब आप के नए नए दांत आए थे, आपने काटा भी था और मुझको निशान पड़ गया था, नबी सल्ल० को याद आ गया, आपने फ़रमायाः हां तुम मेरी बहन हो, वाक़ई बचपन में ऐसा हुआ था, फिर नबी सल्ल० ने चादर बिछा कर

उसको ऊपर बैठाया, पूछाः मेरे पास रहना चाहती हो तो आपकी किफ़ालत मैं करूंगा, जाना चाहती हो तो नान नफ़क़ा देकर भेज दूंगा, फिर नबी सल्ल0 ने उसे बहुत सारा नान नफ़क़ा भी दिया, वह कहने लगी कि मेरे क़बीला के लोग कहेंगे कि ख़ुद आज़ाद होके आ गई, बाक़ियों का ख़्याल न रखा, नबी सल्ल0 ने क़बीले के बाक़ी लोगों को भी आज़ाद फ़रमा दिया और दुनिया को बता दिया कि देखो बहन को इस तरह इज़्ज़तों से रवाना करते हैं।

अल्लाह तआला के हबीब सल्ल0 को यतीमों से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "اَلَمْ یَجِدْكَ یَتِیْمًا فَاٰوٰی" ऐ मेरे हबीब सल्ल0! क्या हमने आपको यतीम नहीं पाया और हमने आपको ठिकाना नहीं दिया? तो अल्लाह तआला ने वाक़ई आपको यतीम पाया, और यतीम बना दिया, अल्लाह तआला ने आपको काइनात का सरदार बना दिया, अल्लाह तआला ने आपको वह शान अता फ़रमाई कि ख़ुदा अपनी ख़ुदाई में अगर यक्ता है तो आपके प्यारे हबीब हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अपनी मुस्तफ़ाई में यक्ता हैं, कोई और रहमतुल लिलआलमीन नहीं हो सकता था, अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्ल0 को यह शान अता फ़रमाई।

यतीम के साथ नबी सल्ल0 के बरताव का एक नमूना

नबी सल्ल0 को यतीमों से कितनी मुहब्बत थी, एक मर्तबा ईद का दिन था, नबी सल्ल0 अपने मुबारक घर से ईदगाह की तरफ़ तशरीफ़ ले जा रहे थे, मक्का मुकर्रमा की गली के अंदर कुछ बच्चे खेल रहे थे, नहाए धोए हुए थे, अच्छे कपड़े पहने हुए थे और आप सल्ल0 जब क़रीब से गुज़रे तो सबने सलाम किया, जब आप सल्ल0 आगे गए तो एक बच्चे को देखा कि कपड़े भी मैले हैं, चेहरे पे भी उदासी है, ख़ामोश बैठा हुआ है, नबी सल्ल0 के बढ़ते क़दम रुक गए, आक़ा सल्ल0 ने पूछाः ऐ बच्चे तू कौन है? उसने कहाः मैं

यतीमे मदीना हूं, मेरे वालिद फ़ौत हो गए, अपने वालिद को याद कर रहा हूं कि वह ज़िंदा होते तो मुझे नए कपड़े लाके देते, मैं भी अच्छे कपड़े पहन के उन बच्चों के साथ खेलता, मैं अपने वालिद को याद कर रहा हूं, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः अच्छा तुम मेरे साथ आओ, चुनांचे आप सल्ल0 ने उस यतीम बच्चे को अपने साथ लिया, आगे जाने के बजाए वापस अपने घर तशरीफ़ लाए, सय्दा आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 ने फ़रमायाः हुमैरा! इस छोटे बच्चे को नहलाओ, उम्मुल मोमिनीन रज़ि0 ने उस छोटे बच्चे को नहला दिया, इतने में नबी सल्ल0 ने सय्यदा फ़ातिमातुज़्ज़ोह्रा रज़ि0 को पैग़ाम भेज दिया कि हसन के हम उम्र बच्चा है, हसन का कोई लिबास धुला हो तो भेज दो, उधर से धुला हुआ लिबास आ गया, बच्चे को नया लिबास पहना दिया गया, सय्यदा आइशा रज़ि0 ने उसके तेल लगाया, कंघी की, ख़ुशबू लगाई, आंखों में सुर्मा डाल कर तैयार कर दिया, अब वह बच्चा नबी सल्ल0 के साथ चलने के लिये तैयार हो गया, अल्लाह के हबीब सल्ल0 उससे सवाल करते हैं तो अपने वालिद के साथ ईद की नमाज़ पढ़ने जाता था? उसने कहाः जी मैं जाता था, पूछाः वह कैसे लेके जाते थे? बताया कि मैं अपने वालिद के कंधों पे सवार होके जाता था, नबी सल्ल0 नीचे बैठ जाते हैं, बच्चे को कहा कि आओ तुम मेरे कंधों के ऊपर बैठ जाओ, वह बच्चा नबी सल्ल0 के मुबारक कंधों पर बैठ जाता है, अल्लाह के हबीब सल्ल0 उस यतीम बच्चे को कंधों पर बैठा कर बाहर तशरीफ़ लाते हैं, वह जो बच्चे बाहर खेल रहे थे वह बड़े हैरान हुए कि बच्चा अकेला रो रहा था, कोई पूछता नहीं था, अब नबी सल्ल0 उसे लेकर गए और नहाया नज़र आ रहा है, अच्छे कपड़े हैं, सुर्मा लगा हुआ है, ख़ुशबू हुई है, अब नबी सल्ल0 के कंधों पर बैठा हुआ है, तो लड़कों ने आंखों आंखों में इशारे से पूछा क्या मुआमला है? उस यतीम बच्चे ने दूर से कहा कि अल्लाह

के हबीब सल्ल0 ने मुझे अपना बेटा बना लिया, जब उसने यह कहा तो जो बच्चे थे उनमें से एक बच्चे ने ठंडी सांस ली और कहने लगाः काश! मैं भी यतीम होता और अल्लाह के हबीब सल्ल0 मुझे भी अपना बेटा बना लेते।

आप सल्ल0 उस यतीम बच्चे को लेकर ईदगाह आते हैं, आप सल्ल0 मिंबर के ऊपर बैठे, किताबों में लिखा है कि वह बच्चा नीचे ज़मीन पर बैठने लगा, अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने फ़रमायाः नहीं, आज तू नीचे ज़मीन पे नहीं बैठेगा, मिंबर के ऊपर जहां मैं बैठा हूं मेरे साथ बैठेगा, उस बच्च को आप सल्ल0 ने अपने क़रीब बैठा कर ख़ुत्बा दिया, फ़रमायाः लोगो! अगर कोई यतीम के सर पर शफ़क़त का हाथ रखता है तो सर के नीचे जितने बाल होते हैं अल्लाह तआला उतने बालों के बराबर नेकियां उस बंदे के नामए आमाल में लिख देते हैं। आक़ा सल्ल0 ने उस यतीम बच्चे के सर पर अपना हाथ रख कर यह बात सुनाई, मेरे आक़ा सल्ल0 ने इंसानियत को सबक़ दे दिया कि लोगो! अक्सर लोग तो यतीमों के माल हड़प कर जाते हैं, यतीमों के लिये वह ज़ालिम बन जाते हैं, लेकिन देखो मैं दुनिया में हर एक के लिये शफ़क़त और रहमत बन बर आया हूं, आक़ा सल्ल0 को यतीमों से इतनी मुहब्बत थी, अल्लाह तआला हमें भी ग़रीबों, मिस्कीनों और यतीमों के साथ सच्ची मुहब्बत अता फ़रमाए और दुनिया में नबी सल्ल0 के ख़ुल्क़ का नमूना बन कर रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

मेरे आक़ा सल्ल0 दुनिया में आए तो दुनिया के अंदर दुआएं पूरी हो गईं किसी ने कहाः

ख़लीलुल्लाह ने जिसके लिये हक़ से दुआएं कीं

ज़बीहुल्लाह ने वक़्ते ज़ब्ह जिसकी इल्तिजाएं कीं
जो बन कर रौशनी फिर दीदए याकूब में आया
जिसे यूसुफ़ ने अपने हुस्न के नीरंग में पाया

कलीमुल्लाह का दिल रौशन हुआ जिस ज़ूफ़शानी से
वह जिसकी आरज़ू भड़की जिबाते लन तरानी से

वह जिसके नाम पे दाऊद ने नग़मा सराई की
वह जिसकी याद में शाहे सुलैमान ने गदाई की

दिले यहया में अरमां रह गए जिसकी ज़ियारत के
लबे ईसा पे आए वअ़ज़ जिसकी शाने रहमत के

वह दिन आया कि पूरे हो गए तौरात के वादे
ख़ुदा ने आज पूरे कर दिये हर बात के वादे

मुबारक हो कि ख़त्मुल मुरसलीं तशरीफ़ ले आए
जनाबे रहमतुल लिल आलमीन तशरीफ़ ले आए

अल्लाह ने आपको हर सिफ़त अता फ़रमाई, जो सिफ़त किसी भी इंसान के लिये मुम्किन हो सकती थी, अल्लाह ने हर सिफ़त अपने हबीब सल्ल0 को अता फ़रमाई, बल्कि अरबी ज़बान के अंदर जितने हुरूफ़ हैं, उन हुरूफ़ से जितने सिफ़ाती अल्फ़ाज़ बनते हैं अल्लाह ने तमाम सिफ़ात अपने हबीब सल्ल0 को अता फ़रमाई। चुनांचे नबी सल्ल0 तशरीफ़ लाए तो "الف" बोलीः लोगो! देखो दुनिया में अहमद आ गए, उम्मी आ गए, औला आ गए। "ب"

कहने लगीः दुनिया के अंदर बशीर आ गए, "ت" ने कहाः दुनिया के अंदर तनवीर आ गए, "ث" ने कहाः दुनिया के अंदर साक़िब आ गए, "ج" ने कहाः दुनिया में जव्वाद आ गए, जमील आ गए, "ح" ने कहाः दुनिया में हामिद आ गए, हबीब आ गए, हाफ़िज़ आ गए, हकीम आ गए, हिजाज़ी आ गए। "خ" ने कहाः दुनिया में ख़ाशेअ़ आ गए, ख़त्मुल मुरसलीन आ गए। "د" ने कहाः दुनिया के अंदर दाई आ गए "دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا" "ذ" ने कहाः दुनिया के अंदर ज़की आ गए। "ر" बोलीः दुनिया के अंदर रसूल आ गए, रहमतुल लिल आलमीन आ गए, रशीद आ गए, रफ़ीक़ आ गए। "ز" ने कहाः दुनिया के अंदर ज़ाइरे बैतुल्लाह आ गए। "س" ने कहाः दुनिया में सईद आ गए, सिराज आ गए। "ش" ने कहाः दुनिया के अंदर शाफ़ेअ़ आ गए, शकूर आ गए, शहीद आ गए। "ص" ने कहाः सफ़ियुल्लाह आ गए। "ض" ने कहाः दुनिया के ज़ामिन आ गए। "ط" ने कहाः तय्यब आ गए, ताहिर आ गए, ताहा आ गए। "ظ" ने कहाः दुनिया में ज़ाहिर आ गए। "ع" बोलीः दुनिया में अब्दुल्लाह आ गए, अज़ीज़ आ गए, आदिल आ गए। "غ" ने कहाः दुनिया के अंदर ग़य्यूर आ गए। "ف" बोलीः दुनिया में फ़ातेह आ गए। "ق" ने कहाः दुनिया में क़ासिम आ गए, क़ारी आ गए, क़वी आ गए। "ك" बोलीः दुनिया में कामिल आ गए, कफ़ील आ गए, कौसर वाले आगए। "ل" ने कहाः दुनिया के अंदर लईक़ आ गए। "م" बोलीः दुनिया के अंदर मुहम्मद आ गए, महमूद आ गए, मुदस्सर आ गए, मुज़म्मिल आ गए, मुस्तफ़ा आ गए, मंसूर आ गए। "ن" ने कहाः दुनिया के अंदर नज़ीर आ गए, नाशिर आ गए, नासिर आ गए। "و" बोलीः दुनिया के अंदर वकील आ गए, वली आ गए। "ه" कहने लगीः दुनिया के अंदर हादी आ गए,

हाशिमी आ गए। "ء" ने कहाः दुनिया के अंदर अव्वल आ गए, आख़िर आ गए, अमीन आ गए। "ى" बाक़ी रह गई थी, कहने लगी सुनो लोगो! दुनिया के अंदर यासीन आ गए, दुनिया के अंदर यतीम आ गए, जिसके बारे में अल्लाह फ़रमाते हैं: "اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَـــــاٰوٰى" ऐ मेरे हबीब हमने आप को यतीम पाया, हमने आपको ठिकाना दिया, देखिये जितने हुरूफ़ हैं इन हुरूफ़ से जितनी खुसूसियतें बनती हैं, जितने सिफ़ाती नाम बनते हैं, अल्लाह ने सब सिफ़ात अपने हबीब सल्ल0 को अता फ़रमा दें, मैं सलाम करता हूं उस हस्ती की अज़मत को जिसको हमने दुनिया के अंदर क़ाइद माना है, वह अहमद मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल0 जिन्होंने इंसानियत को तकरीमे इंसानियत का दर्स दिया, जो रहमत बन कर दुनिया में तशरीफ़ लाए। अल्लाह तआला हमें अपने ज़ाहिर को उनकी सुन्नतों से सजाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और उनकी तालीमात के मुताबिक़ पूरी ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

وآخرُ دعُوانا أنِ الحمد لله ربِّ العالمين

☆☆☆

अगले सफ़्हा पर आप जो ख़िताब मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, वह हैदराबाद के "ख़्वाजा फ़ंक्शन हाल" में हुआ था। तारीख़ 17 अप्रेल 2011 ई0 बरोज़ इतवार, वक़्तः साढ़े ग्यारह बजे दिन यह प्रोग्राम ख़ुसूसी तौर पर सिर्फ़ कालिज के तलबा और प्रोफ़ेशनल हज़रात के लिये रखा गया था, मगर मज्मा के शौक़ ने किसी भी तरह का फ़र्क़ बाक़ी न रहने दिया, और बिला तफ़रीक़ के फ़रज़ंदाने तौहीद की कसीर तादाद हाज़िर थी।

मुस्बत और मन्फ़ी तर्ज़े फ़िक्र के नताइज

الحمد للّٰہ و کفی وسلام علی عبادہ الذین اصطفی، اما بعد
اعوذ باللّٰہ من الشیطان الرجیم، بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم
اِنَّ فِیْ ذٰلِکَ لَاٰیاتٍ لِقَوْمٍ یَّتَفَکَّرُوْنَ
سبحان ربک رَبِّ العزۃ عما یصفون، وسلام علی المرسلین، والحمد للّٰہ رب العلمین
اللھم صل علی سیدنا محمد و علی ال سیدنا محمد وبارک وسلم
اللھم صل علی سیدنا محمد و علی ال سیدنا محمد وبارک وسلم
اللھم صل علی سیدنا محمد و علی ال سیدنا محمد وبارک وسلم

इंसान के जिस्म में दो अज़ीम नेअ़मतें: दिल और दिमाग़

इंसान को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने दो नेअ़मतों से नवाज़ा है, एक धड़कता हुआ दिल और दूसरा फड़कता हुआ दिमाग़, यह धड़कता हुआ दिल इंसान के Emotions (जज़्बात) का मक़ाम रखता है और यह फड़कता हुआ दिमाग़ इंसान के ख़्यालात का मक़ाम रखता है, जो ख़्याल इंसान के ज़ह्न में Process (अमल में आना) होता है यह उसकी अक़्ल का काम है, जिस तरह कम्प्यूटर के अंदर Micro processor होता है कि अगर कोई मस्ला हो तो माइक्रो प्रोसेसर उसको हल यअ़नी Solve करके वापस भेज देता है, इसी तरह इंसान की Body (जिस्म) में यह Thought processor (ख़्यालात की मशीन) है जो अल्लाह ने बनाया है, आप दिमाग़ को कोई ख़्याल दे दीजिये, यह उस पर ताना बाना बनना शुरू कर देगा, और एक बात की पूरी कहानी निकाल देगा।

अक़्ल की करिशमा साज़ियां

चुनांचे इस अक़्ल की वजह से इंसान अच्छे और बुरे के दर्मियान Differentiate (फ़र्क़, इम्तियाज़) कर सकता है, दोस्त और दुशमन की तमीज़ कर सकता है, जाइज़ और नाजाइज़ का पता लगा सकता है, और बाल की ख़ाल निकाल सकता है, यह तमाम अक़्ल के करिशमें हैं कि जिनकी वजह से इंसान दुनिया में कामियाब ज़िंदगी गुज़ारने के लिये कोशिशें करता है। आप ज़रा शेर की ज़िंदगी को देखें कि वह जंगल का बादशाह कहलाता है, मगर सारी ज़िंदगी कच्चा गोश्त खाता है। इंसान को देखें कि गोश्त को किस तरह Process (मुख़्तलिफ़ तरकीबें) करके खाने बना के यह इस्तेमाल में ला रहा होता है, कहीं पर स्टीम रोस्ट, फ़्राई चिकन नगटस, चिकन जल फ़रीज़ी, फ्रेंच फ़्राई, ड्रम इस्टिक, चौपें, चिली कबाब, बारबीक्यू, अगर सूप देखें तो चाईनीज़, कारिन सूप, फिर क़ीमा मटन, क़ीमा करैला, मुर्ग़ पुलाओ, मिंदी, बिर्यानी। ऐसे भी लोग होते हैं जो सिर्फ़ Vegetabls (तरकारियों) की एक सौ से ज़्यादा डिशिज़ बना लेते हैं, तो यह अक्ल के करिशमे हैं, इससे इंसान के अंदर Invention (ईजाद की सलाहियत) आती है कि वह एक चीज़ से दूसरी चीज़ तीसरी चीज़ को करता चला जाता है। अक़्ल की वजह से इंसान जानवरों को भी सधा लेता है, अगर हम अपने Past (माज़ी) में देखें तो पुराने वक़्तों में तोता और मैना को बोलना सिखाया जाता था और यह बड़ी बात समझी जाती थी, कबूतर को पैग़ाम पहुंचाने का Job (काम) दिया जाता था, घोड़े को नाच सिखा देते थे। तो इस तरह के चंद काम पिछले ज़माने में लोगों की Interest (दिलचस्पी) का बाइस बने हुए थे, आज के Most modern scientific (जदीद तरीन साइंसी तरक़्क़ी याफ़्ता) दौर

में इंसान ने जानवरों की नफ़्सियात को अच्छी तरह समझ लिया है, चुनांचे उसने जानवरों को ऐसी ऐसी चीज़ें सिखाईं जिनको देखकर इंसान हैरान होता है।

हमने स्वीडन में एक मर्तबा Life stock (जानवर घर) देखा, दूध का वक़्त था, गाय की तीन क़तार लगी हुई थीं, और वह तीन क़तारों में ख़ुद बख़ुद आती थीं और एक औरत Milking machine (दूध दोहने की मशीन) Attach (लगा देना) कर देती थी और जब Milk (दूध) ख़त्म हो जाता था तो गाय ख़ुद बख़ुद उस दोहने की मशीन को Detach (निकालना) करके वहां से चली जाती थी, फिर अगली गाय ख़ुद आकर खड़ी हो जाती थी, इतना Discipline (नज़्म, ज़ब्त) था इन जानवरों में कि इंसान हैरान रह जाता है कि उनको इंसानों ने किस तरह सिधा लिया है।

एक मर्तबा हम अपने बच्चों के साथ Visit (सफ़र) पर थे, तो हमारे गाड़ी चलाने वाले दोस्त ने कहा हज़रत! एक Zoo (अजाइब घर) है यहां, और बंद होते होते वह यहां एक Show (खेल) पेश करते हैं जो जानवरों से मुतअल्लिक़ होता है, तो अगर आप इजाज़त दें तो गाड़ी रोक ली जाए, तो इस आजिज़ ने कहा, क्या ज़रूरत है? चलो! छोटे बच्चे साथ थे, उन्होंने फिर Insist (इसरार) करना शुरू कर दियाः अब्बू जी! जानवरों ही का तो Show है, तो मैंने उन्हें कहा ठीक है। और वाक़ई हम उस वक़्त उस Zoo के दरवाज़े के पास ही थे, Within three minutes (तीन मिनट के अंदर) हम उसके अंदर थे, हमने एक अजीब मंज़र देखा, एक हाथी खड़ा है, और उसको उन्होंने एक बहुत मोटा रस्सा बांधा हुआ है, वह रस्सा कई सौ मीटर लम्बा था, Item (करतब) यह था कि जितने लोग शाम के वक़्त Zoo से वापस जाने लगते थे, वह उन लोगों का

हाथी के साथ रस्सा कशी का मुक़ाबला करवाते थे, हम तो गाड़ी ही में बैठे रहे, मगर देखा कि रस्सा के एक सिरे से तो हाथी बंधा था, और दूसरे किनारे की तरफ़ लोग थे, मर्द, औरतें, छोटे, बड़े सब थे, जहां तक हमारी निगाह गई लोग ही लोग, शायद हज़ारों में थे। इधर हाथी अकेला, अब जब आपस में Competition (मुक़ाबला) का वक़्त हुआ, तो एक बंदे ने ऐलान किया कि अब हम रस्सा कशी करवाने वाले हैं, आपको हिम्मत करके इस हाथी को 13 क़दम पीछे खींचना है, अगर आप इसको 13 क़दम पीछे खींचने में कामियाब हो गए तो आप की जीत हो जाएगी, उसके बाद उसने आवाज़ दी और मुक़ाबला शुरू हो गया, सब लोग खूब ज़ोर लगा रहे थे, हाथी एक क़दम पीछे हट, ज़ोर लगाओ और ज़ोर लगाओ की आवाज़ें बुलंद हो रही थीं, हाथी दूसरा क़दम फिर तीसरा क़दम पीछे हटा, लोगों ने और ज़ोर लगाया हत्ता कि दस क़दम, फिर ग्यारह और जब बारहवां क़दम भी हाथी पीछे हट गया, तो उन्होंने दोबारा ऐलान कि History (तारीख़) में आज तक कोई मज्मा यहां पर हाथी से जीत नहीं सका लेकिन आप लोगों ने 12 क़दम पीछे हटा लिया है, अब सिर्फ़ एक क़दम बचा है, हिम्मत कर लीजिये, Make a history today (आज तारीख़ रक़म कर दें), इस पर तो लोगों ने ज़ोर लगाने की इंतिहा कर दी, पूरी ताक़त झोंक दी, उस वक़्त हाथी ने वापस क़दम उठाना शुरू कर दिये और उन सबको घसीटा हुआ लेकर चल दिया, लगता यह था कि उन्होंने हाथी को Train (सिधाना) ऐसा किया हुआ था कि 12 क़दम पीछे हट कर इन लोगों को Encourage (हिम्मत अफ़्ज़ाई करना) कर देना, जब यह खूब ज़ोर लगाएं तो वापस चलना शुरू कर देना, उन लोगों को हाथी ऐसे घसीट कर ले जा रहा थ कि जैसे तिन्के के साथ च्यूंटियां लगी हुई हों और वह

तिन्का को लेकर जा रहा हो, उस दिन पता चला या अल्लाह! इस हाथी के अंदर आपने इतनी ताक़त रखी है।

हमने एक जगह पर हाथी का फुटबाल मैच देखा, फुटबाल भी शायद बड़े साइज़ का था, मगर वह सब के सब अपनी Trunk (सूंड) के साथ उसको Hit (मारना) कर रहे थे और बाक़ाएदा दोनों तरफ़ गोल बने हुए थे, और गोल के अंदर भी एक हाथी खड़ा हुआ था कि कोई गोल न कर सके, हैरत की बात कि हाथी का फुटबाल मैच!

और एक जगह पर हमने इससे भी ज़्यादा अजीब चीज़ देखी कि एक हाथी को उन्होंने पैन्टिंग सिखाई हुई थी, जब उस हाथी का निगरां उसको ब्रश पैंट के अंदर डाल के सूंड में पकड़ा देता था और Trunk (सूंड) में पकड़ के वह हाथी इतने ख़ूबसूरत तरीक़े से उसको Shade (नक़्श निगारी) करता था कि At the end of the time (आख़िर में) वह इतनी ख़ूबसूरत पैंटिंग बनती थी कि सौ डालर की एक पैंटिंग मौक़ा पर बिक रही थी। अब बतलाइये कि हाथी और पैंटिंग और उसमें Shade का पता चलना कितना मुश्किल है, लेकिन सिखाने वालों ने सिखा लिया। तो इंसान अक़्ल की वजह से जानवरों को सिधा भी लेता है, और जानवरों से बेहतर काम भी कर लेता है।

आप अगर देखें तो जानवरों ने अपने लिये मौसमी बचाव के लिये घौंसले बनाए होते हैं, इंसान अपने लिये आज बिल्डिंग बनाता है, सर्दी गर्मी हर मौसम के बारे में उसके अंदर Comfort (सहूलियत) मौजूद होती है, अगर Eagle (चील) तेज़ परवाज़ करता है तो इंसान ने उसके मुक़ाबले में Plane (जहाज़) बना लिये, जो कई कई सौ सवारियों को लेकर एक जगह से दूसरी जगह

पहुंचा रहे होते हैं, और आवाज़ की रफ़तार से भी ज़्यादा तेज़ तय्यारे बना लिये, चीते की तेज़ी मशहूर थी, इंसान ने उसके मुक़ाबले में Speed race (रफ़तार का मुक़ाबला) में जाने वाली गाड़ी बनाई। एक मर्तबा हमारी क़िस्मत या बदक़िस्मती समझें कि हम फंस गए, एक जगह प्रोग्राम हुआ, तो दोस्त कहने लगे कि यह डाक्टर साहब आप को घर लेकर जाएंगे, हम डाक्टर साहब की गाड़ी में बैठे, हैरानी तो बड़ी हुई कि यह गाड़ी बहुत नीची थी, हमें क्या समझ इन बातों की! जब अंदर बैठ गए और उन्होंने चलाना शुरू किया तो मीटर पर नज़र पड़ी तो 200km, मैंने हैरानी से कहा डाक्टर साहब! कहने लगे हज़रत! यह रफ़तार वाली गाड़ी है, एक मिनट में यह रफ़तार पकड़ लेती है, हमने कहा डाक्टर साहब उसे नीचे लेकर आएं, फिर उनको रफ़तार कम करने को कहा, और 120km की रफ़्तार से आगे इजाज़त नहीं दी, लेकिन या अल्लाह! इतनी रफ़तार वाली गाड़ी!

पहले जानवर सामान उठाया करते थे, आज के दौर में इंसान ने बड़े ट्रक बनवा लिये, ट्रेलर बनवा लिये, टनों के हिसाब से Weight (वज़न) को एक जगह से दूसरी जगह Move (मुंतक़िल) करना इंसान के लिये आसान हो गया, अक़्ल की वजह से इंसान जानवरों को सिधा भी लेता है, जानवरों से बेहतर काम भी कर लेता है और जानवरों को अपने क़ाबू में भी कर लेता है। तो Brain (अक़्ल) के Power (ताक़त, सलाहियत) को अगर Use (इस्तेमाल) करें तो दूसरे लोग उस पर हैरान हो जाते हैं।

अक़्ल की करिशमा साज़ियों की एक और मिसाल देके यह आजिज़ अपने असल Topic (मौज़ूअ़) की तरफ़ आगे बढ़ेगा, फलों के मौसम में बाग़ात में एक बहुत छोटी सी Fly (मक्खी) होती है

जिसको Fruit fly (फल को ख़राब क़रने वाला कीड़ा या मक्खी) कहते हैं, मसलन अमरूद का बाग़ है और वह आती है और उसके अंदर अपना ऐसा माद्दा डाल जाती है कि फल ऊपर से ठीक होते हैं, अंदर से बिल्कुल गला हुआ होता है, तो सारे बाग़ के फल को ख़राब कर देती है, अब यह लाखों की तादाद में कैसे कंट्रोल किया जाए? बहुत कोशिश हुई मगर नाकाम, लोग बड़े परेशान कि इस मुसीबत से कैसे छुटकारा हासिल हो? अब साइंसदानों ने इस पर सोचना शुरू किया, यह तरकीब समझ में आई कि यह मक्खी माद्दा (मुअन्नस) होती है और उसके अंदर जो चीज़ डालती है वह उस वक़्त डालती है जब नर (मुज़क्कर) मक्खी उससे मिलता है। तो भई नर को मिलने ही न दिया जाए, सवाल हुआ, कैसे? उन्होंने इसका हल निकाला कि जब नर मादा की तरफ़ कशिश महसूस करता है, तो मादा मक्खी के अंदर से एक ख़ास क़िस्म की Scent (ख़ुशबू) महसूस होती है, इससे नर को इशारा मिल जाता है कि इस मादा को नर की ज़रूरत है, तो उन्होंने उसी ख़ुशबू से मिलती हुई एक मस्नूई ख़ुशबू बना ली, और बनाने के बाद उसमें Poison (ज़हर) मिला कर एक जगह के ऊपर लटका दिया अब जितनी नर मक्खियां थीं सबने उधर का रुख़ कर लिया, वहां ख़ुशबू तो वही थी, मगर ज़हर आलूद था इसलिये मर गईं, उन्होंने तमाम नर को मार दिया अब जो लाखों मक्खियां थीं वह अब फलों को ख़राब नहीं कर सकती थीं। यह सब इंसान के अक़्ल का कमाल है, इंसान ने अक़्ल को इतना इस्तेमाल किया कि दुनिया में हैरानकुन चीज़ें बना दीं।

सोच के दो अंदाज़ः मुस्बत और मन्फ़ी

ताहम सोच के हमेशा दो अंदाज़ होते हैं एक अंदाज़ को कहते हैं मुस्बत अंदाज़, और दूसरे को कहते हैं मन्फ़ी अंदाज़, एक होती है

Positive thinking (मुस्बत सोच) और एक होती है Negative thinking (मन्फ़ी सोच), मिसाल के तौर पर मेरे सामने एक ग्लास पड़ा है और वह आधा पानी से भरा हुआ है, अब सोचने के दो अंदाज़ हैं, किसी ने देखकर कहा ग्लास आधा ख़ाली है, उसने ठीक कहा, But (मगर) यह Negative thinking कहलाएगी, और दूसरे ने देखा तो ख़ुश होकर कहा ग्लास आधा भरा हुआ है, उसने भी ठीक कहा, मगर उसने मुस्बत तरीक़े से सोचा, जिसने मुंह बना के कहा आधा ख़ाली है उसने भी ठीक कहा मगर उसने मन्फ़ी तरीक़े से सोचा।

फूल खिला हुआ था, एक बंदा जो बड़ा ही ख़ुश था उसकी नज़र फूल पर पड़ी तो वह कहने लगा कि आज मैं ही ख़ुश नहीं, इन कलियों को देखें इन्होंने भी आज अपनी पत्तियों को ख़ोला हुआ है, ख़ुशी का इज़्हार कर रही हैं, एक साहब घर से निकले ज़रा Depressed condition (अफ़सुर्दा हालत) में थे उनकी नज़र उसी फूल पर पड़ी तो उन्होंने शेअ़र बनाया--

आ मिले हैं सीना चाकाने चमन से सीना चाक

कि मैं भी सीना चाक था और फूल को देखो उसका भी सीना चाक है, पत्तियां खुली हुई हैं। फूल एक ही है, एक की Positive thinking (मुस्बते सोच) थी, एक की Negative thinking (मन्फ़ी सोच) थी।

चुनांचे एक टहनी थी, उसके ऊपर Roses (गुलाब) भी थे और कांटे भी थे, उसको देख कर एक बंदे ने Comment (तअस्सुर) पेश किया यार! क्या बात है जहां गुलाब होते हैं वहीं कांटे होते हैं, अब उसको Frustration (उलझन) हो रही थी कि जहां Roses होते हैं वहीं कांटे क्यों होते हैं, तो दूसरे ने उसको

कहा कि यह सोचा कि दुनिया में अगर कांटे होते हैं तो उनके साथ फूल भी तो होते हैं। अब बात तो दोनों की एक ही है, एक को कहेंगे Positive thinking और दूसरे को कहेंगे Negative thinking-

दो आदमी क़ैदी थे, उनको थोड़ी देर के लिये Release (आज़ाद) किया गया कि ज़रा बाहर Fresh air (ताज़ा हवा) ले लें वह चंद मिनट बाहर रहे, दोबारा कमरे में आए और एक दूसरे से बात करने लगे, एक ने कहा यार! लगता है बाहर बारिश हुई है, दूसरे ने पूछा कैसे? उसने कहा यार! दरख़्त पर मेरी नज़र पड़ी, पत्ते धुले हुए थे, फूल बहुत ख़ूबसूरत चमक रहे थे, उसने दूसरे से पूछा कि तुमने क्या नतीजा निकाला? उसने कहा मैंने देखा कि ज़मीन पर कीचड़ बना हुआ था, बहुत Mud (कीचड़) बनी हुई थी। अब देखिये बात दोनों ने ठीक की है मगर एक की नज़र फल और फूल पर पड़ी, और दूसरे की नज़र कीचड़ और Mud पर पड़ी। हमेशा आप देखेंगे कि इंसानों की सोच इसी तरह अदलती बदलती है, बात एक ही होती है एक बंदा एक Angle (ज़ाविया) से देख रहा होता है, और दूसरा बंदा दूसरे Angle से देख रहा होता है, ख़ुश होता है तो Positive thinking और नाराज़ होता है Negative thinking-

एक शख़्स की बीवी बहुत ख़ुश हो रही थी, ख़ाविंद का ज़रा मूड ख़राब था, उसने पूछा कि इतना ख़ुश क्यों हो रही हो? कहने लगीः ज़रा मेरी आंखें देखो, यह तो Actress (अदाकारा) फ़िरदौस से मिलती हैं, उसने कहा यह तो आपस में मिलती नहीं, फ़िरदौस से क्या मिलेंगी? अब यह इंसान की बात है कि जो चाहे आगे से जवाब देदे।

एक साहब दीहात में B.A. (अस्री तालीम की एक डिग्री) पास थे, और बड़े ख़ुश थे कि मैं पूरे गांव में ग्रेजूऐट हूं, एक दिन बीवी ख़फ़ा हो गई, तो किसी औरत ने पूछ लिया तेरा ख़ाविंद लिखा पढ़ा है? कहने लगी हां दो लफ़्ज़ पढ़े हैं वह भी उल्टे। यअ़नी B.A. पढ़ा हुआ है। यअ़नी अंग्रेज़ी में हुरूफ़ की तरतीब इस तरह है A.B। तो मेरे ख़ाविंद ने दो लफ़्ज़ पढ़े वह भी उल्टे पढ़े। बात करने का अंदाज़ होता है और इंसान जो करता है वैसी उसकी Thinking (सोच) होती है, मगर यह जो मुख़्तलिफ़ मूड और Thinking होते हैं यह इंसान के लिये फ़ाइदामंद भी हैं।

चुनांचे एक आदमी ने Water melon (तरबूज़) की काश्त की, अल्लाह की शान कि वह इतने Sweet (मीठे) नहीं थे, वह लेकर शहर आया, और उसने इतवार के बाज़ार में तरबूज़ की दूकान लगाई, लेकिन जो बंदा आता, देखता चखता, वह देखता कि फीके हैं तो चला जाता, वह बड़ा परेशान बैठा हुआ था कि वक़्त ख़त्म हो रहा है, सब्ज़ियां ख़रीद ख़रीद कर लोग वापस जा रहे हैं, मेरे तरबूज़ बिक ही नहीं रहे हैं, उसने परेशान होने के बजाए सोचा कि मैं क्या कर सकता हूं, उसके ज़हन में एक ख़्याल आया, चुनांचे वह गया और पैन्टर से एक बीज़ लिखवा कर लाया, और उसने दूकान के ऊपर एक बीज़ लगा दिया और बीज़ के लगते ही लोगों का Rush (भीड़) बढ़ गया, बीज़ पर लिखा हुआ थाः "शहर की तारीख़ में पहली बार Sugar free Water melon" अब जिसने पढ़ा उसने कहा कि मैं अब्बू के लिये ले जाता हूं, या अम्मी के लिये लेकर जाता हूं, चुनांचे उसके वह Water melon दूगनी Price (क़ीमत) पर बिक गए।

तो इंसान की सोच के मुख़्तलिफ़ Angle (अंदाज़) होते हैं, यह

इंसान के अपने ऊपर मुन्हसिर है कि वह उसको Positive (मुस्बत) तरीक़े से इस्तेमाल करे या Negative (मन्फ़ी) तरीक़े से, इसी लिये बात करने का भी अंदाज़ होता है, एक ही बात को आप ऐसे कर सकते हैं कि दूसरा खुश हो जाए, उसी बात को ऐसे भी कर सकते हैं कि अगले को आग लग जाए।

एक बादशाह साहब को ख़्वाब आया कि मेरे सब दांत गिर गए, उसने कहा कि भाई किसी ताबीर देने वाले को बुलाओ, ताबीर देने वाले साहब आए मगर कोई इतने तजर्बाकार Sophisticate (सलीक़ा वाले) नहीं थे, उनको बातचीत का इतना अंदाज़ा नहीं था, उन्होंने Simple (सीधी) सी ताबीर दे दी कि बादशाह सलामत! आप के सब बच्चे बीवियां आप की आंखों के सामने मरेंगे, इसकी यही ताबीर है, उसको बड़ा गुस्सा आया, उसने उसको दो जूते लगवाए, और कहा कि इसको ले जाओ, फिर बादशाह परेशान कि मुझे ताबीर तो पूछनी है, उसने कहा यार! किसी अच्छे बंदे को जो समझदार हो लेकर आओ, अब समझदार साहब आ गए, मगर ताबीर तो वही थी, मगर उसको समझ थी कि मुझे बात कैसे करनी है, बादशाह ने ख़्वाब सुनाया, उसने बड़ी खुशी का इज़हार किया कि बादशाह सलामत! यह बड़ा ही अच्छा ख़्वाब है, उसने पूछा ताबीर क्या है? उसने कहा कि आप की उम्र आप के तमाम बच्चों से ज़्यादा लम्बी होगी, बादशाह ने इन्आम देकर उसको रुख़्सत कर दिया। बात तो एक ही थी, Way of presentation, (मुस्बत तरीक़े का) हो तो अच्छा लग जाता है और अगर Rough attitude (सख़्त) हो तो दूसरे को इंसान उल्टा दुख पहुंचा देता है।

चुनांचे इंसान बात ऐसे करता है कि उल्टी बात को भी सीधा दिखा देता है, इंगलिश का एक फ़ुक़रा है, Who says i dont

love my wife's family? I love her mother-in-law more than any in the world (कौन कहता है कि मैं अपनी Wife (बीवी) की फ़ैमली से मुहब्बत नहीं करता, मुझे उसकी सास दुनिया की तमाम औरतों से ज़्यादा अज़ीज़ है।) अब अल्फ़ाज़ हैं लेकिन इतने खूबसूरत अल्फ़ाज़ में उसने Message (पैग़ाम) लपेट दिया कि तारीफ़ भी कर दी और दूसरे को पता भी न चला। यह तो इंसान की अक़्ल का कमाल है।

इंसान की सोच का असर उसकी ज़ात पर

और उसूल की बात यह है कि इंसान की शख़्सियत पर उसकी सोच का असर होता है, अगर वह Positive thinking रखे तो उसकी Personality (शख़्सियत) में इस हिसाब से Develop (तरक़्क़ी) हुई है और अगर Negative thinking रखे तो उसकी Personality (शख़्सियत) इस हिसाब से Develop होती है।

मिसाल के तौर पर आप ज़रा ग़ौर कीजिये, मक्खियां दो तरह की होती हैं, एक कहलाती है शहद की मक्खी, उसकी सोच Positive (मुस्बत) सोच होती है, लिहाज़ा उसको मुअत्तर फ़ज़ा की तलाश होती है, यह आप को फूलों के पास मिलेगी, फूलों के बाग़ में मिलेगी, साफ़ सुथरी जगहों पर मिलेगी, यह वहां से Nectar (अमृत) हासिल करेगी और फिर आकर एक तरतीब के साथ काम करेगी, और फिर वह चीज़ बनाएगी जिसको हम Honey (शहद) कहते हैं, और Honey इतना Tasty होता है कि आजकल एक दूसरे से प्यार का इज़्हार करने के लिये यूरप में एक दूसरे को Honey कहते हैं, इतना तो यह प्यारा और Tasty होता है कि एक Symbol (अलामत) बन गया। और एक मक्खी

गंदी कहलाती है जो आम फिर रही होती है, उसकी सोच गंदी, उसको गंदगी की तलाश होती है, वह आप को बाग़ों में नहीं मिलेगी, घरों में भी बैतुल ख़ला में मिलेगी, जहां कूड़े का डिब्बा होगा वहां मिलेगी, जहां कोई Rotten (गली सड़ी) चीज़ होगी वहां मिलेगी, इतने ख़ूबसूरत जिस्म को छोड़ कर जहां फुंसी और पीप होगी वहां मिलेगी, सोच गंदी तो उसको गंदगी की तलाश, वह हर वक़्त उस गंदगी की तलाश में लगी हुई है, अब कहने को दोनों मक्खियां हैं, मगर एक शहद की मक्खी, उसकी सोच कितनी आला, फिर उसका product (पैदावार) कितना आला, और गंदी मक्खी की सोच कितनी गंदी और उसको तलाश गंदगी की।

Exact (ठीक) इसी तरह Positive thinking (मुस्बते सोच) रखने वाले लोग होते हैं, उनकी मिसाल Honey bee (शहद की मक्खी) की मानिंद होती है वह अच्छे लोग होते हैं, वह अच्छी सोच रखते हैं, इंसानों से मिलते जुलते रहते हैं, उनमें अच्छाईयां ढूंढते हैं, उनको हर बंदे में अच्छाईयां नज़र आती हैं, उनकी नज़र में सब अच्छे होते हैं, वह सबसे प्यार करते हैं, सबसे मुहब्बत करते हैं, वह सब के लिये ख़ैर का ज़रीआ बन जाते हैं, इसलिये सबसे हुस्ने ज़न रखे हुए होते हैं। और जिनकी सोच गंदी होती है गंदी मक्खी की तरह उनको गंदगी की तलाश होती है, किसी बंदे का नाम ले लें वह उसमें दस ऐब निकाल देंगे, न उनको दीन वाले पसंद, न उनको दुनिया वाले पसंद, हर चीज़ Objection (एतिराज़ करना) उनका महबूब मशग़ला होता है, बल्कि हर एक से बेज़ार, छोटों से भी बड़ों से भी, बीवी से भी बच्चों से भी, और हमने कई मर्तबा देखा कि अपने आप से भी बेज़ार, अपने आप को भी बैठे हुए गालियां दे रहे होते हैं, यह असल में उनकी Thinking है,

जिसने उनकी Personality को Develop होने नहीं दिया, लिहाज़ा उनको हर चीज़ बुरी लगती है।

हमें एक मर्तबा एक मस्ला Deal (सामना करना) करने का मौक़ा आया, एक बड़ी नेक ख़ूबसूरत दीनदार बच्ची थी, नेक घराने की थी, और उसकी शादी भी एक नेक घराने में हुई लेकिन बच्चा जो था वह Negative thinking (मन्फ़ी सोच) वाला था, अब कुछ अर्से के बाद उसने बीवी को Tough time (ज़हमत) देना शुरू किया, बात नहीं करता था, यह नहीं करता था, हमें बड़ी हैरत हुई कि जब दोनों तरफ़ दीनदारी है तो दर्मियान में मस्ला तो नहीं होना चाहिये, हमने उस बच्चे को बुला लिया और बात पूछी, भाई! आख़िर वजह क्या है कि आप को यह बीवी अच्छी नहीं लगती? कहने लगाः "क्या करूं बस जो कहता हूं वही करती है"। सुब्हानल्लाह! यअ़नी यह बीवी का बड़ा ऐब था कि जो कहता हूं बस वही करती है, अब देखें यह सिफ़त कि ख़ाविंद जो कहे बीवी वही करे, उसकी नज़र में यह भी ऐब बन गया, अगर Initiative (सरगर्मी, पहल करना) लेकर अपना काम करे तो उसे यह भी अच्छा नहीं लगता और उसने ख़ाविंद की तबीअत को देखते हुए यह कहा कि नहीं जो कहेंगे मैं वही करूंगी। अब अगर यह भी बुरा, तो बंदा जाए कहां? तो इंसान की सोच का बिलआख़िर उसकी Personality के ऊपर असर होता है।

अच्छी और बुरी सोच का असर दुन्यवी ज़िंदगी पर

अच्छी सोच वाले बंदे को दुनिया में परेशानियां आती हैं, मगर वह उनको आराम से Solve (हल) कर लेता है, दरगुज़र से काम लेता है, किसी से मुआफ़ी मांग लेता है, किसी को मुआफ़ कर देता है, ज़िंदगी की गाड़ी Smooth (सुकून) से चलती रहती है, और

जो मन्फ़ी सोच वाला होता है वह तो ऐसा बंदा होता है कि हर बात का पतंगड़ बना देना उसका महबूब मशग़ला होता है, इसकी मिसाल यूं समझिये कि ट्रेन दो तरह की होती है, एक होती है एक्सप्रेस ट्रेन, अक्सर लोग उस पर सवार होना पसंद करते हैं, वजह क्या है? कि वह चलती है तो तेज़ रफ़तार के साथ, रास्ते में छोटे छोटे स्टेशन आते रहते हैं वह हर स्टेशन पर खड़ी नहीं रहती, जब स्टेशन आने लगता है तो वह थोड़ा Slow (रफ़तार कम) कर लेती होती है और स्टेशन Cross (पार) करके फिर भागती है, फिर अगला स्टेशन आ गया, थोड़ा सा धीरे हुई, स्टेशन पार करके फिर भागी, तो वह रुकती नहीं है, चंद जगहों पर रुकती है बस, और अपनी मंज़िलों पर तेज़ी से पहुंचा देती है, और लोग Double price (दो गुना किराया) दे कर टिकट लेते हैं और थोड़े वक़्त में मंज़िल पे पहुंचने की वजह से एक्सप्रेस ट्रेन में सफ़र करना पसंद करते हैं। एक होती है पैसेन्जर ट्रेन, किसी कारोबारी बंदे को कह दें कि जनाब! ज़रा बैठिये बम्बई से देहली पैसेंजर ट्रेन मैं और आप तीन दिन में पहुंच जाएंगे, आपको मुफ़्त टिकट देते हैं, कहेगा कि अपनी टिकट अपने पास रखो, कौन बंदा तीन दिन का वक़्त लगाए और हर हर स्टेशन पर खड़ा होता हुआ जाए, तो मालूम हुआ कि पैसेन्जर ट्रेन पर वही सफ़र करता है जिसको एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन तक थोड़ा सफ़र करना होता है, लम्बे सफ़र करने वाले इन ट्रेनों पर सफ़र नहीं करते और उनके नज़दीक वक़्त क़ीमती हुआ करता है।

इंसान भी दो तरह के हैं, कुछ लोग होते हैं ऐक्सप्रेस ट्रेन की तरह ज़िंदगी गुज़ारने वाले उनका Objective (मक़्सद) Clear (तय) होता है, उनको पता होता है कि मुझे अपनी ज़िंदगी में यह Objective (मक़्सद) Achieve (हासिल) करना है मक़्सद

हासिल करना है, छोटी मोटी कोई Problem (परेशानी) होती है तो उसको Solve (हल) कर लेते हैं, जैसे स्टेशन आ गया गाड़ी थोड़ी सी धीरे करके फिर भागना शुरू कर देते हैं फिर कोई दूसरा Problem आ जाती है, फिर वह उसको Solve करके फिर भागते हैं तो वह ऐक्सप्रेस ट्रेन की तरह मक़सद की तरफ़ जा रहे होते हैं।

कुछ लोग होते हैं वह अपनी अज़्दवाजी ज़िंदगी को पैसेंजर ट्रेन की तरह गुज़ारते हैं, मैंने देखा सालन में नमक भी ठीक नहीं, अब इस पर मियां बीवी में कहा सुनी हो रही है, अब बताओ यह कोई बात है? भाई! कम है तो ज़्यादा कर ले, ज़्यादा है तो कोई दूसरी चीज़ इस्तेमाल कर ले, यह तो लड़ने वाली बात तो नहीं है, एक दफ़ा आप indicate (निशादही) कर देंगे तो दूसरी दफ़ा अच्छी चीज़ बन जाएगी, मगर नहीं, देखें मुझे गर्म रोटी नहीं मिली, आज मैं तैयार हो गया और देखो मेरी बीवी ने तैयार होने के पांच मिनट बाद कपड़े Iron (इस्त्री) करके मुझे दिया, कभी इंसान की तबीअत ठीक नहीं होती, कभी उसका मूड ठीक नहीं होता, कभी सुस्ती भी हो जाती है, यह छोटी मोटी चीज़ें हैं, यह इंसान के साथ लगी हुई चीज़ें हैं तो इंसान के अंदर इतनी Tolerance (तहम्मुल) हो, सब्र हो, Patience (बर्दाश्त) हो कि छोटी मोटी चीज़ों को वह आसानी के साथ बर्दाश्त कर ले, तो उसकी ज़िंदगी अच्छी गुज़र जाती है, वर्ना तो हर दूसरे चौथे दिन में मियां बीवी के दर्मियान Clash (झगड़ा) बनता चला जाता है।

कामियाबी और नाकामी पर सोच का असर

हमने देखा कि जिन लोगों की सोच Positive (मुस्बत) होती है दुनिया में वही कामियाब इंसान होते हैं, जितने कामियाब इंसान

गुज़रे हैं यह सब के सब वही लोग थे जो Positive thinking रखने वाले थे, चाहे काफ़िर थे चाहे मुसलमान थे इसका कोई फ़र्क़ नहीं, उनकी Personalities (शख़्सियात) को देखें Positive thinking रखने वाले।

न्यूटन के बारे में मशहूर है कि जब उसने Laws of motion को दरयाफ़्त कर लिया तो बड़ा ख़ुश हुआ कि मेरी इतनी मेहनत काम आ गई, फिर उसे Wash room गया, उसके घर में एक कुत्ता था जो उसने पाला हुआ था, वह कुत्ता कमरे में घुस आया, सारे कमरे में काग़ज़ी का ग़िज़ा नज़र आते थे, अब वह कुत्ता आया तो एक जगह चिराग़ जल रहा था वह जब एक जगह से दूसरी जगह जाने लगा तो चिराग़ गिरा और कमरे में जितने का काग़ज़ थे उन काग़ज़ को आग लग गई, और न्यूटन के वापस आने पर सब कुछ जल कर राख बन चुका था, अब जो बाहर निकला, अगर आम आदमी हो तो Shock (सदमा) में चला जाता कि मेरी मेहनत ज़ाए हो गई, मगर वह घबराया नहीं, उसने अपने कुत्ते से इतना कहा कि तुमने मेरा काम बढ़ा दिया, उससे ज़्यादा कुछ नहीं कहा और उसने अपने कमरे की सफ़ाई की और फिर नए काग़ज़ मंगवाए, जो उसके Mind (दिमाग़) के अंदर Memories (याददाश्त) थी उसने उनको Reproduce (दोबारा लिखना) करना शुरू कर दिया और Within one year (अगले एक साल में) उसने Laws of motion (हरकत के क़वानीन) को दोबारा तैयार किया। तो जिन लोगों की सोच मुस्बत होती है वह इतने Crisis (परेशानी, मसाइब) के बावजूद भी अपने को संभाल लेते हैं।

काम के मुख़्तलिफ़ Options को ध्यान में रखना चाहिये

इटली का एक साइंसदां था, वह चाहता था कि कपड़े को सीने

के लिये हाथ से सूई इस्तेमाल की जाती है, जब हाथ से कपड़े सिये जाते थे, तो सूई की पुश्त पर सूराख़ होता था, उसमें धागा डाला जाता था, और औरतें हाथ से कपड़े सीती थीं, उसने सोचा कि मैं Automatic (ख़ुदकार) मशीन बताऊं, लेकिन मशीन तो Automatic बन गई Problem (मुश्किल) यह आती थी कि सूई जब चलती थी तो टूट जाती थी, थोड़ी थोड़ी देर बाद हर सूई टूट जाती, बड़ी मेहनत की उसने मगर कोई सूरत नहीं बनती थी, वह बंदा थका नहीं, और उसने Give up (हिम्मत हारना) नहीं किया, उसने सोचा कि मैं एक ही लाईन पर सोच रहा हूं, ज़रा दूसरा लाईन भी तो सोचूं, Options (तरीक़ाकार) तो कई होती हैं, अब उसने जब सोचा तो कहा कि यह जो सूराख़ पुश्तपर बनाते हैं, मैं यह सूराख़ को आगे क्यों न बनाऊं, चुनांचे उसने सूई बनाई तो धागे का जो सूराख़ होता है वह आगे की तरफ़ बनाया, जैसे ही उसको मशीन में इस्तेमाल किया, वह कामियाबी के साथ चलना शुरू हो गई, और वह बंदा एक Automatic मशीन ईजाद करने वाला बन गया।

तंग नज़री शरीअत की नज़र में एक नापसंदीदा चीज़

तो मालूम हुआ कि एक तो इंसान को Positive thinking (मुस्बत सोच) रखना चाहिये, और अगर काम एक तरीक़े से नहीं हो रहा तो उसके Options (दीगर तरीक़ए कार) देख ले कि दूसरे Options क्या हैं, अगर आपने एक बात की और बीवी की समझ में नहीं आ रही तो वही लफ़्ज़ Use (इस्तेमाल) करते रहना कोई ज़रूरी तो नहीं है, आप उसको ज़रा दूसरे लफ़्ज़ों में कह कर देख लें, हो सकता है कि उन लफ़्ज़ों में आप कहें तो बीवी को बात जल्दी समझ में आ जाए, शरीअत इंसान को कहती है कि तुम ज़रा खुले दिमाग़ वाले बंदे बनो, यह जो एक एक

चीज़ पर जम जाना, Rough and tough (सख़्त मिज़ाज) बन जाना, यह शरीअ़त पसंद नहीं करती, शरीअ़त चाहती है कि तुमहारी सोच के अंदर दाइरए शरीअत में रहते हुए वुस्अत होनी चाहिये, तुम अपने भाई को एक तरह से बात समझाने से क़ासिर हो तो बात दूसरी तरह से समझाओ। चुनांचे अगर Teacher (उस्ताज़) अगर बात समझाता है, और बच्चा बात समझ नहीं पाता तो मालूम है वह क्या करता है? वह जूते उतारता है कि जूते लगाऊंगा, थप्पड़ लगाऊंगा। भई मार के बजाए प्यार से भी तो बच्चा को समझाया जा सकता है, मगर चूंकि समझा नहीं सकते तो पढ़ाने वाले कई लोग बच्चे पे हाथ उठा लेते हैं। आज की दुनिया में यह Crime (जुर्म) है, ऐसा हरगिज़ नहीं करना चाहिये, मगर चूंकि उस्ताज़ खुद इतना Experienced (तजर्बाकार) नहीं होता, एक बात ज़ह्न में रखें मारने के लिये उस्ताज़ उस वक़्त हाथ उठाता है जब वह शिकस्त तसलीम कर लेता है कि मैं बच्चे को ज़बान से समझाने में नाकाम हो गया, मेरे अंदर यह Guts (हिम्मत, हुनर) नहीं है कि बच्चा को ज़बान से समझा सकूं, तो वह हाथ उठाना शुरू कर देता है, वर्ना बच्चे को प्यार से बात समझा दी जाए हिक्मत के साथ तो समझ में आ जाती है। मिसाल देकर समझाएं, कोई Experience (तजर्बा) उसको सुनाएं, मगर हम तो आदी बन गए एक बात करने के, अगर वह पूरी नहीं होती तो बस Instantaneously (फ़ौरी) गुस्सा आ जाता है, और यह गुस्सा इंसान के लिये बेहद नुक़्सानदेह चीज़ होती है, इंसान को अगर हैवान बनते देखना हो तो उसको गुस्से में आते हुए देख लो, एक आदमी खुश था, हंस रहा था, क़हक़हा लगा रहा था, मुस्कुरा रहा था, चेहरे पे शगुफ़्तगी थी, तमानीनत थी, वह ही गुस्सा में आ गया ऐसे उसकी आंखें, Expression (चेहरे का

तास्सुरात) देखो लगता ही नहीं कि यह वही इंसान है। अगर हमने एक बात की और दूसरा बंदा नहीं समझ पा रहा तो उस बात को हम किसी और अंदाज़ से करें तो वह समझ जाएगा अपने आप को उसकी जगह रख कर सोचने की कोशिश करें कि मेरा Message (पैग़ाम) यह कुबूल क्यों नहीं कर रहा? तो आपको समझ में आ जाएगा कि Reason (वजह) क्या है? हो सकता है आप तसवीर का एक रुख़ देख रहे हों और वह तसवीर का दूसरा रुख़ देख रहा हो।

बात को समझने समझाने के अलग अलग रुख़ होते हैं

चुनांचे एक हाई स्कूल था, बच्चियां बच्चे एक साथ पढ़ते थे, प्रिंसिपल साहिबा ने फ़ैसला किया कि मैं इनके दर्मियान Dialogue (मुकालिमा) करवाता हूं, लड़कों और लड़कियों से कहा तुम Topic (मौज़ूअ) पे तैयारी करो, Topic क्या?

God created Adam before Eve, because.........अल्लाह तआला ने हव्वा से पहले हज़रत आदम अलै0 को पैदा फ़रमाया, क्योंकि--------- अब आगे के दलाइल देने थे, लड़कों ने बड़ी तैयारी की, खूब तैयार होके आए, और लड़के को पहले मौक़ा मिल गया, अब उसने जोश के साथ खूब तक़रीर की, दलाइल की भरमार कर डाली----

"God created Adam before Eve, b'coz Adam was Superior, Adam was strong, Adam was brave, Adam was this & Adam was this"......

"अल्लाह ने आदम अलै0 को अम्मां हव्वा से पहले पैदा फ़रमाया क्योंकि आदम अफ़ज़ल थे, आदम मज़बूत थे, आदम बहादुर थे, और आदम ऐसे थे और आदम वैसे थे" उसने तो ऐसी ऐसी बातें कीं, कि

सुनने वाले हैरान हो गए कि अब उसके मुक़ाबले में तो कोई बात कर ही नहीं सकता, अब बारी आई लड़की के बात करने की, सब यही सोच रहे थे कि यह अब क्या बात करेगी, मगर उसने आकर कहाः

"God created Adam before Eve, b'coz there is always a rough Sketch before the role model."

और उसने मुक़ाबला जीत लिया, (बात सिर्फ़ समझने समझाने की हद तक है इससे ज़्यादा नहीं) उस्ताज़ ने बोर्ड पर एक फ़ुक़रा लिख दिया A woman without her man is nothing उसने बच्चो से कहा तुम लोग इसमें Punctuation (ग्रामर करना, कोमा वग़ैरा लगाना) आकर कोमा "," लगाओ, अब बच्चों ने सोचना शुरू कर दिया, लड़के ने आगे बढ़कर जल्दी से एक कोमा लगा दिया वह यह A woman without her man, is nothing, उनका मक़्सद पूरा हो गया, बड़े ख़ुश हमने तो बाज़ी मार ली, अब इसका मतलब जैसा हम चाहते हैं वैसा हो गया, अब लड़की की बारी आई, उसने दो कोमे लगा दिये A woman, without her man is nothing यह सोच के अंदाज़ हैं, इन मिसालों को देने का बुन्यादी मक़्सद यह है कि हम जो तंग नज़री और Narrow mind (तंग ज़हनियत) की सोच हटाएं, घरों के अंदर छोटी छोटी बातों पर आपस में उलझना शुरू कर देना, भाई भाई से लड़ पड़ता है, भाई बहन से, पड़ोसी पड़ोसी से लड़ पड़ता है, यह कोई अच्छी आदतें नहीं होतीं, ऐसा इंसान मुआशरे और सोसाइटी का कोई अच्छा इंसान नहीं कहलाता, हमारी Development (नशो नुमा) अगर ऐसी हो कि हम मिस्बत

सोच के आदी हों तो फिर यक़ीनन अल्लाह के बंदों के लिये राहते जान बन जाएंगे।

चुनांचे एक इंजीनियर की मिसाल भी सुन लीजिये, वह अपने घर में Drawing room (बरआमदा) में काम कर रहे थे, उनकी Wife (बीवी) किसी काम के लिये गई हुई थीं, और छोटा बच्चा जो इक्लौता था वह घर में था, अब वह चार साल का बच्चा कभी इस चीज़ को छेड़ता कभी उस चीज़ को छेड़ता, उनको बड़ा Tough time (ज़हमत) दे रहा था, वह Concentration (यक्सूई) से काम नहीं कर पा रहे थे, अब उनको बेटे से प्यार भी था, वह चाहते थे कि बच्चे को डांटूं नहीं, बच्चे को कहूं कुछ न, मगर यह भी चाहते थे कि मेरा काम भी हो जाए, वह सोच में पड़े कि मैं क्या करूं? उनके सामने अख़्बार का Page (सफ़्हा) पड़ा हुआ था, उसके ऊपर दुनिया का नक़्शा "World map" बना हुआ था, उन्होंने एक क़ैंची से उसके पंद्रह बीस टुक्ड़े कर दिये, और बच्चे को बुलाया और कहा कि बेटा! यह टेप है और यह काग़ज़ के टुक्ड़े हैं अगर तुम इस World map को ठीक ठीक जोड़ के लाओ तो मैं तुम्हें वनीला आईसक्रीम ले के खिलाऊंगा, अब बच्चे तो आईसक्रीम पर फ़रेफ़्ता होते हैं, मगर शर्त यह है बेटा कि तुम दूसरे कमरे में जाओ और सुकून के साथ बैठ कर अपना काम करो, उसने कहा ठीक है, बच्चे ने टेप ली, काग़ज़ के टुक्ड़े लेकर वह दूसरे कमरे में चला गया, और इंजीनियर साहब मुत्मइन होके काम करने लगे कि अब यह एक घंटे से पहले वापस नहीं आता, और अभी पांच मिनट गुज़रे नहीं थे कि बच्चे ने दरवाज़ा खटखटाया और कहाः डेडी! मैंने काम कर लिया, कहा अच्छा ज़रा दिखाओ! अब उसने "World map" सामने रख दिया तो वालिद ने देखा तो Portions (अजज़ा) भी बिल्कुल

ठीक जुड़े हुए हैं, Mountain (पहाड़) भी ठीक हैं, और Countries (मुमालिक) की जो Boundaries (सरहदें) हैं वह भी बिल्कुल ठीक है, पूरा World map तो बिल्कुल Perfectly (सही) उसने अपनी जगह के ऊपर Fix (जोड़ देना) कर दिया, बाप बड़ा हैरान हुआ कि यह तो एक घंटे से पहले पूरा नहीं हो सकता था, उसने तीन मिनट में यह काम कर दिया, तो उसने बच्चे की तरफ़ हैरान होकर देखा, कहता है बेटे! तुमने इतनी जल्दी यह सारे टुक्ड़े कैसे जोड़ दिये? वह बच्चा मुस्कुराया और उसने उस Page (सफ़्हा) Flip (पलटा) कर दिया, और उलट रख दिया तो बाप ने देखा कि पूरे सफ़्हे पर एक लड़की की तसवीर बनी हुई थी, बच्चे ने असल में तसवीर को जोड़ा था तो वह World map खुद बखुद जुड़ गया था। हो सकता है कि वह भी आप की नज़र में World map हो और आपके भाई की नज़र में खूबसूरत तसवीर की तरह जोड़ना कोई मस्ला ही न हो, और आप में इख़्तिलाफ़ पैदा हो रहा है, तो उसको ज़रा समझने की कोशिश करें और एक Cool (ठंडे मिज़ाज वाला) इंसान बन कर रहने की कोशिश करें, ठंडे दिल दिमाग़ से सोचें, गुस्सा मसाइल का हल नहीं होता, मसाइल बढ़ाने का ज़रीआ बन जाता है, जो अह्ले ज़र्फ़ होते हैं वह तो बड़ी Crisis के (दुशवारकुन) हालात में भी गुस्से में नहीं आया करते Humbleness (तवाज़ो) Patience (हिल्म) और Coolness (ठंडे मिज़ाज) के ज़रीए इतने अच्छे फ़ैसले करते हैं और दूसरे बंदों के दिल जीत लिया करते हैं, एक उसूल याद रखें कि मिस्बत अंदाज़ से इंसान की परेशानियां, परेशानियां नज़र नहीं आतीं।

एक साहब थे, उनकी बीवी बड़ी ज़बान दराज़ थी, बड़ी जली कटी सुनाती रहती थी, लोग भी हैरान थे, पता नहीं उन्होंने कैसे रखा

हुआ है? एक साहब ने पूछ लिया, जनाब! यह ऐसी ज़बान दराज़ औरत है, बदलिहाज़ औरत है, बोलने का सलीक़ा नहीं है, आप इसको फ़ारिग़ क्यों नहीं कर देते? उन्होंने जवाब दिया हां! सोच तो मेरे दिल में भी कई मर्तबा आई है, मगर मैं सोचता हूं कि अगर मैंने इसको तलाक़ देदी तो उम्र तो छोटी है, यह किसी दूसरे से निकाह करेगी और उस अल्लाह के बंदे के लिये मुसीबत बनेगी, तो मैंने अपने पास रखा हुआ है, मुझे बर्दाश्त करने की आदत पड़ गई, अब यह किसी और अल्लाह के बंदे को परेशान न कर सके। देखिये Positive thinking क्या नेअ़मत है अल्लाह तआला की, हालांकि उनके लिये बर्दाश्त करना भी मुश्किल था, मगर मुस्बत सोच की वजह से उनके लिये अब ग़म सहना भी आसान हो गया।

शरीअ़त में मुस्बत सोच की तालीम

नबी सल्ल० ने हमें मुस्बत सोच की तालीम दी, चुनांचे हदीसे पाक में आता है, नबी सल्ल० ने फ़रमायाः अगर तुम्हें बीवी की कोई बात बुरी लगे तो तुम ग़ौर करो तो तुम्हें इसमें बहुत सी बातें पसंदीदा भी नज़र आ जाएंगी, यह हदीसे मुबारक हमें सबक़ दे रही है कि अगर हमें किसी बंदे की कोई बात बुरी लग रही होती है तो एक बात बुरी लगने से पूरा बंदा तो बुरा नहीं हो जाता, Hasty decision (जल्दी में फ़ैसला) तो नहीं लेना चाहिये कि एक बात से हम बंदा ही को कह दें कि बुरा है नहीं, नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि अगर तुम्हें अपनी बीवी में कोई बात बुरी नज़र आती है तो फ़रमाया ग़ौर करो तुम्हें इसमें कई बातें बहुत अच्छी भी नज़र आएंगी, जिन्हें तुम पसंद करते हो, तो भाई! अच्छी बातों की वजह से तुम उसकी अच्छाईयों को सामने रखो तो नबी सल्ल० ने हमें मुस्बत सोच अपना कर ज़िंदगी गुज़ारने की तालीम दी।

मुस्बत सोच के फ़ाएदे

मुस्बत सोच का एक फ़ाएदा यह होता है कि इंसान को हमेशा उम्मीद की किरन नज़र आती है, इसको कहते हैं Light at the end of the tunnel (उम्मीद की किरन) बंदा Crisis (परेशानी) में होता है लेकिन अच्छी सोच की वजह से उसको उम्मीद हो जाती है, नहीं ठीक हो जाएगा, नहीं ठीक हो जाएगा, और फिर Give up (हिम्मत हारना) नहीं करता, वह Depression (मायूसी) में नहीं जाता।

मन्फ़ी सोच के नुक़्सानात

और Negative thinking (मन्फ़ी सोच) की मुसीबत यह है कि यह इंसान के अंदर Depression और Frustration (मायूसी) पैदा करती है, और अगर इंसान के अंदर Frustration पैदा हो जाए तो फिर वह ऐसे React (रद्दे अमल) करता है जैसे कोई जानवर हुआ करता है, गुस्से में जो मर्ज़ी कह दे। हम एक मर्तबा एक जगह सफ़र कर रहे थे, तो वह अंग्रेज़ों का इलाक़ा था, तो लगता था कि एक ख़ाविंद अपनी बीवी से बहुत ख़फ़ा था।उसने दरवाज़े पर एक Sign (अलामती तख़्ता) लगा रखा था, लोग लगाते हैं घर पर अगर कुत्ता रखा हुआ हो, तो लगा देते हैं भाई! घर में कुत्ता है, मुहतात रहें, मगर उसने Sign पर पता है क्या लिखा हुआ था? Sign पर लिखा हुआ था Never mind my dog, be aware of my wife (मेरे कुत्ते की परवाह न कीजिये, अलबत्ता मेरी बीवी से चौकन्ना रहिये) तो इंसान Frustration में आकर वह कुछ भी कह देता है।

तो शरीअ़त ने कहा कि अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने के लिये मुस्बत

अंदाज़ अपनाओ और मन्फ़ी अंदाज़ से अपने आप को बचाओ, क्योंकि मन्फ़ी अंदाज़ से Depression और Depression से मायूसी पैदा हो जाती है और शरीअ़त नें कहा कि मायूसी कुफ़्र के मानिंद है, तो शरीअ़त ने मायूसी को कुफ़्र कहा है, इसलिये मोमिन दुनिया में मायूस नहीं हो सकता, इसलिये कि Negative thinking आ ही नहीं सकती, हमेशा अच्छी सोच रखने वाले लोग दुनिया के अंदर कामियाब होते हैं, यह उसूल है, चुनांचे बाईबल में एक वाक़िआ लिखा है और कुर्आन मजीद में भी इसकी तरफ़ इशारा है, एक पैग़म्बर अलै0 ज़रा Aged (उम्र दराज़) हो गए थे, उनका नाम तालूत अलै0, उनके साथ एक नौजवान थे, वह उठती जवानी थी, वह थे दाऊद अलै0, उनका मुक़ाबला हुआ एक बड़े जाबिर बादशाह के साथ, वह बादशाह बड़ी Heavy body (भारी जिस्म) का था, बड़ा Strong (मज़बूत) था, और लड़ने में बड़ा मशहूर था तो कहते हैं कि जब आमने सामने आए तो यह बाईबल के अलफ़ाज़ हैं कि तालूत अलै0 ने उसे देखा तो देखकर कहने लगे ओह! It is very difficult to kill him because he is very big (इसको मारना बहुत मुश्किल है, क्योंकि यह बहुत बड़ा है) और इतने में दाऊद अलै0 आ गए, वह जवान थे, उन्होंने जब देखा तो देखकर मुस्कुराए और कहने लगे ओह! It is very easy to kill him, because he is very big, I will never miss him (इसको मारना तो बहुत आसान है, क्योंकि यह बहुत बड़ा है, लिहाज़ा मेरा निशाना नहीं चूक सकता) यह इतना बड़ा मेरा Target (हद्‌फ़) है, मेरा निशाना ख़ता ही नहीं कर सकता और वही हुआ कि दाऊद अलै0 ने निशाना लगाया जो जालूत को लगा और अल्लाह ने उनको फिर कामियाबी अता फ़रमा दी।

इंसान में मन्फ़ी सोच को मुस्बत बनाने की सलाहियत

मुस्बत अंदाज़ से सोचना यह इंसान के लिये कामियाबी का ज़रीआ बनता है, मगर एक बड़ी ख़ूबसूरत बात यह है कि अल्लाह ने इंसान को सलाहियत दी है कि वह चाहे तो अपनी मन्फ़ी सोच को अपनी मुस्बत बना सकता है उसे अल्लाह ने यह Capability (इस्तिअ़दाद) दी है, उसको अल्लाह ने यह सिफ़त दी है कि वह अपनी शिकस्त को अपनी फ़तह में बदल सकता है, अपनी बुराई को अपनी अच्छाई में तबदील कर सकता है, चुनांचे फ़र्ज़ करो एक बंदा गुनाहों में ज़िंदगी गुज़ारता रहा, लोगों के लिये दर्दे सर बना है, अपने अंदाज़ अच्छे अख़्लाक़ पैदा करने हैं, मुझे अल्लाह के बंदों के लिये ज़हमत नहीं बनना, रहमत बनना है, तो यह बंदा अपने आप को Change (तबदील) करने की सलाहियत रखता है, यह कितनी ख़ूबसूरत बात है, यह नहीं है कि Negative thinking (मन्फ़ी सोच) शुरू से थी, अब हम कुछ कर ही नहीं सकते, नहीं, अल्लाह ने हर इंसान को यह सिफ़ात दी हैं कि वह अपनी Thinking (सोच) को तबदील कर सकता है, आज तक अगर हम बुरे अख़्लाक़ अपना कर ज़िंदगी गुज़ारते रहे तो आज की इस महफ़िल में हम यह अहद करें कि हम अपनी ज़िंदगी को तबदील करेंगे और मुस्बत सोच अपनाकर लोगों को अच्छाई देंगे, अल्लाह के बंदों के लिये बाइसे रहमत बन जाएंगे।

हुज़ूर सल्ल0 की ज़िंदगी में मुस्बत सोच के नमूने

इस काइनात में तारीख़े इंसानियत में सबसे ज़्यादा मुस्बत सोच अगर किसी में थी तो हमारे आक़ा और सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद मुज्तबा सल्ल0 में थी, दलीलः नबी सल्ल0 ताइफ़ जाते हैं, उनको दीन की दावत देते हैं, वह दावत क़बूल नहीं करते,

उल्टा बच्चों के ज़िम्मे लगा देते हैं कि इस बंदे को इस शहर से निकाल दो, नबी सल्ल0 थके हुए थे, भूक भी थी, प्यास भी थी, वह थोड़ी देर बैठना भी नहीं देना चाहते थे, बच्चे पीछे लग गए, पत्थर भी मारते थे, हत्ताकि आपकी नअ़लैन मुबारक लहू से भर गए, और आप सल्ल0 को उन्होंने इतना परेशान किया, आज के लफ़्ज़ों में ज़ाहिरन Humiliate (ज़लील करना) किया, उस बंदे की क्या Condition (हालत) होती है जिसे बैठने भी न दिया जाए, यअ़नी निकलो तुम यहां से ही चले जाओ, शहर ही छोड़कर चले जाओ, दिल में कितना गुस्सा आता है? दिल में क्या कैफ़ियत होती है, अल्लाह के नबी सल्ल0 शहर से निकल कर बाहर आकर एक जगह बैठ गए, बहुत ग़मज़दा थे, दुआ मांगी: اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَشْكُوْ اِلَيْكَ ضَعْفَ قُوَّتِىْ وَقِلَّةَ حِيْلَتِىْ وَهَوَانِىْ عَلَى النَّاسِ الخ، क्या ख़ूबसूरत दुआ है मगर इसके जवाब में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रिशतों को भेजा, जिब्रईल अलै0 फ़रिशतों को लेकर आए, ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! यह हवा का फ़रिशता है, अगर आप इजाज़त दें तो इन लोगों ने आप के साथ इतनी बदसुलूकी की, इतना Misbehave (बदतमीज़ी करना) किया एक तेज़ आंधी चलेगी और इन लोगों की लाशें पटख़ कर ज़मीन पर फेंक देगी जैसे क़ौमे आद के साथ हुआ था, आप इजाज़त दे दीजिये, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः नहीं! जिब्रईल अलै0 ने फिर अर्ज़ कियाः ऐ अल्लाह के नबी सल्ल0! यह पहाड़ों का फ़रिशता है, आप इजाज़त दे दीजिये, यह दो पहाड़ों को इस तरह टकराएगा कि दर्मियान की बस्ती का नाम व निशान ही नहीं रहेगा, इन लोगों ने आपके साथ इतना बुरा सुलूक किया। नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः नहीं, क्यों? आप ज़रा देखिये कि Positive (मुस्बत) सोच किसे कहते हैं? आम बंदा होता तो तबीअ़त में गुस्सा होता,

इंतेक़ाम लेने का जज़्बा होता, जी चाहता कि यह रूए ज़मीन से ज़ेरे ज़मीन चले जाएं, मेरे साथ इन्होंने यह किया, मगर अल्लाह के हबीब सल्ल0 जिब्रईल अलै0 से फ़रमाते हैं: जिब्रईल! अगर्चे यह लोग मुझे नहीं पहचान सके मगर मैं उम्मीद करता हूं कि इनकी आने वाली औलादों में से अल्लाह ऐसे लोगों को पैदा कर देंगे जो मेरे Message (पैग़ाम) को क़बूल करने वाले बन जाएंगे, इस क़दर मुस्बत सोच, अल्लाहु अक्बर कबीरा। आंख के इशारे पर वह बस्ती तबाह हो सकती थी, यूं समझिये रीमोर्ट कंट्रोल आपके हाथ में था, फ़रिशते पूछना चाहते थे, मगर अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने कितनी मुस्बत सोच सोची, फ़रमायाः अगर्चे यह लोग मेरे पैग़ाम को नहीं समझ पाए, मैं उम्मीद करता हूं कि अल्लाह इनकी औलादों में ऐसे बंदों को पैदा कर देंगे जो मेरे इस पैग़ाम को क़बूल करेंगे, वही ताइफ़ था कि वहां के लोग बिलआख़िर आए, और मदीना तय्यबा में आकर एक वक़्त में इस्लाम क़बूल कर लिया।

मुस्बत सोच वाले इन्दल्लाह व इन्दन्नास महबूबियत

अब आख़िरी बात यह है कि मुस्बत सोच रखने वाला बंदा अल्लाह के यहां भी मक़्बूल और अल्लाह के बंदों के लिये भी बाइसे रहमत होता है, चुनांचे एक वाक़िआ सुन लीजिये कि अल्लाह वाले कैसी मुस्बत सोच वाले बंदे होते हैं, हमारे यहां एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं अली हिज्वैरी रह0, सिलसिलए आलिया चिश्तिया के बहुत कामिल बुज़ुर्ग थ, हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी चिश्ती रह0 ने जब बंगाल का सफ़र किया तो उसी सफ़र में लाहौर से होकर आए, और अली हिज्वैरी रह0 की मज़ार पर उन्होंने मुराक़बा किया, और वहां से उन्हें बहुत फ़ैज़ मिला, और उन्होंने यह शेअ़र कहा था--

गंज बख़्शे फ़ैज़े आलम मज़हर नूरे ख़ुदा
नाकसां रापीरे कामिलां रा रहनुमा

यह ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी चिश्ती रह0 ने कहा था, ऐसे बुज़ुर्ग थे। चुनांचे उनके हालाते ज़िंदगी में लिखा हुआ है कि वह एक मर्तबा दरया में कशती पर सफ़र कर रहे थे, उसमें बहुत सारे मर्द व औरत और बच्चे भी थे और हज़रत भी सफ़र कर रहे थे, दरया में सफ़र करते हुए कई मर्तबा ज़रा तेज़ हवा चल रही थी, चुनांचे अली हिज्वैरी रह0 ने टोपी उतार ली कि उड़ कर दरया में न चली जाए, और जेब में डाल ली और बैठ कर अपना ज़िक्र व मुराक़बा करने लगे अब उन्होंने एक दिन पहले अपने सर की Shave (बाल मुंडवाना) करवाई थी और सर Shave करवाई तो सर बड़ा मुलायम नज़र आता है, तो आप बैठे हुए थे, तो एक बच्चा क़रीब से गुज़रा और उस बच्चे ने सर पर हाथ लगाया, उसको बड़ा नर्म नर्म नज़र आया, उसने जाकर दूसरे को बताया, वह दूसरा बच्चा आ गया, आकर उसने हाथ लगाया, तीसरा बच्चा शरारती था, चुनांचे वह आया और उसने हाथ लगाने की बजाए धप्पी लगा दी, फिर और एक बच्चा आया और उसने धप्पी लगा दी, अब यह अच्छा तमाशा बन गया, सारी कशती के मर्द व औरतें जब कोई आकर उनको धप्पी मारता खिलखिला कर हंसते और यह अल्लाह के नेक बंदे ख़ामोश बैठे हुए हैं, पूरी कशती के अंदर तूफ़ान बदतमीज़ी बपा था, कोई मां बाप बच्चों को रोक नहीं रहा था, Enjoy (मज़े) कर रहे थे, फ़क़ीर सा बंदा है, और बच्चे उसके साथ शरारतें कर रहे हैं, सब हंस रहे हैं, जब उन्होंने तूफ़ाने बदतमीज़ी बपा कर दिया----याद रखना जब अल्लाह वालों के साथ इस तरह Misbehave (बदतमीज़ी करना) किया जाता है फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस

बात पर Action (बदला) लिया करते हैं, यह लावारिस लोग नहीं हुआ करते, उनका वारिस ख़ुदा होता है---चुनांचे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इल्हाम फ़रमायाः मेरे प्यारे! तेरा इतना सब्र कि तेरे साथ यह बदतमीज़ी कर रहे हैं और आप इतने सब्र के साथ बैठे हुए हैं, कोई React (रद्दे अमल) भी नहीं कर रहे, तो इल्हाम हुआ कि ऐ मेरे प्यारे अगर तू कहे तो मैं इस कशती को उलट दूं, और जितने लोग कशती में सवार हैं उन सबको पानी में ग़र्क़ कर दूं तो जैसे ही दिल में यह इल्हाम हुआ तो उन्होंने उसी वक़्त दुआ के लिये हाथ उठाएः अल्लाह! आप कशती को उलटना ही चाहते हैं तो इन सब लोगों के दिलों की कशती का उलट कर इनको नेक बना दीजिये, दुआ क़बूल हुई, कहते हैं कि कशती में जितने लोग थे उनको मौत से पहले अल्लाह ने इस दुनिया में विलायत का मक़ाम अता फ़रमाया। उनकी क्या मुस्बत सोच थी, सुब्हानल्लाह। अल्लाह! आप को कशती उलटनी है तो फिर इनके दिल की कशती उलटें, इनको नेक बना दीजिये---

नशा पिला के गिराना तो सबको आता है
मज़ा तो तब है कि गिरतों को थाम ले साक़ी

आज तक हम मन्फ़ी सोच के ज़रीआ अल्लाह के बंदों के लिये वबाले जान बने, आज हम अहद करें कि आइंदा मुस्बत सोच अपनाएंगे, बहस व मुबाहिसा से, लड़ाई झगड़े से इज्तिनाब करके एक पुर अमन इंसान और एक अच्छे अख़्लाक़ व आला इंसान बन कर ज़िंदगी गुज़ारेंगे, अल्लाह हम को कामियाब ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

وآخرُ دعوانا أن الحمدُ لله ربِّ العٰلمين

☆☆☆

अगले सफ़्हा पर आप जो ख़िताब मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, वह हैदराबाद के चंचल गुड़ा, के एक कालिज के मैदान में 17 अप्रेल 2011 ई0 बरोज़ इतवार, बअ़द नमाज़े मग़रिब हुआ था, उलमा, व हुफ़्फ़ाज़ के इस मख़्सूस प्रोग्राम में भी जम्मे ग़फ़ीर उमड के आ गया था, मुहताते तुख़्मीना के मुताबिक़ हाज़िरीन की तादाद 30 से 40 हज़ार बताई गई है।

दुआ की अहमियत

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

اعوذ بالله من الشيطان الرجيم، بسم الله الرحمٰن الرحيم

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْ اَسْتَجِبْ لَكُمْ. وقال الله تعالٰى فِي مقامٍ آخر: اَمَّنْ يُجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ. .وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ: اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ.

سبحان ربك رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العلمين

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

अल्लाह के ख़ज़ानों से फ़ाएदा उठाने का तरीक़ा

दुनिया में मुख़्तलिफ़ चीज़ों से नफ़ा उठाने के मुख़्तलिफ़ तरीक़े होते हैं, आग से नफ़ा लेने के तरीक़े और हैं, पानी से नफ़ा लेने के तरीक़े और हैं, हवा से नफ़ा लेने के तरीक़े और हैं, ज़ह्न में एक सवाल पैदा होता है कि वह परवरदिगारे आलम जो ज़मीन व आसमान के ख़ज़ानों को मालिक है, उससे नफ़ा लेने के तरीक़े क्या हैं? इस बात को समझाने के लिये अंबिया किराम अलैहिमुस्सलाम दुनिया में तशरीफ़ लाए और उन्होंने यह बात समझाई कि लोगो! अगर तुम मेरे नक़्शे क़दम पर चलोगे, मेरे तरीक़ए ज़िंदगी को अपनाओगे, तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के ख़ज़ानों से सबसे ज़्यादा नफ़ा पाने वाले बंदे बन जाओगे, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से तुम्हारा

ऐसा तअल्लुक़ जुड़ जाएगा कि तुम्हारे हाथ उठेंगे और परवरदिगार क़बूल फ़रमा लेंगे। चुनांचे नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः "اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ" दुआ इबादत का मग़्ज़ है, क्रीम (Cream) है, निचौड़ है, जिस बंदे को दुआ मांगनी आ गई उसको अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से लेने का तरीक़ा आ गया।

दिल की गहराई से मांगी हुई दुआ रद्द नहीं की जाती

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उलमाए किराम को जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए कि उन्होंने दुआ मांगने के आदाब बड़ी शरह व बस्त के साथ बयान फ़रमा दिये, किस मौक़ा की दुआएं क़बूल होती हैं, किन जगहों की दुआएं क़बूल होती हैं, किन लोगों की दुआएं क़बूल होती हैं, यह तमाम बातें उन्होंने तफ़सील के साथ बता दीं, मगर इन सब के बावजूद एक चीज़ अपनी जगह है जो मांगने वाले पे मुन्हसिर होता है कि जिस दर्द से वह मांगे, जिस इज़्तिराब से वह मांगे, जिस लगन और शौक़ से वह मांगे, यह सबसे ज़्यादा अहम होती है, रब्बे करीम का वादा हैः "اَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ" कि मुज़्तर जब दुआ मांगता है तो उसकी दुआ को क़बूल करने वाला कौन है? तो परवरदिगार दिल से मांगी हुई दुआ को क़बूल करते हैं।

नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः "مَنْ فُتِحَتْ لَهٗ اَبْوَابُ الدُّعَاءِ فُتِحَتْ لَهٗ اَبْوَابُ الرَّحْمَةِ" जिस पर अल्लाह दुआ मांगने का रास्ता खोल दे उसके ऊपर अल्लाह की तरफ़ से रहमत के दरवाज़े खुल जाते हैं। आप देखें कि कुछ लोग होते हैं उनके लिये दुआ मांगना बहुत आसान होता है, उनको दुआ मांगना अच्छा लगता है, वह लम्बी दुआएं मांगते हैं और कुछ लोग होते हैं कि उनसे दुआ मांगी नहीं जाती, चुनांचे अगर आप ग़ौर करें तो अक्सर दुआएं आधा मिनट, एक मिनट, दो मिनट हाथ उठाते हैं और एक दुआ पढ़ी और मुंह पे

हाथ फेर लिये, अब यह मिन्टों की दुआ ऐसी ही तो नहीं असर रखेगी, इसलिये दुआ मांगने का तरीक़ा ठीक होना चाहिये।

गुनाह रिज़्क़ में बेबरकती का सबब

हज़रत सोबान रज़ि0 कहते हैं कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः "لَا يَرُدُّ الْقَدَرَ اِلَّا الدُّعَاءُ" क़ज़ाए को क़द्र को दुआ के सिवा कोई चीज़ बदल नहीं सकती "وَلَا يَزِيْدُ فِى الْعُمرِ اِلَّا الْبِرُّ" और नेकी के सिवा उम्र में कोई चीज़ इज़ाफ़ा नहीं कर सकती "وَاِنَّ الرَّجُلَ لَيُحْرَمُ الرِّزْقَ بِالذَّنْبِ يُصِيْبُهُ" और बंदा अपने गुनाहों के सबब मिलने वाले रिज़्क़ से महरूम कर दिया जाता है, यअ़नी अल्लाह तआला तो रिज़्क़ देना चाहते हैं, हम इसमें Stopper (रोक) लगाते हैं, यह हमारे गुनाह इस रिज़्क़ के रास्ते की रुकावट बन जाते हैं, जितने मअ़सियत के मुर्तकिब होंगे उतना रिज़्क़ की बरकत उठा ली जाएगी, सब कुछ होने के बावजूद भी परेशान रहेगा, इसलिये तो फ़रमायाः "وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا" जो हमारी याद से आंख चुराए हम उसके रिज़्क़ की तंग कर देंगे। है करोड़ों पती, कारख़ाना भी है, लेकिन एक कंटेनर उधर फंस गया, दूसरा कंटेनर इधर फंस गया, Payment (अदाइगी) देने वाले Payment नहीं देते, मांगने वाले तंग कर रहे हैं, अब आदमी परेशान है, सब कुछ है, लेकिन हाथ में कुछ नहीं है, तंगी होती है, परेशानी होती है, बच्चों की तरह रोते हैं, यूं अल्लाह तआला बंदे के रिज़्क़ को तंग कर देते हैं।

दुआ मुसीबतों को टालती है

सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 नबी सल्ल0 से रिवायत फ़रमाती हैंः "اَلدُّعَاءُ يَنْفَعُ مِمَّا نَزَلَ وَمِمَّا لَمْ يَنْزِلْ" कि दुआ नफ़ा देती है उस मुसीबत के लिये जो अभी नाज़िल नहीं हुई और उस मुसीबत के

लिये भी जो नाज़िल हो चुकी है। इंसान हैरान होता है कि जो नाज़िल नहीं हुई उसको तो चलो रोक लिया जाता होगा, लेकिन जो नाज़िल हो चुकी उसमें कैसे दुआ से फ़ाइदा होगा? तो वह फ़रमाती हैं कि नबी सल्ल० ने फ़रमाया: "وَاِنَّ الْبَلَاءَ لَيَنْزِلُ فَيَلْقَاهُ الدُّعَاءُ فَيَعْتَرِضَانِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ" बला आसमान से नाज़िल होती है, नीचे से बंदे की दुआ ऊपर जाती है, यह दोनों एक दूसरे को धकेलती हैं, Pull, Push करती रहती हैं, बला उसको धकेलती है, दुआ उसको धकेलती है, उस बला को क़्यामत तक नीचे नहीं उतरने देती। तो जो बला नहीं उतरती उसके लिये भी फ़ाएदामंद और जिसके उतरने का फ़ैसला हो गया उसके लिये भी फ़ाएदामंद।

दुआ न करने का नुक़सान

हदीसे मुबारक है: "مَنْ لَمْ يَدْعُ اللّٰهَ يَغْضَبْ عَلَيْهِ" जो शख़्स दुआ नहीं मांगता अल्लाह तआला उस बंदे से नाराज़ होते हैं। एक हदीसे मुबारक में इर्शाद फ़रमाया: "اِنَّ اَعْجَزَ النَّاسِ مَنْ عَجَزَ عَنِ الدُّعَاءِ" तबरानी शरीफ़ की रिवायत है कि इंसानों में सबसे ज़्यादा आजिज़ वह इंसान है जो दुआ मांगने से आजिज़ हो जाए।

दुआ करने के फ़ाएदे

एक हदीसे मुबारक में नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया: "اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ" दुआ मोमिन का अस्लहा है, जैसे इंसान दुशमनों से बचने के लिये अस्लहा का इस्तेमाल करता है, बलाओं से, परेशानियों से, मुसीबतों से और ग़मों से बचने के लिये यह दुआ अस्लहा के मानिंद होती है; लिहाज़ा जो बंदा दुआ करता रहता है अल्लाह तआला उनको हर परेशानी से बचा लेते हैं। नबी सल्ल० ने अपने चचा हज़रत अब्बास रज़ि० को फ़रमाया कि ऐ चचाजान! "اَكْثِرِ الدُّعَاءَ بِالْعَافِيَةِ" अल्लाह तआला से आफ़ियत की दुआ मांगा करें

कि अल्लाह तआला आफ़ियत वाला मुआमला फ़रमाए।

दुआ की क़बूलियत की तीन सूरतें

हदीसे मुबारक में है कि बंदा जब भी दुआ मांगता है अल्लाह तआला उसकी दुआ को क़बूल करते हैं, मगर इसकी तीन मुख़्तलिफ़ शक्लें हैं, पहली शक्ल यह कि जैसे मांगो वैसे ही क़बूल कर ली जाए, और दूसरी यह कि वैसे क़बूल करनी उसके लिये बेहतर नहीं थी तो अल्लाह उसके बदले कोई बला और कोई मुसीबत उससे दूर कर देते हैं, मसलन एक्सीडेंट होते होते बच गया, वह कोई मांगी हुई दुआ थी, सख़्त एक्सीडेंट हुआ, साथ वाले मर गए, यह बच गया तो इसकी जो जान बची यह इसकी कोई दुआ थी, यह दुआ के असरात होते हैं, छोटा बच्चा बीमारों से बचा रहा, हलांकि और बच्चे वाइरस की वजह से बीमार हो गए, यह दुआ का असर था, तो कभी दुआ मन व अन क़बूल कर ली जाती है, कभी इसके बदले मुसीबत को टाल दिया जाता है, और अगर यह भी न हो तो इस दुआ को बंदे के लिये Reserve (महफ़ूज़) रख लिया जाता है, क़्यामत के दिन यह बंदा अल्लाह तआला के सामने हाज़िर होगा, उस वक़्त उसको दुआ का अल्लाह अजर फ़रमाएंगे, और हर देने वाला अपनी शान के मुताबिक़ देता है, कहते हैं कि हातिम ताई से साईल ने पांच दीनार मांगे थे, उसने पांच सौ देने का हुक्म दिया, किसी ने कहा कि मांगे तो पांच हैं? उसने कहा कि उसने अपनी हैसियत से मांगे थे, मुझे अपनी हैसियत से देने हैं, मैंने पांच सौ देने का हुक्म दिया, तो जब दुनिया का सख़ी पांच मांगने वाले को पांच सौ देता है तो अंदाज़ा लगा सकते हैं कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जब देने वाले होंगे जो ज़मीन व आसमान के ख़ज़ानों के मालिक हैं तो वह अपनी शान के मुताबिक़ अता फ़रमाएंगे। हदीसे मुबारक में है कि बंदा तमन्ना करेगा

कि काश दुनिया में मेरी कोई दुआ क़बूल न होती और मेरी हर दुआ का बदला आज मुझे क़्यामत के दिन यहीं पर मिल जाता, तो मोमिन के तो मज़े हैं, जैसे मांगा वैसे क़बूल तो भी मज़ा, इसके बदले बला व मुसीबत टाल दी गई तो भी मज़ा, और क़्यामत के दिन अगर अल्लाह अता करेंगे तो इससे भी ज़्यादा मज़ा, हां एक सूरत है जिस सूरत में बंदे की दुआ को रद्द कर दिया जाता है, फटे कपड़े की तरह उसके मुंह पे मार दी जाती है, वह यह है कि बंदा कहना शुरू करता है कि अल्लाह हमारी सुनता नहीं, तो इस बात से अल्लाह तआला को बहुत जलाल आता है। याद रखिये! "إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ" मेरा परवरदिगाह दुआ को सुनता है, मगर अल्लाह अल्लाह है, ऐसा तो नहीं कि हम दुआ मांगें और उसी वक़्त पूरी हो जाए, उसकी अपनी शान है, अपनी मर्ज़ी है, तो यह अलफ़ाज़ कभी भी ज़बान से नहीं कहने चाहियें कि अल्लाह तआला हमारी तो सुनता नहीं। सुनता तो सबकी है, हां! अगर यह उम्मीद रखे कि मैंने जो दुआ मांगी है, मुझे तीन में से किसी न किसी एक सूरत में दुआ का बदला मिलेगा तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसकी दुआ का बदला उसको ज़रूर अता फ़रमाते हैं।

क़बूलियते दुआ में देर लगने की हिक्मत

बअ़ज़ मर्तबा ऐसा भी होता है कि बंदे का मांगना अल्लाह को पसंद आता है तो अल्लाह तआला उसको मांगने का मौक़ा देते हैं, आपने नहीं देखा कि कई दफ़ा बच्चा रोता है तो बाप थोड़ा उसको रोने देता है, उसका रोना उसको अच्छा लग रहा होता है और कई बाप को तो देखा कि वह बच्चे को ख़ुद Tease (सताना) करते हैं कि थोड़ा रोने वाली शक्ल बनाए, अपनी अपनी तबीअतें हैं, बिल्कुल इसी तरह हदीसे मुबारक में फ़रमाया गया, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया

कि बंदे की दुआ बसा औक़ात अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने पेश होती है, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "إِنَّ الْعَبْدَ يَدْعُو اللّٰهَ سُبْحَانَهٗ وَهُوَ يُحِبُّهٗ فَيَقُوْلُ" अल्लाह तआला बंदे से मुहब्बत करते हैं, वह बंदा अल्लाह से मुहब्बत करता है, तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: ऐ जिब्राईल! "أَخِّرْ حَاجَةَ عَبْدِیْ" मेरे बंदे की हाजत को ज़रा मुअख़्ख़िर कर दो, Postponed (मुअख़्ख़िर) कर दो "فَاِنِّیْ اُحِبُّ اَنْ اَسْمَعَ صَوْتَهٗ" मैं उसकी आवाज़ को सुनना पसंद करता हूं। यहया बिन सईदुल क़तान रह० एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, वह फ़रमाते हैं: "اِنَّهٗ رَأَى الْحَقَّ سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی فِی الْمَنَامِ" उनको ख़्वाब में अल्लाह तआला का दीदार नसीब हुआ "فَقَالَ" उन्होंने अर्ज़ किया "اِلٰهِیْ! كَمْ اَدْعُوْكَ فَلَا تُجِيْبُنِیْ" मैं कब तक दुआएं मांगता रहूंगा, आप मेरी दुआओं को क़बूल नहीं फ़रमाते? "فَقَالَ" इर्शाद फ़रमाया: "يَا يَحْيٰی: لِاَنِّیْ اُحِبُّ اَنْ اَسْمَعَ صَوْتَكَ" मैं तेरी आवाज़ को सुनना पसंद करता हूं, इसलिये मैं चाहता हूं कि तू मुझ से ज़्यादा से ज़्यादा मांगता रहे, तो कब दुआ पूरी होगी इस मुआमला को अल्लाह पे छोड़ दें, यह कोई मामूली बात है कि तौफ़ीक़ मिल गई? कितने लोगों को तो दुआ की तौफ़ीक़ नहीं होती।

दुआ व मुनाजात से महरूमी अल्लाह के ग़ुस्से की निशानी

इस आजिज़ के पास एक साहब आए, कहने लगे: हज़रत! पता नहीं किया हुआ है कि पिछले आठ सालों से दुआ मांगने का दिल ही नहीं करता, अब यह कितनी बड़ी महरूमी है कि दुआ मांगने का दिल ही न करे, यह महरूमी है कि दुआ में इंसान को रोना ही न आए। कहते हैं कि बनी इस्राईल के एक आलिम थे वह कहीं नफ़सानी तअल्लुक़ में फंस गए, इल्म तो था लेकिन नफ़्स ग़ालिब आ गया, वह गुनाह के मुर्तकिब भी होते और डरते भी, कि गुनाह की

वजह से इंसान महरूम होता है, कहीं मैं किसी नेअ़मत से महरूम न हो जाऊं, कुछ अर्सा यह सिलसिला चलता रहा, कुछ अर्से के बाद वह हैरान हुए कि मैं गुनाह कर रहा हूं और जो नेअ़मतें अल्लाह ने दी हुई थीं वह नेअ़मतें भी सलामत हैं तो कहने लगेः अल्लाह! तू कितना हलीम है कि मैं गुनाहों पे गुनाह कर रहा हूं और आपने अपनी नेअ़मतें सलामत रखी हुई हैं, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इल्हाम फ़रमायाः मेरे बंदे! तू महरूम हो रहा है, तुझे पता नहीं चल रहा है, पूछाः अल्लाह! मैं किस नेअ़मत से महरूम हुआ? फ़रमायाः जिसे दिन से तू कबीरा का मुर्तकिब हुआ, हमने तुझे रात के आख़िरी पहर में रोने की लज़्ज़त से महरूम कर दिया, तब उन्हें ख़्याल आया कि ओफ़्फ़ोह! जब से मैं गुनाह का मुर्तकिब हुआ मुझे कभी तहज्जुद में रोना ही नहीं आया। पता चला कि गुनाह की वजह से इंसान दुआ से महरूम हो जाता है।

इस दारुल अस्बाब में, दुआ मोमिन का बेहतरीन सबब

और अगर अल्लाह तआला दुआ का रास्ता खोल दें, दुआ की तौफ़ीक़ देदें तो यह अल्लाह तआला की तरफ़ से बेहतरीन मुआमला होता है। याद रखें इंसान अपने बचाव के जितने अस्बाब इख़्तियार करता है, उनमें सबसे बेहतर सबब दुआ होती है, दुआ से बेहतर सबब और कोई नहीं हो सकता, लिहाज़ा हर मुआमला में दुआ करनी चाहिये। हदीसे मुबारक है कि जो शख़्स चाहे कि सख़्ती में मेरी दुआ क़बूल हो उसको चाहिये कि वह ख़ुशहाली में दुआ करे, ताकि अल्लाह तआला सख़्ती के आलम में उसकी दुआ क़बूल फ़रमा लें।

दुआ की एक निराली शान

दुआ की एक अजीब बात है कि अगर ख़ालिस दुनिया के लिये मांगिये कि अल्लाह दुनिया की यह ज़रूरत पूरी कर दे तो इबादत है,

इस अमल की यह एक इम्तियाज़ी शान है, बाक़ी आमाल दुनिया की नियत से करें तो अजर नहीं मिलेगा, तो दुआ एक ऐसा अमल है कि ख़ालिसतन दुनिया की ज़रूरत है और दुनिया मांग रहा है कि या अल्लाह! मुझे खाना देदे, मुझे जूते देदे, क़पड़े देदे, ख़ालिस दुनिया की चीज़ मांग रहा है, फिर भी यह दुआ इबादत है। उलमा ने इसकी वजह बयान फ़रमाई है, वह फ़रमाते हैं कि असल में दुआ मांगने में इंसान को तवाज़ो इख़्तियार करनी पड़ती है, मांगने वाला अगर्चे दुनिया मांग रहा है लेकिन इस तवाज़ो की वजह से अल्लाह ने इस दुनिया मांगने को भी इबादत में शामिल फ़रमा लिया।

ख़ालिक़ से मांगने और मख़्लूक़ से मांगने में फ़र्क़

एक होता है ख़ालिक़ से मांगना, एक होता मख़्लूक़ से मांगना, इसमें ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है।

पहला फ़र्क़:

आपने देखा होगा कि मख़्लूक़ अगर इस मेअ़यार पे पहुंचे जहां वह दे सकते हों तो अपनों को नवाज़ते हैं, हुकूमत मिल गई तो जो क़रीबी होते हैं उनको नवाज़ा, फ़ैक्ट्री चल गई तो जो क़रीबी होंगे उनके लोगों को नौकरियां दीं, तो मख़्लूक़ का यह दस्तूर है कि वह अपनों को नवाज़ते हैं, मगर ख़ालिक़ का मुआमला और है, वह परवरदिगार इस दुनिया में अपनों को भी नवाज़ता है, ग़ैरों को भी देता है, चुनांचे कुफ़्फ़ार की भी वह मुरादें पूरी कर देता है, उनकी तमन्नाएं भी वह पूरी करता है, वह परवरदिगार इस दुनिया के अंदर रहमान की सिफ़त का ज़ुहूर करता है, जहां वफ़ादार को देता है वहां ग़द्दार को भी देता है, बल्कि समझ लें कि वफ़ादारों को तो दाल रोटी पे ही खुश कर देता है, फ़रमाते हैं कि यह सारे ग़द्दार होते तो मैं

उनकी छतों को सोने का बना के रख देता, मैं उनको दुनिया दे देता, इसलिये वह परवरदिगार सब को दुनिया में अता फ़रमाता है। हमने देखा कि मख़्लूक़ अगर कभी देती भी है तो गुस्से से देती है, आप गाड़ी पे सफ़र कर रहे हैं, वालिदा साहिबा पीछे बैठी हैं, एक Signal (ट्राफ़िक लाइट) के ऊपर गाड़ी खड़ी हुई, कोई मांगने वाला आ गया, उसने आके गाड़ी का शीश खटखटाया, आप इशारा करते हैं कि भाई मुआफ़ कर दो, मगर वह लोग भी बड़े साहिबे इस्तिक़ामत होते हैं, वह आप के इशारे की परवाह नहीं करते, खटखटाते रहते हैं, अब आप को गुस्सा आना शुरू हुआ कि जब उसे कह दिया कि भाई मुआफ़ कर दो, तो फिर क्यों खटखटा रहा है, इतने में पीछे से वालिदा साहिबा कहती हैं बेटा! अगर कुछ खुले पैसे हैं तो दे दो, अब आप मजबूर हो गए कि वालिदा साहिबा ने कह दिया तो आप शीशा खोल के पैसा तो देते हैं लेकिन गुस्से में देते हैं। तो बसा औक़ात मख़्लूक़ देती भी है तो गुस्से से देती है, मगर अल्लाह तआला का मुआमला और है, वह परवरदिगार गुस्से से कभी नहीं देता, जब भी देता है हमेशा प्यार से देता है, हमेशा प्यार से अता फ़रमाता है।

दूसरा फ़र्क़ः

मख़्लूक़ के अंदर एक बात और देखी, कि एक दफ़ा मांगे तो दे देंगे, दूसरी दफ़ा मांगे तो ज़रा बोझ समझेंगे, तीसरी दफ़ा कतराएंगे, और चौथी मर्तबा तो झंडी दिखा देंगे, दरवाज़ा बंद कर देंगे, मिलना छोड़ देंगे, तअल्लुक़ तोड़ देंगे, कहेंगे कि यह कैसा बंदा है, हर वक़्त मांगता ही रहता है, शर्म नहीं आती, कुर्बान जाएं उस परवरदिगार पर कि अल्लाह तआला से एक दफ़ा मांगें वह देता है, दूसरी दफ़ा मांगें वह देता है, तीसरी दफ़ा मांगें वह देता है, बार बार मांगें वह बार बार

देता है, बल्कि जो बंदा हर चीज़ अल्लाह से मांगे, हर हाल में अल्लाह से मांगे, अल्लाह उस बंदे को अपने औलिया में शामिल फ़रमा देते हैं कि मेरा यह बंदा मेरे अलावा किसी से मांगता ही नहीं, जब भी मांगता है मुझसे मांगता है।

तीसरा फ़र्क़ः

मख़्लूक़ के देने में और ख़ालिक़ के देने में एक फ़र्क़ और भी देखा, बड़ी हैसियत का बंदा हो उससे थोड़ा मांगो तो वह नाराज़ होगा, कोई बड़ा अमीर आदमी हो, आप उससे कहें कि मुझे एक रूपये की ज़रूरत है, वह कहेगा कि तुम ने मजलिस में मुझे ज़लील किया, तूने Public insult (बेइज़्ज़ती) कर दी, एक रूपया मुझसे मांगते हो, मुझे क्या समझा हुआ है? तो अगर बड़े से थोड़ा मांगो तो वह नाराज़ होता है। और किसी ग़रीब के पास जाएं कि मुझे एक मिलयन डालर की ज़रूरत है, वह कहेगा मज़ाक़ करते हो? तो ग़रीब से ज़्यादा मांगो तो वह नाराज़, अमीर से थोड़ा मांगो तो वह नाराज़, मगर परवरदिगार का मुआमला कुछ और है, उस परवरदिगार से थोड़ा मांगें तो भी वह देता है, ज़्यादा मांगें तो भी वह देता है, हत्ता कि किताबों में लिखा है कि अगर कोई बंदा अपने जूते का टूटा हुआ तस्मा भी अल्लाह से मांगता है अल्लाह बंदे को वह तस्मा भी ख़ुश होकर अता फ़रमा देते हैं।

चौथा फ़र्क़ः

हमने एक फ़र्क़ और भी देखा, किसी के पास जाएं कि मुझे ज़रूरत है, वह कहेगा कि मेरा बड़ा दिल चाह रहा है कि आप को ख़ाली न भेजूं, कारोबार ही नहीं चल रहा है, हालात भी साज़गार नहीं हैं, मगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां तो मुआमला कुछ और है, वहां न बजट की कमी, न ख़ज़ाने की कमी, जब भी बंदा अल्लाह से

मांगता है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने बंदे को हमेशा अता फ़रमाते हैं, और ख़ुश होकर अता फ़रमाते हैं।

पांचवां फ़र्क़:

एक फ़र्क़ हमने और भी देखा, मख़्लूक़ का दरवाज़ा दिन में खुला होता है, रात को बंद होता है, दफ़्तर दिन में खुला होगा, दूकान दिन में खुली होगी, आफ़िस दिन में खुला होगा, तो मिलने के औक़ात दिन में होते हैं, रात को दरवाज़े बंद हो जाते हैं, लेकिन उस परवरदिगार की शान कुछ और है, उससे बंदा दिन में मांगे तो दिन में भी दरवाज़ा खुला होता है, रात में मांगे तो रात में दरवाज़ा खुला होता है, वह फ़रमाते हैं: "لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ" उस परवरदिगार को न ऊंघ आती है, न नींद आती है, ऐसा न हो कि मेरा बंदा मुझसे मांगे और देने वाला ऊंघ रहा हो तो फ़रमाया कि हम नींद और ऊंघ से भी मुनज़्ज़ा और मुबर्रा हैं, हम हर वक़्त जागने की हालत में हैं, ताकि मेरे बंदा जब मांगे, अपने देने वाले को जागता पाए।

छटा फ़र्क़:

एक बात और भी देखी, मख़्लूक़ से अगर एक काम करवा लिया तो फिर उनकी भी तवक़्क़ुआत हो जाती हैं, चुनांचे दूसरी दफ़ा जाएं तो पूछते हैं कि क्या लाए हो? कोई Gift (तोहफ़ा) लाए या नहीं? तो मख़्लूक़ के दरवाज़े पे जाओ तो पूछा जाता है क्या लाए हो? अल्लाह का मुआमला कुछ और है, कभी भी अल्लाह के दरवाज़े पर जाओ, अल्लाह तआला यह नहीं पूछते कि क्या लाए हो, हां बंदे से इतना पूछते हैं: मेरे बंदे! तुम मुझसे क्या लेने के लिये आए हो? बादशाहों के दरवाज़े पे जब कोई जाता है तो बादशाह नहीं पूछा करते कि क्या लाए हो? बादशाह पूछा करते हैं कि क्या लेने के लिये आए हो? लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम उस परवरदिगार से मांगें, अगर

हमें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से मांगना आ गया तो मख़्लूक़ से मांगने की ज़रूरत ही ख़त्म हो जाएगी।

दुआ पढ़ने और दुआ मांगने में फ़र्क़

मुश्किल यह है कि आजकल हम दुआएं पढ़ते हैं, दुआएं करते नहीं हैं, दुआएं पढ़ने से दुआएं क़बूल नहीं होतीं, दुआएं मांगने से दुआ क़बूल होती है। पढ़ने से यह मुराद है कि ज़बान से तोते की तरह अल्फ़ाज़ निकल रहे हों, दिल ग़ाफ़िल हो, इसको कहते हैं दुआ पढ़ना, दुआ पढ़ने से दुआ क़बूल नहीं होती, दुआ मांगने से दुआ क़बूल होती है, दुआ मांगना उसको कहते हैं कि इंसान का दिल अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जो हो और उसके रूएं रूएं पे उसका असर हो और अल्लाह से एक तार उसकी जुड़ी हुई हो, तो इसको दुआ मांगना कहते हैं। आप ग़ौर करें कि अगर कोई साइल आप के सामने हाथ बढ़ाए और चेहरा दूसरी तरफ़ कर ले तो क्या आप का जी चाहेगा कि उसको कुछ दें? उल्टा आप ख़फ़ा होंगे कि तुमने मुझे ज़लील किया, यह तो कोई मांगने का तरीक़ा नहीं। हमारा मुआमला अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के साथ ऐसा ही है, जब दिल ग़ैर की तरफ़ मुतवज्जो है तो हमने हाथ तो अल्लाह के सामने फैलाए और दिल का चेहरा दूसरी तरफ़ कर लिया तो ऐसी दुआ तो उल्टा गुस्सा का सबब बन जाती है। तो किस कैफ़ियत से दुआ मांगनी है यह भी सीखना पड़ता है।

मुज़्तर की दुआ की क़बूलियत का एक नमूना

चनांचे हज्जाज बिन यूसुफ़ का एक मशहूर वाक़िआ है कि वह तवाफ़ कर रहा था, उसने एक अंधे को देखा वह बैठा हुआ दुआ मांग रहा था Routine में (आदत के अंदाज़ में) अल्लाह! मुझे बीनाई अता कर दे, अल्लाह! मेरी आंखें ठीक कर दे, बसीरत दे दे,

अल्लाह! मुझे आंखें दे दे, हज्जाज बिन यूसुफ़ खड़ा हो गया, उसने उस अंधे को ठोकर लगा के पूछाः अंधे! मैं हज्जाज बिन यूसुफ़ हूं—उसके बारे में बड़ा मशहूर था कि वह बड़ा सख़्त दिल इंसान है और जो कहता है बस वह कर देता है—वह अंधा बड़ा घबरा गया कि आज क्या मुसीबत नाज़िल हो गई, हज्जाज बिन यूसुफ़ ने उससे कहा कि मैं तवाफ़ कर रहा हूं और मेरे अभी इतने चक्कर बाक़ी हैं, अगर मेरे तवाफ़ मुकम्मल होने तक तेरी आंखें ठीक न हुईं तो मैं तुझे क़त्ल करवा दूंगा और अपने सिपाही को खड़ा भी कर दिया कि यह अंधा भागने न पाए और वह तवाफ़ करने लग गया, अब अंधे को जब पता चला कि वह कहके गया है कि मैं तुझे क़त्ल करवा दूंगा, अब तो उसकी हालत ही बदल गई, पहले तो दुआ पढ़ रहा था, अब कहता हैः या अल्लाह! पहले तो बीनाई का सवाल था, अब तो ज़िंदगी का सवाल है, जो रोया और जो मांगा उसने, गिड़गिड़ा कर फूट फूट कर रोया, अब ज़िंदगी का सवाल था, कहते हैं कि हज्ज़ाज बिन यूसुफ़ के आने से पहले अल्लाह ने उसे बीनाई अता फ़रमा दी। हज्जाज बिन यूसुफ़ ने उससे कहा कि जैसे तुम दुआ कर रहे थे सारी उम्र हरम में बैठ के करते रहते तो तुम्हारी वह दुआ क़बूल न होती, तुम दुआ पढ़ रहे थे, जब तुम्हारे दिल को चोट लगी और दिल तड़पा, तो अब तुमने दुआ मांगी और अल्लाह का वादा हैः "أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ"

दुआएं क़बूल न होने की वजह

आजकल हमने अक्सर देखा है कि लोग दुआएं मांगते नहीं, बल्कि ऐसे दुआ करते हैं जैसे काम ज़िम्मा में लगा रहे हैं जैसे कोई अफ़सर अपने दफ़्तर में आता है और कहता हैः इंजीनियर साहब! आप यह कर दें, फ़ोरमैन साहब! यह करवा देना, टेक्नीशियन साहब

आप यह कर देना, हम कभी अपनी दुआ का मुहासबा करें, हमारी दुआ भी इसी तरह की है कि अल्लाह! मेरे बेटे का निकाह हो जाए, बेटी को बेटा मिल जाए, छोटे बेटे को नौकरी मिल जाए, फ़लां को यह हो जाए, हमारा अंदाज़ इस तरह का होता है कि मआ़ज़ल्लाह जैसे हम काम अपने परवरदिगार के ज़िम्मा लगा रहे हैं, इस तरह दुआ क़बूल नहीं होती, दुआ मांगना अब्दियत है, यह आजिज़ी चाहता है।

दूसरों से दुआ की दरख़्वास्त करना

एक बात और भी सुन लीजिये, दुआ करवाना भी बड़ी अच्छी आदत है, नबी सल्ल0 दुआ करते भी थे, दुआ करवाते भी थे, हदीस पाक में है कि उमर रज़ि0 उम्रे के लिये तशरीफ़ ले जाने लगे तो नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः ऐ भाई! हमें अपनी दुआओं में याद रखना, तो नबी सल्ल0 ने दुआ की भी है, करवाई भी है, उम्मत को तालीम दी, लिहाज़ा हम दुआ करें भी करवाएं भी तो यह अच्छी आदत है, उस्ताज़ से दुआ लेना, मां बाप से दुआ लेना, बड़ों से दुआ करवाना, यह बहुत अच्छी आदत है।

दुआएं लेना, दुआएं कराने से ज़्यादा मुफ़ीद है

लेकिन इससे भी ज़्यादा अच्छी एक और आदत है, वह यह है कि दुआएं करवाने के बजाए दुआएं लेने वाले बना करें, दुआ करवाना तो यही हो गया कि अम्मी! दुआ कर दें, उस्ताज़ जी दुआ कर दें, हज़रत! आप दुआ कर दें, यह हो गया दुआ करवाना, और आलीना उसको कहते हैं कि इंसान इतना अच्छा तालिबे इल्म बने कि उस्ताज़ देखे तो दिल से दुआ निकले, इतना अच्छा सालिक बने कि शैख़ देखे तो दिल से दुआ निकले, इतना अच्छा फ़रमांबरदार बेटा बने कि मां देखे तो दिल से दुआएं निकले, जो शख़्स दुआएं लेने वाला

बन जाता है उस पर अल्लाह की रहमतों के दरवाज़े खुल जाते हैं, नौजवान बच्चे दुआएं लेने वाले बनें, इसलिये कि अल्लाह के दरवाज़े पर आने में देर होती है, अल्लाह तआला के दरवाज़े से मिलने में देर नहीं हुआ करती। हदीसे मुबारक है: "مَنْ سَئَلَ اللّٰهَ الشَّهَادَةَ بِصِدْقٍ بَلَّغَهُ اللّٰهُ مَنَازِلَ الشُّهَدَاءِ وَاِنْ مَاتَ عَلٰى فِرَاشِهٖ" हदीसे मुबारक है कि जिस शख़्स के दिल में शहादत की तमन्ना होगी और वह दुआ मांगता होगा तो अगर्चे उसको बिस्तर पर मौत आए अल्लाह उसको क़्यामत के दिन शहीद का मक़ाम अता फ़रमा देंगे।

अल्लाह से मांगने वाले को उम्मीद से ज़्यादा मिलता है

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां एक दस्तूर है कि मांगने वाले को उसकी तवक़्क़ो से ज़्यादा देते हैं। इसकी मिसाल क़ुर्आन अज़ीमुश्शान में है, सय्यदना इब्राहीम अलै0 ने दुआ मांगीः ऐ अल्लाह! मैंने अपनी औलाद को आपके घर के क़रीब बसाया "وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرَاتِ" उनको खाने के लिये फल अता कीजिये। अब दस्तूर की बात तो यही है कि फ़ल आम तौर से दरख़्तों के ऊपर होते हैं मगर जब रब करीम ने दुआ की क़बूलियत का तज़किरा फ़रमाया तो इर्शाद फ़रमायाः ऐ मेरे इब्राहीम! "يُجْبٰى اِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ" उस जगह हर चीज़ के फल पहुंचेगे, समरातुल अशजार नहीं कहा कि दरख़्तों के फल, हालांकि Understanding (ज़ाहिरी फ़हम) यही है, मगर अल्लाह तआला ज़्यादा देते हैं, देखें, दरख़्तों के फल उनके फ्रूट है, खेतों के फल उनकी सब्ज़ियां हैं, कारख़ानों के फल उनके Products (पैदावार) हैं, इंसान का फल उनकी औलाद हैं, तो अल्लाह करीम ने फ़रमाया कि मेरे इब्राहीम! तूने तो समर मांगा जो आम तौर पे दरख़्त पर होता है, मैं इतना बड़ा देने वाला परवरदिगार हूं कि सिर्फ़ दरख़्तों के फल नहीं, पूरी दुनिया में जो चीज़ जहां कहीं

बन रही होगी मैं उस बैतुल्लाह में तेरी दुआ की वजह से पहुंचा दूंगा। आज आप देखिये कि पूरी दुनिया में जहां कहीं भी जो फल होता है वह मक्का मुकर्रमा में मिलता है, सब्ज़ी वहां मिलती है, कपड़े वहां मिलते हैं, हर सहूलत की चीज़ अल्लाह ने वहां पहुंचा दी, यह है "يُجْبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ"

उमर रज़ि० एक मर्तबा उम्रे के सफ़र से वापस आ रहे थे, एक मैदान के अंदर रात को सो गए, तहज्जुद के लिये आंख खुली तो चौदहवीं का चांद चमक रहा था, आसमान के चांद को देख के उनको मदीना तय्यबा का चांद याद आया, नबी सल्ल० की याद आई, उस वक़्त उन्होंने अल्लाह से एक दुआ मांगी, दुआ यह थीः "اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِىْ شَهَادَةً فِىْ سَبِيْلِكَ" ऐ अल्लाह! मुझे अपने रास्ते में शहादत अता कीजिये "وَاجْعَلْ قَبْرِىْ فِىْ بَلَدِ حَبِيْبِكَ" और मेरी क़ब्र अपने महबूब सल्ल० के शहर में बना दीजिये, दुआ क़बूल हो गई, चुनांचे अगर उमर रज़ि० को पहाड़ की चोटी पे शहादत मिल जाती तो भी दुआ क़बूल, कहीं ज़मीन की पस्ती पे मिल जाती तो भी दुआ क़बूल, मगर नहीं, अल्लाह तआला उम्मीद से ज़्यादा देते हैं। उमर रज़ि० को शहादत ऐसी जगह मिली क मस्जिदे नबवी है, बावजू हैं मुसल्लए नबी है, नमाज़ की हालत है, कुर्आन की तिलावत कर रहे हैं, इस हाल में उन पर वार होता है, जो उनकी शहादत का सबब बन जाता है, यह तो उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि इस कामिल इनाबते इलल्लाह की शक्ल में मुझे शहादत मिल जाएगी। फिर अगर उनको जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़न होने की सआदत मिल जाती तो भी "وَاجْعَلْ قَبْرِىْ فِىْ بَلَدِ حَبِيْبِكَ" वाली दुआ क़बूल है, मगर देने वाले की शान बड़ी है, अल्लाह तआला ने फ़रमायाः मेरे महबूब के प्यारे! मुझसे दुआ मांगी कि आक़ा के शहर में मेरी जगह बने, मैं जन्नतुल

बक़ीअ़ में नहीं बल्कि अपने महबूब सल्ल० के क़दमों में रौज़ए अतहर के अंदर तुम्हें जगह अ़ता फ़रमा देंगे तो मांगने वाले ने जब भी मांगा देने वाले की दीन इससे बड़ी है, वह परवरदिगार उम्मीदों से बढ़ कर अ़ता फ़रमाता है।

गुनाहों की वजह से दुआ करने से नहीं शर्माना चाहिये

बअ़ज़ मर्तबा ज़ह्न में यह बात आती है कि हम तो दुआ के क़ाबिल ही नहीं हैं, बड़े गुनहगार हैं, कभी भी इस वजह से दुआ से न रुकें कि हम गुनहागार रहें, इसलिये कि वह परवरदिगार सिर्फ़ नेकूकारों की दुआओं को क़बूल नहीं करता, वह गुनहगारों की दुआओं को भी क़बूल कर लेता है। सुफ़यान बिन ऐयना रह० ने एक अजीब बात कही, फ़रमाते हैं कि "لَا يَمْنَعَنَّ أَحَدًا الدُّعَاءَ مَا يَعْلَمُ فِىْ نَفْسِهٖ" तुम में से किसी बंदे को यह बात दुआ से न रोके कि वह अपने दिल में सोचे कि मेरे अंदर तो बड़ गुनाह हैं "فَإِنَّ اللّٰهَ قَدْ أَجَابَ دعاءَ شَرِّ خَلْقِهٖ وَهُوَ اِبْلِيْسُ حِيْنَ قَالَ: رَبِّ اَنْظِرْنِىْ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ" अल्लाह तआला ने सबसे ज़्यादा शरीर शैतान की भी दुआ को क़बूल कर लिया, जब उसने क़्यामत क दिन कहा थाः अल्लाह! क़्यामत तक के लिये मोहलत दे दीजिये, परवरदिगार ने फ़रमायाः "اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ" मैंने तुम्हें मोहलत दे दी, तो अगर अल्लाह तआला शैतान की भी दुआ को क़बूल फ़रमा सकता है तो फिर मांगने वाला तो कलिमा गो मुसलमान होता है, उसको क्यों परेशान होने की ज़रूरत है? यह तो शैतान का एक हथियार है कि दिल में यह बात डालता है कि हम तो बहुत गुनहागार हैं, हम क्या दुआ मांगें। जिस तरह अगर इसी छोटी ज़बान से कलिमा पढ़ा तो क़बूल हो जाता है, उसी तरह दुआ मांगी तो हव भी क़बूल हो जाएगी, इसलिये दुआ मांगने में कभी देर नहीं करनी चाहिये।

कबूलियते दुआ के लिये दिल की हुज़ूरी शर्त है

इंसान से मांगो तो इंसान नाराज़ होता है, अल्लाह तआला से न मांगो तो अल्लाह तआला नाराज़ होते हैं, हां इतना है कि अल्लाह से मांगे तो दिल मुतवज्जो होना चाहिये, यह नहीं कि ज़बान पे तो दुआ हो और दिल में किसी और की तरफ़ ध्यान हो। ज़रा सुनिये! "قِيْلَ: مَرَّ مُوْسٰى عليه السلام بِرَجُلٍ يَدْعُوْ" एक मर्तबा मूसा अलै० गुज़रे "وَيَتَضَرَّعُ" एक बंदे के क़रीब से जो दुआ भी मांग रहा था और ज़ाहिर में आंसू भी बह रहे थे "فَقَالَ مُوْسٰى عليه السلام" मूसा अलै० ने कहा "اِلٰهِيْ! لَوْ كَانَتْ حَاجَتُهٗ بِيَدِيْ قَضَيْتُهَا" ऐ अल्लाह! अगर उस बंदे का मस्ला मेरे इख़्तियार में होता तो मैं उसके मस्ला को हल कर देता कि मांग भी रहा है रो भी रहा है "فَاَوْحَى اللّٰهُ تَعَالٰى اِلَيْهِ" अल्लाह तआला ने मूसा अलै० की तरफ़ वह्य नाज़िल की: "اَنَا اَرْحَمُ بِهٖ مِنْكَ" ऐ मेरे प्यारे मूसा! मैं आप से ज़्यादा उस बंदे पर रहम करने वाला हूं "وَلٰكِنَّهٗ يَدْعُوْنِيْ" मगर यह मुझ से दुआ कर रहा है "وَلَهٗ غَنَمٌ وَقَلْبُهٗ عِنْدَ غَنَمِهٖ" और उसका रेवड़ है और उसका दिल यूं उसके रेवड़ में फंसा हुआ है "وَاِنِّيْ لَا اَسْتَجِيْبُ لِعَبْدٍ يَدْعُوْنِيْ وَقَلْبُهٗ عِنْدَ غَيْرِيْ" और मैं ऐसी दुआ को नहीं क़बूल करता कि दुआ मुझसे मांगे और दिल किसी और के पास हो। अब इस ग़नम का तजुर्मा मुहद्दिसीनल ने यह भी किया कि जानवरों में दिल फंसा हुआ था और बअ़ज़ ने बकरियों से औरत मुराद ली कि कहीं लड़कियों में दिल फंसा हुआ था, तू दुआ इधर मांग रहा है, दिल उधर फंसा हुआ है, दुआ कैसे क़बूल होगी? "فَذَكَرَ مُوْسٰى عليه السلام لِلرَّجُلِ ذٰلِكَ" मूसा अलै० ने उस बंदे को यह बात बताई कि तेरा दिल फंसा हुआ है, दुआ क़बूल नहीं होगी जब तक दिल को ख़ाली न कर दें "وَانْقَطَعَ اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى بِقَلْبِهٖ" उस बंदे ने अपने दिल को हर

तरफ़ से हटा लिया "فَقَضَيْتُ حَاجَتَهُ" अल्लाह ने उसी वक़्त उसकी हाजत को पूरा फ़रमा दिया। अल्लाह तआला चाहते हैं कि मेरे बंदे मुझसे मांग रहे हों तो दिल भी तो मेरे पास होना चाहिये।

क़बूलियते दुआ की तीन अहम सिफ़ात

एह हदीसे मुबारक में है: "أَوْحَى اللّٰهُ اِلٰى عِيسٰى" अल्लाह तआला ने ईसा अलै0 की तरफ़ वह्य नाज़िल फ़रमाई कि "هَبْ لِيْ مِنْ قَلْبِكَ الْخُشُوعَ" अपने दिल से मुझे ख़ुशूअ़ दे दो "وَمِنْ بَدَنِكَ الْخُضُوعَ" और बदन की तरफ़ से ख़ुज़ूअ़ दे दो, यअ़नी बा अदब, बावक़ार दुआ मांगो "وَمِنْ عَيْنِكَ الدُّمُوعَ" और अपनी आंख से आंसू का क़तरा दे दो "ثُمَّ ادْعُنِيْ" फिर दुआ करो "أَسْتَجِبْ لَكَ" में दुआ को क़बूल करूंगा "فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ" बेशक मैं दुआ को क़बूल करने वाला हूं।

दुआ बार बार मांगने से क़बूल हो जाती है

बअ़ज़ दफ़ा ऐसा होता है कि बंदा दुआ मांगे तो फ़ौरी आसार ज़ाहिर नहीं होते, तो इसकी वजह से दुआ मांगना न छोड़ दे, मांगता रहे, मांगता रहे। कई ऐसे भी बुज़ुर्ग थे कि 25 साल बाद उनकी दुआ क़बूल हुई, 50 साल बाद उनकी दुआ क़बूल हुई और उन्होंने आंखों से क़बूल होते देखी, तो टाइम लगता है मगर अल्लाह क़बूल फ़रमा लेते हैं। आपने देखा होगा कि बच्चा कहता है: अम्मी! मुझे आइस्क्रीम देदें, मां कहती है: नहीं, तेरा गला ख़राब है, नहीं लेना, वह रोता है कि देदें, वह कहती है: नहीं, वह रोता है कि देदें, वह फिर कहती है कि नहीं, शुरू में नहीं नहीं करती रहती है, वह बच्चा भी रोता रहता है, मांगता रहता है, बिलआख़िर वही मां आइस्क्रीम उठा के दे देती है कि अच्छा खा लो। तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां भी मुआमला ऐसा ही है, बंदा रोता है, मांगता है, बिलआख़िर

अल्लाह तआला दरवाज़े को खोल देते हैं।

बड़ी प्यारी हदीस है "قال ﷺ" नबी सल्ल० ने फ़रमाया: "وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِیَدِهٖ" क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है "اِنَّ الْعَبْدَ لَيَدْعُو اللّٰهَ تَعَالٰى وهُو عَلَيهِ غَضبَانٌ" बंदा अल्लाह से दुआ मांगता है और अल्लाह तआला बंदे से नाराज़ होते हैं "وَيُعْرِضُ عَنْهُ" अल्लाह अअ़राज़ फ़रमाते हैं, उसकी दुआ को क़बूल नहीं करते "ثُمَّ يَدْعُوْ" वह बंदा फिर दुआ मांगता है "فَيُعْرِضُ عَنْهُ" अल्लाह फिर अअ़राज़ फ़रमाते हैं "ثُمَّ يَدْعُو" फिर वह मांगता है "فَيُعْرِضُ عَنْهُ" अल्लाह फिर अअ़राज़ करते हैं "ثُمَّ يَدْعُو" जब चौथी दफ़ा मांगता है "فَيَقُوْلُ اللّٰهُ تعالٰى لِلْمَلٰئِكَةِ" अल्लाह मलाइका से फ़रमातें हैं "أَبیٰ عَبْدِیْ أَنْ يَدْعُو غَيْرِی" लगता है उस बंदे ने तय कर लिया कि मेरे ग़ैर से नहीं मुझसे ही मांगता रहेगा "فَقَدِ اسْتَجَبْتُ لَهٗ" चलो मैंने उसकी दुआ को क़बूल फ़रमा लिया, तो बार बार मांगने से अल्लाह तआला बंदे की दुआ को कबूल फ़रमा लेते हैं, लिहाज़ा हमें भी चाहिये कि हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से मांगें तो बार बार मांगें, सिर्फ़ एक बार मांग लेना काफ़ी न समझा करें।

दुआ में नेक आमाल को वसीला बनाना

अब यहां पर नुक्ता की बात और लब्बे लुबाब सुन लें कि अल्लाह तआला को दो चीज़ें पसंद हैं, जिनकी वजह से दुआ क़बूल होती है, एक तो यह कि अल्लाह तआला के सामने बंदा अपेन अमल का वसीला पेश करे। इसकी दलील बुख़ारी शरीफ़क की हदीसे मुबारक है, कि बनी इस्राईल के तीन बंदे फंस गए थे, ग़ार के दरवाज़े पे कोई चट्टान आ गई थी, उनमें से एक ने अपने मां बाप की ख़िदमत का अमल पेश किया, चट्टान हट गई, दूसरे ने पेश किया कि अल्लाह! मैं तेरे डर की वजह से ज़िना से बचा, चट्टान

और हट गई, तीसरे ने अमल पेश किया कि मैंने तेरी ख़ातिर एक बंदे की अमानत में ख़यानत न की, अल्लाह ने चट्टान हटा दी, उनको नजात अता फ़रमा दी, इससे पता चला कि बंदा अपने अमलों को पेश करे।

कहते हैं कि शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रह0 का ज़माना था, देहली में एक दफ़ा बहुत क़हत पड़ा, शहर के उलमा ने ऐलान किया कि सारे लोग मैदान में जमा हो जाएं, अपने बच्चों को भी लाएं, जानवरों को भी लाएं और सब धूप में खड़े होके अल्लाह से मांगें, अल्लाह बारिश अता कर देंगे, इशराक़ के वक़्त से मांगना शुरू किया, अस्र का वक़्त हो गया, आसमान पे बादल का नाम व निशान नहीं, लोग हैरान थे, हज़ारों इंसान रो रहे हैं, औरतें रो रही हैं, बच्चे रो रहे हैं, जानवर भी परेशान हो गए, मगर अल्लाह की रहमत मुतवज्जो नहीं हुई, इतने में एक नौजवान ऊंट के ऊपर किसी सवारी को लेके जा रहा था, उसने जब मज्मा देखा तो सवारी को रोका औकर जाके पूछा कि लोग क्यों जमा हैं? लोगों ने कहा कि इशराक़ के वक़्त से लेके अस्र का वक़्त हो गया दुआ मांग रहे हैं, दुआ क़बूल ही नहीं हो रही है, उसने कहा अच्छा! वह सवारी के पास वापस आया और वहां खड़े होके उसने कोई दुआ मांगी, उसी वक़्त आसमान के ऊपर से बारिश नाज़िल होना शुरू हो गई, तो उलमा बड़े हैरान हुए, वह उस बच्चे के पास गए और पूछाः ऐ नौजवान! तेरा कौनसा अमल था कि जिसके सद्क़े अल्लाह ने रहमत भेज दी? उसने कहा कि इस ऊंट के ऊपर मेरी वालिदा सवार हैं और मुझे उनकी ज़िंदगी का पता है, तक़िय्या नक़िय्या पाक साफ़ अफ़ीफ़ ज़िंदगी गुज़ारने वाली हैं, मैं आया और मैंने उनकी चादर का एक कोना पकड़ के दुआ मांगीः ऐ अल्लाह! मैं उस मां का बेटा हूं जिसने

पाकदामनी की ज़िंदगी गुज़ारी है, अल्लाह! तुझे उसकी पाकदामनी का वास्ता, अपने बंदों पर बारिश बरसा दे, रब्बे करीम को यह बात इनती पसंद आई कि उसी वक़्त बारिश अता फ़रमा दी। तो एक तरीक़ा तो यह कि इंसान अपने अच्छे अमल पेश करे।

एतिराफ़े जुर्म अल्लाह की निगाह में पसंदीदा अमल

मगर हमारे लिये तो यह मुम्किन ही नहीं, हमें तो अपनी ज़िंदगी में कोई एक अमल भी नज़र नहीं आता जो अल्लाह के सामने पेश करने के क़ाबिल हो, एक दिन भी ऐसा नहीं जो गुनाहों के बग़ैर गुज़रा हो, तो कौन जुर्अत कर सकता है कि वह अपनी इबादत को अल्लाह के हुजूर पेश कर सके, लिहाज़ा आज हम जैसे गुनहगारों के लिये तो कोई अमल पेश करने के क़ाबिल नहीं, अलबत्ता एक और बात है जिसको अल्लाह तआला पसंद फ़रमाते हैं, उसको कहते हैंः एतिराफ़े जुर्म, अपने गुनाहों का एतिराफ़ कर लेना, जुर्म का एतिराफ़ कर लेना, अल्लाह के सामने अपने गुनहगार होने का एतिराफ़ कर लेना, मुआफ़ी मांग लेना, जो बंदा जुर्म का एतिराफ़ कर लेता है अल्लाह तआला उसके एतिराफ़ को भी पसंद फ़रमाते हैं, उसकी तौबा को क़बूल कर लेते हैं, उसकी दुआ पूरी कर देते हैं।

चुनांचे इस सिलसिला में एक वाक़िआ सुन लीजिये, 350 हि० का वाक़िआ है, उंदुलस में एक मर्तबा क़हत पड़ गया, बारिश नहीं होती थी, उलमा ने फ़ैसला किया कि सारे लोग एक मैदान में जमा हो जाएं और अल्लाह से दुआ मांगें, चुनांचे सारे लोग आ गए, सारा दिन दुआ मांगते रहे और दुआ क़बूल न हुई, वहां के बादशाह का नाम था अब्दुर्रहमान नाफ़ेअ़, किसी ने जाके बादशाह को बताया कि जनाब! सारी Public (अवाम) कब से दुआ मांग रही है, मगर दुआ क़बूल नहीं हो रही है, तो अब्दुर्रहमान नाफ़ेअ़ सर से ताज

उठाकर बैठा हुआ था, नंगे पांव और नंगे सर अपने दरबार से निकला और इसी तरह दौड़ता हुआ आया और लोगों में घुल मिल के हाथ उठाए और दुआ मांगने लगाः अल्लाह! बड़ा मुजरिम तो मैं हूं और मेरे क़िस्सों की वजह से अपने बंदों को तंगी में न डाल दे, मैं मुआफ़ी मांगता हूं मुझे मुआफ़ कर दीजिये, और मुझे मुआफ़ फ़रमा कर अपने बंदों को बारिश की नेअ़मत अता फ़रमा। अभी हाथ नीचे नहीं हुए थे कि अल्लाह ने उसी वक़्त बारिश अता फ़रमा दी। तो एतिराफ़े जुर्म को भी अल्लाह पसंद फ़रमाते हैं, अब हम जैसे लोगों के लिये यह क़ाबिले अमल चीज़ है कि हम अल्लाह तआला के सामने अपने जुर्म का इक़रार करें और अपने अल्लाह से मांगें कि ऐ अल्लाह! हम जैसे भी हैं, हैं तो आप के। बस इसी निस्बत का सहारा है।

कहते हैं कि एक औरत से ख़ाविंद नाराज़ हुआ और नाराज़ होके कहने लगा कि न तेरे पास शक्ल है, न अक़्ल है, न ऊंचे ख़ानदान की है, न माल है, तेरे पास है क्या? तो जब ख़ाविंद ख़ूब नाराज़ हुआ तो उस औरत की आंखों में आंसू आ गए, वह कहने लगी, अपनी इलाक़ाई ज़बान में उसने शेअ़र पढ़े, उसका तर्जुमा आप के सामने पेश करते हैं, कहने लगीः

> मेरी कोई औक़ात नहीं है, जो आपने कहा बिल्कुल ठीक कहा, मेरे अंदर कोई वस्फ़ नहीं, कोई ख़ूबी नहीं, लेकिन एक बात तो पक्की है कि मैं जैसी भी हूं, हूं तो आप ही की, आप के सिवा तो किसी की तरफ़ नज़र नहीं उठाती।

कहते हैं कि उस औरत की बात ख़ाविंद के दिल को इतनी अच्छी लगी कि उसने उसकी कोताहियों को मुआफ़ कर दिया। हम भी आज उस बारगाह में अल्लाह के सामने यही कहते हैं कि

अल्लाह! हम गुनहगार सही, ख़ताकार सही, हमारे पास नेकियां नहीं, हमारे पास अच्छे अख़्लाक़ नहीं, कोई कमालात नहीं, गुनाहों के सिवा हमारी झोली में कुछ भी नहीं है, मगर इतनी बात तो है कि जैसे भी हैं, हैं तो आप ही के, कलिमा आपका पढ़ा, अकेले आपको परवरदिगार मानते हैं, आपके सिवा कभी किसी ग़ैर की तरफ़ नहीं झुके, कभी ग़ैर की तरफ़ हाथ नहीं फैलाया, मेरे मौला! जब आप ही से मांग रहे हैं तो आप हमें अपने दर से ख़ाली न उठाइये।

मांगने का तरीक़ा बनी इस्राईल के गुनहगार से सीख लीजिये, उसने मज़ की दुआ मांगी, सुब्हानल्लाह! उम्मीद है कि आप दिल के कानों से इस वाक़िआ को सुनेंगे और अपनी ज़िंदगी में इससे फ़ाएदा उठाएंगे। वहब इब्ने मुनब्बा रह0 इसके रावी हैं, फ़रमाते हैं: "كَانَ فِي زَمَنِ مُوسٰى شَابٌّ عَاتٍ مُسْرِفٌ عَلٰى نَفْسِهٖ" एक नौजवान था जो बड़ा सरकश था, अपनी जान पे ज़ुल्म करता था, नफ़्स का पुजारी था, नफ़सानी, शैतानी, शहवानी गुनाहों में लगा रहता था, इतना गुनाह करता था कि बस्ती के लोगों ने मिलकर मशवरा किया कि इसको मना कर दो, अगर यह बाज़ न आया तो हमे धक्के देकर इसे शहर से निकल देंगे, चुनांचे वह उस दिन तो बचा रहा, फिर उसने गुनाह का इर्तिकाब किया, अब तो बस्ती वालों ने ख़ूब पिटाई भी की "فَأَخْرَجُوْهُ مِنْ بَيْنِهِمْ لِسُوْءِ فِعْلِهٖ" और उसके बुरे काम की वजह से बस्ती वालों ने उसको अपनी बस्ती से निकाल दिया, अब बस्ती से बाहर निकल के वीराने में वह रह गया, अल्लाह की शान कि चंद दिन वहां रहा, न खाना था, न पीना था, न कोई और चीज़ थी, बीमार हो गया, कोई दवाई देने वाला न था, कोई पुरसाने हाल नहीं था, "فَحَضَرَتْهُ الْوَفَاةُ فِي خَرِبَةٍ عَلٰى بَابِ الْبَلَدِ" शहर के दरवाज़े के सामने वीराने में उसकी वफ़ात हो गई "فَأَوْحَى اللّٰهُ إِلٰى

"مُوسٰی اِنَّ" अल्लाह ने मूसा अलै0 की तरफ़ वह्य नाज़िल फ़रमाई: "اِنَّ" "وَلِيًّا مِّنْ اَوْلِيَائِی" मेरे औलिया में से एक वली "حَضَرَهُ الْمَوْتُ" उसको मौत आ गई है "فَاحْضُرْهُ" आप जाइये "وَغَسِّلْهُ" उसको गुस्ल दीजिये "وَصَلِّ عَلَيْهِ" और उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़िये "وَقُلْ" और ऐलान कर दीजिये "لِمَنْ كَثُرَ عِصْيَانُهُ" जिस बंदे के गुनाह बहुत ज़्यादा हों "يَحْضُرُ جَنَازَتَهُ" अगर वह उसका जनाज़ा पढ़ने के लिये हाज़िर हो जाएं "لَاَغْفِرُلَهُمْ" तो मैं उनके गुनहों को भी मुआफ़ करूंगा "وَاحْمِلْهُ اِلَیَّ لِاُكْرِمَ مَثْوَاهُ" उसको मेरे पास लाइये, दफ़न कर दीजिये, मैं अपने उस बंदे का इकराम करूंगा "فَنَادٰی مُوسٰی فِی بَنِی اِسْرَائِيلَ" मूसा अलै0 ने बनी इस्राईल में ऐलान करवा दिया "فَكَثُرَ النَّاسُ" बहुत सारे लोग जमा हो गए, हर बंदा चाहता था कि जनाज़ा पढ़ने से गुनाह मुआफ़ हो जाएं---मय्यत दो तरह की होती है, बअ़ज़ ऐसे होते हैं कि जनाज़ा पढ़ने वालों की वजह से अल्लाह मय्यत की मग़फ़िरत फ़रमा देता है, हदीसे मुबारक भी है कि अगर चालीस ईमान वाले किसी का जनाज़ा पढ़ लें तो अल्लाह गुनहागार मोमिन की ख़ताओं को मुआफ़ फ़रमा देते हैं। और कई लोग ऐसे भी होते हैं कि उनका जनाज़ा पढ़ लेने से पढ़ने वालों की मग़फ़िरत हो जाती है, यह उन में से थे---चुनांचे बनी इस्राईल वाले सबके सब जनाज़ा पढ़ने के लिये आ गए "فَلَمَّا حَضَرُوهُ عَرَفُوهُ" जब बस्ती के लोग पहुंचे और उन्होंने देखा तो उन्होंने पहचान लिया "فَقَالَ" कहने लगे "يَا نَبِیَّ اللّٰهِ" ऐ अल्लाह के नबी "هٰذَا هُوَا الْفَاسِقُ الَّذِی اَخْرَجْنَاهُ" यह तो वही फ़ासिक़ है जिसको हमने बस्ती से निकाल दिया था "فَتَعَجَّبَ مُوسٰی مِنْ ذٰلِكَ" मूसा अलै0 को भी बड़ा तअज्जुब हुआ "فَاَوْحَی اللّٰهُ اِلَيْهِ" अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने वह्य नाज़िल फ़रमाई "صَدَقُوا وَهُمْ شُهَدَائِی اِلَّا اَنَّهُ لَمَّا حَضَرَتْهُ الْوَفَاةُ فِی"

"هٰذا الْخَرِبَةِ" यह लोग ठीक कहते हैं, मगर बात यह है कि जब उस नौजवान को उस वीराने में मौत आने लगी "نَظَرَ يُمْنَةً وَيُسْرَةً" उसने अपने दाईं देखा और अपने बाईं देखा "فَلَمْ يَرَ حَمِيْمًا" उसने कोई दोस्त न देखा "وَلَا قَرِيْبًا" न कोई क़रीबी देखा, कोई था ही नहीं "وَرَأَى نَفْسَهُ غَرِيْبَةً وَحِيْدَةً ذَلِيْلَةً" और उसने अपने आप को अकेला परदेसी और ज़लील देखा "فَرَفَعَ بَصَرَهُ اِلَيَّ" जब कोई नज़र न आया तो उस वक़्त उस बंदे ने आसमान की तरफ़ नज़र उठा के देखा और कहने लगा: "اِلٰهِيْ عَبْدٌ مِنْ عِبَادِكَ" अल्लाह! तेरे बंदों में से मैं भी एक बंदा हूं "غَرِيْبٌ فِيْ بِلَادِكَ" अपने शहर से धक्का देके निकाल दिया गया हूं "لَوْ عَلِمْتُ" अगर मैं जान लेता "اَنَّ عَذَابِيْ يَزِيْدُ فِيْ مُلْكِكَ" कि अज़ाब देने से आप के मुल्क में और आप की शान में इज़ाफ़ा हो जाता "وَعَفْوُكَ عَنِّيْ يَنْقُصُ مِنْ مُلْكِكَ" और मुझे मुआफ़ कर देने से आप के ख़ज़ानों में कोई कमी आ जाती "لَمَا سَأَلْتُكَ الْمَغْفِرَةَ" मैं आप से मग़फ़िरत न मांगता "وَلَيْسَ لِيْ مَلْجَأٌ وَّلَا رَجَاءٌ اِلَّا اَنْتَ" और अल्लाह! मेरा तो कोई मल्जा और मावी तेरे सिवा अब है नहीं "فَقَدْ سَمِعْتُ فِيْمَا اَنْزَلْتَ اَنَّكَ قُلْتَ" और मैंने यह भी भी सुना है कि आप ने यह इर्शाद फ़रमाया है "اِنِّيْ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ" कि मैं बड़ा ग़फ़ूर और रहीम हूं "فَلَا تُخَيِّبْ رَجَائِيْ" अल्लाह! मुझे नाउम्मीद न करना, "يَا مُوْسٰى" ऐ मूसा! "اَفَكَانَ يُحْسِنُ بِيْ اَنْ اَرُدَّهُ" क्या मुझे यह बात अच्छी लगती कि मैं उसकी दुआ को रद्द कर देता "وَهُوَ غَرِيْبٌ عَلٰى هٰذِهِ الصِّفَةِ" हालांकि वह परदेसी था और उसकी यह हालत थी "وَقَدْ تَوَسَّلَ اِلَيَّ بِيْ" उसने मेरी रहमत को वसीला बनाया "وَتَضَرَّعَ بَيْنَ يَدَيَّ" और मेरे सामने रोया, गिड़गिड़ाया "وَعِزَّتِيْ" मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम "لَوْ سَأَلَنِيْ فِي الْمُذْنِبِيْنَ مِنْ اَهْلِ الْاَرْضِ جَمِيْعًا" अगर वह बंदा

सारी दुनिया के गुनहगारों के बारे में मुझ से सवाल करता "لَوَهَبْتُهُمْ" मैं उन तमाम गुनहगारों को मुआफ़ कर देता "لِغُرْبَتِهٖ" उसके परदेसी होने की वजह से, "يَامُوْسٰى أَنَا كَهْفُ الْغَرِيْبِ" मैं परदेसी की पनाहगा हूं "وَحَبِيْبُهٗ" जिसका कोई नहीं होता मैं उसका दोस्त होता हूं "وَطَبِيْبُهٗ" मैं उसका तबीब होता हूं "وَرَاحِمُهٗ" और मैं उस पर रहमत करने वाला होता हूं।

वह कितना प्यारा परवरदिगार है कि अगर एक बंदा देखता है कि अब उसका कोई भी क़रीबी नहीं, फिर वह अल्लाह को पुकारता है तो उस फ़ासिक़ को अल्लाह विलायत का वह दर्जा देते हैं कि फ़रमाते हैं कि जो जनाज़ा पढ़ेगा हम उसकी भी मग़फ़िरत कर देंगे, उसने तो अपनी मग़फ़िरत मांगी, अगर दुनिया के तमाम गुनहगारों की मग़फ़िरत मांगता तो मैं परवरदिगार सबकी मग़फ़िरत कर देता। मालूम हुआ कि अगर गुनहगार मांगे और वाक़ई अल्लाह के सामने नादिम होकर मांगे, गुनाहों का एतिराफ़ करके मांगे तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रहमत जोश में आती है। आज इसी मुआमला को अल्लाह के सामने आज़माइये, अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करके अल्लाह की रहमत को तलब कीजिये, रब्बे करीम हमारे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दीजिये और अल्लाह तआला! हमें अपने दरबार से ख़ाली न लौटाइये, परवरदिगारे आलम! हम अच्छी तरह जानते हैं कि हमने सारी उम्र कलिमा पढ़ा, बाल सफ़ेद कर बैठे।

إِنَّ الْمُلُوْكَ إِذَا شَابَتْ عَبِيْدُهُمْ فِىْ رِقِّهِمْ أَعْتَقُوْهُمْ عِتْقَ أَحْرَارٍ

अल्लाह! जब ख़िदमत करने वाले गुलाम ख़िदमत करते करते बूढ़े हो जाते हैं तो फिर उनके मालिक उनको आज़ाद कर दिया करते हैं, ऐ अल्लाह! हमने भी तो कलिमा पढ़ते पढ़ते बाल सफ़ेद कर दिये, मेरे मौला हमें भी आप जहन्नम की आग से बरी फ़रमा दीजिये,

हमारे पास अच्छा अमल कोई नहीं जो आप के सामने पेश कर सकें, सफ़ेद बालों की लाज रख लीजिये, हमारे हाथ ख़ाली न लौटा दीजिये, अल्लाह! हम अच्छी तरह जानते हैं कि जो आपके दरवाज़े से ख़ाली जाता है वही बदबख़्त होता है, ऐ अल्लाह! हमारे लिये कोई दूसरा दरवाज़ा नहीं, दुनिया में रोटी का सवाल करने वाला एक दरवाज़े से मांगे, न पाए तो वह दूसरे दरवाज़े पे चला जाता है, न पाए तो तीसरे पे चला जाता है, उसको परवाह नहीं होती, अल्लाह! मस्ला तो हमारा है कि आप के दरवाज़े के सिवा कोई दूसरा दरवाज़ा नहीं, मेरे मौला! तुम ही से मांगेंगे तुम ही दोगे, तुम्हारे दर से ही लौ लगी है, ऐ करीम! आप ही के दर से लौ लगा कर बैठे हैं, हमसे यह न पूछियेगा कि मेरे बंदो! क्या लाए हो, हां यह ज़रूर पूछ लीजियेगा कि मेरे बंदो! क्या लेने के लिये आए हो? ऐ अल्लाह! हम आज की इस महफ़िल में आप को मनाने के लिये आए हैं, ऐ करीम! उठे हाथों की लाज रख लीजिये, अल्लाह! आपकी रहमत की नज़र बशर हाफ़ी की तरफ़ उठ जाती है तो दुनिया के शराबख़ाने से निकाल के उसको आप अपनी मुहब्बत की शराब पिलाते हैं, आपकी रहमत की नज़र फ़ुज़ैल बिन अयाज़ पर पड़ जाती है तो दुनिया के डाकूओं की सरदारी से निकाल के वलियों का सरदार बना देते हैं, ऐ अल्लाह! ऐसी रहमत की एक नज़र हम मिस्कीनों पर भी तो डाल दीजिये, मौला! आपकी एक नज़र के मुस्तहिक़ हैं, ऐ करीम! एक रहमत की नज़र डाल दीजिये, आज की महफ़िल में हमारी बिगड़ी बना दीजिये, अल्लाह! हमारी दुआओं को क़बूल फ़रमा लीजिये और हमारे उठने से पहले झोलियों को भर दीजिये।

وآخرُ دعْوانا انِ الْحمد للّٰہِ ربِّ العالمین

आइंदा सफ़्हा से जो बयान आप मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, वह बयान हैदराबाद के ख़ैरतआबाद इलाक़े में जहां हज़रत का क़्याम था, उसी जगह रात 1 बज कर 20 मिनट पर यह बयान शुरू हुआ, हाज़िरीन मजलिस में मख़्सूस हज़रात उलमाए किराम और मक़ामी अहबाब थे।

तारीख़ 18 अप्रेल 2011 ई0, इतवार और दो शंबा के दर्मियानी शब।

दिल पर मेहनत करना ज़रूरी है

الحمد لله كفى وسلامٌ على عباده اللذين اصطفى. اما بعد

इंसान जिस्म और रूह का मज्मूआ

इंसान दो चीज़ों के मज्मूए का नाम है, एक जिस्म है और दूसरा रूह, जिस्म आलमे ख़ल्क़ से तअल्लुक़ रखता है, वह चीज़ें जिनको अल्लाह ने वक़्त के साथ एक तरतीब से बनाया वह आलमे ख़ल्क़ कहलाते हैं, जैसे दुनिया के बारे में फ़रमायाः "خَلَقَ الْاَرْضَ فِى يَوْمَيْنِ" अल्लाह ने ज़मीन को दो दिन में पैदा किया और फिर चार दिन में उसके अंदर इंसानों के लिये ख़ज़ाने रखे, तो 6 दिन में यह ज़मीन बनने का Process (अमल) मुकम्मल हुआ, तो वह चीज़ें जो तदरीजन पैदा हुई उनको आलमे ख़ल्क़ की चीज़ें कहते हैं। और कुछ चीज़ें ऐसी हैं जो आनन फ़ानन पैदा हुई, वह तमाम की तमाम आलमे अम्र की चीज़ें कहलाती हैं, "اِنَّمَا اَمْرُهٗ اِذَا اَرَادَ شَيْئًا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْن" जैसे इंसान की रूह, जन्नत, जहन्नम, मीज़ान, अर्श, कुर्सी, क़लम, किताब, यह सब चीज़ें लफ़्ज़े कुन से पैदा हुई हैं, तो यह दो आलम हैं,: आलमे ख़ल्क़ और आलमे अम्र, इसलिये फ़रमायाः "اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ" अल्लाह ही के लिये है आलमे अम्र और अल्लाह की के लिये आलमे ख़ल्क़, और इंसान की यह ख़ुसूसियत है कि यह दोनों आलमों का मज्मूआ है, इसका जिस्म आलमे ख़ल्क़ से तअल्लुक़ रखता है, और इसकी रूह आलमे अम्र से तअल्लुक़ रखती है, इसलिये फ़रमायाः "يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ" कि यह आप से रूह के बारे में पूछते हैं "قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّىْ" आप फ़रमा दीजिये कि वह मेरे रब का अम्र है। तो इंसान आलमे ख़ल्क़ और आलमे अम्र

का मज्मूआ हो गया लेकिन इस दुनिया में इंसान चूंकि चीज़ों के साथ तअल्लुक़ रखता है इस वजह से उसके अंदर दुनिया की मुहब्बत आ जाती है, उसकी नूरानियत कम हो जाती है, ज़रूरत पड़ती है कि इंसान को रूहानी तौर पर कोई खूराक मिले, ताकि यह रूहानी तौर पर मज़बूत हो जाए।

विलायत कसबी चीज़ है

नबूवत वह्बी चीज़ है, विलायत कसबी चीज़ है, नबूवत के लिये तो अल्लाह ने जिसको चाहा चुन लिया, यह अल्लाह की अता थी, मगर विलायत कसबी चीज़ है, कसबी से यह मुराद है कि अगर कोई बंदा इख़्लास के साथ मेहनत करे तो वह उसको हासिल कर सकता है, यह Achieve (हासिल) की जा सकती है, विलायत का तसव्वुर आम बंदों की नज़र में तो होता है हवा में उड़ना, पानी में चलना, और इस क़िस्म के ख़र्के आदात का जुहूर होना, हालांकि उसका विलायत से कोई तअल्लुक़ नहीं है, यह तो हिंदू लोग भी करते फिरते हैं, विलायत कहते हैं: शरीअत के ऊपर इस्तिक़ामत के साथ अमल पैरा होना, जो शख़्स शरीअत के ऊपर अमल पैरा होने लग जाए वह विलायत के पहले दर्जे में आ जाता है।

विलायते सुग़रा और विलायते कुब्रा

विलायत कई तरह की है, एक है विलायते सुग़रा और एक है विलायते कुब्रा, समझने के लिये आसान लफ़्ज़ों में इसका फ़र्क़ यह है कि अगर बंदे के अंदर गुनाह की ख़्वाहिश तो गुज़रे Temptation (तहरीक) तो हो, मगर बंदा उसे रोक ले, उस पर क़ाबू पा ले और तक़ाज़े पर अमल न करे, शरीअत का पाबंद रहे तो उस बंदे को विलायत का पहला मर्तबा हासिल हो गया, उसको विलायते सुग़रा कहते हैं। बसा औक़ात इंसान के दिल की कैफ़ियत

ऐसी होती है कि तबीअत ही इतनी सलीमुलफ़ितरत बन जाती है कि गुनाह का दिल ही नहीं चाहता। मिसाल के तौर पर आम मुसलमान आदमी को अगर कोई कहे कि चलिये आप को सूअर का गोश्त खिलाते हैं, हालांकि वह बेनमाज़ी है, डाढ़ी मुंडा है, लेकिन एक तबई कराहत इसके अंदर होगी, वह कहेगा कि नहीं, मुझे नहीं चाहिये, अगर बता दूं कि उस होटल पर सूअर का गोश्त पकता है तो उस होटल से कोई चीज़ लेना ही बंद कर देगा। तो जैसे एक आम मोमिन को सूअर से तबई कराहत अल्लाह ने दे दी है और वह नाम आते ही दूर हो जाता है, ऐसे ही जो औलिया कामिलीन होते हैं, उनको हर गुनाह से उसी तरह तबई बुअ़द हो जाता है, तबीअ़त ही पसंद नहीं करती। बहुत से लोगों को आपने देखा होगा कि म्यूज़िक इतनी बुरी लगती है कि अगर मस्जिद में किसी सेल फ़ोन बजने लगती है तो कोफ़्त होती है, यह नहीं कि बंदा इन्जुवाए करता हो, दिल खुद कहता है कि इतनी भी समझ नहीं है कि मस्जिद के अंदर म्यूज़िक की आवाज़? तो यह कानों को बुरी लग रही होती है, इसी तरह जब गुनाह तबीअत को बुरे लगने लग जाएं, बेसाख़्ती के साथ शरीअ़त पर इंसान अमल करने वाला बन जाए, गुनाह का तक़ाज़ा ही दिल में न आए नफ़्स इतना शरीअ़त के मुताबिक़ ढल जाए कि मकरूहाते शरइया मकरूहाते तबइया बन जाएं तो इसको कहते हैं विलायते कुब्रा।

हज़रत गंगोही रह0 हज़रत हाजी साहब रह0 की ख़िदमत में

चुनांचे हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह0 जब पढ़ाते थे तो एक दिन उन्होंने सोचा कि हज़रत हाजी साहब की सोहबत में होके आता हूं, चुनांचे गंगोह से थाना भवन आ गए, वहां हज़रत हाजी साहब से मुलाक़ात हो गई, अब नियत तो की थी कि मुलाक़ात

करके वापस आएंगे, लेकिन हाजी साहब ने बैठा लिया, उन्होंने कहाः हज़रत! इजाज़त हो जाए तो मैं वापस जाना चाहता हूं, फ़रमाया रशीद अहमद! कुछ वक़्त हमारे पास भी गुज़ार लो, फ़रमाया कि हज़रत! मैं पढ़ाने वाला उस्ताज़ आदमी हूं, तालीम मेरा काम है, मैं नहीं चाहता कि तलबा का नुक़्सान हो, फ़रमायाः अच्छा रशीद अहमद! रात को ठहर जाओ, तो कहा कि हज़रत! मैं रात अगर ठहर गया तो आप की ख़ानक़ाह में तो सारी रात ज़िक्र होता रहता है, कोई इल्लल्लाह की ज़र्बें लगाता है, कोई क़ुर्आन की तिलावत कराता है, यह तो सब ज़िंदादार लोग हैं, मुझे तो नींद नहीं आएगी और अगर रात को नींद न आई तो कल मेरा सबक़ खोटा होगा, फिर तलबा की पढ़ाई का हरज होगा, हज़रत ने फ़रमायाः मियां रशीद अहमद! तुम्हें कोई नहीं जगाएगा, तुम सो जाना, तब कहा कि हज़रत! ठीक है फिर मैं रात को सो जाता हूं, उन्होंने सोने का इरादा कर लिया, हज़रत हाजी साहब ने ख़ादिम को कहा कि मियां रशीद अहमद की चारपाई हमारी चारपाई के क़रीब लगा देना—असल यही होता है कि लोहा जब मक़्नातीस के साथ होता है तो न चाहते हुए भी ख़ुद बख़ुद मक़्नातीसियत उसके अंदर आ जाती है, मक़्नातीसी सूंड ऐसा होता है कि मक़्नातीस लोहे को भी मक़्नातीस बना देता है—चुनांचे वह सो गए, फ़रमाते हैं कि रात को मेरी आंख खुली तो देखा कि कोई ज़िक्र में था, कोई तहज्जुद पढ़ रहा था, कोई तिलावत कर रहा था, कोई अल्लाह अल्लाह की ज़र्बें लगा रहा था, मैंने सोचा कि मैं सो जाऊं, फिर मेरे ज़ह्न में ख़्याल आया कि रशीद अहमद! वरसतुल अंबिया में शामिल होने की तो बड़ी तमन्ना तुम्हें हैं, पर अंबिया अलै0 का शआर तो यह था कि इर्शाद है "كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ۔" दूसरी जगह "تَتَجَافَى

جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ" अब यह दोनों आयतें याद आने लग गईं, हत्ता कि थोड़ी देर के बाद बिस्तर ने मुझे उछाल दिया—कुछ अल्लाह के एेसे बंदे होते हैं कि जब रात का आख़िरी वक़्त आता है तो बिस्तर को उछाल देता है, कितने थके हुए क्यों न हों, कितनी नींद ग़ालिब न हो, उठ के खड़े हो जाते हैं----कहते हैं कि मैं उठ गया, वज़ू किया, तहज्जुद पढ़ी, अभी फ़ज्र में टाइम था, मैंने भी अल्लाह अल्लाह की ज़र्बें लगानी शुरू कर दीं, ला इलाहा इल्लल्लाह का ज़िक्र शुरू कर दिया, फिर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ के हाजी साहब से मुलाक़ात हुई, हाजी साहब ने फ़रमायाः मियां रशीद अहमद! वह जो शख़्स यहां बैठा ला इलाहा इल्लल्लाह का ज़िक्र कर रहा था वह कौन था? कहा कि हज़रत वह मैं ही तो था, फ़रमायाः अच्छा आप ज़िक्र कर रहे थे? कहा कि जी हज़रत! फ़रमायाः मियां रशीद अहमद! अगर ज़िक्र करना ही है तो सीख के ज़िक्र कर लो, मैंने कहा कि हज़रत! सिखा दीजिये, लीजिये हाजी साहब ने क़ैद कर लिया, हाजी साहब ने बैअ़त कर लिया, फ़रमाते हैं कि बैअ़तक करते ही मेरे दिल की हालत ऐसी बदली कि मैंने कहाः मियां रशीद अहमद! इतने साल तो हम पढ़ते रहे और पूरी ज़िंदगी अब पढ़ाना ही है, अगर एक शैख़ ख़ुद चाहता है कि मैं उसके पास वक़्त गुज़ारूं तो मुझे उससे ज़्यादा शफ़क़त और मुहब्बत तो कभी नहीं मिल सकती, लिहाज़ा मैं छुट्टी कर लेता हूं, किसी और के ज़िम्मा लगा देता हूं कि वह पढ़ा दे, मैंने इरादा ज़ाहिर किया कि हज़रत! मैं एक महीना आप के पास रहूंगा, हाजी साहब ख़ुश हो गए, एक महीना हज़रत हाजी साहब ने अपने पास रखा, तवज्जो दी, तरबियत की, उनकी अच्छी निगरानी की, उनके दिल पे नज़र की, हत्ता कि अल्लाह तआला की रहमत हो गई, इल्म में तो

पहले ही से बहुत रासिख़ थे, बस उसमें रूह भरने वाली बात थी, वह हाजी साहब ने एक नज़र में भर दी, फिर हाजी साहब ने इम्तिहान लिया कि नफ़्स मरा है या नहीं मरा। हमारे बुज़ुर्ग पहले मेहनत करवाते हैं और फिर टेस्ट लेते हैं कि नफ़्स मरा कि नहीं मरा, इजाज़त देते हैं, चुनांचे हुआ यह कि हज़रत मौलाना फ़ज़्ले रहमान गंज मुरादाबादी रह० तशरीफ़ लाए और हज़रत हाजी साहब और वह किसी जगह खाने पे मदऊ थे, हज़रत हाजी साहब मौलाना रशीद अहमद को भी साथ ले गए, अभी नौजवान लड़के थे, पढ़ के फ़ारिग़ हुए थे, थोड़ा अर्सा हुआ था, जब वहां गए तो सुब्हानल्लाह! पकाने वाले ने दस्तरख़्वान पे दर्जनों डिशें रखी हुई थीं कि पता नहीं मेहमान को कौनसी पसंद आए, तो हज़रत हाजी साहब ने एक प्लेट ल और उसके अंदर थोड़ी सी दाल डाली और दो चपातियां लीं और मियां रशीद अहमद के हाथ में पकड़ा के कहाः मियां रशीद अहमद तुम दस्तरख़्वान के कोने पे बैठ के खाना खा लो, लीजिये उनको तो दाल चपाती और ख़ुद के लिये माशा अल्लाह मुर्ग़! हम जैसा कोई मौलवी होता तो बैअ़त ही तोड़ देता कि पीर साहब को मुसावात नहीं आती, मगर यह तो हकीम लोग थे जो बंदे का इलाज करते थे, वह समझते थे कि जो शैख़ कर रहे हैं उसके पीछे हिक्मत है "فعل الحكيم لا يخلو عن الحكمة"- अब जब मियां रशीद अहमद वहां बैठ के खाना खाने लगे तो हाजी साहब ने खाते खाते उन पर वार कियाः रशीद अहमद! दिल तो यह चाहता था कि तुम्हें दरवाज़े के पास जूते के साथ बैठा देता, मगर मैंने सोचा कि चलो दस्तरख़्वान के कोने पे बैठा देता हूं, बस यह बात कहके हज़रत हाजी साहब ने उनके चेहरे को देखा कि चेहरे पे नागवारी के आसार तो नहीं ज़ाहिर हुए, तो मौलाना रशीद अहमद रह० ने बड़े मुस्कुराते चेहरे के साथ कहाः

हज़रत! आपने सच फ़रमाया, मैं तो आपके जूतों में भी बैठने के क़ाबिल नहीं था और आपने यह जो दस्तरख़्वान के कोने पे बैठा दिया, आपने मुझ पे एहसान फ़रमाया, हाजी साहब ने फ़रमायाः अलहम्दु लिल्लाह कि नफ़्स भड़का नहीं मर चुका है, फिर हाजी साहब ने उसके बअ़दुल विदाअ़ किया और इजाज़त व ख़िलाफ़त दी, जब ख़िलाफ़त दी तो हज़रत गंगोही रह0 कहने लगेः हज़रत! मेरे अंदर तो कुछ नज़र ही नहीं आता, फ़रमायाः मियां रशीद अहमद! यह तुम्हें निस्बत की बशारत इसलिये दी गई है कि तुम्हें अपने अंदर कुछ नज़र नहीं आता, अगर नज़र आता तो तुझे कभी न ख़ुशख़बरी दी जाती, ख़ैर जब मौलाना रशीद अहमद चलने लगे तो कहाः हज़रत दुआ कीजिये और रोना आ जाए, हज़रत गंगोही को ज़मानए तालिबे इल्मी में रोना कम आया करता था, अब जब वापस आए तो निस्बत ने पर पुर्ज़े निकालने शुरू कर दिये, तबीअ़त के अंदर ज़ौक़ आ गया, विज्दान आ गया, अब तहज्जुद में उठते हैं तो बस रोना होता, इतना गिड़गिड़ा के रोते कि गिर जाते और सांस रुकने लगती, फंदा सा लगने लगता, ख़त लिखना पड़ा कि हज़रत! इतना रोना आता है कि फंदा सा लगने लग गया, कैफ़ियत यह बन गई, एक दो साल के बाद फिर मुलाक़ात हुई, इस मुलाक़ात के मौक़ा पे हाजी साहब ने एक बड़ा ख़ूबसूरत सवाल पूछाः मियां रशीद अहमद! बैअ़त करने से पहले और बैअ़त करने के बाद तुम्हें अपने अंदर क्या फ़र्क़ नज़र आया? हज़रत थोड़ी देर तो सोचते रहे, फ़रमाने लगे कि मुझे तीन फ़र्क़ नज़र आ रहे हैं, पूछा कि कौन कौन से? फ़रमाया कि हज़रत! एक फ़र्क़ तो यह नज़र आया कि बैअ़त होने से पहले बहुत इश्किालात वारिद होते थे, उनको हल करने के लिये हाशिया देखते थे, फिर कोई शरह देखते थे, तो बड़ी मुश्किल से इशकाल दूर होते थे, जब से बैअ़त

हुआ हूं कोई इशकाल ही वारिद नहीं होता। पूछा कि और? फ़रमाया: हज़रत! दूसरी बात यह कि जिन चीज़ों से शरीअ़त ने कराहत की है तबीअ़त ख़ुद भी कराहत करने लग गई है। पूछा कि और? फ़रमाया: हज़रत! तीसरी बात यह है कि दीन की बात करनी होती है तो मैं किसी की मदह व ज़म का ख़्याल नहीं करता, हक़ बात कर देता हूं, हज़रत ने फ़रमाया: मियां रशीद अहमद! इल्म के दर्जे हैं, पहला दर्जा यह है कि बंदा को नुसूसे शरईया में कहीं भी तआरुज़ न नज़र आए, यह इल्म का पहला दर्जा है। और दूसरा यह कि मक्रूहाते शरईया मक्रूहाते तबईया बन जाएं। और तीसरा है इख़्लास, और इख़्लास का कमाल यह है कि दीन के मुआमला में मदह व ज़म बराबर हो जाएं, मियां रशीद अहमद! तुम्हें मुबारक हो, अल्लाह ने तुम्हें इल्म में भी कमाल दे दिया, इख़्लास में भी कमाल अता फ़रमा दिया, बैअ़त की यह बरकत है कि वह इंसान मियां रशीद अहमद से बुलंद होकर हज़रत गंगोही रह0 बन जाता है।

हज़रत गंगोही रह0 का मक़ाम

अल्लामा अनवर शाह कशमीरी रह0 ने लिखा है कि मेरे नज़दीक हज़रत गंगोही रह0 अल्लामा शामी रह0 से ज़्यादा फ़क़ीह थे, अब अल्लामा अनवर शाह कशमीरी रह0 का यह फ़रमाना और लिखना कि मेरी नज़र में हज़रत गंगोही रह0 अल्लामा शामी रह0 से ज़्यादा फ़क़ीह थे, यह कोई छोटी सी बात नहीं है, बहुत बड़ी बात है, अल्लाह ने यह रुतबा उनको कैसे दिया? अल्लाह ने उन पर इल्म का रंग चढ़ा दिया।

हज़रत गंगोही रह0 जैसे आलिम, हज़रत हाजी साहब रह0 से क्यों बैअ़त हुए?

इसी लिये किसी ने हज़रत गंगोही रह0 से पूछा था कि आप तो

जिबालुल इल्म में से हैं, आप को हज़रत हाजी साहब से बैअ़त होने की क्या ज़रूरत थी? तो उन्होंने बड़ा प्यारा जवाब दिया, फ़रमाया कि हमने मिठाइयों के नाम तो दारुल उलूम में रह के पढ़ लिये थे, मिठाइयों के ज़ाएक़े का पता नहीं था, हम हाजी साहब के पास आए कि हमें मिठाइयों के ज़ाएक़े का पता चल जाए, जुह्द, इनाबत, तवक्कुल, तसलीम, रज़ा, सब्र यह मिठाईयां हैं, तो लफ़्ज़ तो पढ़ लिये थे, लेकिन हक़ीक़त क्या है, इसका पता नहीं था, हक़ीक़त पाने के लिये हाजी साहब के पास आए, चुनांचे अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने उनको फिर वह मक़ाम अता फ़रमा दिया।

हज़रत थानवी रह0 के एक ख़लीफ़ा

हमारे इलाक़े में एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हज़रत मुफ़्ती हसन रह0, यह हज़रत अक़्दस थानवी रह0 के अजल ख़ुलफ़ा में से थे, अमृतसर के रहने वाले थे, लाहौर चले गए, वहां उन्होंने जामिआ अशरफ़िया के नाम से एक मदरसा बनाया, बड़े मदारिस में से है। वह अपनी बैअ़त का वाक़िआ ख़ुद सुनाया करते थे, कहते हैं कि मुझे हज़रत अक़्दस थानवी रह0 से अक़ीदत तो बहुत थी, मैंने कई मर्तबा बैअ़त होने का इज़्हार भी किया, लेकिन हज़रत फ़रमाते कि मुफ़्ती साहब! बैअ़त का असल मतलब तो होता हैं मुहब्बत और अक़ीदत का होना, कि मुरीद की तरफ़ से अक़ीदत हो और शैख़ की तरफ़ से मुहब्बत हो, तो मक़्सूद मौजूद है, बैअ़त की क्या ज़रूरत है? तो हज़रत टरख़ा देते, मैं चुप हो जाता, एक मर्तबा मुझ पर इतना ग़ल्बा हुआ कि मैंने फ़ैसला कर लिया कि आज जो मर्ज़ी हो, मुझे बैअ़त होके ही वापस लौटाना है, मैं थाना भवन पहुंचा, हज़रत तसनीफ़ व तालीफ़ का काम कर रहे थे, सलाम किया, पूछाः कैसे आए? कहाः हज़रत! बैअ़त होने के लिये, फ़रमायाः मुफ़्ती साहब! मक़्सूद तो आपको हासिल है, मैंने

कहाः हज़रत! मक़्सूद तो हासिल है, आज ज़ाहिर में भी बैअ़त होके जाना है, जब हज़रत ने देखा कि आज तो यह पक्का तैयार होके आया है, तो हज़रत ने अपना क़लम एक तरफ़ रख लिया और मुझे बैठा लिया, फ़रमाने लगे कि मुफ़्ती साहब! मेरी बैअ़त के लिये तीन शर्ते हैं, पूरी करेंगे? मैंने कहाः कौनसी? फ़रमायाः पहली शर्त यह है कि आप अमृतसर के रहने वाले हैं, पंजाबी ज़बान बोलते हैं और पंजावी ज़बान बोलने वाले जब क़ुर्आन मजीद की तिलावत करते हैं तो गुन्ने बहुत करते हैं, पंजाबी ज़बान में गुन्ने बहुत होते हैं, तो आप किसी अच्छे मुजर्रिबा क़ारी से तजवीद पढ़ें, इतनी तजवीद पढ़ें कि फ़ज्र की नमाज़ तिवाल मुफ़स्सल के साथ पढ़ा सकें, मैंने कहाः हज़रत! मैं हाज़िर हूं, मैं तजवीद पढ़ लूंगा। फ़रमायाः दूसरी शर्त यह है कि आपने फ़लां और फ़लां किताबें फ़लां आलिम से पढ़ी हैं और वह ग़ैर मुक़ल्लिद था और यह जरासीम कभी नहीं निकलते, लिहाज़ा आप इन किताबों को दारुल उलूम के किसी उस्ताज़ से पढ़ें, मगर शागिर्दों के साथ बैठ के पढ़ें उस वक़्त मुफ़्ती हसन साहब ख़ुद दारुल उलूम में इब्तिदाई अस्बाक़ पढ़ाते थे, बड़े होनहार थे, मुफ़्ती भी थे, हज़रत फ़रमा रहे हैं कि आप दारुल उलूम के तलबा के साथ बैठ कर उस्ताज़ से इन किताबों को दोबारा पढ़ें, फ़रमायाः हज़रत मैं इसके लिये भी तैयार हूं। और तीसरी शर्त यह है कि मुझे इजाज़त दो अगर मैं चाहूं तो मैं पर्दे में आपकी अहलिया को क़सम देकर आपकी निजी ज़िंदगी के बारे में सवाल पूछ सकूं, मैंने कहाः हज़रत! इजाज़त है। यह इख़्लास था मुरीद का और यह इख़्लास था पीर का, वह हज़रात ऐसे मुख़्लिस थे, चुनांचे हज़रत ने बैअ़त फ़रमा लिया और बैअ़त फ़रमाने के बस चंद ही दिन के बाद निस्बत अता फ़रमा दी, जो सीने से बैअ़त फ़रमा लिया और बैअ़त फ़रमाने के बस चंद ही

दिन के बाद निस्बत अता फ़रमा दी, जो सीने से सीने में मुंतक़िल होती है, जिसके बारे में नबी सल्ल0 ने बतलाया: "مَا صَبَّ اللّٰهُ فِیْ صَدْرِیْ اِلَّا وَقَدْ صَبَبْتُهٗ فِیْ صَدْرِ اَبِیْ بَکْرٍ" अल्लाह ने जो मेरे सीने में डाला था मैंने उसे अबू बक्र के सीने में डाल दिया है, यह एक नूर होता है, मअ़रिफ़त होती है, जो दिलों से दिल अख़्ज़ कर लेते हैं, यह मक़्नातीसियत होती है, चुनांचे जब यह मक़्नातीसियत उनके दिल में घुसी तो अल्लाह ने उनको मुफ़्ती हसन रह0 बना दिया।

निस्बत की बरकात

हमारे अकाबिर ने इस निस्बत को सीखा है, आप अगर ग़ौर करें तो उम्मत में जिनसे अल्लाह ने काम लिया है वह सारे के सारे आपको साहिबे निस्बत नज़र आएंगे, आप एक बंदा भी ऐसा नहीं दिखा सकते जिसमें निस्बत न हो और फ़िर कोई पाएदार काम किया हो, वक़्ती काम तो सभी करते हैं, वह तो ढलती छांव है, उसे क़बूलियत नहीं होती, जिस काम को अल्लाह ने क़बूलियत दी है वह काम उन्होंने किया होगा जो ज़ाहिरी इल्म के साथ बातिनी इल्म के भी जामेअ़ थे, यअ़नी मरजुल बहरैन थे। आज के दौर में भी उसूल तो वही है कि अगर हम अपने आप को संवारेंगे और अपने अंदर अल्लाह की मुहब्बत को भरेंगे और "صِبْغَةَ اللّٰهِ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً" अल्लाह के रंग में रंगेंगे तो फिर हम से काम लिया जाएगा, वर्ना काम तो सब कर रहे हैं, क़बूलियत पता नहीं किसके मुक़द्दर में आएगी, क़बूलियत नसीब होने के लिये यह निस्बत का नूर ज़रूरी होता है, जब आगे काम बनता है और हमारे बुज़ुर्गों की यह निस्बत क़यामत तक चलेगी, अल्लाह तआला उसको आगे चलाएंगे, जो उसको हासिल करेगा अल्लाह उसके काम में बरकतें अता फ़रमाएंगे,

मगर इसके लिये कोशिश हम में से हर एक को करनी पड़ेगी, वर्ना ज़ाहिर दारी है—

तू अरब है या अजम है तेरा ला इलाहा इला
लुग़त ग़रीब जब तक तेरा दिल न दे गवाही

जब तक दिल गवाही न दे यह ला इलाहा का पढ़ना लुग़ते ग़रीब के मानिंद है, अल्लाह के यहां क़बूलियत तब होती है जब मन के अंदर रौशनी आती है, इसका एक बड़ा फ़ाएदा यह होता है कि दुनिया मैं गुनाहों से जान छूट जाती है, मअ़सियत की ज़िल्त से बंदा निकल जाता है।

तसव्वुफ़ का मक़्सद

हज़रत अक़्दस थानवी रह0 से किसी ने पूछा थाः हज़रत तसव्वुफ़ का मक़्सूद किया है? तो हज़रत ने फ़रमाया कि तसव्वुफ़ का मक़्सूद यह है कि इंसान के रग रग और रेशा रेशा से गुनाहों का खोट निकल जाए तो दो बातें बड़ी अहम हैं, इस निस्बत को हासिल किये बग़ैर गुनाहों से जान नहीं छूटती, भले बाल सफ़ेद हो जाएं, भले इंसान हज़ारों तलबा का उस्ताज़ बन जाए, सोच गंदी रहती है, मन पापी रहता है, अंदर से इंसान दो रंगा होता है, दोग़लापन होता है, निफ़ाक़ होता है। और दूसरी बात यह कि निस्बत की मेहनत के बग़ैर मक़ामे एहसान वाली नमाज़ नसीब नहीं होती, मुझे आज तक ज़िंदगी में कोई ऐसा बंदा नहीं मिला कि जिसने मेहनत्त न की हो और उसको वैसे ही मक़ामे एहसान वाली नमाज़ मिल गई हो, इधर का ख़्याल, उधर का ख़्याल, इधर तवज्जो, कभी उधर तवज्जो, खड़े कहीं हैं, पहुंचे हुए कहीं हैं, अगर यह दो अलामतें अपने अंदर नज़र आ रही हैं तो इसका मतलब यह है कि हमें अपने मन को संवारने की ज़रूरत है।

दिल को बनाने की जरूरत

हर चीज़ का एक टेस्ट होता है, टेस्ट सुन लीजिये, अल्लाह फ़रमाते हैं कि ऐ मेरे पैग़म्बर की बीवियो! अगर तुम्हें पर्दे के पीछे से बात करनी पड़े तो तुम ज़रा सख़्त लहजे में बात करो "فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ" अगर तुम नरम बात करोगी तो जिसके दिल में मर्ज़ है उसको तम्अ होगी, तो ग़ैर महरम को देख कर या ग़ैर महरम से बात करके दिल में तम्अ आना यह فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ की दलील है, तो अगर हम नमाज़ पढ़ के बाहर गली में निकलते हैं तो ग़ैर महरम पे नज़र पड़ती है और दिल भी ललचा रहा है तो यह अलामत कुर्आन मजीद के हिसाब से "فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ" की है, और इस मर्ज़ का इलाज ज़रूरी है, वर्ना मर्ज़ को लेकर सीधे के सीधे जहन्नम में जाएंगे, जिस्मानी तौर पर क़ल्ब बीमार होता है तो मौत के मुंह में धकेल देता है और जब रूहानी तौर पर बीमार होता है तो जहन्नम के मुंह मे धकेल देता है। और दिल का मरीज़ हमेशा क़ाबिले रहम होता है, जिस्मानी मरीज़ हो या रूहानी, इसलिये हमें अपनी मौत से पहले पहले इस दिल पर मेहनत करनी है, क़्यामत के दिन अल्लाह तआला इन चेहरों को नहीं देखेंगे, "إِنَّ اللَّهَ لَا يَنْظُرُ إِلَى صُوَرِكُمْ وَلَا إِلَى أَمْوَالِكُمْ وَلَكِنْ يَنْظُرُ إِلَى قُلُوبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ" वह तो दिलों को देखेंगे। "يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ۔ وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ۔ هَذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ۔ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُنِيبٍ" क़ल्बे सलीम और क़ल्बे मुनीब तो लेके जाना पड़ेगा, अल्लाह तआला दिलों के ब्योपारी हैं, बंदों से दिल मांगते हैं, अगर इस दिल के अंदर ग़ैर की मुहब्बत हो तो क़बूल नहीं करेंगे, "اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ أَحَبَّ" तुम्हारे दिल में दुनिया भरी हुई है, हम दुनिया को जहन्नम में डाल रहे हैं,

तुम भी जाओ दुनिया के साथ, लिहाज़ा इस दिल को बनाना पड़ेगा, ताकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को पसंद आ जाए और इस दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत भर जाए।

यह ज़िक्र व सुलूक की मेहनत इसी काम के लिये है और आज के इस दौर में फ़ित्नों से बचने का वाहिद ज़रीआ है, आप ग़ौर करें कि हमारे अस्लाफ़ जिस वक़्त में पैदा हुए थे वह अपने तक़्वा व तहारत के बावजूद इस दौर में पैदा होने से अल्लाह की पनाह मांगते थे, हम अपनी बदआमालियों के बावजूद इस ज़माने में ज़िंदा हैं, आज के इस दौर में वह बुज़ुर्ग जिनके दिलों में उहद पहाड़ के बराबर ईमान है, वह भी लर्ज़ां और तर्सां हैं कि पता नहीं क्या बनेगा, इसलिये कि यह वह ज़माना है फ़रमायाः "يُصْبِحُ مُؤْمِنًا وَّيُمْسِي كَافِرًا" ऐसे ऐसे फ़ित्ने हैं एक शख़्स सुब्ह उठेगा ईमान वाला, शाम को सोने के लिये बिस्तर पे जाएगा तो ईमान से ख़ाली होगा। अब इस फ़ित्नों के ज़माने में हम जैसे बंदे दिल से ही ग़ाफ़िल हों, परवाह ही न हो कि दिल बनाना है कि नहीं बनाना है, तो हमारा क्या बनेगा। अल्लाह तआला हमें अपने आप पर मेहनत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए ताकि हम कुछ तो अपने दिल को बना लें, अल्लाह के सामने पेश करने के क़ाबिल बनाने की कोशिश करें।

दिल अल्लाह का घर है

एक सवाल पैदा होता है कि अगर दिल अल्लाह का घर है तो अल्लाह अपने घर को खुद ही साफ़ कर ले? मुफ़स्सिरीन ने इसका जवाब लिखा, वह फ़रमाते हैं कि जब घर किराए पे होता है तो फिर घर की सफ़ाई किराएदार के ज़िम्मा होती है, जब दुनिया में यह दिल हमारे पास है तो सफ़ाई की ज़िम्मेदारी किस पे हुई? हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम इसको साफ़ करें, मसला है शरीअत का कि जिस घर के

अंदर मूर्ती हो, तसवीर हो, कुत्ता हो, तो रहमत का फ़रिशता उस घर में नहीं आता। तो जिस घर में तसवीर हो उसमें रहमत का फ़रिशता नहीं आता तो जिस दिल में किसी बंदे की तसवीर हो अल्लाह की रहमत का उसके ऊपर नुजूल नहीं होता, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِىْ اَنْتُمْ لَهَا عَاكِفُوْنَ" क्या तुम ने अपने दिल को ज़मख़ाना बना लिया, बुतख़ाना बना लिया, क्या तुम ने अपने दिल को गर्दख़ाना बना लिया, इस दिल को साफ़ करना पड़ेगा, इस दिल पे मेहनत करनी पड़ेगी, ताकि यह दिल साफ़ हो जाए, इसके अंदर से गुनाहों की ज़िल्लत ख़त्म हो जाए।

अब हम चाहते हैं कि जैसा दिल है वैसे ही अल्लाह मअ़रिफ़त दे दें, अल्लाह नूर दे दें तो ग़ौर करें कि अगर एक बंदा आप से दूध लेने के लिये आए और उसके बर्तन के ऊपर पाख़ाना लगा हुआ हो तो आप दूध भर देंगे? आप कहेंगे कि साफ़ बर्तन लेके आओ, अगर हम ऐसे बर्तन के अंदर दूध डालना पसंद नहीं करते तो अल्लाह तआला मैले आलूदा दिलों के अंदर इल्म व मअ़रिफ़त को डालना पसंद नहीं करते।

इसलिये हमारे बुज़ुर्ग इन दिलों को चमकाते थे और फिर चमका के दुआएं करते थे

हर तमन्ना दिल से रुख़्सत हो गई	अब तो आजा अब तो ख़िल्वत हो गई

कोई तो ज़िंदगी का दिन हम भी ऐसा गुज़ारें कि सारे दिन में हमने कोई भी गुनाह न किया हो।

हमारे सिलसिलए आलिया के एक बुज़ुर्ग रह0 थे, वह फ़रमाया करते थे जिस शख़्स ने जो दिन गुनाहों के बग़ैर गुज़ारा वह ऐसा ही है कि वह दिन उसने नबी सल्ल0 की सोहबत में गुज़ारा, हमारे दिल में भी तमन्ना हो कि अल्लाह हमें भी ऐसा बना दे। इमाम रब्बानी

मुजद्दिद अल्फ़सानी रह0 ने फ़रमाते हैं कि इस उम्मत में ऐसी पाक बाज़ हस्तियां गुज़री हैं कि गुनाह लिखने वाले फ़रिशतों को बीस बीस साल तक गुनाह लिखने का मौक़ा ही नहीं मिलता था। अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 ने एक औरत का वाक़िआ लिखा है जो "المرأة المتكلمة بالقرآن" क़्यामत के दिन ऐसी भी हस्तियां अल्लाह के सामने खड़ी होंगी, वहां हमें और आपको कितनी शर्म आएगी, अल्लाह! आप ने वक़्त भी दिया, नेअ़मतें भी दीं, अज़ियतें भी दीं, हमारे ऊपर पर्दे भी डाले और हम तेरे करम से इज़्ज़तों की ज़िंदगी भी गुज़ारते रहे, मगर हमने तुझे अपने दिल में लाने के लिये कोशिश भी न की, अल्लाह तआला हमें अपने आप पे मेहनत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

وآخر دعوانا أن الحمد لله رب العالمين

☆☆☆

अगले सफ्हा पर आप जो खिताब मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, वह मैलूशार्म के "KH गर्ल्स स्कूल में 19 अप्रेल 2011 ई0 बरोज़ सहशंबा, वक़्तः साढ़े ग्यारह बजे दिन में हुआ था।

मुहताते तुख़मीना के मुताबिक़ मस्तूरात की तादाद 8 से 10 हज़ार बताई गई है।

मस्तूराते मजलिस

मुहब्बत भरी ज़िंदगी के लिये छः 6 बातों से बचें

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

اعوذ بالله من الشيطان الرجيم، بسم الله الرحمن الرحيم

اِنَّ الَّذِيْنَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا

سبحان ربک رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العلمين

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارک وسلم

दीने इस्लाम दिलों को जोड़ने का ज़रीआ

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस काइनात में दो चीज़ों को जोड़ने के लिये कोई न कोई चीज़ बनाई है, दो ईटों को जोड़ना हो तो सीमेंट इस्तेमाल कीजिये, वह दो ईटें यक्जान हो जाएंगी, काग़ज़ के दो टुक्ड़ों को जोड़ना हो तो सीमेंट काम नहीं आएगा, गोंद इस्तेमाल करें तो वह टुक्ड़े यक्जान बन जाएंगे, लकड़ी के दो टुक्ड़ों को जोड़ना हो तो उसके लिये अल्लाह ने कील बनाई है, आप कील के ज़रीआ इन दो टुक्ड़ों को आपस में जोड़ें तो वह एक बन जाएंगे, कपड़ों के दो टुक्ड़ों को जोड़ना हो तो न कील काम आएगी, न गोंद काम आएगी, न सीमेंट काम आएगी, इसके लिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सूई धागा बनाया, इसके ज़रीआ दो टुक्ड़े यक्जान हो जाएंगे, लोहे के टुक्ड़ों को जोड़ने के लिये सूई धागा भी काम नहीं आता, इसके लिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने वैल्डिंग को बनाया, वैल्डिंग के ज़रीआ लोहे के दो टुक्ड़े यक्जान हो जाते हैं, प्लास्टिक के दो टुक्ड़ों को जोड़ना

हो तो उसके लिये ऐल्फ़ी इस्तेमाल कीजिये, दो टुक्ड़े आपस में जुड़ जाएंगे। तो ज़हन में एक सवाल पैदा होता है कि दो चीज़ों को जोड़ने के लिये जब कोई न कोई तीसरी चीज़ ज़रूरी होती है तो दो दिलों को जोड़ने वाली चीज़ कौनसी है? वह कौनसी चीज़ है जिसको इस्तेमाल करें तो दो दिल एक दूसरे के साथ मुहब्बत के तअल्लुक़ में जुड़ जाएं, इस चीज़ का नाम है दीन व शरीअ़त, अगर वह दोनों बंदे शरीअ़त पर अमल करने वाले बन जाएं, नेक हो जाएं, तो उनके दिलों में अल्लाह मुहब्बत को भर देंगें। चुनांचे क़ुर्आन मजीद की आयत है: "اِنَّ الَّذِيْنَ آمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا" बेशक जो लोग ईमान लाए, नेक आमाल करेंगे, रहमान उनके लिये दिलों में मुहब्बतें डाल देंगे। जो मुहब्बत दीन की निस्बत से होती है वह सब मुहब्बतों से ज़्यादा पक्की होती है, जो मुहब्बतें दुन्यावी अग़राज़ के लिये होती हैं, वह मुहब्बतें नहीं कहलाती हैं, वह तो ख़्वाहिशात कहलाती हैं, इधर ख़्वाहिश पूरी हुई उधर नशा उतर गया, इसलिये कहा जाता है कि दुनिया मतलब की होती है, दाइमी मुहब्बत होती है, जब अल्लाह तआला दीन की निस्बत से एक दूसरे के साथ जोड़ देते हैं तो यह ज़िंदगी भर की मुहब्बत होती है।

सहाबा रज़ि० की ज़िंदगियां मुहब्बतों का नमूना

इसकी मिसाल सहाबा रज़ि० की ज़िंदगियां हैं, उनमें आपस में इतनी मुहब्बतें थीं कि एक का ग़म दूसरे का ग़म, एक की खुशी दूसरे की खुशी थी, एक दूसरे के साथ इस तरह रहते थे कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क़ुर्आन मजीद में फ़रमाया: "رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ" वह तो एक दूसरे के साथ बहुत रहीम व करीम हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त क़ुर्आन मजीद में फ़रमाते हैं: ऐ मेरे प्यारे हबीब! "لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّا اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ" आप ज़मीन के सारे ख़ज़ाने

ख़र्च कर देते तो भी आप इनके दिलों में मुहब्बतें नहीं डाल सकते थे, "وَلٰكِنَّ اللّٰهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ" इनके दिलों में तो अल्लाह ने मुहब्बतें डाली हैं।

मख़्लूक़ से मुहब्बत करने वाले से अल्लाह मुहब्बत करते हैं

अल्लाह तआला उन लोगों से ख़ुश होते हैं जो मुहब्बत के नमूने बन कर रहते हैं, वह अल्लाह से भी मुहब्बत करते हैं और उसकी फ़रमांबरदारी करते हैं और अल्लाह के बंदों से भी अल्लाह के लिये मुहब्बत करते हैं। चुनांचे इब्राहीम अद्‌हम रह0 का वाक़िआ है, एक रात आंख खुली तो देखते हैं कि कोई फ़रिशता है और कमरे में रौशनी है और वह बैठा हुआ कुछ लिख रहा है, उन्होंने पूछाः क्या लिख रहे हो? उसने जवाब दिया कि उन लोगों के नाम लिख रहा हूं जो अल्लाह से मुहब्बत करते हैं, तो इब्राहीम अद्‌हम रह0 ने कहाः भाई! लिस्ट में देखो मेरा नाम है या नहीं? उसने कहाः तुम बादशाह हो, तुम दुनियादार बंदे हो, तुम्हारा अल्लाह के चाहने वालों में कहां से नाम आएगा? चुनांचे पूरी फ़ेहरिस्त देखी तो उनका नाम नहीं था, तो इब्राहीम अद्‌हम रह0 ने उससे कहा कि अच्छा अगर अल्लाह के चाहने वालों में मेरा नाम नहीं तो मेरा नाम उस फ़ेहरिस्त में लिख दो जो अल्लाह के बंदों से मुहब्बत करते हैं, चुनांचे उसने वह नाम लिख लिया, अल्लाह की शान देखें कि कुछ अर्से के बाद फिर ख़्वाब आया, देखा कि वही बंदा कुछ लिख रहा है, पूछाः क्या लिख रहे हो? उसने कहा कि उन लोगों के नाम लिख रहा हूं जिनसे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मुहब्बत करते हैं, पूछा मेरा नाम है? तो उसने दिखाया कि सबसे ऊपर इब्राहीम अद्‌हम का नाम लिखा हुआ था, तो जो बंदा अल्लाह के बंदों से दीन की निस्बत से मुहब्बत करता है फिर अल्लाह तआला उस बंदे से मुहब्बत फ़रमाते हैं।

दूसरों के दिल ख़ुश करना अल्लाह की निगाह में

दीन यह चाहता है कि हम मिलजुल कर ज़िंदगी गुज़ारें, हम अच्छे अख़्लाक़ से ज़िंदगी गुज़ारें, हमारे अंदर ईसार हो, हमदर्दी हो, अफ़्व व दरगुज़र हो, एक दूसरे के लिये मुहब्बतें हों। बहुत सी मर्तबा जब दीनदारी नहीं होती तो फिर तबीअ़तों के अंदर नफ़रतें, अदावतें दुशमनियां, गुस्से वग़ैरा यह चीज़ें आ जाती हैं और यह चीज़ें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को नापसंद हैं, लिहाज़ा हमें चाहिये कि घर के अच्छे फ़र्द बन कर रहें, मुआशरे के अच्छे फ़र्द बन कर रहें, एक अच्छे मुसलमान बन कर रहें, अपनी तरफ़ से दूसरों को राहत पहुंचाएं, अपनी तरफ़ से अल्लाह के बंदों के लिये राहते जान बनें, दूसरों के साथ इतने अच्छे अख़्लाक़ का बरताव करें कि उनके दिल से दुआएं निकल रही हों, दूसरों के दिल जीत लें, इसलिये कि किसी मुसलमान के दिल को ख़ुया करना अल्लाह तआला को बहुत पसंद है। अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 का वाक़िआ है कि एक शख़्स ने उनसे सात सौ दीनार मांगे, उन्होंने सात हज़ार देने का हुक्म दिया? फ़रमाया इसलिये मैं चाहता था कि उसको सात हज़ार मिले और उसके दिल को ख़ुशी मिले जिसकी वह तवक़्क़ो नहीं करता था, और यह जो किसी मुसलमान के दिल को अचानक ख़ुशी पहुंचानी होती है यह अल्लाह तआला को इतनी पसंद है कि इस अमल पर अल्लाह तआला बंदे की ज़िंदगी के पिछले सब गुनाहों को मुआफ़ कर देते हैं।

अब ज़रा सोचिये कि किसी के दिल को ख़ुश करना जिसकी उसको तवक़्क़ो न हो, उस पर अल्लाह तआला इतने ख़ुश होते हैं तो हमें चाहिये कि अपने घरों में रहते हुए, हम दूसरों के दिल ख़ुश करें, औरतें अपने ख़ाविंद का दिल ख़ुश करें, वालिद का दिल ख़ुश करें, भाई का दिल ख़ुश करें, बेटे का दिल ख़ुश करें, बेटियों का दिल ख़ुश

करें, माहौल के अंदर रहते हुए अल्लाह के बंदों और बंदियों के लिये खुशियों का सबब बन कर रहें, अगर आप इस तरह बन कर रहेंगे तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त आप से मुहब्बत फ़रमाएंगे, आप खुद घर में देखेंगे कि आप के बच्चों में से अगर कोई बच्चा सब के साथ सुलह सफ़ाई से रहता हो, सब के साथ मुहब्बत प्यार करता हो, तो वह बच्चा आपकी आंख का तारा होता है, कि मेरा तो यह बच्चा फ़रिशता सिफ़त है, मेरा इतना अच्छा बच्चा है, झगड़ा नहीं करता, फ़साद नहीं मचाता, ऊधम नहीं करता, धमाल नहीं डालता, यह तो बहुत ही प्यारा बच्चा है। बिल्कुल इसी तरह जो इंसान, मर्द हो या औरत, घर के अंदर, मुआशरे के अंदर एक अच्छा इंसान बन कर रहे, अख़्लाक़ अच्छे हों, किर्दार अच्छा हो, नियत अच्छी हो, तो अल्लाह तआला को भी उस बंदे पे प्यार आता है कि यह मेरा कितना प्यारा बंदा है, कितना अच्छा बंदा है, जो दूसरे बंदों के लिये राहते जान बन गया है।

अच्छा इंसान बनने के लिये छः 6 चीज़ों से बचना ज़रूरी है

अब दिल में एक सवाल पैदा होता है कि हम अच्छे इंसान कैसे नहीं? इसके लिये उलमा ने छः चीज़ें बताई हैं कि अगर इंसान इन 6 चीज़ों से बचे तो वह अच्छा इंसान बन जाता है और यह 6 चीज़ें वह हैं जो दिलों के अंदर नफ़रतें पैदा होने का सबब बनती हैं, जो एक दूसरे के दिल के दूर होने का सबब बनती हैं, वह 6 चीज़ें इंसानों के दिलों में फ़ासले डाल देती हैं, आज की मजलिस में इन्ही 6 चीज़ों का तज़किरा करना है। और अजीब बात है कि वह सारे अलफ़ाज़ "غ" हुरूफ़ से शुरू होते हैं, तो 6 ग़ैन आज आपको बताए जाएंगे, आप को इन्हें याद करना है और इनसे अपने आप को बचाना है, फिर

देखना आप के अख़्लाक़ कितने अच्छे बनते हैं।

पहली चीज़ः ग़फ़लत

इनमें सबसे पहली चीज़ "غ" से ग़फ़लत है, यह ग़फ़लत अल्लाह तआला को पसंद नहीं, इसलिये फ़रमायाः "وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغَافِلِيْنَ" आप ग़ाफ़िलीन में से न हों। ग़ाफ़िल कहते हैं भूल जाना, या किसी को Ignore (नज़र अंदाज़) कर देना, आज देखिये कि यही ग़फ़लत दूसरे के साथ रंजिश का सबब बनती है, लोग कहते हैं कि फ़लां बंदा तो हमें इगनोर करता है, बीवी को मियां से यही शिक्वा होता है कि सारे जहां की उनको परवाह है, हमारी तो परवाह ही नहीं, बाहर दोस्तों में यह बड़े ख़ुश रहते हैं, हम तो रात तक इंतेज़ार में बैठते हैं, लेकिन हमारे साथ बात करने के लिये कोई टाइम ही नहीं होता, बीवी एक काम कहे और ख़ाविंद भूल जाए तो यक़ीनन वह आपस में तल्ख़ कलामी का ज़रीआ बन जाता है, आप बीवी को काम कहें कि कल मुझे सुब्ह दफ़्तर जाना है, कपड़े तैयार रखना और वह ग़फ़लत करे तो आप को गुस्सा आएगा, तो मालूम हुआ कि यह ग़फ़लत गुस्से का सबब बन जाती है, उसको लापरवाही कहते हैं, यह लापरवाही नहीं होनी चाहिये, पढ़ने वाले बच्चे अगर पढ़ने में ग़फ़लत करें तो मां बाप परेशान होते हैं, अगर भाई भाई की परवाह न करे तो मां बाप परेशान, अगर मज़दूर फ़ैक्ट्री के अंदर अच्छे काम न करे या काम में ग़फ़लत बरते तो मालिक परेशान, तो मालूम हुआ कि नफ़रतें बुन्यादी तौर पे ग़फ़लत ही की वजह से पैदा होती हैं, इस तरह ग़फ़लत की वजह से लोगों के दिलों में एक दूसरे के ख़िलाफ़ नफ़रत आ जाती है, अल्लाह तआला को भी ग़फ़लत पसंद नहीं, इसलिये फ़रमायाः "وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا" उसकी बात न मानो जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल

कर दिया, तो ग़ाफ़िल बंदा अल्लाह को भी नापसंद है, इसलिये कोशिश करें कि हर वक़्त दिल में अल्लाह की याद रहे, "दस्ते बुकार, दिल बयार" हाथ कामकाज में मशगूल हो और दिल अल्लाह तआला की याद में मशगूल हो

गो मैं रहा रहैन सित्तम हाए रोज़गार लेकिन तेरे ख़्याल से ग़ाफ़िल नहीं रहा

दिल में हर वक़्त अल्लाह की याद

अल्लाह तआला चाहते हैं कि मेरे बंदे तुम जितना भी दुनिया के काम में रहो मगर तुम्हारे दिल में मेरी याद हो, तो फ़र्क़ हैः एक है मख़्लूक़ की नफ़सानी, शैतानी, शह्वानी मुहब्बत कि उसमें इंसान यह चाहता है कि महबूब का जिस्म मेरे पास हो, चूंकि नफ़सानी मुहब्बतों में जिस्म की ज़रूरत होती है तो मुहिब्ब चाहता है कि जिस्म मेरे पास हो, दिल उसका जहां मर्ज़ी हो, मगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत का मुआमला अजीब है, अल्लाह तआला चाहते हैं कि मेरे बंदे! तेरा दिल मेरे पास होना चाहिये, तेरा जिस्म जहां भी हो मुझे इसकी परवाह नहीं, तो हम घर में हैं, मस्जिद में हैं, नमाज़ में हैं, या घर वालों के साथ बैठे हैं, जिस हाल में भी हैं, अगर दिल अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जे है तो अल्लाह तआला हम से खुश हैं, अल्लाह तआला हम से राज़ी हैं।

कितने लोग ऐसे गुज़रे हैं कि बाज़ार के माहौल में बैठते थे, लेकिन एक लम्हा भी अल्लाह से ग़ाफ़िल नहीं होते थे। शैख़ शहाबुद्दीन सह्रवर्दी रह० ने लिखा है कि मैं एक मर्तबा बाज़ार से गुज़र रहा था, एक नौजवान बच्चे के यहां गाहकों का हुजूम था, मैंने उसके दिल की तरफ़ देखा तो उसका दिल एक लम्हा भी अल्लाह से ग़ाफ़िल नहीं हो रहा था, तो गाहकों के झुर्मट में बैठ कर अल्लाह वाले अल्लाह को याद कर लेते हैं और अगर याद करने की मेहनत

न की जाए तो औरत घर में अकेली होती है, फिर भी अल्लाह याद नहीं आता, तो यह ग़फ़लत हमारे लिये नुक़्सान का सबब बनती है, दीन का नुक़्सान हो या दुनिया का नुक़्सान हो, तो आप दिल में यह बात बैठा लें कि कामों में भी ग़फ़लत नहीं करती है, इबादत में भी नहीं करनी, ज़िक्र में भी ग़फ़लत नहीं करनी, "وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغَافِلِيْنَ" अल्लाह ने फ़रमा दिया कि तुम ग़फ़लत करने वालों में से न बनो।

दूसरी चीज़ः ग़ीबत

दूसरी चीज़ जो नफ़रतों का सबब बनती है उसको "غ" से ग़ीबत कहते हैं, ग़ीबत कहते हैं, किसी की पीठ पीछे उसकी कोई ऐसी बात कर देना जो कि अगर उस बंदे को मालूम हो तो वह उसको बुरी लगे, इसको शरीअत ने कबीरा गुनाह क़रार दिया, फ़रमायाः "وَلَا يَغْتَبْ بَعْضُكُمْ بَعْضًا" तुम में से कोई दूसरे की ग़ीबत न करे। हदीसे मुबारक में हैः "اَلْغِيْبَةُ اَشَدُّ مِنَ الزِّنَا" कि ग़ीबत तो ज़माने से भी ज़्यादा बुरी होती है। अक्सर देखा है कि जहां दो चार बंदे मिल बैठते हैं वह किसी तीसरे की बात छेड़ देते हैं और अक्सर औक़ात वह बात ग़ीबत होती है, तो करने वाला भी कबीरा का मुरतकिब। और यह ग़ीबत ज़िंदों की भी हो सकती है, और जो फ़ौत हो चुके, उनकी भी हो सकती है, यह ग़ीबत हाज़िर की भी हो सकती है और यह ग़ीबत ग़ाइब की भी हो सकती है, यह ग़ीबत एक फ़र्द की भी हो सकती है, और यह ग़ीबत एक जमाअत की भी हो सकती है, इसलिये ग़ीबत से अपने आप को बचाएं, किसी के बारे में Comments (तब्सिरे) पास कर देना, आज यह सब से आसान नज़र आता है, लेकिन कल क़्यामत के दिन जब अल्लाह ने पूछ लिया कि बता तूने फ़लां को कमीना क्यों कहा, फ़लां को तूने

बेईमान क्यों कहा, तो उस दिन परेशानी होगी कि काश! हमने सोच समझ कर अपनी ज़बान से अलफ़ाज़ निकाले होते।

ग़ीबत को मुआफ़ कराने का तरीक़ा

शरीअ़त ने कहा कि अगर किसी की ग़ीबत की हो तो फ़क़त तौबा करने से यह गुनाह मुआफ़ नहीं होता, बल्कि उस बंदे से मुआफ़ी मांगनी पड़ती है, अब उस बंदे को अगर आप बताएं कि मैंने आपके बारे में यह यह बातें कीं, तो झगड़ा और बढ़ जाएगा, इसलिये शरीअ़त ने इसका हल बताया कि अगर आपने किसी की ग़ीबत की है तो बस उससे यूं कहें कि आपके मेरे ऊपर बहुत हुक़ूक़ हैं, और मैं उनको अदा नहीं कर सका, अब मुझे अल्लाह के लिये मुआ़फ़ कर दें, अगर इस बात को सुन कर उसने कह दिया: मैंने मुआफ़ कर दिया तो भी ठीक है, और अगर वह मुस्कुरा पड़ा तो भी उसकी तरफ़ से इजाज़त मिल गई।

आख़िरत में ग़ीबत के गुनाह की संगीनी

दुनिया में मुआ़फ़ी मांगना आसान है, क़्यामत के दिन इसका हिसाब देना मुश्किल काम है। चूंकि हदीसे मुबारक में है कि जिस बंदे ने किसी की ग़ीबत की होगी तो क़्यामत के दिन उस बंदे को इजाज़त दी जाएगी कि तुम उस ग़ीबत करने वाले के नामए आमाल में से जितनी नेकियां ले सकते हो ले लो, तो साफ़ ज़ाहिर है कि क़्यमत के दिन तो कोई थोड़े के ऊपर राज़ी नहीं होगा, हत्ता कि सारी नेकियां लेकर भी वह राज़ी न हुआ, तो हदीसे पाक में है कि उस बंदे के गुनाहों को लेकर उस बंदे के सर पर डाल दिया जाएगा, तो सोचिये कितनी बड़ी महरूमी होगी, आए थे नेकियां लेकर और गए यहां से सब गुनाह अपने सर पे उठा कर।

ग़ीबत से बचने का तरीक़ा

इससे बचने का एक तरीक़ा है कि खुद तो आप किसी की उसके पीठ पीछे बात करें ही न, और अगर कोई दूसरा बात करने लगे तो अव्वल तो आप कह दें कि यह मुनासिब नहीं, और अगर आप समझें कि मेरे अंदर इतनी हिम्मत नहीं कि मैं लोगों को रोक सकूं, तो उस बंदे की कोई न कोई अच्छाई बयान कर दें। मिसाल के तौर पर किसी औरत की ग़ीबत की गई, आप कहें कि वह है तो बड़ी ज़हीन, है तो बड़ी समझदार, बातें तो बहुत अच्छी करती है, बड़ी पढ़ी लिखी है, अगर आप ने उसकी खूबियां बयान कर दीं तो गोया आप ग़ीबत करने वालों के साथ खुद शामिल नहीं हो हुएं, तो यह ग़ीबत से बचने का एक आसान तरीक़ा है।

तीसरी चीज़ः गि़ल्ल

तीसरी चीज़ को "ع" से गि़ल्ल कहते हैं, गि़ल्ल का मतलब होता है दिल के अंदर कीना होना, कीना का मतलब यह कि किसी के साथ रंजिश हो तो फिर दिल के अंदर एक दुशमनी आ जाती है, बैर आ जाता है और इंसान चाहता है कि उस बंदे को ज़िंदा ज़मीन में गाड़ दिया जाए। नबी सल्ल0 इस कीना को नापसंद फ़रमाते थे। चुनांचे हदीसे मुबारक में है, नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि जब रात का वक़्त आता है, मैं अपने सीने को कीना से ख़ाली कर लेता हूं, यह मेरी सुन्नत है और जो शख़्स मेरी सुन्नत पर अमल करेगा वह क़्यामत के दिन जन्नत में मेरे साथ होगा।

कीना की नुहूसत

उलमा ने लिखा है कि शबे क़द्र में अल्लाह तआला बड़े बड़े गुनहगारों की मग़फ़िरत कर देते हैं, लेकिन जिस बंदे के दिल में किसी के बारे में कीना हो, अल्लाह तआला शबे क़द्र में भी उसकी

मग़फ़िरत नहीं फ़रमाते। अब अगर शबे क़द्र में भी मग़फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी? लिहाज़ा हम दिल से ईमान वालों के बारे में कोई नफ़रत है, कोई बात है, कोई भूल है, सब ख़त्म कर दें और अल्लाह की रज़ा के लिये करें, इसलिये कि यह कीना इंसान को चैन से बैठने नहीं देता। उसको समझाने के लिये एक कहानी किताबों में लिखी है कि एक बंदा था, वह पहाड़ पर चला गया और एक ग़ार में रह कर उसने इबादत शुरू की, एक साल इबादत करने के बाद उसे इल्हाम हुआ कि मेरे बंदे! तेरी इबादत हमने क़बूल की, तू मांग हमसे क्या मांगता है? उसने दुआ मांगी कि अल्लाह! मुझे खाने को हंडिया मिल जाए, रोटी मिल जाए, मैं तेरा दिया हुआ खाया करूंगा और तेरे गीत गाया करूंगा, दुआ क़बूल हो गई और उस बंदे को ग़ैबी निज़ाम से हर वक़्त खाना मिल जाता था, यह कुछ आर्सा वहां रहा, फिर वहां से यह अपने घर वापस आ गया, अब एक का खाना तीन बंदे भी खा बैठते हैं, उसको जब खाना मिलता तो घर के दूसरे लोग भी खा लेते, जब सबको रोज़ाना खाना मिलने लगा तो सिहतें अच्छी हो गई, चेहरों पे सुर्ख़ी आ गई, उनका एक रिशतादार पड़ोसी था, जो अंदर से बड़ा हसद करता था, उसने जब उनकी यह हालत देखी तो वह उस बुजुर्ग के पीछे पड़ गया कि हज़रत! मुझे भी बताएं वह कौनसा अमल है कि जिसकी वजह से अल्लाह ने आपको यह नेअ़मत अता करनी शुरू की? पहले तो उन्होंने कोशिश की कि न बताऊं, मगर उधर से इसरार रहा और इधर से इंकार, बिलआख़िर मजबूर होकर उन्होंने बता दिया कि भाई! मैं तो इस तरह गया था और अल्लाह के यहां इबादत क़बूल हुई और इस तरह यह हंडिया मुझे रोज़ मिलने लगी, यह सुन कर उस बंदा ने भी बिस्तर उठाया, और उसी जगह पे जाकर बैठ गया और वहां उसने भी तसबीह फेरनी शुरू कर दी,

ज़िक्र करते करते एक साल उसको भी गुज़र गया, तो एक साल के बाद उसके दिल में इल्हाम हुआ कि मेरे बंदे! तेरी इबादत क़बूल हुई, मांग तू क्या मांगता है, अब उसने जो मांगने के लिये हाथ उठाए तो अपने लिये हंडिया नहीं मांगी, बल्कि यह दुआ की कि अल्लाह वह जो मेरे पड़ोसी को हंडिया मिलती है वह बंद हो जाए, इसको कीना कहते हैं, कि इंसान को किसी दूसरे का अच्छा नहीं लगता, किसी की बेटी का अच्छा रिशता हो जाए, किसी के बेटे का कारोबार, दूकान अच्छी चलने लग जाए, तो जिसके दिल में कीना हो उसको यह अच्छा नहीं लगता। इससे भी हम अल्लाह की पनाह मांगें।

सीना बे कीना का इन्आम

चुनांचे एक सहाबी रज़ि0 आ रहे थे, नबी सल्ल0 ने दूर से देखा, और फ़रमाया देखो जन्नती शख़्स आ रहा है, एक दूसरे सहाबी रज़ि0 जो महफ़िल में पहले से बैठे हुए थे, उन्होंने यह सुना, तो उनके दिल में शौक़ पैदा हुआ कि मैं इस आने वाले सहाबी रज़ि0 की ज़िंदगी क़रीब से तो देखूं, कौनसी नेकी यह करते हैं कि जिसकी वजह से अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने उनके बारे में यह बशारत फ़रमाई, चुनांचे जब मजलिस बरख़ास्त होने लगी, तो यह सहाबी रज़ि0 उनसे कहने लगेः भाई इजाज़त हो तो मैं 3 दिन आपके घर मेहमान बन के रहना चाहता हूं, उन्होंने कहा जी बिल्कुल بسم الله، चुनांचे यह सहाबी रज़ि0 उनके घर आकर मेहमान बने, और दिन रात उनके आमाल का जाइज़ा लेते रहे, लेकिन यह इस नतीजे पर पहुंचे कि उस सहाबी रज़ि0 के मामूलात वही हैं जो बाक़ियों के हैं, कोई अनोखा अमल मुझे नज़र तो नहीं आया, तो उन्होंने साहबे ख़ाना से पूछ ही लियाः कि जी आप के बारे में नबी सल्ल0 ने यह बात फ़रमाई थी, कि यह जन्नती है, तो मुझे शौक़ हुआ, कि मालूम तो करूं कि कौनसा अमल

करते हैं, तीन दिन रात आप के घर मेहमान रहने के बावजूद मुझे आप का कोई ख़ास अमल नज़र तो नहीं आया, आप ही बता दें, जब उन्होंने पूछा तब उस शख़्स ने बताया कि देखें मेरी आदत है कि रात को जब मैं बिस्तर पे लेटने के लिये तैयार होता हूं तो उस वक़्त मेरे दिल में जितना भी लोगों के ख़िलाफ़ दिल में बात होती है मैं सब मिटा देता हूं, भुला देता हूं और मैं सीना बे कीना लेकर सोता हूं, शायद इस अमल की वजह से नबी सल्ल0 ने जन्नत की बशारत अता फ़रमाई तो आप भी यह आदत बना लें, सास के बारे में रंजिश है, बहू के बारे में है, बीवी के बारे में है, ख़ाविंद के बारे में, बहन के बारे में, नींद के बारे में है, किसी के बारे में भी है, अल्लाह के लिये मुआफ़ कर दिया करें, जब आप अल्लाह के लिये मुआफ़ करेंगी तो देखेंगी कि आप के सीने के अंदर एक लज़्ज़त महसूस होगी, ईमान की हलावत और ईमान की मिठास नवीब होगी, वर्ना तो जिसके दिल में दुशमनी हो वह तो जैसे भी हो सके उसका बुरा ही चाहता है।

कीना में इंसान को अपने नुक़्सान की कभी परवाह नहीं रहती

कहते हैं कि एक आदमी को दूसरे से कीना था, उसको एक बंदा मिला, उसने कहा कि जो मैं तुम्हारे साथ करूंगा मैं डबल उस दूसरे के साथ करूंगा तुम बताओ, तो यह शख़्स कहने लगा कि ठीक फिर तुम मेरी एक आंख फोड़ दो, उसने कहा क्यों, तुम्हें आंख प्यारी नहीं है? कहता है प्यारी तो बहुत है लेकिन तुम मेरी एक आंख फोड़ोगे तो फिर दूसरे बंदे की तुम्हें दोनों आंखें फोड़नी पड़ेंगी, तो कीना ऐसी चीज़ है कि इंसान अपना भी नुक़्सान करने को तैयार हो जाता है, इससे अल्लाह की पनाह मांगें और अल्लाह से दुआ भी मांगा करें कि अल्लाह हमें सीना बे कीना अता फ़रमाए।

चौथी चीज़ः ग़ुलू

चौथी चीज़ "غ" से ग़ुलू है, ग़ुलू का मअ़नी यह होता है कि किसी चीज़ को ज़रूरत से ज़्यादा अहमियत दे देना, आम तौर पर देखा है कि आपस की रिश्तादारियों में ग़ुलू का मुज़ाहिरा होता है, मसलन औरत है तो वह अपने मैके के बारे में एक लफ़्ज़ भी बर्दाश्त नहीं करेगी, फिर Husband (शौहर) अपने रिश्तेदारों के बारे में कोई बात बर्दाश्त नहीं करेगा, उनकी सरीह ग़लती को भी ग़लती तसलीम नहीं करेगा, तो यह जो ग़ुलू है यह इंसानों के दर्मियान नफ़रतें पैदा होने का सबब बनता है, इस ग़ुलू से बचने की ज़रूरत है, ताकि दिलों में एक दूसरे से जुदाई न आए।

पांचवीं चीज़ः ग़ुरूर

पांचवीं चीज़ जो दिलों को एक दूसरे से दूर कर देती उसका नाम "غ" से "ग़ुरूर" है, ग़ुरूर का मतलब तकब्बुर या उज्ब है, अगर बंदा को अपने हुस्न पे ग़ुरूर हो, माल व दौलत पे ग़ुरूर हो, तालीम पे ग़ुरूर हो, तो वह बंदा अपने आमाल इसी दुनिया में ज़ाए कर बैठता है, चूंकि हदीसे पाक में है: "وَلَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ كِبْرٍ" वह शख़्स जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता कि जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी तकब्बुर होगा। अपने को दूसरों से ऊंचा समझना, बड़ा समझना, यह अल्लाह तआला को पसंद नहीं है, इस तकब्बुर से भी बचें। शैतान को अल्लाह तआला ने जो अपने दरबार से धुतकारा तो उसकी वजह यही तकब्बुर थी, फ़िरऔन को अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने पानी में डिबोया, इसकी वजह फ़िरऔन के अंदर तकब्बुर था। जो बंदा अल्लाह के लिये आजिज़ी इख़्तियार करता है अल्लाह तआला उसकी शान को बुलंद फ़रमाते हैं, इर्शाद फ़रमायाः "مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰهِ رَفَعَهُ اللّٰهُ" जो अल्लाह के लिये तवाज़ो

इख़्तियार करता है अल्लाह उसको बड़ा बना देते हैं, तो इस तकब्बुर से, "मैं" से, बचने की ज़रूरत है, माल पे गुरूर करना, हुस्न व जमाल पे गुरूर करना, यह ढलती छांव पे गुरूर करने के मानिंद हैं, इसलिये इंसान अपने आप को तकब्बुर से बचाए। शरीअत ने कहा कि जिस बंदे के अंदर उजब हो, यह उजब उसको जहन्नम में ले जाने का सबब बनेगा। नबी सल्ल0 का अमीर सहाबा रज़ि0 से भी तअल्लुक़ था, फ़क़ीर सहाबा रज़ि0 से भी, उनके दर्मियान घुल मिल के बैठते थे, बिलाल रज़ि0 की हालत देखिये, गुलाम थे, आज़ाद हुए तो देखिये! अल्लाह के हबीब सल्ल0 के दरबार में क्या मुहब्बतें मिलीं। ज़ाहिद रज़ि0 एक दीहाती थे, अल्लाह के हबीब सल्ल0 उनसे भी मुहब्बत फ़रमाते थे, तो मालूम हुआ कि इंसान के अंदर आजिज़ी होनी चाहिये, तकब्बुर नहीं होना चाहिये, यह तकब्बुर इंसान के लिये बरबाद होने का सबब बनता है। मुतकब्बिर बंदे को अल्लाह तआला दुनिया में कभी सज़ा देते हैं।

दो गुनाह जिनकी सज़ा दुनिया में भी मिलती है

दो गुनाह ऐसे हैं कि जिनकी आख़िरत में तो सज़ा मिलेगी ही, हदीसे पाक में आता है कि दुनिया में मरने से पहले भी सज़ा मिलती है, एक तकब्बुर, जितना तकब्बुर करेगा उतना ज़्यादा अल्लाह तआला दुनिया में उसको ज़लील करेंगे, कोई न कोई बात ऐसी हो जाएगी कि उसकी सब के दर्मियान ज़िल्लत होगी। और दूसरी चीज़ कि जो बंदा अपने मां बाप की नाफ़रमानी करता है हदीसे पाक में आता है कि अल्लाह तआला मौत से पहले इसी दुनिया में उस नाफ़रमानी की सज़ा उसको देते हैं। चुनांचे एक डाक्टर ने एक अजीब क़िस्सा सुनाया, कहते हैं कि एक दीहाती लड़का मेरे पास आया, बीमार था, देखने में बड़ा सिहतमंद था और बीमारी यह थी कि वह थोड़ी थोड़ी

देर के बाद चीख़ता था और कहता था कि मुझे लगता है कोई मेरा गला दबा रहा है, अब उसकी इस बेक़रारी और तकलीफ़ को देख कर मुझे उससे हमदर्दी हुई और मैंने उसका इलाज व मुआलजा शुरू किया, दूसरे दिन उस लड़के का वालिद आया और मुझे कहने लगा कि डाक्टर साहब! ज़्यादा परेशान न हों, इस लड़के को अपने किये की सज़ा मिल रही है, तो मैंने पूछा कि क्या हुआ? कहने लगा कि इस लड़के ने मन पसंद की लड़की से शादी की, मां इसको समझाने के लिये कोई लफ़्ज़ बोलती थी तो यह अपनी अम्मी को कहता थाः ख़बरदार! तूने ज़बान खोली तो मैं तेरा गला दबा दूंगा, यह अपनी मां को यह अलफ़ाज़ कहता था, अल्लाह ने इसी दुनिया में इसकी पकड़ की और इसको ऐसी बीमारी लग गई कि यह चीख़ता है कि कोई इसका गला दबा रहा है और वाक़ई इस का गला घुट रहा होता था, तो मां बाप की नाफ़रमानी की सज़ा दुनिया में भी इंसान को मिलती है, इसी तरह तकब्बुर की सज़ा आख़िरत में तो मिलेगी ही, मगर अल्लाह तबारक व तआला दुनिया में भी सज़ा दे के दिखा देते हैं, तो इंसान को चाहिये कि अपने अंदर Humbleness (नर्मी) पैदा करे, आजिज़ी पैदा करे और तकब्बुर से बचे।

छटी चीज़ः गुस्सा

छटी चीज़ है "غ" से गुस्सा, यह गुस्सा इंसान के लिये बहुत नुक़्सानदेह होता है, अक्सर इंसान का नुक़्सान गुस्सा के सबब होता है, गुस्सा की वजह से लोग इंसान से नफ़रत करने लग जाते हैं, चुनांचे अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि ऐ मेरे हबीब! आप रहीम व करीम हैं और आप के सहाबा आप पे जान कुर्बान करने को तैयार हैं, "وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ" अगर आप सख़्त गीर होते और तेज़ मिज़ाज के होते तो यह आप के गिर्द से

सारे भाग जाते तो गुस्सा ज़्यादा नहीं करना चाहिये। इसलिये हदीसे पाक में है कि नबी सल्ल0 ने पूछा कि पहलवान कौन है? तो बतलाया गया कि जिसमें ताक़त ज़्यादा हो, तो नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः नहीं बल्कि जो बंदा अपने गुस्से पे क़ाबू पा ले वह पहलवान होता है, आप ज़रा ग़ौर कीजिये कि गुस्सा आम तौर पर कमज़ोरी की अलामत होता है, लिहाज़ा सिहतमंद के बजाए बीमार को गुस्सा जल्दी ही आता है, मर्द की निस्बत औरत को गुस्सा जल्दी आ जाता है, तो गुस्सा कमज़ोरी की अलामत है, बूढ़ों की जवानों की निस्बत गुस्सा ज़्यादा आता है। हमने तो बअ़ज़ बूढ़ों को देखा कि हवा को गालियां दे रहे होते हैं, तो मालूम हुआ कि गुस्सा कमज़ोरी की अलामत है।

घर के झगड़ों में गुस्से का किर्दार

इसी लिये गुस्सा में इंसान बड़ा नुक़्सान कर बैठता है। एक नौजवान आया, कहने लगाः हज़रत! ग़लती हुई, गुस्सा में मैंने बीवी को तलाक़ दे दी, मैंने कहा कि मुझे एक मिसाल बताओ कि ख़ुश होकर किसी ने अपनी बीवी को तलाक़ दिया हो, तलाक़ देते तो गुस्सा में ही हैं तो तुम गुस्से में आए ही क्यों, इसलिये बेहतरीन इंसान वह है कि जिसको गुस्सा कम आए और आए भी तो जल्दी रुख़्सत हो जाए। आज गुस्से की वजह से छोटी छोटी बातों का पतंगड़ बन जाता है, घरों के अंदर परेशानियां, मियां बीवी के मस्ले, यह सारे के सारे गुस्से की वजह से होते हैं, गुस्से में ख़ाविंद महीना महीना बीवी से नहीं बोलता, कहीं बीवी एक एक महीन ख़ाविंद से सीधे मुंह बात नहीं करती। और गुस्सा दोनों तरफ़ से बुरा है, चाहे ख़ाविंद की तरफ़ से हो, चाहे बीवी की तरफ़ से हो, कोशिश यह करनी चाहिये कि अगर दूसरे की ग़लती भी हो तो उसको मुआफ़

कर दें।

गुस्सा बर्दाश्त कर लेने के फ़ाएदे

हदीसे मुबारक में है कि जो शख़्स दुनिया में दूसरों की ग़लती को जल्दी मुआफ़ करेगा अल्लाह तआला क़्यामत के दिन उसकी ग़लतियों को जल्दी मुआफ़ फ़रमा देंगे। और गुस्सा निकाल भी ले तो वक़्ती तौर पे तो इंसान को अच्छा लगता है, लेकिन सारी उम्र वह इंसान को पछतावा रहता है।

चुनांचे एक साहब आफ़िसर थे, वह अपना वाक़िआ लिखते हैं, कहते हैं कि मुझे एक शहर से दूसरे शहर ट्रेन में जाना था, मैंने एक कुली को सामान दिया और कहा कि मुझे ट्रेन के फ़लां डिब्बे में पहुंचा दो, Rush (हिजूम, भीड़) काफ़ी था, जब ट्रेन आई तो रुकने का टाइम थोड़ा था, मैं तो अपनी जगह पर पहुंच गया, लेकिन कुली सामान लेकर नहीं पहुंचा, हत्ता कि ट्रेन की सीटी भी बज गई, दरवाज़े भी बंद हो गए, जब दरवाज़ा बंद होने लगा तो मैं उतर गया कि मेरा तो सामान अभी नहीं आया, अब मेरे सामने ट्रेन जा रही है, मेर टिकट भी ज़ाए हो गया, मेरी ट्रेन भी छूट गई, मुझे गुस्सा तो बहुत आया मगर मैंने सोचा कि देखो प्लेटफ़ार्म पे इतना Rush है कि एक बंदे को पैदल चलने का रास्ता नहीं मिल रहा है, और कुली ने तो सर पे मेरा बैग उठाया हुआ था, तो लोगों ने रास्ता नहीं दिया होगा, थोड़ी देर के बाद जब Rush (भीड़) थोड़ा कम हुआ तो वह कुली मुझे नज़र आया, पसीन छूटे हुए थे, परेशान था, मुझे देखते ही कहने लगा कि साहब! मेरी ग़लती नहीं, भीड़ इतनी थी कि मुझे किसी ने आगे बढ़ने ही नहीं दिया, मैं चीख़ता रहा कि मुझे रास्ता दो रास्ता दो, किसी ने रास्ता नहीं दिया, मैंने उससे कहा कोई बात नहीं, मैं कल इसी वक़्त उस ट्रेन से फिर चला जाऊंगा, उसका दिल पुर

सुकून हो गया, मुझे कहने लगा मैं आप का सामान आपकी गाड़ी तक पहुंचा देता हूं, चुनांचे मैं वापस आ गया और मैंने एक और दिन वहीं रहने का प्रोग्राम बना लिया, अगला दिन जब हुआ तो मैं वक़्त से पहले पहुंचा कि फिर देर न हो, वह कहते हैं कि ट्रेन के टाइम में अभी घंटा था, जब मैं वहां गया तो मैंने देखा कि वही कल वाला कुली मेरे इंतेज़ार में खड़ा हुआ था, मुझे देखा तो उसने सामान मेरे हाथों से ले लिया और सामान उठा कर उसने प्लेट फ़ार्म तक पहुंचाया और फिर मैंने उसे पैसे देने चाहे तो उसने पैसे भी नहीं लिये कि नहीं साहब! मेरी वजह से कल ट्रेन Miss (छूट जाना) हो गई, मुझे पैसे नहीं चाहिये, बस आपका दिल मेरी तरफ़ से ख़ुश हो जाए, वह अफ़सर कहते हैं कि इसके बाद जब ट्रेन के चलने का वक़्त आया तो मैंने उसकी तरफ़ देखा तो उसकी आंखों में आंसू थे, मैंने अपनी ज़िंदगी में इतनी मुहब्बत से किसी रिशतादार को भी अलविदा करते नहीं देखा जिस मुहब्बत से मुझे उस कुली ने अलविदा किया, क्योंकि वह कुली समझता था कि अगर कल यह गुस्सा करते तो जाइज़ था, मैंने गुस्से को बर्दाश्त किया, वह गुस्से की तकलीफ़ तो ख़त्म हो गई लेकिन आज भी जब उस कुली का चेहरा सामने आता है, उसकी आंखों के आंसू से मुझे राहत होती है कि उसने मुझे कितनी मुहब्बत से रुख़्सत किया।

घरों के अंदर मियां बीवी को चाहिये कि गुस्से से काम न लिया करें। कई दफ़ा मां बच्चों पे बेजा गुस्सा करती है, कई दफ़ा ख़ाविंद बीवी पे बेजा गुस्सा करता है, कई जगह सास साहिबा गुस्सा करती हैं, हमारे अकाबिर ने कहा कि जिसका गुस्सा कंट्रोल में न होता हो वह इस बात को सोचे कि क़्यामत के दिन एक परवरदिगार होगा, जो जिस पर चाहेगा ख़ुशी का इज़्हार करेगा और जिस पर चाहेगा

गुस्सा का इज़्हार करेगा, अगर मैंने दुनिया में लोगों पर गुस्सा किया तो मुझे इसका हिसाब देना होगा तो परवरदिगार मेरे साथ वैसा ही मुआमला फ़रमाएगा। चुनांचे हदीसे पाक में फ़रमाया कि जो बंदा किसी बंदे पर गुस्सा कर सकता हो, मगर वह अल्लाह के लिये मुआफ़ कर दे तो अल्लाह तआला क़्यामत के दिन उस बंदे को मुआफ़ कर देंगे। हज़रत थानवी रह0 ने वाक़िआ लिखा है कि एक शख़्स ने ग़लती पर अपनी बीवी को मुआफ़ किया था, जब फ़ौत हुआ तो अल्लाह के हुज़ूर पेशी हुई, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तूने अपनी बीवी को मेरी बंदी समझ के मुआफ़ किया था, आज मैं भी तुम्हें अपना बंदा समझ के मुआफ़ करता हूं।

कई दफ़ा यह भी देखा कि कोई बंदा ग़लती कर बैठा, अब वह मुआफ़ी मांग रहा है तो लोग मुआफ़ ही नहीं करते। सुनिये हदीसे मुबारक और दिल के कानों से सुनिये! नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः अगर किसी मुसलमान से ग़लती हो जाए और वह मुआफ़ी मांगने के लिये आए और वह बंदा कहे कि मैं तुझे मुआफ़ नहीं करता, तो नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि यह जो दूसरे मुसलमान को कह रहा है कि मैं तुझे मुआफ़ नहीं करता, इसको चाहिये कि क़्यामत के दिन हौज़े कौसर पर मुझे अपनी शक्ल न दिखाए, यह मेरे उम्मती को मुआफ़ नहीं करता, मैं क़्यामत के दिन उसकी शक्ल भी देखना पसंद नहीं करता, लिहाज़ा अगर कोई मुआफ़ी मांगे तो जल्दी मुआफ़ कर दिया करें, यह सोचते हुए कि मैं जल्दी मुआफ़ करूंगी तो इसके बदले अल्लाह मुझे जल्दी मुआफ़ कर देंगे। अल्लाह तआला हमें ऐसे अच्छे अख़्लाक़ अता फ़रमाए।

बुज़ुर्गों के दर्मियान इख़्तिलाफ़ की नौइयत

हमारे बुज़ुर्गों के दर्मियान अगर कभी एक दूसरे के साथ रंजिश

भी होती थी तो वह दुनिया के लिये नहीं होती थी, वह दीन के लिये होती थी, वह अल्लाह के लिये होती थी, जैसे मौलाना याक़ूब नानूतवी रह0 ने एक बच्चा जो सबक़ बिल्कुल नहीं याद करता था उसे दो जूतियां लगाईं, वह कहने लगाः अल्लाह के लिये मुआफ़ कर दें, तो हज़रत ने फ़रमायाः मैं अल्लाह ही के लिये तो मार रहा हूं, यअ़नी उनका गुस्सा करना भी अल्लाह के लिये होता था, अपने लिये नहीं होता था, तो गुस्सा को इंसान क़ाबू करे तो यह इंसान अल्लाह की नज़र में पहलवान है।

हमारे बुज़ुर्गों के इख़्तिलाफ़ की नौइयत क्या होती थी, इस सिलसिला में एक वाक़िआ सुन लीजिये, एक बुज़ुर्ग थे, ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह0, उनके पास ज़िक्र व अज़कार करने वाले और हाल अहवाल वाले सालिकीन होते थे, उनके यहां एक नअ़त की महफ़िल होती थी जिसको महफ़िले समाअ़ कहा जाता था, जिस में शेअ़र पढ़े जाते थे तो बअ़ज़ लोग गिरते थे, उछलते थे, अल्लाह अल्लाह अल्लाह कहते थे, अजीब कैफ़ियत होती थी, उस ज़माने में एक हुकूमत के मुहासिब थे जिनका नाम था क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन सनामी रह0, उनके ज़िम्मा था कि अगर वह कहीं कोई ऐसा ख़िलाफ़े शर्अ काम देखें तो उसको बंद करवा दें, चुनांचे उनकी महफ़िल लगी हुई थी, क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन आते थे और मजलिस बरख़ास्त करवा देते थे, ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह0 तो ख़ामोश रहते थे, लेकिन मुरीदों को गुस्सा ज़्यादा आता था कि यह कौन है जो हमारे शैख़ की मजलिस को ख़त्म करवा देता है, अल्लाह की शान देखें कि क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन रह0 बीमार हो गए, जब पता चला कि आख़िरी वक़्त है तो ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह0 ने फ़रमाया कि मुसलमान के मुसलमान पे पांच हक़ होते हैं, उनमें एक है अयादत करना, लिहाज़ा

मैं उनकी अयादत के लिये जाऊंगा, कोई हम जैसा होता तो कहता: देखा! हमारे हज़रत की मजलिस को बरख़ास्त करवाता था तो अल्लाह ने कैसा पकड़ा, मगर उन लोगों के दिलों में सच्चाई होती थी, ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह0 ने सोचा कि मैं उनकी अयादत के लिये उनके घर जाता हूं, चुनांचे ख़्वाजा साहब आए, दरवाज़ा खटखटाया, क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन सनामी रह0 पर आख़िरी आख़िरी लम्हात थे, जब दरवाज़ा खटखटाया गया तो उनका शागिर्द भागा हुआ आया, उसने देखा कि वहां पर निज़ामुद्दीन औलिया खड़े हैं तो उसने वापस जाके बताया कि हज़रत! वह तो निज़ामुद्दीन साहब आए हैं तो हज़रत ने फ़रमाया कि देखो! यह मेरा आख़िरी वक़्त है, मुझे उनसे कुछ बातों में इल्मी इख़्तिलाफ़ है, मैं नहीं चाहता कि वह आएं और मेरी तबीअ़त पे बोझ पड़े, मैं यक्सूई के साथ अल्लाह के हवाले होना चाहता हूं, चुनांचे शागिर्द आया और उसने आगे मअ़ज़रत कर दी कि हज़रत फ़रमाते हैं कि आप कुछ अमल ऐसे करते हैं जो मेरे नज़दीक बिद्अ़त हैं, लिहाज़ा मैं इस मौक़ा पे आप से नहीं मिलना चाहता, तो इस पर ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह0 ने पैग़ाम भेजा कि जाकर क़ाज़ी साहब से कहो कि मैं इन बिद्अ़तों से तौबा करने की नियत से आया हूं, जब शागिर्द ने आकर यह बताया तो क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन रह0 लेटे हुए थे, उठ के बैठ गए और अपने सर से अमामा उतार कर शागिर्द से कहा कि मेरे बिस्तर से लेके दरवाज़े तक मेरी पगड़ी को फैला दो और ख़्वाजा साहब से कहो कि जूतों के साथ उसके ऊपर चल के मेरे पास आएं कि मुझे उनसे जो इख़्तिलाफ़ था वह शरीअ़त के मसला में था। सुब्हानल्लाह! यह कैसी कुद्सी रूहें होती थीं कि उनका आपस में अगर इख़्तिलाफ़ होता तो वह भी शरीअ़त के लिये होता था, अगर मुहब्बत होती थी तो वह

भी शरीअ़त के लिये। इंसान को ऐसा ही बनना चाहिये कि लेटे बैठे चलते फिरते हर वक़्त दिल में अल्लाह का ध्यान हो, अल्लाह तआला हमें इन छः बीमारियों से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, और मुआशरे को अच्छा फ़र्द बन कर रहने की तौफ़ीक़ दे।

وآخرُ دعْوانا أنِ الْحمد للهِ ربِّ الْعالمين

अगले सफ़्हात पर आप जो ख़िताब मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, वह मैलूशार्म के मदरसा "मिफ़ताहुल उलूम", में 19 अप्रेल 2011ई० बरोज़ सहशंबा, बअ़द नमाज़े मग़रिब हुआ था, मुहताते तख़्मीना के मुताबिक़ मज्मा की तादाद 60 से 70 हज़ार बताई गई है।

तक्वा इख़्तियार कीजिये

الحمد للّٰہ و کفی وسلام علی عبادہ الذین اصطفی، اما بعد

اعوذ باللّٰہ من الشیطان الرجیم، بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم

وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ.

وَقَالَ اللّٰہ تعالٰی فِی مقامٍ آخر: وَاِيَّایَ فَاتَّقُوْنِ. وقَالَ اللّٰهُ تَعالٰی فِی مقامٍ آخر: فَاتَّقُوْنِ يَا اُوْلِی الْاَلْبَابِ

سبحان ربک رَبِّ العزۃ عما یصفون، وسلام علی المرسلین، والحمد للّٰہ رب العلمین

اللھم صل علی سیدنا محمد و علی اٰل سیدنا محمد وبارک وسلم

اللھم صل علی سیدنا محمد و علی اٰل سیدنا محمد وبارک وسلم

اللھم صل علی سیدنا محمد و علی اٰل سیدنا محمد وبارک وسلم

आज के दौर में तीन संगीन तबदीलियां

आज के Most modern scientific (साइंसी तरक़्क़ी याफ़्ता) दौर में तीन बातें खुली आंखों से नज़र आ सकती हैं, एक तो यह कि आज का इंसान अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मअ़रिफ़त को हासिल करने के बजाए अपना सारा वक़्त माद्दे को पाने में लगाए हुए है, माद्दी रीसर्च के ऊपर इतना वक़्त सर्फ़ हो रहा है कि जितना वक़्त हमें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मअ़रिफ़त को हासिल करने पे लगाना चाहिये था, दूसरी तबदीली यह कि इंसान अपनी दुनिया को बनाने में इस क़दर मगन है कि आख़िरत को बनाने से ग़ाफ़िल हो गया है, जिस बंदे की ज़िंदगी को देखो वह अपनी जन्नत सजाने में लगा हुआ है, मगरा घर ऐसा हो, गाड़ी ऐसी हो, बीवी ऐसी हो, बच्चे ऐसे हों, हर चीज़ में Ideal (मिसाली चीज़) ढूंढता है और

Perfection (दर्जए कमाल) ढूंढता है, हालांकि यह चीज़ें तो आख़िरत में मिलनी थीं तो गोया आज का इंसान दुनिया में ही अपनी जन्नत बसाने की कोशिश में लगा हुआ है। तीसरी तब्दीली कि अपने बातिन से ग़ाफ़िल होकर फ़क़त ज़ाहिर को सजाने में यह इंसान लग गया है, ज़ाहिर में कपड़े ऐसे हों, जूते ऐसे हों, मेरे ग्लास ऐसे हों, ज़ाहिर में मेरा चेहरा ऐसा हो, इसकी फ़िक्र ज़्यादा है और यह फ़िक्र नहीं कि मेरे मन का चेहरा कैसा है, मेरे अंदर का क्या हाल है, नतीजा यह निकला कि बाहर के Pollution control (आलूदगी पर क़ाबू पाना) के लिये वज़ारतें बन गईं और अंदर के Pollution control (दिल की आलूदगी) की किसी को फ़िक्र ही नहीं है, उस तरफ़ ध्यान ही नहीं जाता कि ग़ैर महरम पर नज़र उठाई तो दिल का हाल क्या बुरा हुआ, दिल पर कितनी ज़ुल्मत आई, झूट बोला तो दिल कितना सियाह हुआ, इस तरफ़ ध्यान ही नहीं जाता, अगर ज़ाहिरी ज़िल्लत न हो तो झूट बोलना तो मशग़ला बन गया है, तो इंसान अपने मन की दुनिया से ग़ाफ़िल होकर फ़क़त तन की दुनिया की कामियाबी हासिल करने के पीछे लग चुका है, नतीजा यह हुआ कि इंसान का दिल गुनाहों की कसरत की वजह से सियाह हो चुका है, आज के इंसान का दिल उमूमी तौर पर सिल बन चुका है, पत्थर बन चुका है "اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً" बल्कि पत्थरों से भी ज़्यादा सख़्त हो चुका है, इसलिये कि पत्थर तो फिर भी अल्लाह के ख़ौफ़ से कांप उठते हैं और इंसान को अल्लाह का ख़ौफ़ दिलाया भी जाए तो कानों पे जूं नहीं रेंगती, तो मालूम हुआ कि यह दिल पत्थरों से भी परे पार हो गए हैं।

दिल के मुनव्वर और सियाह होने की अलामत

हमारे बुज़ुर्गों ने फ़रमाया: "اَلْقَلْبُ الْمُنَوَّرُ يَظْهَرُ عَلَى الْجَوَارِحِ

"اَشَارَهٗ وَهِیَ الْمُوَافَقَةُ" कि जब दिल मुनव्वर हो जाता है तो उसकी बदन पर अलामत यह होती है कि सब बदन के अअ्ज़ा, शरीअ़त के मुताबिक़ अमल करते हैं। "وَالْقَلْبُ الْمُظْلِمُ يَظْهَرُ عَلَى الْجَوَارِحِ اَثَارَهٗ وَهِیَ الْمُخَالَفَةُ" और जब दिल सियाह होता है तो उसके बदन पर आसार होते हैं और वह यह कि अअ्ज़ा गुनाहों के अंदर मुलव्विस होते हैं। बंदे का अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के साथ फ़क़त बंदगी का रिशता है "اِنَّ اللّٰهَ عَزَّوَجَلَّ لَيْسَ بَيْنَهٗ وَبَيْنَ اَحَدٍ سَبَبٌ اِلَّا طَاعَتَهٗ" बंदे और अल्लाह के दर्मियान बंदगी के सिवा और कोई दूसरा रिशता नहीं है। चुनांचे जो नेक है वह अल्लाह का बंदा है और जो नेक नहीं वह नफ़्स और शैतान का बंदा है।

अल्लाह के यहां मक़्बूलियत तक़्वे की बुन्याद पर है

उमर बिन ख़त्ताब रज़ि0 ने सअ़्द बिन अबी वक़ास रज़ि0 को फ़रमायाः "عَلَيْكَ بِتَقْوَى اللّٰهِ" कि आप पर तक़्वा का इख़्तियार करना लाज़िम है "وَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَمْحُو السَّيِّئَ بِالسَّيِّئِ وَلٰكِنَّهٗ يَمْحُو السَّيِّئَ بِالْحَسَنَاتِ" अल्लाह तआला बुराई के ज़रीआ बुराई को नहीं ख़त्म करते, बुराई को अच्छाई के ज़रीआ से ख़त्म करते हैं। "وَلَا يَغُرَّنَّكَ اَنَّكَ يُقَالُ صَاحِبُ رسولِ اللّٰهِ وَخَالُ رَسُولِ اللّٰهِ" और यह चीज़ धोके में न डाल दे कि लोग आप को नबी सल्ल0 का सहाबी और नबी सल्ल0 का मामूं कहते हैं---सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि0 बनी ज़ह्रा क़बीले से थे और बीबी आमिना भी इस क़बीले से थीं, तो इस निस्बत से वह नबी सल्ल0 के मामूं कहलाए—तो उमर रज़ि0 ने फ़रमाया कि आप को यह चीज़ धोके में न डाल दे कि लोग आप को नबी सल्ल0 का सहाबी और नबी सल्ल0 का मामूं कहते हैं, आप बुराई को हमेशा अच्छाई से ढकेलें। अब हम सोचें कि हम किसी खेत की गाजर मूली हैं कि हम ज़ह्नों

में यह लिये बैठे हैं कि हम जो मर्ज़ी गुनाह करते फिरें हम अल्लाह तआला के प्यारे हैं, ऐसी बात हरगिज़ नहीं, जो नेकूकार होगा वह अल्लाह तआला को महबूब होगा, और जो गुनहगार होगा वह अल्लाह तआला को नापसंद होगा, वाज़ेह फ़र्क़ है, इस तक़सीम में कोई शक नहीं है।

आप ग़ौर कीजिये! सय्यदना बिलाल रज़ि0 एक गुलाम हैं, रंग काला है, होंट मोटे हैं, शक्ल अनोखी है, मगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के फ़रमांबरदार बंदे बने, नेकी तक़्वा की ज़िंदगी अपनाई, अल्लाह के यहां वह मक़ाम मिला कि नबी सल्ल0 मेअ़राज की रात जब जन्नत की सैर करने गए तो पांव के जूते की आवाज़ आई, तो पूछाः जिब्रईल! यह किसकी आवाज़ है? अर्ज़ कियाः अल्लाह के हबीब सल्ल0! आप का गुलाम बिलाल फ़र्श पर चलता है, उसके क़दमों की आहट अर्श पर सुनाई देती है। इसके बिल मुक़ाबिल देखिये! एक नौजवान है, नाम वलीद है और वह अपने आप को वहीदुज़्ज़मां समझता है, अरब के क़ुरैश घराने से उसका तअल्लुक़ है, एक दर्जन के क़रीब बेटे हैं, माल दौलत है, रंग गोरा और शक्ल ख़ूबसूरत है, वह समझता है कि मेरे जैसा इस वक़्त दुनिया में कोई नहीं, मगर उसने नबी सल्ल0 की मुख़ालिफ़त की, अल्लाह तआला फ़रमाते हैंः "ذَرْنِىْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا" ज़रा छोड़िये मुझे और उसको जो अपने आप को वहीदुज़्ज़मां समझता है, मैं ज़रा उसके साथ निमट लूं, तो देखिये वह क़ुरैश का सरदार, माल व दौलत, औलाद, सब कुछ होने के बावजूद अल्लाह की निगाह से गिर गया, और यह बिलाल रज़ि0 हब्शा के रहने वाले शक्ल व सूरत कैसी है, मगर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को यह पसंद आ गए, तो मालूम हुआ कि बंदे का अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से तअल्लुक़ फ़क़त बंदगी का है, जो नेकूकार होगा वह

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को पसंद होगा और जो इंसान गुनाहों का इर्तिकाब करेगा वह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की निगाहों से गिर जाएगा।

इसकी एक सादा सी मिसाल समझिये "اَلْعَبْدُ يَتَّقِيْ عَذَابَ سَيِّدِهٖ بِطَاعَتِهٖ" गुलाम अपने मालिक के अज़ाब से बचता है उसकी इताअत के ज़रीआ, जिस नौकर को जो कहा जाए वह करे और जिससे मना किया जाए वह मान जाए तो मालिक उससे ख़ुश होता है और जो मालिक की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ करे या तो मालिक सज़ा देता है या फिर उसकी छुट्टी करवा देता है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां भी मुआमला ऐसा ही है, जो गुनाह करता है अल्लाह तआला उसको तंबिया फ़रमाते हैं, अगर समझ जाए तो फ़बिहा, नहीं तो फिर अपने मक़्बूल बंदों की फ़ेहरिस्त से उसका नाम निकाल देते हैं, वह बंदा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की निगाहों से गिर जाता है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम नेक आमाल को अपनाएं और गुनाहों से सौ फ़ीसद बच कर ज़िंदगी गुज़ारें।

तक़्वे के फ़ाएदे

जुन्नून मिस्री रह0 फ़रमाते थे: "فَمَنْ أَرَادَ أَنْ يَّفْتَحَ اللّٰهُ عَلَيْهِ بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ" जो यह चाहे कि अल्लाह तआला मेरे ऊपर ज़मीन और आसमान से बरकतों के दरवाज़े खोल दे "وَيَجْعَلَ لَهٗ مَخْرَجًا" और अल्लाह इसके लिये मख़्रज बना दे "وَيَرْزُقَهٗ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ" और अल्लाह ऐसी तरफ़ से रिज़्क़ दे जहां से गुमान भी न हो "وَيُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهٖ" और अल्लाह उसके गुनाहों को मिटा दे "وَيُعْظِمْ لَهٗ أَجْرًا" और अल्लाह उसको नेक आमाल पे बहुत अजर अता फ़रमाए "وَيَجْعَلْ لَهٗ مِنْ أَمْرِهٖ يُسْرًا" अल्लाह उसके कामों में आसानियां कर दे "وَيَكُوْنَ مَعَهٗ" अल्लाह उसके साथ हो जाए

"وَيُحِبَّهٗ" अल्लाह उससे मुहब्बत करे "وَيُنجِيَهٗ" और अल्लाह उसको हर मुश्किल मुसीबत से नजात अता फ़रमाए "وَيَكُوْنُ مِنَ الْفَائِزِيْنَ" और वह कामियाबी हासिल करने वालों में से हो जाए "فَلْيَتَّقِ اللّٰه" उसको चाहिये कि वह तक़्वा को इख़्तियार कर ले। यह तमाम इन्आमात उस शख़्स को मिल जाते हैं जो मुत्तक़ी बन जाता है।

मुत्तक़ी किस को कहते हैं? "اَلتَّقْوٰى هِىَ اِتِّقَاءُ عَذَابِ اللّٰه بِامْتِثَالِ اَوَامِرِهٖ وَاجْتِنَابِ نَوَاهِيْهِ" जिन चीज़ों को अल्लाह ने हुक्म दिया उनको करे जिन से मना किया उससे रुक जाए, उस शख़्स को मुत्तक़ी कहते हैं। यह बंदा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के पसंदीदा बंदों में है, अल्लाह ऐसे बंदे को अपना वली बनाते हैं, इसलिये फ़रमायाः "اِنْ اولیائُه اِلَّا المتقون" कि उसके वली वह होते हैं जो मुत्तक़ी लोग होते हैं।

तक़्वा के बग़ैर इंसान को विलायत का दर्जा हासिल नहीं हो सकता, मअ़रिफ़त का नूर ही तक़्वा से मिलता है, चुनांचे क़ुर्आन मजीद की यह आयतः "وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰى آمَنُوْا وَاتَّقَوْا" कि अगर यह बस्ती वाले ईमान लाते और तक़्वा इख़्तियार करते, एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैंः "مَعْنَاهُ: لَوْ اَنَّهُمْ صَدَقُوْا وَعْدِىْ" इसका मअ़नी यह है कि अगर वह मेरे वादों को सच्चा कर देते "وَاتَّقَوْا مَخَالَفَتِىْ" और मेरी मुख़ालिफ़त से बच जाते "لَنَوَّرْتُ قُلُوْبَهُمْ بِمُشَاهَدَتِىْ" तो मैं उनके दिलों को अपने मुशाहिदे के नूर से मुनव्वर फ़रमा देता है तो जो इंसान अल्लाह की मुख़ालिफ़त को छोड़ देता है उसी को अल्लाह का मुशाहिदा नसीब होता है।

तक़्वे की बुन्याद आइंदा नसलों के ईमान की हिफ़ाज़त

बल्कि अल्लाह तआला उस बंदे से इतना ख़ुश होते हैं कि उसकी आने वाली नस्लों का भी लिहाज़ फ़रमा लेते हैं, एक हदीसे

पाक में है "إِنَّ اللّٰهَ يَحْفَظُ الرَّجُلَ الصَّالِحَ فِي أَهْلِهِ وَوَلَدِهِ" कि अल्लाह तआला नेक बंदे के अह्ले ख़ाना और औलाद के भी ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं। बअ़ज़ अहादीस में है कि जब कोई बंदा अल्लाह को पसंद आता है तो अल्लाह तआला उसकी आने वाली 21 पुश्तों के ईमान की हिफ़ाज़त का वादा फ़रमा लेते हैं। और एक हदीसे पाक में है "إِنَّ اللّٰهَ يَحْفَظُ الرَّجُلَ الصَّالِحَ وَلَدَهُ وَوَلَدَ وَلَدِهِ" कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त नेक बंदे की औलाद को और जो उसकी आगे औलाद होती है अल्लाह तआला उनके भी ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमा देते हैं। चुनांचे सूरए कह्फ़ के अंदर एक वाक़िआ है कि हज़रत मूसा अलै0 और ख़िज़्र अलै0 ने एक दीवार बनाई तो मूसा अलै0 ने पूछा कि यह दीवार क्यों बनाई? तो उन्होंने कहा कि इस शहर में दो यतीम बच्चे थे "وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَّهُمَا" और उस दीवार के नीचे दोनों का ख़ज़ाना था "وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا" और उनके वालिद नेक थे। तो मुफ़स्सिरीन ने लिखा कि उनके वालिद इतने नेक नहीं थे, बल्कि उनके वालिद के सातवीं पुश्त में जो उनके दादा थे वह नेक थे, उनकी बरकत से अल्लाह ने सातवीं पुश्त के माल की अगर हिफ़ाज़त फ़रमा दी तो अल्लाह के ईमान की कितनी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं? यह तक़्वा की कितनी बड़ी नेअ़मत है कि इसके सद्क़े अल्लाह तआला बंदे की भी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं, आने वाली नस्लों की भी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं।

तक़्वे वाले का अंजाम बख़ैर होता है

और एक ख़ास बात कि जो बंदा नेक होता है, मुत्तक़ी होता है, अल्लाह तआला उसका अंजाम बख़ैर फ़रमाते हैं। हदीसे मुबारक है: "إذا أراد اللّٰه بعبد خيرًا استعمله" अल्लाह तआला जब किसी बंदे के साथ ख़ैर का इरादा करते हैं तो उसे इस्तेमाल कर लेते हैं, उसको

नेकी की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देते हैं, "فَقِيلَ" पूछने वालों ने पूछा "كيف يستعمله يا رسول الله؟" ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! उसको कैसे अल्लाह तआला इस्तेमाल फ़रमाते हैं? "قَالَ يُوَفِّقُهُ لِعَمَلٍ صَالِحٍ قَبْلَ الْمَوْتِ" अल्लाह तआला उसको मौत से पहले नेक आमाल की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देते हैं। उसकी सूरतें देखिये कि जो शख़्स मिसवाक की पाबंदी करता है तो इस सुन्नत के फ़वाइद में ऐ सक यह है कि जब उसकी मौत का वक़्त आता है तो मलकुल मौत आते हैं और उस बंदे को बता देते हैं कि तेरी मौत का वक़्त क़रीब है, शैतान को दूर भगा देते हैं और उस बंदे को कलिमा पढ़ना याद दिलाते हैं। अब सोचिये यह कितना बड़ा इन्आम है कि मलकुल मौत शैतान बदबख़्त को दूर भगा दें और बंदे को कलिमा याद दिला दें। तो जो बंदा अल्लाह को पसंद होता है अल्लाह तआला उसका अंजाम अच्छा कर देते हैं, उसको नेक आमाल की तौफ़ीक़ दे देते हैं।

अंजाम बख़ैर होने के क़ाबिले रश्क वाक़िआत

चुनांचे एक बुजुर्ग थे, हमारे एक क़रीबी दोस्त के वह Father in law थे, ससुर थे, इस वजह से उस आजिज़ को उनसे एक तअल्लुक़ था, बस उनकी एक चाहत थी कि हर साल हज करना और रमज़ानुल मुबारक में मस्जिदे नबवी के अंदर एतिकाफ़ करना, यह दो बातें उनकी ज़िंदगी की ख़ास तमन्ना थी और अलहम्दु लिल्लाह उन्होंने अपनी ज़िंदगी में 53 हज किये, और इतनी ही दफ़ा शायद मस्जिदे नबवी में एतिकाफ़ भी किया होगा, उनकी चाहत ही यही थी, जैसे होता है कि हर बंदे की एक तमन्ना होती है, उनकी बस तमन्नी ही यही थी, दुआ मांगते थे कि अल्लाह आख़िरी वक़्त में मुझे जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़न होने की सआदत अता फ़रमा। अल्लाह ने उनकी दुआ ऐसे क़बूल की कि हैरान होते हैं, रमज़ानुल मुबारक

का महीना, आख़िरी अशरा, एतिकाफ़ की हालत में, रियाज़ुल जन्नता के अंदर बावज़ू हैं, अस्र की नमाज़ की नियत बांधी है, जब दूसरी रकअत के सज्दे में गए तो रूह परवाज़ कर गई, अब बताएं कि कितनी सआदतें अल्लाह ने एक साथ इकट्ठी फ़रमा दीं, बावज़ू मौत आना एक सआदत, फिर मस्जिदे नबवी में, फिर रमज़ानुल मुबारक, फिर आख़िरी अशरा, एतिकाफ़ की हालत में, फिर रियाज़ुल जन्नह के अंदर, फिर नमाज़ की कैफ़ियत और फिर सज्दे की हालत में जब जाते हैं तो सज्दे में रूह क़ब्ज़ होती है, सज्दे से उठते नहीं, वहीं उनकी वफ़ात हो जाती है, जनाज़ा हुआ, जन्नतुल बक़ीअ़ के अंदर दफ़न हुए। तो जो बंदा अल्लाह को पसंद होता है अल्लाह उसका अंजाम अच्छा कर देता है।

हमारे शहर के एक साहब थे जो दुनियादार थे, बहुत बड़े बिज़निस मैन थे, लोग उनकी अमीरी की मिसालें देते थे, अल्लाह की शान देखें कि उनकी वालिदा की वफ़ात हुई तो उन्होंने उस आजिज़ को बुलाया कि रिशतादार जमा हैं, आप कुछ आकर नसीहत कर दें ताकि बच्चों की तवज्जो नेकी की तरफ़ हो जाए, हमने मौक़ा को ग़नीमत समझा और हमने वहां पर मां के मक़ाम पर बात की, ताकि उसको महसूस हो कि उसके सर से साया चला गया, चुनांचे अल्लाह ने उसके दिल को नरम कर दिया, बाद में वह मुझे मिले तो कहने लगेः हज़रत! आज मैंने दो तीन नियतें कर ली हैं, पूछा क्या? कहा कि एक तो नियत कर ली है कि चेहरे पे सुन्नत सजाऊंगा, और दूसरी नियत कर ली है कि मैं हाफ़िज़े क़ुर्आन बनूंगा और तीसरी नियत कर ली है कि मैं पाबंदी से नमाज़ पढूंगा, हमने दुआ दी कि बहुत अच्छा। और वाक़ई उसने अपने अल्फ़ाज़ को पूरा कर दिखाया, इसके बाद उसकी ज़िंदगी की तरतीब ही बदल गई, पहले का इंसान

कोई और था, इतना नमाज़ का उसने एहतिमाम किया कि एक आलिम को उसने अपनी कम्पनी में Job (मुलाज़मत) दी कि आप का काम है कि मैं सफ़र हज़र जहां भी रहूं वक़्त पे मुझे नमाज़ पढ़ाएं चुनांचे वह आलिम जमाअत करवाते और यह पीछे नमाज़ पढ़ते थे, चंद महीने इस तरह गुज़रे, एक दिन अस्र की नमाज़ पढ़नी थी तो यह वज़ू करके आए और सफ़ में खड़े हो गए और कहने लगे कि मैं इक़ामत कहता हूं, इक़ामत कहते कहते जब उन्होंने कहा: "أشهد انّ محمدًا رسولُ الله" इतने अल्फ़ाज़ कहे और वहीं पर गिरे और मौत आ गई। देखिये! ज़िंदगी कैसी गुज़री, मगर सच्ची तौबा अल्लाह को पसंद आ गई, अल्लाह ने मौत कैसी दी कि नमाज़ की इक़ामत कहते हुए कलिमा पढ़ रह हैं और इस दुनिया से जा रहे हैं। तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जब किसी बंदे से ख़ुश होते हैं तो उसको मौत के क़रीब अच्छी बातों की तौफ़ीक़ और फिर ऐसी अच्छी मौत अता फ़रमा देते हैं।

बुरी मौत के चंद इबरतनाक वाक़िआत

और जब किसी बंदे से नाराज़ होते हैं तो फिर अल्लाह तआला उसको बुरी मौत देते हैं, चुनांचे एक मर्तबा एक इलाक़े में जाना हुआ, वहां एक वकील साल से मुलाक़ात हुई, वह वकील साहब दुहरे थे, मिले तो कहने लगे कि मैं तो अल्लाह को नहीं मानता, हमने उसे समझाने की कोशिश की, मगर वह समझने पर आमादा ही नहीं थे, कहने लगे कि जितना आप अल्लाह से डरते हैं मैं नहीं डरता, जब उसने यह अल्फ़ाज़ कहे तो यह आजिज़ समझ गया कि यह ज़िद पे है, इस वक़्त यह बात नहीं मानेगा, तो उससे कहा कि अच्छा आप अगर नहीं डरते तो फिर आप तैयार रहें, अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा तो आएगा, कहते हैं कि देखा जाएगा, अल्लाह की शान देखें 6

महीने नहीं गुज़रे थे कि उस बकील साहब को एक ऐसी बीमारी लगी कि उबकाई आती थी, और उसके मुंह से जो निकलता था उसमें पाख़ाने की बू आती थी। अल्लाह ने दुनिया में दिखा दिया कि जिस ज़बान से तुम अपने मालिक की शान में गुस्ताख़ी करते हो, हम उसी मुंह से अगर नेअ़मतें खिला सकते हैं तो हम उसी मुंह से पाख़ाना भी निकाल सकते हैं। मैंने एक डाक्टर को बतलाया तो उसने बीमारी का नाम मुझे बताया कि हज़रत! इस बीमारी का यह नाम है, इसमें इंसान का सिस्टम इस तरह होता है कि मुंह से जो निकलता है उसमें पाख़ाने की बू होती है। तो अगर इंसान बुरे आमाल करते तो फिर अल्लाह तआला उसको बुरी मौत दे देते हैं।

हम लोग शायद तीसरी क्लास में पढ़ते थे, एक दिन अपने स्कूल से घर आ रहे थे तो मेरे साथ वाला बच्चा मुझे कहने लगा कि हमारा हमसाया है और उसको रस्सियों से बांधा हुआ है, आपको देखना है? तो मैंने कहा: हां! हम दोनों छोटे छोटे थे, यह वह ज़माना था कि हमारे पास Multiple Visas उस वक़्त पूरे मुहल्ले के किसी भी घर का वीज़ा था, जब चाहते, जिस घर में दाख़िल हो जाते हर घर में औरतें प्यार करतीं, मर्द प्यार करते, जो देखता वह सीने से लगाता, तो उम्र छोटी सी थी, उसके साथ गए, तो उसने मुझे खिड़की से दिखाया तो मैंने एक बंदे को देखा कि वाक़ई उसको रस्सियों से बांधा हुआ है, बाल बिखरे हुए हैं, और वह थोड़ी थोड़ी देर के बाद कुत्ते की आवाज़ निकालता है, कुत्ते की तरह भौंकता है, अगर बाहर से हम आवाज़ सुनते तो यही समझते कि कुत्ता भौंक रहा है, लेकिन आंखों से चूंकि देखा कि इंसान था तो उसको देख के हैरान हुए, और अपने ऊपर एक ख़ौफ़ सा तारी हुआ, ख़ैर! मैं घर गया, जाके वालिदा को बताया अम्मी! आज स्कूल से आते हुए रास्ता में यह

वाक़िआ पेश आया, पहले तो अम्मी ने डांटा कि तुम गए क्यों? मैंने कहा कि दोस्त ने कहा तो मैंने सोचा कि देख आता हूं, तो अम्मी ने कहा बेटा! वह सारी उम्र भौंकता रहा, अब उसको भौंकते हुए मौत आएगी, मैं इस बात को नहीं समझ सका, दो तीन दिन के बाद उस बंदे की वफ़ात हुई, जब वफ़ात हुई तब वालिदा ने कहा कि वह नबी सल्ल0 के अस्हाब रज़ि0 पर तबर्रा किया करता था, इसकी सज़ा यह मिली कि अल्लाह ने मौत से पहले कुत्ते की तरह भौंकते हुए मौत अता फ़रमाई, कि तुम सारी ज़िंदगी मेरे महबूब के अस्हाब की शान में गुस्ताख़ियां करते रहे, अब तुम्हें भौंकते हुए दुनिया से जाना है, तो नेक आमाल का यह नतीजा कि अच्छी मौत आती है, और बुरे आमाल का यह नतीजा कि इंसान को आख़िर में बुरे हाल में मौत आती है।

गुनाहों की वजह से ज़िंदगी में मुसीबतें

और फिर ज़िंदगी में भी इन गुनाहों की वजह से मुसीबतें आती हैं। उसूल यह है कि

على قَدرِ تقوی اللّٰہ تَاتِی المواھبُ

وتَاتِی علی قدرِ الذُّنوبِ المصائبُ

कि जितना इंसान नेकी करे उतना अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से रहमतें आती हैं और जितना इंसान गुनाह करे अल्लाह की तरफ़ से उस पर इतनी मुसीबतें आती हैं। वह्अब बिन मुनब्बा रह0 कहते हैं: ”رأیتُ فِی بعضِ الکُتبِ المنزّلة: یَا عبدی! أطِعْنِی فِیمَا أمرتُك“ ऐ मेरे बंदे! मेरी इताअत कर, जो मैंने तुझे हुक्म दिया ”ولا تُعلِّمْنِی بما یصلُحُك“ मुझे मत बता कि तेरे लिये बेहतर क्या है ”إنِی عَالِمٌ بخَلقِی“ मैं उसका इक्राम करूंगा जो मेरे हुक्म का

इक्राम करेगा "واُهِينُ مَن اَهان أمرِى" और मैं उस बंदे को ज़लील करूंगा जो मेरे हुक्म को हल्का समझेगा "ولستُ بِناظرٍ فى حقِّ حَتّى عَبدِى" और मैं बंदे के हक़ में उस वक़्त तक नहीं देखूंगा "يَنظُرَ عَبدِىَ فِىْ حَقِّى" जब तक कि बंदा मेरे हक़ को नहीं देखेगा। तो मालूम हुआ कि हम अल्लाह के अहकाम को पूरा करेंगे तो अल्लाह हमें इज़्ज़तों से नवाज़ेंगे, अगर हम अल्लाह के अहकाम को तोड़ेंगे अल्लाह हमें दुनिया में रुसवा फ़रमा देंगे।

गुनाह की नहूसत

गुनाहों के आसार में से एक यह भी है कि "أبى اللّٰهُ اِلَّا أنْ يُّذِلَّ مَنْ عَصَاهُ فِى الدُّنيَا وَالآخِرَة" अल्लाह तआला ने इस बात का फ़ैसला कर दिया कि जो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नाफ़रमानी करेगा उसको दुनिया व आख़िरत में ज़लील फ़रमाएगा "وما أذنبَ عبد فِى اللَّيلِ" और बंदा रात को गुनाह नहीं करता "اِلَّا أصبَحَ ومدلّتهٗ عَلى وَجهِهٖ" मगर वह इस हाल में सुब्ह करता है कि गुनाह की ज़िल्लत उसके चेहरे के ऊपर नज़र आ रही होती है। तो इंसान रात को गुनाह करता है सुब्ह के वक़्त चेहरे पर फिटकार पड़ी होती है। इब्ने समाक रह० फ़रमाते थेः "لَوْ لَمْ يَكُنْ فِى الْمَعْصِيَةِ اِلَّا النَّكَارَةُ فِى الْوَجْهِ وَظُلْمَة فِى الْقَلْبِ لَكَانَ فِى ذٰلِكَ كِفَايَة" कि अगर गुनाह का बदला इतना ही होता कि दिल सियाह होता और चेहरा के ऊपर ज़िल्लत आता तो गुनाह की यही सज़ा काफ़ी थी, चाजाए कि उसके अलावा भी अल्लाह तआला दुनिया व आख़िरत में इसकी सज़ा अता फ़रमाएंगे। तो इंसान अपने चेहरे पे गुनाहों की ज़ुलमत को सजा लेता है।

नेकी का नूर

और इंसान कितना छिप कर अल्लाह की इबादत क्यों न करे,

अल्लाह उस इबादत के नूर को उसके चेहरे के ऊपर सजा देते हैं, और इंसान का चेहरा बता देता है, आप को भी तक़ाबुल करना हो तो अह्लुल्लाह के चेहरे को भी देख लीजिये और यह जो पाप स्टार होते हैं, ज़रा इनके चेहरों को भी देख लें, क्या बिखरे बाल, उनके चेहरे ऐसे जैसे सुकून और तमानीनत का नाम व निशान ही नहीं होता, हवाईयां उड़ी हुई होती हैं, और अह्ले अल्लाह के चेहरे को देखो तो दिल को सुकून होता है, "الذين اذا رُؤا ذُكِر الله" यह वह बंदे हैं जिनको देखो तो देखने से अल्लाह याद आ जाता है।

गुनाह की तासीर रोज़ी की तंगी में

हमारे बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि गुनाहों की तीन तासीर तो पक्की है "قلّة الرزق" अल्लाह तआला रिज़्क़ को तंग कर देते हैं, चुनांचे आप देखें कि फ़ेक्ट्रियों वाले भी अगर गुनाहों की लाइन पे लग जाएं तो उनको भी रिज़्क़ की तंगी, वह इस तरह कि दो कंटेनर उधर फंस गए, उसकी अदाइगी Payment रुक गई, इधर से माल तैयार नहीं हुआ, Cash in hand (हाथ में रुपया) होतो नहीं, परेशान बैठे होते हैं कि काम कैसे चलाएं, अब वैसे करोड़पती हैं मगर परेशान हैं कि बनेगा क्या, तो अल्लाह तआला देकर भी बंदे पर Tight (तंगी) कर देते हैं और कभी कभी रिज़्क़ के हुसूल में अल्लाह मुश्किल कर देते हैं, कहते हैं: हज़रत! पता नहीं क्यों Deal (सौदा) होते होते रह जाती है, यह जो होते होते रह जाती है, यह इसी की वजह से है, मगर आमिलीन के पास जाओ, तो वह कह देते हैं किसी ने कुछ कर दिया, अल्लाह इन आमिलीन से बचाए, हमारे हज़रत रह० फ़रमाया करते थे कि आमिल न बनन, कामिल बनना, इन आमिलों को तो पता ही होता है कि हम इस लाईन पे लगा देंगे, तो उनके ज़ह्न में स्टोरी तो पहले से होती है कि हां फूफी ने कुछ

कर दिया, मेरी ननद ने कुछ कर दिया, चचा ने कुछ कर दिया, उल्टा ईमान ख़राब होता है, लोग क़त्अ़ रहमी के मुरतकिब हो जाते हैं, हालांकि किसी ने कुछ नहीं किया, हमारे अपने गुनाहों की वजह से अल्लाह ने हमारे रिज़्क़ को तंग किया हुआ है। कहते हैं कि अजी! लगता है कि किसी ने कारोबार बांध दिया है, किसी को छोटा ख़ुदा क्यों मानते हो? कारोबार अल्लाह को चलाना है और कारोबार अल्लाह को रोकना है, अल्लाह देना चाहें तो सारी मख़्लूक़ इकट्ठी हो जाए तो भी रोक नहीं सकती, अल्लाह न देना चाहें सारी मख़्लूक़ इकट्ठी हो जाए कुछ दे नहीं सकती। तो अल्लाह को अल्लाह समझये, यह क्या बात कि फ़लां ने कारोबार बांध दिया, फ़लां ने रिशता बांध दिया, कोई कुछ नहीं बांध सकता, हां हमने अपने गुनाहों के सबब इन चीज़ों को बांधा हुआ होता है, लेकिन हमारी तवज्जो उधर नहीं जाती, हम सच्ची तौबा करके देखें कि रास्ते खलुते हैं कि नहीं खुलते। इन आमिलीन का Confirmatory Test (पोल खोलने वाला पैमाना) और उनके झूटे होने की अलामत यह है कि यह बता तो देते हैं कि किसी ने कुछ कर दिया, लेकिन हल नहीं कर सकते, कहते हैं कि मैं कर तो रहा हूं लेकिन किसी ने बड़ा ज़बरदस्त किया हुआ है, भाई! जब तुम इसका हल कर ही नहीं सकते तो तुम्हारी बात क्यों मानें। हां हम इसका हल बताते हैं, हल यह है कि तन्हाई के अंदर वज़ू करके दो रक्अत नफ़िल पढ़ लें और अपने अल्लाह से सुलह कर लें कि मेरे मौला! आज तक जितने गुनाह किये मैं सच्ची तौबा करता हूं, मैं आज के बाद नाफ़रमानी नहीं करूंगा, आप अपने अल्लाह से सुलह करेंगे, अल्लाह आप के लिये बंद दरवाज़ों को खोलते चले जाएंगे, आंखों से आप इसका मुशाहिदा कर सकते हैं।

यह गुनाह हमारे लिये दुनिया में जीना अज़ाब बना देते हैं, इसलिये इब्ने क़य्यिम रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह को जिस बंदे को जन्नत में भेजना होता है दुनिया में उसका नमूना दिखा देते हैं, वह इस तरह कि उसका दिल बड़ा पुरसुकून होता है, वह अपने अल्लाह से बड़ा ख़ुश होता है, बड़ा राज़ी होता है, जब भी पूछा क्या हाल है? वह कहेगा मैं अपने अल्लाह से बहुत राज़ी हूं, बहुत ख़ुश हूं। और जिसे अल्लाह को जहन्नम भेजना होता है, फ़रमाया कि दुनिया में अल्लाह तआला उसके दिल को इतना परेशान कर देते हैं कि वह बंदा कहता है कि पता नहीं मैं इस मुसीबत से कब छुटूंगा, दुनिया में अल्लाह का नमूना दिखा देते हैं कि देखो आज तुम इस तरह आग में जल रहे हो, कल तुम्हें जहन्नम की आग में इसी तरह जलना पड़ेगा। लिहाज़ा बजाए इसके कि हम अपने दिलों में ज़ुल्मत को लेकर अल्लाह से दूरी की ज़िंदगी गुज़ारें, हमें चाहिये कि हम नेकी तक़्वा के ज़रीआ अल्लाह कके क़ुर्ब की ज़िंदगी गुज़ारें।

गुनाह की वजह से ज़ालिम का मुसल्लत हो जाना

और आम तौर पर एक और भी इसकी तासीर है "مَنِ ارْتَكَبَ مَعْصِيَةً سَلَّطَ اللّٰهُ عَلَيْهِ ظَالِمًا" जो बंदा गुनाहों का इर्तिकाब करता है अल्लाह उसके ऊपर किसी ज़ालिम को मुसल्लत कर देते हैं। अपनी ज़िंदगियों को हम देखें कहीं पर पड़ोसी मुसल्लत हो जाता है, जो जीना तंग कर देता है। कहीं पे कारोबार में शरीक बंदा ऐसा मुसल्लत है कि जीना हराम हो जाता है, और कहीं पर हम ने देखा कि बीवी ही मुसल्लत हो जाती है, बिचारा ख़ाविंद परेशान कि ऐसी बीवी मिली, और कहीं बीवी पे ख़ाविंद मुसल्लत होता है कि नेक भी है, अच्छी भी है, मगर सौ फ़ीसद गुनाहों से नहीं बचती, नतीजा यह कि ख़ाविंद उसको Tough time (परेशान करना) देता है, उसका

जीना हराम कर देता है, कहीं न कहीं कोई न कोई ज़ालिम कोई हासिद खड़ा हो जाता है, इल्म की लाइन में है तो इल्म की लाइन के हासिद, दुन्या के काम में है तो Professional (दुन्यावी लाइन के) हासिद, कोई न कोई ऐसा बंदा अल्लाह खड़ा कर देते हैं कि बंदे! तो मेरी नाफ़रमानी करता है, मैं भी एक बंदे को खड़ा करता हूं जो तेरा जीना हराम कर देगा, इन हासिदों से जान नहीं छूटती। इसका फिर एक ही तरीक़ा होता है कि इंसान अपने अल्लाह के सामने Surrender कर दे (हथियार डाल दे) कि ऐ अल्लाह! आज के बाद मैं आप के हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करूंगा।

"قال حذيفة اليمان" हुज़ैफ़ा रज़ि० फ़रमाते हैं: "ما استخفّ قوم بحق اللّٰه سبحانه" कोई क़ौम अल्लाह के हक़ में कोताही नहीं करती "إلّا بعث اللّٰه عليهم" अल्लाह ऐसे बंदे मबऊस कर देता है "من يستخفّ بهم وبحقّهم" कि वह उनके और उनके हुक़ूक़ के अंदर कोताही करता है। फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० फ़रमाते थे कि जब भी मुझ से अल्लाह का हुक्म मानने में कोताही हुई मैंने देखा कि उस दिन या तो बीवी ने हुक्म माने में कोताही की, या औलाद ने हुक्म मानने में क़ोताही की, या मेरे मातहतों ने हुक्म मानने में कोताही की, या कम अज़ कम मेरे सवारी के जानवर ने मेरा हुक्म मानने में मेरी कोताही की, गोया अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नाफ़रमानी इंसान की ज़िंदगी में Reflect (वापस) होती है, जैसा हम करेंगे वैसा ही होगा, इसलिये कितने लोग आके कहते हैं कि हज़रत! औलाद बिगड़ गई, क्यों नहीं बिगड़ेगी? हम अल्लाह तआला की बात नहीं सुनते, औलाद हमारी नहीं सुनती, कहते हैं: अजी! बच्चे अफ़लातून बन गए, बच्चे अफ़लातून तो बने मगर हम क्या बने फिरते हैं, यह भी तो देखें, तो इंसान ज़िंदगी में जैसा तअल्लुक़ अल्लाह से जोड़ेगा मातहतों

के साथ अल्लाह वैसा तअल्लुक़ बना देंगे, अगर अल्लाह तआला से मुहब्बत का तअल्लुक़ और फ़रमांबरदारी का तअल्लुक़ जोड़ेगा तो अल्लाह तआला बीवी मुहब्बत करने वाली, बच्चे मुहब्बत करने वाले, रिशतादार मुहब्बत करने वाले अता कर देंगे, "ثُمَّ يُودِعُ لَهُ الْقُبُوْلُ فِى الْاَرْضِ" ऐसे बंदे के लिये ज़मीन के अंदर क़बूलियत रख दिया करते हैं।

कामियाबी का वाहिद रास्ताः गुनाहों से तौबा

अबुल हसन शाज़ली रह0 ने एक बात बताई फ़रमायाः "اِذَا ثَقُلَ الذِّكْرُ عَلٰى لِسَانِكَ" जब तेरी ज़बान पे ज़िक्र करना बोझ नज़र आए "وَكَثُرَ اللَّغْوُ فِى مَقَالِكَ" और तेरी बातों में लग़्व कलाम ज़्यादा हो जाए "وَانْبَسَطَتِ الْجَوَارِحُ فِى شَهَوَاتِكَ" और तेरे अअ्ज़ा और जवारेह शह्‌वात के अंदर डूब जाएं "وَانْسَدَّ بَابُ الْفِكْرَةِ فِى مَصَالِحِكَ" और तेरे अच्छे कामों में तेरे फ़िक्र के रास्ते बन्द हो जाएं "فَلَيْسَ لَكَ طَرِيْقٌ اِلَّا التَّوْبَةُ" अब तेरे लिये तौबा के सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं है। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपनी ज़िंदगी के गुनाहों से सच्ची तौबा करें।

आजकल की Problem (मुश्किल) यह है कि जितने भी हम दीन पे चलने वाले लोग हैं, अगर शरीअ़त में सौ गुनाह हैं तो किसी ने 90 छोड़ दिये, किसी ने 92, किसी ने 95, किसी ने 96, सौ फ़ीसद गुनाहों को छोड़ने वाले बहुत थोड़े हैं, जो दीन के शोबों में काम करने वाले, इल्म में, दावत में, ज़िक्र में, इन शोबों में लगे हुए लोग हैं, वह भी "اُدْخُلُوْا فِى السِّلْمِ كَآفَّةً" का मिस्दाक़ नहीं बनते, कहीं न कहीं कांटा बीच में रहता है, जिसकी वजह से रहमत के दरवाज़े खुलने में देर लगती है।

आप देखें Computer interface होता है तो उसमें 32

तारें होती हैं तो 32 तारों का Compatibles (सही तरीक़ा से काम करना) होना ज़रूरी है, अगर एक भी इनमें से काम न कर रही हो तो 31 के ठीक होने के बावजूद Communication (राबता) नहीं होती। हमारा मुआमला ऐसा ही है कि हमने इतना कुछ छोड़ दिया लेकिन किसी को बदनज़री का चस्का, किसी को ज़बान से ग़ीबत का चस्का, या किसी को माली बदएहतियाती का चस्का, एक दो या तीन गुनाह ही होते हैं जिन्होंने बंदों को अल्लाह से वासिल होने से रोका हुआ होता है

हसरत है उस मुसाफ़िरे मुज़्तर के हाल पर
जो थक के रह गया हो मंज़िल के सामने

मंज़िल भी सामने नज़र आ रही है, 100 में से 95/96 क़दम चल भी गए, एक दो क़दम बाक़ी हैं और इन गुनाहों को न छोड़ने की वजह से अल्लाह से दूर ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। लिहाज़ा आज की मजलिस में यह अह्द करना है कि अल्लाह! आज हम सौ फ़ीसद गुनाहों से तौबा करेंगे। आप को कोई बंदा आकर बताए कि यह 25 कैरट Gold (सोना) है, तो आप ख़ुशी से क़बूल करेंगे और अगर कह दे कि 18 कैरट Gold (सोना) है यअ़नी मिलावट वाला है तो इतनी तवज्जो ही नहीं धरेंगे, कोई कहे कि 5 कैरट है तो आप उठा के फैंक देंगे कि यह ले जाओ, क्योंकि जितने कैरट हिसाब से कम होता गया उसमें ख़ालिस कम है, मिलावट ज़्यादा, तो आप मिलावट वाला सोना पसंद ही नहीं करते, इसी तरह इंसान अगर नेकियां भी करता है तो वह नेकियां 24 कैरट की तरह ख़ालिस हैं, फिर अल्लाह तआला उस पर रेट कुछ और लगा देते हैं और अगर 22 कैरट और 18 कैरट गुनाहों की उसमें शामिल होती गईं तो फिर अल्लाह के यहां उनको वह रुतबा और मक़ाम नहीं होता।

मुत्तक़ी का मक़ाम ग़ैर मुत्तक़ी के मुक़ाबले में

अबू दर्दा रज़ि० फ़रमाया करते थे: "مِثْقَالُ ذَرَّةٍ مِنْ بِرٍّ مَعَ تَقْوٰى أَفْضَلُ وَأَعْظَمُ وَأَرْجَعُ مِنْ أَمْثَالِ الْجِبَالِ مِنْ عِبَادَةِ الْمُغْتَرِّيْنَ" कि धोका खाने वालों की पहाड़ों बराबर इबादत से उस बंदे की इबादत जो तक़्वा के साथ करता है एक ज़र्रह उसकी की हुई इबादत उसकी पहाड़ों बराबर इबादत से ज़्यादा बेहतर होती है। एक हदीसे पाक में है कि मुत्तक़ी आदमी की दो रक्अत ग़ैर मुत्तक़ी बंदे की हज़ार रक्अत से ज़्यादा अल्लाह के यहां महबूब होती है, दो रक्अत पे इतना सवाब मिलता है, लिहाज़ा हमें गुनाहों से सच्ची तौबा कर के अल्लाह के फ़रमांबरदार बंदों में शामिल होने की ज़रूरत है।

तक़्वा की वजह से हिक्मत का मिलना

मालिक बिन दीनार रह० फ़रमाते थे "اِتَّقِ اللّٰهَ فِي خَلَوَاتِكَ وَحَافِظْ عَلٰى اَوْقَاتِ صَلَوَاتِكَ وَغُضَّ طَرْفَكَ مِنْ لَحَظَاتِكَ، تَكُنْ عِنْدَ اللّٰهِ مَقْبُوْلًا فِي حَالَاتِكَ" बअ़ज़ आरिफ़ीन ने कहा: "اِذَا اجْتَمَعَتِ النُّفُوْسُ عَلٰى تَرْكِ الْمَعَاصِيْ" अगर नुफ़ूस मआ़सी को छोड़ने पर मुज्तमअ़ हो जाएं "جَالَتْ فِي الْمَلَكُوْتِ" तो उनको आलमे मलकूत में परवाज़ नसीब होगी "وَعَادَتْ بِطَرَائِفِ الْحِكْمَةِ" और वहां से उनको हिक्मत भरी बातें नसीब होंगी जो लेकर वह वापस होंगे। चुनांचे जितने मुत्तक़ी लोग होते हैं अल्लाह तआला उनको हिक्मत अता करता है "وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا"- आप अपने बुज़ुर्गों को देखें कि उनकी ज़िंदगियों में कितनी इल्मी मूशगाफ़ियां होती थीं, इल्मी निकात होते थे, मआरिफ़ होते थे, उन्होंने भी तो वही किताबें पढ़ी होती थीं जो किताबें आज तलबा पढ़ रहे हैं, हदीसे पाक की यही बुख़ारी शरीफ़ हज़रत नानूतवी रह० ने पढ़ी, हज़रत गंगोही रह० ने पढ़ी, हज़रत अक़्दस थानवी रह० ने

पढ़ी, हज़रत शैखुल हिंद रह0 ने पढ़ी, हज़रत मदनी रह0 ने पढ़ी, मगर इन्हीं किताबों को पढ़कर हमें अश्र अशीर भी वह कैफ़ियत हासिल नहीं होती, जो हमारे अकाबिर को अल्लाह ने अता फ़रमाई थी, इसकी वजह यही थी कि किताबों में फ़र्क़ नहीं है, तक़्वा में फ़र्क़ है, उनकी ज़िंदगी में तक़्वा था, वह गुनाहों से बचते थे, लिहाज़ा उनके दिल मुनव्वर हो गए थे, आज गुनाहों की वजह से हमारे ऊपर वह असरात मुरत्तिब नहीं हो पाते, चुनांचे इन्हीं किताबों के पढ़ने के बाद इल्मी इस्तिअ़दाद पैदा नहीं होती।

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 की मुबारक ज़िंदगी को देखें, उनकी बातें पढ़ के और सुन के इंसान हैरान हो जाता है। चुनांचे एक मर्तबा इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 बैठे हुए थे, एक बंदा आया और उसने आके कहा कि मेरी बीवी को हंडिया चाटने की आदत थी और यह मुझे बुरी लगती थी, तो मैंने उसको मना कर दिया, गुस्सा में कह दिया कि अगर तूने हंडिया चाटी तो तुझे तीन तलाक़, वह कुछ दिन तो रुकी रही, फिर एक दिन उसने हंडिया चाट ली तो अब मैंने जिससे भी पूछा उसने कहा कि तेरी बीवी को तलाक़ हो गई, मैं तो बड़ा परेशान हूं, मुझे आप बताएं कि तलाक़ हुई या नहीं? हज़रत ने फ़रमाया कि बीवी को बुलाओ मैं उससे कुछ पूछूंगा, उसने बीवी को बुलाया तो हज़रत ने उससे पुछा कि तूने हंडिया चाटी? कहा कि जी, पूछा कैसे चाटी थी? कहा कि उसमें सालन जो बचा हुआ था उसे इस तरह लिया और उसको मुंह में डाल दिया, हज़रत ने फ़रमायाः जाओ तुम्हारी बीवी को तलाक़ नहीं हुई, उसने हंडिया नहीं चाटी, उसने उगंली चाटी थी। अब यह नुक्ते उनको कैसे मिलते थे? इस वजह से कि उनके अंदर तक़्वा हुआ करता था।

एक मर्तबा उलमा में मस्ला चला कि जब बंदा चार रक्अत की

नियत बांध ले और दो रक्अत के बाद अत्तहिय्यात में अब्दुहू वरसूलुहू के बाद खड़ा होना अगर भूल जाए तो किसी ने कहा कि "اللّٰهم" पढ़ ले और फिर खड़ा हो जाए तो भी कोई हरज नहीं, اللّٰهم صل पढ़ ले तो भी कोई बात नहीं, اللّٰهم صل على पढ़ के खड़ा हो जाए फिर भी कोई हरज नहीं, इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 ने फ़त्वा दिया कि अगर उसने पढ़ लिया اللّٰهم صل على محمد، अब सज्दा सह्व ज़रूरी हो गया। अब यह फ़िक़्ह का मस्ला था और इमाम साहब ने फ़त्वा दे दिया, तो कहते हैं कि इमामे आज़म रह0 को ख़्वाब में नबी सल्ल0 का दीदार नसीब हुआ, अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने फ़रमाया नोमान! तुमने मेरा नाम पढ़ने वाले पर सज्दए सह्व का हुक्म लगाया है? तो फ़ौरन अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! नहीं बल्कि मैंने यह कहा है कि जो भूल कर ग़फ़लत से आपका नाम पढ़े उस बंदे को सज्दए सह्व करना ज़रूरी है, तो अल्लाह के नबी सल्ल0 बहुत खुश हुए कि तूने बहुत अच्छा फ़त्वा दिया, तो यह नुक्ते कैसे मिलते थे? यह अल्लाह की तरफ़ से उनके तक़्वा की वजह से मिलते थे।

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 बैठे हुए हैं, एक बड़े मियां आए और आकर पूछते हैं वाव ओ वावैन? इमाम साहब ने फ़रमाया: वावैन, जाते हुए कहने लगा: "لا و لا" बड़े बड़े उलमा बैठे हुए थे, किसी को कुछ समझ में नहीं आया कि बड़े मियां ने क्या इशारे किये, इमाम साहब ने जवाब क्या दिये, सारा दिन सोचते रहे, ज़ोर आज़माई करते रहे, शाम को कहने लगे कि हज़रत! आप ही बता दीजिये कि उस बूढ़े ने आप को क्या कहा? इमाम साहब ने फ़रमाया कि उसने मुझसे मस्ला पूछा कि अत्तहिय्यात एक वाव से पढ़नी चाहिये या दो वाव के साथ, हम हन्फ़ी लोग दो वाव से पढ़ते हैं

التحيات لله والصلوات والطيبات، उसने मुझसे पूछा कि एक से पढ़ूं या दो से? मैंने कहा दो वाव से पढ़ो। अच्छा यह तो बात समझ में आ गई, मगर वह जाते हुए لا.ولا क्या कह गया? फ़रमाया कि वह मुझे दुआ दे गया है, पूछा हज़रत! لا ولا क्या दुआ हुई? फ़रमाया कुर्आन मजीद की आयत की तरफ़ इशारा कर गया है कि अल्लाह! अबू हनीफ़ा के इल्म को ऐसा शिज्रए तय्यिबा बना दे कि "لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ" तो अल्लाह तआला इस तक़्वा की वजह से बंदे को ऐसी नुक्ता आफ़रीनी अता फ़रमा देते हैं, इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 के बारे में सैकड़ों मिसालें दी जा सकती हैं।

क़रीब के ज़माने हमारे शाह अब्दुल अज़ीज़ रह0 की ज़िंदगी को देखें, सुब्हानल्लाह हज़रत शाह साहब एक दफ़ा बैठे हुए थे, उनके पास एक फ़िरंगी आया, कहने लगा आप अपने लोगों को मदरसों में बस अरबी पढ़ाते हैं, और तंग ज़ह्न बना देते हैं और यह कुवें के मेंढक बन जाते हैं, बाहर की दुनिया का कुछ पता नहीं होता और हम तो अपने बच्चों को साइंस पढ़ाते हैं, जुग़राफ़िया पढ़ाते हैं, हमारे बच्चे बड़े Open mind (खुले ज़ह्न) होते हैं, बड़ी वसीअ़ Thinking (सोच) होती है, देखो यह मेरा बेटा है, मैं इसको साइंस पढ़ा रहा हूं, आप इससे बात करें, आपको पता चलेगा कि इसकी कितनी वसीअ़ सोच है, हज़रत ने उस बच्चे को बुला कर पूछा कि यह वज़ू करने का जो तालाब है बताओ कि इस तालाब में कितने प्याले पानी होंगे? अब तालाब में तो हज़ारों लीटर पानी होती है,—अब उसमें कितने प्याले पानी है?? यह कैसे मालूम होगा?—उसने कुछ देर सोचने के बाद कहा कि मुझे तो पता नहीं, तो हज़रत ने उसके हम उम्र एक तालिबे इल्म को बुला लिया वह मंतिक़ पढ़ने वाला था, उस तालिबे इल्म से कहा कि बताओ कि इस तालाब में

कितने प्याले पानी हैं? उसने कहा हज़रत! अगर इस तालाब के मुक़ाबले आधे साइज़ का प्याला हो, तो दो (2) प्याले पानी और अगर इस तालाब के बराबर साइज़ का प्याला हो तो एक (1) प्याला पानी--यह चीज़ें हिक्मत की बात कहलाती हैं, यह तक़्वा की वजह से इंसान को मिलती है।

गुंबदे ख़ज़्रा उलमाए देवबंद की अज़्मत की निशानी

एक अजीब व ग़रीब वाक़िआ सुनिये, हमारे एक तअल्लुक़ रखने वाले थे जिन्होंने दारुल उलूम देवबंद से दौरए हदीस किया था और उन्होंने ज़िंदगी के कोई तीस साल मुस्लिम शरीफ़ पढ़ाई थी, फ़रमाने लगे कि हज़रत! मैं आपको एक वाक़िआ सुनाऊं जो दारुल उलूम देवबंद में पेश आया, हमने कहा सुनाएं, कहने लगे कि एक मर्तबा जब सऊदी अरब के उलमा ने सऊदी अरब में जितने तुर्कों के ज़माने के बने हुए मक़बरे वग़ैरा थे सब हटा दीजिये, उन पर बुल्डोज़र चला दिये तो उन उलमा में बहस चली कि बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस है जिससे साबित होता है कि بناء على القبور की इजाज़त नहीं, यअ़नी क़ब्र बनाएं तो खुले आसमान के नीचे, उसके ऊपर क़ुबा बना देना, इमारत बना देना शर्अन इसकी इजाज़त नहीं है, तो जब उन्होंने जन्नतुल बक़ीअ़ में जो तुर्कों ने क़ुबे बना दिये थे सब हटा दिये, तो उन्होंने कहा कि गुंबदे ख़ज़्रा के बारे में क्या करें, तो जो हाकिम थे वह समझदार थे, उन्होंने कहा कि देखो यह ज़रा Touchy (हस्सास) मुआमला है, उम्मत इस मुआमला में बहुत हस्सास है, तुम पहले मुल्कों में जाओ और वहां के उलमा से बातचीत कर के उनको हमनवा बनाओ, अगर उलमा तुम्हारे साथ हो गए तो फिर हम यह बात सोचेंगे, लिहाज़ा उन्होंने एक वफ़्द दारुल उलूम देवबंद में भेजा, वह लोग आए, उन्होंने आके मुहतमिम साहब से बात की कि हम

इस हदीसे मुबारक के बारे में आप से बात करने आए हैं, अगर इस पर कोई एतिराज़ है तो हमें बता दें, अगर एतिराज़ भी नहीं है, हदीस मुत्तसिल है, सही है, तो फिर उस पर अमल करना चाहिये, तो जो मुहतमिम थे उन्होंने कहा कि आप तीन दिन हमारे पास क़्याम करें, इतने में हम अपने उलमा को इत्तिला दे देते हैं ताकि वह आ जाएं और हम उनसे मशवरा के बाद जवाब दे सकें, उन्होंने कहा कि ठीक है, वह दारुल उलूम के ही मेहमान ख़ाने में तीन दिन रहे, आख़िरी दिन जो रात थी वह दारुल उलूम देवबंद में अजीब थी, 500 के क़रीब बड़े बड़े अकाबिरीन मशाहीर उलमा दारुल उलूम में जमा हो गए और सब इस मस्ला के बारे में सोच रहे थे कि हमें सुब्ह जवाब क्या देना है, अब मस्ला बड़ा नाज़ुक था, वह कहते हैं कि रात के वक़्त कोई नफ़िलें पढ़ रहा था, कोई तिलावत कर रहा था, कोई आपस में तकरार कर रहे थे, कोई किताबें देख रहे थे, कोई दुआ मांग रहे थे कि अल्लाह! जो सही जवाब है वह समझा दीजिये, दिल में डाल दीजिये, अगले दिन अस्र के बाद 500 उलमा मस्जिद में इकट्ठे हुए, तो वफ़द के जो अरब आलिम थे वह खड़े हुए और उन्होंने खड़े होकर यह बयान किया कि बुख़ारी शरीफ़ की इस हदीसे पाक से पता चलता है कि बनाअ़ अ़लल क़ुबूर की इजाज़त नहीं, हमारी नज़र में कोई रावी ऐसा नहीं कि जो ज़ईफ़ हो, या जिस पर जिरह की गई हो, सनद भी मुत्तसिल है, तो मतन और सनद ठीक होने की वजह से उसका दर्जा बड़ा रफ़ीअ़ हो गया, अब इस हदीसे पाक के ऊपर अमल करना नस के ऊपर अमल करना है, जब उसने बयान कर लिया तो इसके बाद थोड़ी देर पूरे मज्मा पे ख़ामोशी रही, कहीं कहीं सिस्कियों की आवाज़ें आ रही थीं, कुछ उलमा थे जिनकी आंखों में आंसू थे, अब वह अल्लाह के सामने गिड़गिड़ा रहे थे कि

अल्लाह! इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी है, ऐसे मौक़ा पे सही जवाब दिल में डाल दीजिये, मगर सब हैरान थे कि जवाब क्या दिया जाएगा, हज़रत अक़्दस थानवी रह० भी थे, वह खड़े हुए और खड़े होकर फ़रमायाः अलहम्दु लिल्लाह! अल्लाह ने इस मसला में मेरा शर्हे सदर फ़रमा दिया है, तो अरब उलमा ने पूछा कि क्या शर्हे सद्र हुआ? तो हज़रत ने फ़रमाया कि शर्हे सदर यह है कि जो हदीसे मुबारक आप लोगों ने बताई वह सनद के एतिबार से भी ठीक, मतन के हिसाब से भी ठीक, वाक़ई इसका मज़मून सौ फ़ीसद ठीक है, तो वह कहने लगा कि इसका मतलब यह कि फिर हम गुंबदे ख़ज़्रा को गिरा सकते हैं? हज़रत ने फ़रमाया कि नहीं, यही तो अल्लाह ने मेरा शर्हे सदर कर दिया, हदीस भी ठीक है, मगर आप लोग गुंबदे ख़ज़्रा को भी नहीं गिरा सकते, उन्होंने कहा क्यों? फ़रमायाः इसलिये कि हदीसे पाक में بناء على القبور से मना किया गया है, गुंबदे ख़ज़्रा का मुआमला अलग है, यह हुज्रए आइशा पहले से था, क़ब्र मुबारक बाद में बनाई गई, इसलिये यह بناء على القبور में दाख़िल नहीं, कोई गुंबदे ख़ज़्रा को नहीं हटा सकता, आज भी गुंबदे ख़ज़्रा अपनी जगह पर मौजूद है, उलमाए देवबंद की इल्मी अज़्मत की दलील बना हुआ है। हमारे अकाबिर को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने यह इल्म की गहराई उनके तक़्वा की वजह से दी थी, हम भी अगर गुनाहों को छोड़ें और नेकूकारी की ज़िंदगी इख़्तियार करें तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें भी इल्म में पुख़्तगी और उमक़ अता फ़रमा सकते हैं।

अबू तुराब रह० फ़रमाते हैं "إِذَا أَجْمَعَ الرَّجُلُ عَلَى تَرْكِ الذُّنُوبِ" कि अगर इंसान इस बात पे मुत्तफ़िक़ हो जाए कि मुझको गुनाह नहीं करना "أَتَتْهُ الْأَوْرَادُ مِنَ اللّٰهِ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ" तो गुनाह छोड़ने वाले बंदे को हर तरफ़ से अल्लाह तआला इल्म के मआरिफ़

अता फ़रमा देते हैं। बअ़ज़ आरिफ़ीन ने कहाः "اِذَا تَـرَكَ الْـعَبْـدُ لِلّٰـه مِنْهَا طَاعَةً" जब इंसान अल्लाह की रज़ा के लिये मअ़सियत को छोड़ देता है "عَـوَّضَـهُ اللّٰـهُ مِـنْهَا طَاعَةً" अल्लाह इसके बदले ताअत की तौफ़ीक़ दे देता है "ثُـمَّ يُـصِيبُـهُ عَلٰى تِلْكَ الطَّاعَةِ اُخْرٰى" एक नेकी करने पर अल्लाह दूसरी नेकी की तौफ़ीक़ देते हैं, इसको कहते हैंः "ذٰلِكَ فَـضْـلُ اللّٰهِ يُوْتِيْهِ مَنْ يَّشَاءُ"- यहया बिन मआज़ रह0 फ़रमाते थे "عَـلٰى قَـدْرِ الْـخُـرُوْجِ مِـنَ الذُّنُوْبِ تَكُوْنُ الْاِفَاقَةُ لِلْقُلُوْبِ" कि जितना गुनाहों से ख़ुरूज होता जाएगा उतना ही दिल के अमराज़ में इंसान को इफ़ाक़ा होता चला जाएगा। हदीसे पाक में अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमायाः "يـاد اؤُدانـقـطِـع لـى اَنـقُص لك رؤسَ الموك والبس وجهك المهابة" जो बंदा अल्लाह की फ़रमांबरदारी करता है अल्लाह तआला उसके चेहरे पे ऐसा नूर दे देता है कि लोगों के दिल पे उसका रोअ़ब हो जाता है।

हज़रत अक़्दस थानवी रह0 से पूछा गया कि हज़रत! तसव्वुफ़ का मक़्सूद क्या है? तो फ़रमाया कि इंसान के रग रग और रेशे रेशे से गुनाहों का खोट निकल जाए, यह तसव्वुफ़ का मक़्सूद है, तो ज़िक्र व सुलूक की बरकत से इंसान के अंदर गुनाहों से नफ़रत आ जाती है और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत बढ़ जाती है और इंसान कामिल अल्लाह का फ़रमांबरदार और बंदा बन जाता है। इसी लिये हमारे सिलसिले के एक बुज़ुर्ग थे ख़्वाजा उबैदुल्लाह अहरार रह0, एक अजीब बात उन्होंने की, सोने की सियाही से लिखने के क़ाबिल है, फ़रमाते थे, जिस शख़्स ने जो दिन गुनाहों के बग़ैर गुज़ारा वह ऐसा ही है जैसा कि उसने वह दिन नबी सल्ल0 की सोहबत में गुज़ारा, तो हम आज की इस मजलिस में यह अह्द करें कि हम भी अब गुनाहों से बच कर सच्ची तौबा कर के नबी सल्ल0 की सोहबत

में दिन गुज़ारेंगे, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

यह बात नहीं है कि हमारे दुनिया के काम बड़े हैं, हम गुनाहों से कैसे बचें? ऐसे बंदे दुनिया में गुज़रे हैं कि जो माल व दौलत के भी बड़े ख़ज़ाने वाले थे मगर अल्लाह की यहां भी बड़े दर्जे वाले थे, एक वाक़िआ सुन लीजिये, ख़्वाजा कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रह0 फ़ौत हुए तो आपका जनाज़ा एक बड़े मैदान में लाया गया, जहां तक नज़र जाती थी लो थे, जनाज़ा रखा गया तो एक एक बंदे ने ऐलान क्या कि हज़रत ने कुछ वसियत फ़रमाई थी मैं वह वसियत पढ़ के सुनाता हूं, हज़रत ने वसियत फ़रमाई थी कि मेरा जनाज़ा वह शख़्स पढ़ाए जिस की ज़िंदगी में तकबीर ऊला कभी क़ज़ा न हुई हो, दूसरी शर्त यह कि उसकी ज़िंदगी में तहज्जुद की नमाज़ भी कभी क़ज़ा न हुई हो, और तीसरी शर्त यह कि इतना इबादत गुज़ार हो कि अस्र की सुन्नतें जो ग़ैर मुअक्कदा हैं वह भी कभी न छोड़ी हो, और चौथी शर्त कि उसने कभी ग़ैर महरम को बुरी नज़र से न देखा हो, यह चार ख़ूबियां जिसमें हों वह मेरा जनाज़ा पढ़ाए। जब ऐलान किया गया तो मज्मा को तो सांप सूंघ गया, कौन था जो आगे बढ़ता और कहता कि मेरे अंदर यह चारों ख़ूबियां हैं, लोग परेशान थे कि हज़रत का जनाज़ा कौन पढ़ाएगा, कुछ देर के बाद एक आदमी मज्मा से उठा, रो रहा था, आगे बढ़ा, हज़रत के जनाज़े के क़रीब पहुंचा, कफ़न का कपड़ा हटाया और हज़रत से कहा कि हज़रत आप खुद तो फ़ौत हो गए, मुझे आपने रुसवा कर दिया, मेरा राज़ आपने खोल दिया, फिर उसने मज्मा के सामने अल्लाह को हाज़िर नाज़िर जान कर क़सम खाई कि मेरे अंदर यह चारों ख़ूबियां मौजूद हैं, उस शख़्स ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, लोगों ने देखा कि यह वक़्त बादशाह अलतमश था।

अगर वक़्त का बादशाह इतना मुत्तक़ी हो सकता है कि उसकी तहज्जुद क़ज़ा न हुई, तक्बीरे ऊला क़ज़ा न हुई, अस्र की सुन्नतें क़ज़ा न हुईं, ग़ैर महरम पर कभी ज़िंदगी में बुरी नज़र न पड़ी, तो फिर हम क्या क़्यामत के दिन बहाने करेंगे कि अल्लाह हम शरीअ़त की इत्तिबा क्यों न कर सके? आज वक़्त है कि नेकी तक़्वा की ज़िंदगी इख़्तियार कर लें, गुनाहों का बख़्शवाना आज बड़ा आसान है, आंख से एक आंसे गिरेगा पूरे के पूरे गुनाहों को धोके चला जाएगा, इसलिये हमें चाहिये कि आज हम अपने दिलों में यह अहद करें कि अल्लाह! आज के बाद हम नेकूकारी और तक़्वा की ज़िंदगी गुज़ारेंगे और गुनाहों से हम जान छुड़ाएंगे, वर्ना सच्ची बात तो यह है कि जो ज़िंदगी हम गुज़ार चुके हैं अगर उसी को ले के अल्लाह के सामने चले गए और क़्यामत के दिन अल्लाह तआला ने हमें Choice (इख़्तियार) दे दिया कि मेरे बंदे या तो ख़ुद ही जहन्नम चले जाओ, या हम तुम्हारी ज़िंदगी की वीडियो तुम्हारे बाप को दिखाते हैं, तुम्हारे उस्ताज़ को दिखाते हैं। पीर को कहें कि तुम्हारी ज़िंदगी की वीडियों तुम्हारे मुरीदों को दिखाते हैं, बीवी को कहें तुम्हारी वीडियों तुम्हारे ख़ाविंद को दिखाते हैं, तो मुझे तो लगता है कि हम सब यही कहेंगे अल्लाह! हमारी वीडियों किसी को न दिखाना, हम ख़ुद ही जहन्नम चले जाते हैं, अगर ज़िंदगी ऐसी गुज़ार चुके हैं तो आज वक़्त है कि हम सच्ची तौबा कर के इस वीडियो को ख़त्म करके एक नई नेकूकारी की ज़िंदगी गुज़ारने का दिल में इरादा कर लें। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त गुनाहों को मुआफ़ कर के ख़ुश होते हैं, अल्लाह तआला हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दे, अल्लामा इक़्बाल ने क्या ख़ूबसूरत शेअ़र कहा:

तू ग़नी अज़हर दो आलम मन फ़क़ीर   रोज़े महशर ग़दर हाए मन पज़ीर

अल्लाह! तू दो आलम से ग़नी है मैं फ़क़ीर हूं, अल्लाह! क़्यामत के दिन मेरे अज़्रों को क़बूल कर लेना

गर तूमी बीनी हसाबम नागुज़ीर अज़ निगाह मुस्तफ़ा पन्हां बगीर

अल्लाह! अगर मेरा हिसाब लेना ज़रूरी हो, तो मेरा हिसाब मुस्तफ़ा करीम सल्ल० की नज़रों से ओझल ले लेना, मुझे उनके सामने शर्मिंदगी होगी, वह क्या फ़रमाएंगे कि यह तालिबे इल्म था, यह मेरी हदीस पढ़ने वाला था, यह मदरसा में अल्लाह के नाम की रोटियां खाने वाला था, यह दीन की निस्बत रखने वाला था और इसकी निजी ज़िंदगी ऐसी थी, क़्यामत के दिन सबके सामने हमारी रुसवाई होगी तो फिर कितना बुरा होगा, आज वक़्त है कि सच्ची तौबा के ज़रीआ अपने गुनाहों को मुआफ़ करवा लें, अल्लाह तआला हमें नेकूकारी और तक़्वा की ज़िंदगी नसीब फ़रमाए।

وآخرُ دعْوانا أنِ الحمد للّٰهِ ربِّ العالمين

अगले सफ़्हा से जो ख़िताब ज़ेरे नज़र होगा, वह ख़िताब बंगलौर के पेल्स ग्राउंड, 20 अप्रेल 2011 ई० बरोज़ बुध बअ़द नमाज़े मग़रिब हुआ था। मुहताते तुख़्मीना के मुताबिक़ सामईन की तादाद तक़रीबन एक लाख बताई गई है।

दीन ख़ैर ख़्वाही का नाम है

الحمد للّٰه وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

اعوذ باللّٰه من الشيطان الرجيم، بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم

وَاَمَّا مَا يَنۡفَعُ النَّاسَ فَيَمۡكُثُ فِى الۡاَرۡضِ

سبحان ربك رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد للّٰه رب العلمين

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم

क्या हम मुसलमान हैं?

अल्लाह तआला का इर्शाद है: "وَاَمَّا مَا يَنۡفَعُ النَّاسَ فَيَمۡكُثُ فِى الۡاَرۡضِ" और जो इंसानों की नफ़ा रसानी का काम करता है अल्लाह तआला उसको ज़मीन में जमा देते हैं। दीने इस्लाम दीने फ़ित्रत है, इसने इंसान को बेहतरीन अख़्लाक़ अपनाने की तालीम दी, चुनांचे नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया: "بُعِثْتُ لِأُتَمِّمَ مَكَارِمَ الأخلاق" मैं मकारमें अख़्लाक़ की तालीम देने के लिये मबऊस हुआ हूं और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने आपको अख़्लाक़े अज़ीमा से नवाज़ा था, इर्शाद फ़रमाया: "وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيۡمٍ" ऐ मेरे प्यारे हबीब! आप अख़्लाक़ के आला मर्तबे पर फ़ाइज़ हैं। चुनांचे नबी सल्ल0 ने अपने सहाबा रज़ि0 को ख़ुश अख़्लाक़ी की तालीम दी। जिस तरह दरख़्त अपने फल से पहचाना जाता है, इंसान अपने अख़्लाक़ से पहचाना जाता है, जो सही मअ़नों में इंसान हो, मुसलमान हो, वह हमेशा ख़ुश अख़्लाक़ इंसान होता है। इसलिये हदीसे पाक में आया नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि ईमान लाने

के बाद सबसे बेहतरीन चीज़ ख़ुश अख़्लाक़ी होती है, इससे बड़ी नेअ़मत किसी और को नहीं मिलती कि ईमान लाने के बाद इंसान ख़ुश अख़्लाक़ इंसान बन जाए। आज ज़बान से तो हम अपने आपको मुसलमान कहते हैं लेकिन हक़ीक़त में कितने मुसलमान हैं, हम इसका अंदाज़ा ख़ुद लगा सकते हैं--

चूं मैगोयम मुस्लिमानम बलरज़्म कि दानम मुश्किलाते ला इला रा

जब मैं कहता हूं कि मैं मुसलमान हूं तो मैं लरज़ जाता हूं, इसलिये कि मैं ला इलाहा इल्लल्लाह की मुश्किलात से वाक़िफ़ हूं। एक और शाइर ने कहा कि

यह शहादत गह उल्फ़त में क़दम रखना है लोग आसान समझते हैं मुसलमान होना

आज हम अपने आप को कहते हैं कि हम मुसलमान हैं, ज़रा बैठ के अंदाज़ा तो लगाएं कि क्या हमारी आंखें मुसलमान हैं? अगर मुसलमान हैं तो यह ग़ैर महरम की तरफ़ नहीं उठेंगी, क्या हमारी ज़बान मुसलमान है, अगर यह ज़बान मुसलमान है तो यह झूट नहीं बोलेगी, वादा ख़िलाफ़ी नहीं करेगी, अगर हमारा दिल मुसलमान है तो यह दिल गुनाहों के मंसूबे नहीं बांधेगा, अगर हमारे हाथ पांव मुसलमान हैं तो वह फिर यह किसी गुनाह की तरफ़ चल के नहीं जाएंगे, किसी की इज़्ज़त की तरफ़ हाथ नहीं उठेंगे, अगर हम समझते हैं कि हमारे अअ़ज़ा में से कोई अजू भी सही तरह मुसलमान नहीं तो फिर सोचना चाहिये कि मुसलमानी किस चीज़ का नाम है, हम अपने आप को मुसलमान कहते हैं तो वह क्या चीज़ है--

ख़िर्द ने कह भी दिया ला इलाहा तो क्या हासिल
दिल व निगाह मुसलमान नहीं तो कुछ भी नहीं

बल्कि कहने वाले ने कहा-

तू अरब है या अजम है तेरा ला इला इल्ल:

लुग़्ते ग़रीब जब तक तेरा दिल न दे गवाही

इसकी बुन्यादी वजह यह है कि आज हम नाम के मुसलमान तो यक़ीनन हैं, मगर मुसलमानियत हमारे अंदर से निकलती जा रही है।

एक होता है गन्ना और एक होता है सरकंडा, काना, बांस समझ लीजिये, अब दोनों को ज़ाहिर में अगर देखें तो शक्ल एक जैसी है, गन्ना भी इसी तरह का और बांस का पतला पौदा भी इसी तरह है, ज़ाहिर एक है, मगर बातिन में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है, एक रस से ख़ाली दूसरा रस से भरा हुआ। आज हमारी मुसलमानी और हमारे अस्लाफ़ की मुसलमानी में यही फ़र्क़ है, हम देखने में मुसलमान हैं, मुसलमानों की फ़ेहरिस्त में हमारा नाम है, वह इसलिये कि अल्लाह ने हमें कलिमा की सआदत अता फ़रमाई, अलहम्दु लिल्लाह, लेकिन अभी हमें अपने ऊपर बहुत मेहनत करने की ज़रूरत है, ताकि हम सही मअ़नों में मुसलमान कहला सकें।

मुंह देख लिया आईने में, पर दाग़ न देखे सीने में
जी ऐसा लगाया जीने में, मरने को मुसलमान भूल गए

तक्बीर तो अब भी होती है मस्जिद की फ़ज़ा में ऐ अनवर
जिस ज़र्ब से दिल हिल जाते थे वह ज़र्ब लगाना भूल गए

हमारे अकाबिर रात के आख़िरी पहर में उठते थे, अल्लाह को मनाते थे, ला इलाहा इल्लल्लाह की ज़र्बें लगाते थे, उनके सीनों में दिल कांपते थे, आज हमारे लिये रात के आख़िरी पहर की बेदारी मुश्किल बन गई, फ़ज्र में भी मुश्किल से नमाज़ में आके मिलते हैं

किस क़दर तुझ पे गिरां सुब्ह की बेदारी है
हम से कब प्यार है हां नींद तुम्हें प्यारी है

हम अपने आमाल को देखें तो अभी बहुत ज़्यादा हमें मेहनत करने

की ज़रूरत है, एक वक़्त था कि जब मोमिन का सीना अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मुहब्बत का ख़ज़ीना होता था, उसकी ज़बान से अल्लाह का लफ़्ज़ निकलता था लोगों के दिलों पे तासीर होती थी।

तेरी निगाह से दिल सीनों में कांपते थे
खोया गया है तेरा जज़्बे क़लंदराना

आज वह जज़्ब हमारे अंदर बाक़ी नहीं, वह मुहब्बत का जुनून हमारे अंदर बाक़ी नहीं।

मुहब्बत का जुनूं बाक़ी नहीं है वह दिल वह आरज़ू बाक़ी नहीं है
नमाज़ व रोज़ा व क़ुर्बानी व हज यह सब बाक़ी है तू बाक़ी नहीं है

इसी लिये हमारे अस्लाफ़ नमाज़ में खड़े होते थे तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से उनका एक तार जुड़ा होता था, आज हम नमाज में खड़े होते हैं दिल दिमाग़ गली कूचा बाज़ार में फंसे हुए होते हैं--

सुनी न मिस्र व फ़लसतीं में वह अज़ां मैंने
दिया था जिसने पहाड़ों को कार अशए सीमाब

सीमाब कहते हैं पारे को यअ़नी Mercury, इसकी यह सिफ़त है कि यह हर वक़्त थर्रा रहता है, थरकता रहता है, तो वह फ़रमाते हैं कि मिस्र व फ़लसतीं में भी वह अज़ान मैंने न सुनी कि जिस अज़ान को सुनकर पहाड़ भी पारे की तरह कांपा करते थे

वह सज्दए रूह ज़मीन जिससे कांप जाती थी
उसी को आज तरसते हैं मिंबर व मेहराब

मिंबर व मेहराब तरसते हैं कि कहां गए वह लोग जो सज्दा करते थे तो ज़मीन कांपती थी, आज हमारी नमाज़ें ऐसी हैं कि ज़बान पे फ़ातिहा चल रही होती है और दिल में ख़्याल किसी ग़ैर का चल रहा होता है, बेज़ौक़ सज्दे हैं, बेहुज़ूर नमाज़ें हैं, यह हम आज अल्लाह के हुज़ूर तोहफ़ा भेज रहे होते हैं, आप सोचिये तो सही, हमें कितनी

मेहनत की ज़रूरत है।

बा ज़मीं चूं सज्दा कर दम ज़ज़ में निदा बरआमद
कि मरा ख़राब करदी तो बसजदए रियाई

जब मैंने ज़मीन पे सज्दा किया तो ज़मीन से यह आवाज़ आईः ओ रिया के सज्दा करने वाले तूने मुझे भी ख़राब कर डाला--

मैं जो सर बसज्दा हुआ कभी तो ज़मीं से आने लगी सदा
तेरा दिल तो है ज़िम आशना तुझे क्या मिलेगा नमाज़ में

नमाज़ में तू अगर दिल ज़िम आशना हुआ तो नमाज़ की हुज़ूरी कहां नसीब होगी। इसलिये आज अपने आप पर मेहनत करने की ज़रूरत है।

इस्लाम में ख़ैर ख़्वाही

नबी सल्ल0 ने दीन को Define किया (पहचान बताई), इर्शाद फ़रमायाः "اَلدِّيْنُ النَّصِيْحَةُ" दीन सरासर ख़ैर ख़्वाही है, तलबा जानते हैं कि जब मुबतदा और ख़बर दोनों मअ़रिफ़ा लाए जाएं तो उनमें हस्र होता है, तो मअ़नी यह बनेगा कि दीन ही ख़ैर ख़्वाही है, या यूं कहेंगे कि ख़ैर ख़्वाही ही दीन है, इन दोनों में चोली दामन का साथ होता है, यह आपस में लाज़िम व मलज़ूम बन जाते हैं, मालूम यह हुआ कि जहां दीन होगा वहीं ख़ैर ख़्वाही होगी और जहां आप को ख़ैर ख़्वाही नज़र आए वहीं आपको दीन नज़र आएगा, दीनदार इंसान कभी बदख़्वाह नहीं बन सकता, बदख़्वाह इंसान दीनदार नहीं हो सकता और आज देखिये कि हम लोगों के दिलों में अपने क़रीब रहने वालों की बदख़्वाही होती है, नियत का ठीक करना इस रास्ते का पहला क़दम है, जब तक नियत हमारी ठीक नहीं होगी तब तक अल्लाह के रास्ते में हमें आगे बढ़ना नसीब नहीं होगा।

हमारे इलाक़े में एक बुज़ुर्ग हैं शैख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी रह0 के

ख़लीफ़ा, उन्होंने अपने इलाक़ाई ज़बान में एक शेअ़र कहा, वह ज़बान मुम्किन है आप न समझें मगर उसका तर्जुमा आप समझेंगे, फ़रमाते हैं:

अगर नहाने धोने से रब मिलता तो फिर मछलियों को रब मिल जाता, वह तो हर वक़्त ही नहाती रहती हैं, अगर नहाने से रब मिलता तो कछूए और मछली को रब मिल जाता, अगर ज़िक्र करने से रब मिलता तो एक काली चिड़िया होती है वह आप तौर पे रात को सारी रात आवाज़ निकालती रहती है, तो उस चिड़िया को रब मिल जाता जो सारी रात आवाज़ निकालती है, अल्लाह का ज़िक्र करती है, सर मूंडाने से अगर रब मिलता तो भेड़ की एक ऐसी नस्ल है कि सर प्रे बाल नहीं होते, बाक़ी पूरे जिस्म पे होते हैं, तो सर मूंडाने से रब मिलता तो उसको मिल जाता, अगर पाकदामन रहने से ख़ुदा मिलता तो जो ख़स्सी बैल होते हैं उनको रब मिल जाता, यह तमहीद बांधते हैं आख़िर में फ़रमाते हैं: अगर अल्लाह मिलता है तो अल्लाह अच्छी नियत वालों को मिला करता है, जब तक बंदे की नियत अच्छी न हो उसको ख़ुदा नहीं मिलता, बदनियत इंसान को रब नहीं मिलता।

और आज देखें कि अपनों के बारे में नियत बद होती है, किसी की इज़्ज़त पे नज़र है, किसी के माल पे नज़र है, किसी के उहदे की वजह से उसकी टांगें खेंच रहे हैं, यह मुसलमानों के काम थोड़ी हैं, मुसलमान कभी किसी का बदख़्वाह नहीं हो सकता, अगर कोई बदख़्वाह है तो उसके अंदर इतनी मुसलमानी नहीं है। चुनांचे नबी सल्ल0 ने सहाबए किराम रज़ि0 को ख़ैर ख़्वाही करने का हुक्म दिया,

बल्कि बअ़ज़ सहाबा रज़ि0 से इस पर बैअ़त ली कि आप दूसरों की ख़ैर ख़्वाही करेंगे।

एक च्यूंटी की ख़ैर ख़्वाही

ज़रा तवज्जो फ़रमाइयेगा कि ख़ैर ख़्वाही अल्लाह तआला को कितनी अच्छी लगती है, कुर्आन मजीद में एक जगह तज़किरा है कि सुलैमान अलै0 अपने लशकर के साथ जा रहे थे, रास्ते में च्यूंटियां चल रही थीं तो एक च्यूंटी ने अंदाज़ा लगा लिया कि सुलैमान अलै0 का लशकर आ रहा है, उसने आवाज़ दीः "يَا أَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوا مَسَاكِنَكُمْ" ऐ च्यूंटियो! अपने बिलों में चली जाओ, सुलैमान अलै0 का लशकर तुम्हें अपने पांव से कहीं मसल न दे। उस च्यूंटी की यह ख़ैर ख़्वाही अल्लाह तआला को इतनी पसंद आई कि कुर्आन में इस वाक़िआ का तज़किरा किया और एक सूरह का नाम "النَّمل" यअ़नी च्यूंटी ही रखा। जो परवरदिगार च्यूंटी की ख़ैर ख़्वाही को इतना पसंद करता है, वह किसी इंसान की ख़ैरख़्वाही को कितना पसंद फ़रमाएगा?

सहाबए किराम रज़ि0 में ख़ैरख़्वाही का मिज़ाज

चुनांचे सहबा रज़ि0 एक दूसरे के ख़ैरख़्वाह थे, सय्यदना उस्मान ग़नी रज़ि0 मदीना तय्यबा के ताजिरों में से थे, एक मर्तबा उन्होंने अपना तिजारती क़ाफ़िला मंगवाया, शाम से कोई तक़रीबन सौ ऊंट के बराबर सामान था, और वह ऐसे वक़्त में माल लेकर पहुंचा जब कि मदीना तय्यबा और उसके क़रीब की बस्तियों में उस जिंस की बहुत ज़्यादा Shortage (कमी, फ़ुक़दान) थी, जैसे ही क़ाफ़िला पहुंचा तो इर्दगिर्द के जो यहूदी या मुसलमान ताजिर थे वह सब आ गए और उन्होंने आकर कहा कि हम आप को ज़्यादा Price (क़ीमत) दे कर यह सामान ख़रीद लेते हैं, आप हमें दे दें, फिर हम

आगे उसको बेचते रहेंगे, आपने पूछा कि तुम मुझे कितना मुनाफ़ा दोगे, वह कहने लगे कि हम आप को 100% Profit (मुनाफ़ा) देंगे, आपने 100 का ख़रीदा तो 200 की हम ख़रीद लेते हैं, चूंकि उनको पता था कि आगे यह तीन/चार गुना Price पे माल बिक जाएगा तो आपने फ़रमाया कि नहीं मुझे ज़्यादा Profit (मुनाफ़ा) चाहिये, लोग सोच समझ के बात करते रहे, किसी ने कहा कि मैं Double profit (दो गुना मुनाफ़ा) दे देता हूं, आपने फ़रमाया कि नहीं, मुझे और ज़्यादा चाहिये, किसी ने कहा कि मैं तीन गुना दे देता हूं, उन्होंने कहा कि नहीं, इस पर पहुंच कर वह ताजिर हैरान हो के मुंह देखने लगे कि आप चाहते क्या हैं, हम आप को तीन गुना ज़्यादा मुनाफ़ा देने का Offer (पेशकश) कर रहे हैं और आप फिर भी माल बेचना नहीं चाहते, तो उस्मान ग़नी रज़ि० ने फ़रमायाः इसकी वजह यह है कि मेरे पास एक Customer (गाहक) है जो मुझ से यह माल सात गुना ज़्यादा क़ीमत पे ख़रीदना चाहता है, तो वह लोग हैरान हो गए कि सात गुना क़ीमत पर? उन्होंने फ़रमायाः हां, पूछने लगे वह कौन है? कहने लगेः वह मेरा परवरदिगार है, अगर मैं अल्लाह के नाम पर अल्लाह के बंदों में यह चीज़ तक़सीम करूंगा तो अल्लाह तआला मुझे हर दाने के बदले सात सौ गुना देंगे "كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِىْ كُلِّ سُنْبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ط" चुनांचे उस्मान ग़नी रज़ि० ने लोगों की ज़रूरत को देखते हुए इतने मुनाफ़ा को जो लोग दे रहे थे, ठोकर लगा दी और अल्लाह के नाम पर अपना सब माल ग़रीबों के अंदर तक़सीम कर दिया, फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से सुना है कि जो दूसरों की ख़ैरख़्वाही करेगा वह इंसान सही मोमिन होगा, लिहाज़ा मुझे इस वक़्त गुरबा की ख़ैरख़्वाही करनी है और अपना सारा माल अल्लाह के रास्ते में दे देना है।

एक सहाबी रज़ि0 थे उनका नाम था जरीर बिन अब्दुल्लाह अलबुख़्ली, जिस मजलिस में बैठते नसीहत की बात करते और सब को कहते कि मैंने नबी सल्ल0 से बैअ़त की थी कि में सबकी ख़ैरख़्वाही करूंगा, उनका अपना वाक़िआ ज़रा सुनिये! आप को लगेगा शायद कोई दीवाना आदमी है, मगर दीवानों की बात ज़रा सुनिये, उनको घोड़ा ख़रीदना था, एक आदमी के पास तशरीफ़ ले गए, उसने पूछा घोड़ा ख़रीदना चाहते हो, उन्होंने कहा जी, पूछा कितनी Price (क़ीमत) है? उसने कहा कि मैं तीन सौ दीनार में यह घोड़ा दे दूंगा, आपने घोड़े को देखा फ़रमाया कि नहीं, तुझे अंदाज़ा नहीं तेरा घोड़ा ज़्यादा क़ीमती है, अब गाहक ख़ुद मालिक से कह रहा है कि तेरा घोड़ा ज़्यादा क़ीमती है, उसने कहा अच्छा आप चार सौ दे दें, फिर घोड़े को देखा और फ़रमाया नहीं, यह इससे भी ज़्यादा क़ीमती घोड़ा है, तुझे अंदाज़ा नहीं है, वह हैरान हुआ, उसने कहा अच्छा फिर पांच सौ दीनार दे दें, आप ने फिर घोड़े को देखा, फ़रमाने लगे कि नहीं मेरी Assessment (तशख़ीस) यह है कि यह इससे भी ज़्यादा क़ीमती है, उसने कहा जनाब! छः सौ दे दें, फ़रमाने लगे भाई मैं सच बात कहूं कि मेरी Assessment इससे भी ज़्यादा है, उसने कहा सात सौ दीनार दे दें, आख़िर में फ़रमाया कि माल तो तेरा है, मगर तुझे अपने माल की Value (हैसियत) का सही अंदाज़ा नहीं है, मैं तेरा नुक़्सान नहीं करना चाहता, मैं तुझे वह पैसा दूंगा जो मेरा दिल गवाही देगा कि उसके होने चाहियें, चुनांचे तीन सौ दीना मांगने वाले बंदे को आठ सौ दीनार देकर उन्होंने घोड़ा ख़रीदा। कोई सोच सकता है कि एक दूसरे की इतनी भी ख़ैरख़्वाही होती है। आज के दौर में Consumer (गाहक) चाहता है कि बग़ैर पैसों के चीज़ ले जाऊं और जो मालिक होता है

वह चाहता है कि चीज़ दिये बग़ैर उसकी जेब का पैसा निकाल लूं, यह आजकल की तिजारत है, मगर नबी सल्ल0 ने ख़ैरख़्वाही का जज़्बा दिया और इस ख़ैरख़्वाही ने ऐसा मुआशरा जनम दिया कि एक दूसरे को अपने ऊपर तरजीह देने वाले बन गए।

मशहूर वाक़िआ है कि जंगे यरमूक में एक साहब बहुत ज़्यादा प्यासे हैं और आख़िरी लम्हे में हैं और वह कहते हैं: اَلْعَطَشُ، यअ़नी प्यास, सख़्त गर्मी थी, उनके चचाज़ाद भाई के पास मशक थी, वह मश्क लेके पहुंचे कि उनको पानी पिलाएं, जब उनको पानी पिलाने लगे तो इतने में किसी दूसरी तरफ़ से आवाज़ आई: اَلْعَطَشُ यअ़नी प्यास, तो उन्होंने अपना मुंह बंद कर लिया और सर हिला कर इशारा किया कि दूसरे को पिलाओ, वह दूसरे के पास गए, उसको पानी पिलाने लगे तो तीसरी तरफ़ से आवाज़ आई, उन्होंने भी मुंह बंद कर लिया, वह तीसरे के पास गए तो उनके जाते जाते तीसरे फ़ौत हो चुके थे, लौट के दूसरे के पास आए तो वह भी फ़ौत हो चुके थे, लपक कर अपने चचाज़ाद भाई यअ़नी पहले वाले के पास आए तो वह भी रुख़्सत हो चुके थे। सोचिये अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने क्या ख़ैर ख़्वाही सिखाई थी कि ऐन आख़िरी वक़्त की जो प्यास होती है उसमें भी वह अपने ऊपर अपने भाई को तरजीह दिया करते थे

फ़रिश्तों को दिखाना था बशर ऐसे भी होते हैं

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने हबीब सल्ल0 को ऐसी तालीम दे कर भेजा और नबी सल्ल0 ने ऐसी जमाअत खड़ी कर दी, असल मक़्सद इंसानियत की अज़मत वाज़ेह करनी थी, अल्लाह तआला फ़रिश्तों को दिखाना चाहते थे कि देखो इंसान होकर भी ऐसा हो जाता है।

अबुल हसन नूरी रह0 का मशहूर वाक़िआ है कि एक मर्तबा

हाकिमे वक़्त चार पांच उलमा से नाराज़ हो गया और उसने फ़ैसला किया कि चारों पांचों को बुला लो और उनको मैं क़त्ल करवा देता हूं, चुनांचे उनको गिरिफ़्तार कर लिया गया और उनको बादशाह के सामने पेश किया गया, जब उनको क़त्ल किया जाने लगा तो बादशाह ने देखा कि अबुल हसन नूरी सबसे आगे हैं, बाक़ी लोग पीछे खड़े हैं, उसको अंदर से अबुल हसन नूरी से कुछ न कुछ अक़ीदत थी और यह चाहता था कि मैं किसी और को क़त्ल करूंगा और फिर बहाना बना कर डरा धमका कर बाक़ियों को मैं कहूंगा कि मैंने मुआफ़ कर दिया, उसने सोचा कि सबसे पहले अबुल हसन नूरी हैं तो मैं कैसे तरतीब को बदलूं, तो वह कहने लगा कि यह जो जगह हैं यह अच्छी नहीं है, ज़रा उनको दूसरी जगह ले आओ, मक़्सद यह था कि जब जगह बदलेगी तो तरतीब बदल जाएगी, दूसरी जगह खड़ा किया तो अबुल हसन नूरी वहां भी सबसे आगे, उसने कहाः नहीं, यह जगह भी अच्छी नहीं, एक तीसरी जगह बताई, चुनांचे तीसरी जगह पर सब आके खड़े हुए तो अबुल हसन नूरी फिर सबसे पहले, उसने बुलाया, पूछने लगाः अबुल हसन! मैं चाहते था कि किसी और को क़त्ल करता और तुम्हें मैं मुआफ़ कर देता, मगर यह क्या मस्ला कि पहली जगह भी आप आ गए, दूसरी जगह भी और तीसरी जगह भी? यह इत्तिफ़ाक़न हो गया है या इरादतन आपने आगे खड़े होने की पोज़ीशन ली? तो अबुल हसन नूरी रह० ने फ़रमाया कि मैं इरादतन आगे खड़ा हुआ कि जितनी दूर जल्लाद मुझे क़त्ल करने में लगाएगा, मेरे बाक़ी भाईयों को इतने सांस और लेने का मौक़ा मिल जाएगा, उनकी क्या ख़ूबसूरत सोच थी, अपने पे दूसरों को तरजीह देना, दूसरों की ख़ैरख़्वाही करना, दूसरों की इतनी हमदर्दी होती थी कि اللہ اکبر کبیرا۔

सलफ़ सालिहीन में ख़ैरख़्वाही के चंद नमूने

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह० वक़्त के इतने बड़े फ़क़ीह भी थे कि इमामे आज़म कहलवाए, मगर साथ ही साथ उनकी तिजारत भी थी, कपड़े की दूकान भी थी, एक मर्तबा एक औरत उनको कपड़ा बेचने के लिये आई, पूछा कि कितनी Price (क़ीमत) में? उसने कहा इतनी, फ़रमायाः नहीं! जाओ अपने महरम मर्द को लेकर आओ, महरम मर्द को ले के आई, पूछा कि भाई! इसकी क़ीमत बताओ, चूंकि मियां बीवी ने मशवरा किया था कि हम ज़रूरतमंद हैं, हम इस कपड़े को इतने में बेच देते हैं, तो उसने भी वही क़ीमत बताई, तो इमाम साहब ने ख़ाविंद से कहा कि तुम्हें इस कपड़े की Value (क़ीमत) का सही अंदाज़ा नहीं, यह कपड़ा ज़्यादा क़ीमती है, तुम ज़रूरत की वजह से सस्ता बेचना चाहते हो, उसने कहा कि क़ीमत ज़्यादा कर दें, पूछा कितनी करें? उसने कहा पहले हमने सौ दिरहम कहे थे अब डेढ़ सौ दिरहम कर दें, फ़रमाया नहीं, यह उससे भी ज़्यादा क़ीमती है, आप अंदाज़ा लगाइये कि सौ दिरहम में जो कपड़ा वह बेचना चाहते थे, इमामे आज़म रह० ने उस को तीन सौ दिरहम में ख़रीदा, और ख़रीदते वक़्त फ़रमाया Conscience (नियत) बिल्कुल Clear (साफ़, वाज़ेह) है कि मैंने धोका देकर कोई चीज़ नहीं ख़रीदी। यह कैसे हज़रात थे जो किसी का बुरा चाहते ही नहीं थे, सोचते ही नहीं थे कि किसी का बुरा हो, किसी का नुक़्सान हो, वह हर एक का फ़ाएदा चाहते थे।

चुनांचे इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह० एक मर्तबा अस्र के क़रीब दूकान बंद करके घर आ रहे थे, एक साहब से मुलाक़ात हुई, उसने पूछा नोअ्मान! आज दूकान जल्दी बंद कर दी, पहले तो मग़रिब के वक़्त बंद करते थे, आज ज़ुहर के बाद ही बंद कर दी?

फ़रमाने लगेः हां! आज मैंने ज़ुहर के बाद बंद कर दिया, पूछा कि वजह क्या है? फ़रमाने लगे कि आज आसमान पर बादल हैं, रौशनी कम है, वह बिजली का ज़माना तो था नहीं, तो रौशनी कम थी और जब रौशनी कम होती Visibility (दिखाई देने की सलाहियत) कम होती है, उस वक़्त जो कपड़े का गाहक होता है उसको कपड़े की सही Quality (मेअ़यार) का पता नहीं चलता, मैंने दूकान बंद कर दी ताकि मेरी दूकान का कोई गाहक कम क़ीमत कपड़े को बेशक़ीमत समझ कर मुझसे न ख़रीदे, उसको कहीं नुक़्सान न हो जाए, اللہ اکبر کبیرا۔ आप सोचिये कि जब हम सही मअ़नों में मुसलमान थे तो ऐसे भी तिजारत हुआ करती थी। यह वह हस्तियां थीं कि जो सही मअ़नों में मुसलमान थीं।

अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 एक बड़े मुहद्दिस हैं उनका एक पड़ोसी था और वह पड़ोसी मकान बेचना चाहता था, ख़रीदार ने आके पूछा कि मकान की कितनी क़ीमत है? उसने कहा जनाब! दो हज़ार दीनार, उसने कहा भाई! इस मकान की क़ीमत तो एक हज़ार दीनार बहुत है, आप के Neighbourhood (आस पड़ोस का इलाक़ा) में तो एक हज़ार दीना क़ीमत बहुत है, तो उसने कहाः हां मकान की क़ीमत है एक हज़ार दीनार और दूसरा हज़ार दीनार अब्दुल्लाह बिन मुबारक के पड़ोस की क़ीमत है। जब हम सही मअ़नों में मुसलमान थे तो हमारे हमसाया के घरों की क़ीमतें बढ़ जाया करती थीं, लोग हमारे साथ मिल कर रहना इतना पसंद करते थे, वह समझते थे कि यह ख़ैरख़्वाह इंसान है, यह नेक नियत इंसान है, इससे बेहतर Neighbour (पड़ोसी) मुझे दुनिया में कोई नहीं मिल सकता।

हक़ीक़ी मुसलमान के अख़्लाक़ के चंद नमूने

जब हम सही मअ़नों में मुसलमान थे हमारे अख़्लाक़ उस वक़्त कितने अच्छे हुआ करते थे, चुनांचे बग़दाद जब पूरी दुनिया का मर्कज़ था उस वक़्त कुफ़्फ़ार ने सोचा कि मुसलमानों के मुआशरे का अंदाज़ा तो लगाया जाए कि क्या वजह है कि यह जहां जाते हैं कामियाबी उनके क़दम चूमती है, उनके माहौल में आपस में मेल जोल लेन देन यह कैसा है? चुनांचे उन्होंने एक आदमी को भेजा कि जाएं और उनके माहौल और मुआशरे को ज़रा Study (मुतालआ़, तहक़ीक़) कर के आएं, वह आया, बग़दाद पहुंचा तो थका हुआ था, उसने सोचा कि क्यों न मैं खाना खा लूं, लिहाज़ा वह एक Restaurant (होटल) पे आ गया और वहां बैठ के उसने खाना खाना शुरू किया, मगर उसने Feel (महसूस) किया कि खाने के दौरान एक और बंदा था जो क़रीब खाना खा रहा था और वह कभी कभी उसकी तरफ़ देख रहा था, तो उसको महसूस हुआ कि यह बंदा मुझे Watch (देखना) कर रहा है, उसने दिल में सोचा कि मैं परदेसी हूं, नोवारिद हूं, यह मेरी शक्ल को देख के ज़रा पहचान रहा होगा क यह बाहर से आया है, ख़ैर उसने खा लिया, जब खाना खा लिया तो इसके बाद यह काऊंटर पर आया और उससे कहा कि मैंने खाना खा लिया, मुझे बिल बताएं, काऊंटर ने कहा जनाब! आप का बिल तो Pay (अदा) हो चुका, पूछा कि मेरा बिल कैसे Pay हो चुका, उसने कहा, जब आप खाना खा रहे थे तो जो बंदा आपके सामने क़रीब बैठा हुआ था, वह अपना बिल Pay करने के लिये आया और कहने लगा कि फ़लां बंदा मुझे चेहरे मोहरे से परदेसी नज़र आता है, आज वह मेरा मेहमान है, मैं उसके पैसे अदा कर देता हूं, बताने की ज़रूरी इसलिये नहीं कि अज्र मुझे अपने अल्लाह से

चाहिये, वह हैरान कि अच्छा यह इतने भी खुश अख़्लाक़ लोग होते हैं कि इंसान के खाने की क़ीमत अदा कर देते हैं और शुक्रिया का लफ़्ज़ भी सुनना पसंद नहीं करते कि हम को तो अल्लाह से अज्र लेना है। आगे गया, उसको कोई चीज़ ख़रीदनी थी, उसने सोचा कि मैं बाज़ार से वह चीज़ ख़रीद लेता हूं चुनांचे वह एक दूकान पर पहुंचा और दूकानदार से कहा कि भाई! आपके पास फ़ला चीज़ है? उसने पूछाः आप वह चीज़ कितने में देंगे? उसने कहा मैं वह दस रियाल में दूंगा, कहा कि मुझे दे दीजिये, कहने लगे कि आप ज़रा मेरे साथ Cooperate (तआवुन) करें, सामने जो दूकानदार है आ उसके पास चले जाएं, यही चीज़ आपको इतने ही क़ीमत में वहां से मिल जाएगी, वह सामने चला गया, वहां उसने जाके वह चीज़ मांगी, उसने दस दिरहम बताए तो दस दिरहम में उसने वह चीज़ ले ली, लेकिन उसके ज़हन में ख़्याल आया कि पहले दूकानदार ने कुछ नहीं लिया और उसने दूसरे दूकानदार की तरफ़ भेज दिया, तो वह लौट के पहले दूकानदार के पास आया और उस दूकानदार से कहता है कि जनाब! आप के पास चीज़ थी नहीं, या आपने मुझे बेची नहीं? उसने कहा कि चीज़ थी, लेकिन मैं चाहता था कि आप सामने वाले दूकानदार से लें, उसने कहा क्यों? दूकानदार तो अपने गाहक को दूसरे के पास नहीं भेजते? तो वह दूकानदार कहने लगा कि असल वजह यह है कि आज मेरे पास इतने गाहक आए कि मेरे बच्चों का गुज़ारा बड़ा अच्छा हो जाएगा, मैं देख रहा था कि मेरे उस दूकानदार भाई के पास आज कोई गाहक नहीं आया, मैंने सोचा कि आप उससे ख़रीद लेंगे तो उसको कुछ मुनाफ़ा होगा और उसके बच्चों के लिये भी आज कुछ इंतेज़ाम हो जाएगा। एक वक़्त था कि इतनी ख़ैरख़्वाही दिल में भरी होती थी कि दो दूकानदार हमसाया में होते

थे, वह एक दूसरे के इतने ख़ैरख़्वाह होते थे। यह वह हस्तियां थीं कि जिन्होंने दीन को समझा और दीन को अपनाया। अल्लाह तआला चाहते हैं कि मेरे ऐसे बाअख़्लाक़ बंदे दुनिया में हों, ताकि पता चले कि सही मअ़नों में मोमिन कौन होता है

फ़रिशतों को दिखाना था बशर ऐसे भी होते है

एक हक़ीक़ी मुसलमान की वादा वफ़ाई

एक वाक़िआ और सुन लीजिये! एक शहर था जिसमें काफ़िर मुसलमान सब मिल के रहते थे, एक मुसलमान नौजवान उस शहर में किसी दूसरे शहर से कारोबार के लिये आया, और उसने वहां आके अपना काम करना शुरू कर दिया, अब काम के दौरान छुट्टी का दिन था, उसने सोचा कि चलो मैं परिंदों का कोई शिकार कर लेता हूं, उसने तीर कमान संभाला और वह शहर के अतराफ़ में आ गया, वहां उसने परिंदों का तीर के ज़रीआ शिकार करना शुरू किया, अल्लाह की शान कि एक तीर जो उसने चलाया तो वह परिंदे को लगने के बजाए दूर एक लड़का खड़ा था उसको जाकर लगा और लड़के की वहीं पे Death (मौत) हो गई, अब यह मुसलमान था, कोई हम जैसा होता तो भाग ही जाता कि पता ही न चले कि क्या हुआ, वह रुका, उस बच्चे के पास गया, उसको संभाला, फिर पता किया कि उसके वालिदैन कौन है, वालिदैन को बताया गया, वह ईसाई मां बाप थे जिनका वह बच्चा था, उनसे कहा कि भाई! मैंने परिंदे को निशाना बनाया था, लेकिन निशाना ख़ता कर गया, बच्चे को लग गया तो यह मेरी एक Mistake (ग़लती) है, वहां और लोग भी उनके रिशतादार वग़ैरा आ गए, एक रिशतादार ने कहा कि हमें क्या पता तूने Intentionally (इरादतन) मारा है या Unintentionally (बग़ैर इरादे के) लिहाज़ा हम तो क़ाज़ी के

पास जाएंगे, अब वह उसको लेकर क़ाज़ी के पास आ गए, क़ाज़ी ने कहा कि तुम्हारे तीर से यह बंदा मरा है तो या तो उसके जो वरसा हैं उनको तुम उसकी दियत दो, क़िसास दो, और अगर वरसा नहीं मानते तो फिर इसके बदले में तुम्हें क़त्ल किया जाएगा, वरसा ने कहा कि हमारे बच्चे को इसने मारा है, हम तो चाहते हैं कि उसके बदले में इसको मारा जाए, उन क़ाज़ी साहब ने उसको जेल भेज दिया कि जुम्आ के दिन हम Final (हतमी) फ़ैसला सुनाएंगे और बंदे के बदले हम बंदे को क़त्ल कर देंगे, यह जेल में आ गया, अल्लाह की शान देखें कि जो जेल का Supervisor (निगरान) था, जिसको जेलर कहते हैं, Jail superintendent (जेल का ज़िम्मादारे आला) वह ईसाई था, अब दूसरा दिन हुआ तो यह नौजवान उस सुप्रिन्टैन्डन्ट के पास आया और उसके पास आके कहता है कि मैं मुसलमान हूं, मैं फ़लां शहर से रोज़ी के लिये यहां आया था, मेरे साथ यह वाक़िआ पेश आ गया और अब मैं यहां पर हूं कि जुम्आ के दिन मुझे क़त्ल किया जाएगा, मगर मेरे घर वालों को भी पता नहीं, रिशतादारों को भी पता नहीं और मुझे उनकी कुछ अमानतें लौटानी हैं, अगर आप अपनी ज़िम्मेदारी पे मुझे छोड़ दें तो मैं जुम्आ से पहले पहले वापस आ जाऊंगा और मैं मुसलमान हूं, जब उसने कहा कि मैं मुसलमान हूं तो एक मुसलमान की वादा वफ़ाई का इतना उस ज़माने में एतिमाद था कि ईसाई सुप्रिन्टैन्डन्ट ने कहा कि अच्छा तुम चले जाओ जुम्आ से पहले आ जाना, उसने क़त्ल के मुजरिम को छोड़ दिया, अल्लाह तआला की शान कि यह जुम्आ की नमाज़ से पहले नहीं लौटा, जब जुम्आ की नमाज़ हो गई, क़ाज़ी साहब ने जिन मुजरिमों के फ़ैसले होने थे सबको बुलाया, पता चला कि वह मुजरिम नहीं, उन्होंने जेल सुप्रिटैन्डन्ट को बुलाया, जैल

सुप्रिटैन्डन्ट ने कहा कि मैंने अपनी ज़िम्मादारी पे छोड़ा था, उसने कहा था कि मैं आ जाऊंगा, वह अभी तक नहीं आया, क़ाज़ी साहब ने कहा कि अच्छा अगर आपने अपनी ज़िम्मादारी पे छोड़ा था और वह नहीं आया तो यह तो आपकी ग़लती है, लिहाज़ा फ़ैसले के वक़्त तक अगर वह न आया तो चूंकि हमें उस बच्चे के क़त्ल का बदला तो लेना ही है, लिहाज़ा हम तुम्हें क़त्ल करेंगे, अब वह ईसाई मां और परेशान कि बच्चा भी हमारा मरा और अब उसके बदले में जेल सुप्रिटैन्डन्ट भी हमारा मरेगा, तो वह बड़े घबरा गए, मगर क़ाज़ी साहब दूसरे मुक़द्दमों के फ़ैसला करते रहे, जब इस फ़ैसला का वक़्त आया तो उन्होंने पूछा कि मुजरिम कहां? तो वह सुप्रिटैन्डन्ट आगे बढ़ा, उसने कहा कि मैंने उसे अपने एतिमाद पर भेजा था, अभी तक नहीं आया, इतने में एक आदमी आया कि अजी! ज़रा रुकें, वह दूर से ऐसे लगता है कि कोई बंदा दौड़ा आ रहा है, क़ाज़ी साहब ने कहा कि इंतेज़ार कर लेते हैं, थोड़ी देर इंतेज़ार किया, नौजवान दौड़ता हुआ आया, पसीना में शराबोर था, उसने आके पहले उस जेल सुप्रिटैन्डन्ट से मुआफ़ी मांगी और कहा कि मैं अपने वक़्त पर पहुंच सकता था, लेकिन रास्ते में दरिया था जिसमें तुग़यानी थी, मुझे कशती नहीं मिली, और मुझे दरया बग़ैर कशती के पार करना पड़ा, और तुग़यानी की वजह से उसमें देर हो गई, इसलिये मैं अपने वक़्त से थोड़ा ताख़ीर हो गया, जब उस नौजवान की वादा वफ़ाई को उन्होंने देखा तो उस वक़्त उस बच्चे के मां बाम ने कहाः क़ाज़ी साहब! आपने जो फ़ैसला करना था कर दिया, ज़रा हमारा भी फ़ैसला सुन लीजिये, क़ाज़ी साहब ने कहा क्या? उन्होंने कहाः हमारा एक फ़ैसला तो यह कि हमने उस नौजवान की वादा वफ़ाई की वजह से उस नौजवान को मुआफ़ कर दिया, और दूसरा फ़ैसला यह कि हम

मज्मा को गवाह बनाकर कहते हैं कि हम भी आज कलिमा पढ़ते हैं और मुसलमान हो रहे हैं–

फ़रिशतों को दिखाना था बशर ऐसे भी होते हैं

नबी सल्ल0 ने अपनी उम्मत को इतने आला अख़्लाक़ सिखाए थे, उम्मत में ऐसे औलिया गुज़रे कि जिनके अख़्लाक़ को देख के फ़रिशते भी हैरान थे कि यह कैसे लोग थे, वाक़ई वह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के बंदों के साथ इतनी ख़ैरख़्वाही का मुआमला करने वाले थे, मगर यह कौन लोग थे? यह वह लोग थे जिनकी सोच अलग होती थी, जो ख़ैरख़्वाही करने वाले लोग थे।

हक़ीक़ी मुसलमान इंसानों को फ़ाएदा पहुंचाने वाला होता है

लड़कपन की बात है, स्कूल में कोई छटी जमाअत या सातवीं जमाअत का यह आजिज़ तालिबे इल्म था, मेरा एक दोस्त था, जो दीहात का रहने वाला था, वह भी शहर में पढ़ने के लिये आया हुआ था, हम दोनों आपस में अच्छे दोस्त थे, और Shining students (होनहार तलबा) में शुमार होते थे, यह वह ज़माना था कि जब हमने दीहात नहीं देखा था, पता ही नहीं होता था कि दीहात क्या होता है, शहर में पैदा हुए, शहर में ज़िंदगी गुज़री, तो वह हमें कभी कभी दीहात की बातें बताता कि फ़स्लें ऐसी होती हैं और हल चलाते हैं और कुंवां होता है, हमारे लिये यह किसी दूसरे जहान की बातें होती थीं, लेकिन हम सुना करते थे कि अच्छा ऐसा भी होता है, हमें उस ज़माने में इतना भी पता नहीं था कि गंदुम पौदे पे लगती है या किसी दरख़्त पर लगती है, यह भी अंदाज़ा नहीं था, गर्मी की जब छुट्टियां हुईं तो उसने मुझे Invite (मदऊ) किया कि आप एक दिन के लिये हमारे घर आएं, हम आपको सारे खेत ही दिखाएंगे और हम आपको फिर वापस छोड़ देंगे, तो गर्मी की छुट्टियों में मैंने

अपनी अम्मी से कहा कि अम्मी! मुझे अपने उस दोस्त के यहां जाना है, अम्मी ने कहा बेटा! अपने बड़े भाई के साथ चले जाओ, चुनांचे हम अपने बड़े भाई के साथ उस दोस्त के घर दीहात में चले गए, रात सो गए, सुब्ह उठे, नाशता किया तो वह हमें लेके खेत दिखाने के लिये निकला, अब जब हम खेत देखते फिर रहे थे थे एक जगह हमने देखा कि गोबर का अंबार लगा हुआ है, तो उसको देखते ही मैंने बुरा सा मुंह बनाकर उससे कहा यार! यह क्या है? यह तो नजस होता है, यह तो नापाक होता है, यह तो बदबूदार होता है, इसको क्यों इकट्ठा करके जमा करके रखा हुआ है, फिर जो नज़र दौड़ाई तो एक और खेत में गोबर पड़ा नज़र आया, तो फिर मैंने कहा यह तो नापाक होता है इसको यहां क्यों रखा हुआ है? उसने कहा कि जो इस खेत का Farmer (किसान) है यह उससे जाकर पूछ लो, तो वह किसान क़रीब खड़ा हुआ था, जो हल चला रहा था, मैं उसके पास गया और मैंने कहाः अंकल यह गोबर तो नापाक होता है और यह तो गंदा होता है और इसमें तो बू होती है—चूंकि वालिदैन ने नजासत के बारे में शुरू में खूब Warn (आगाह) कर दिया था कि इससे बचने की ज़रूरत है, तो बचपन की वजह से दिल में एक नफ़रत सी थी—मैंने कहाः यह आपने यहां जमा करके रखा हुआ है? कितनी अजीब बात है? वह कहने लगाः बच्चे! आपके लिये यह नजासत है, मेरे लिये यह Fertilizer (खाद) है, मैं ज़मीन में हल चलाता हूं और यह गोबर देता हूं, फिर इसके बाद इस ज़मीन में काश्त करता हूं और काश्त करने के बाद जब मेरी सब्ज़ियां उगती हैं तो पहले से बहुत ज़्यादा होती हैं और मुझे बड़ा मुनाफ़ा मिलता है, अब उसकी बात सुन के उस वक़्त तो मैं चुप हो गया, लेकिन आज जब मैं सोचता हूं तो दिल में यह बात आती है कि ऐ इंसान! जिसे

हम गंदगी कहते हैं, नजासत कहते हैं, नापाक कहते हैं, बदबूदार समझते हैं, उस गोबर को अगर किसी फ़स्ल के अंदर डाल दिया जाए तो गोबर उस फ़स्ल को फ़ाएदा दे देता है, तो इंसान होकर भी अगर साथ वाले इंसान को फ़ाएदा नहीं देता, तो अल्लाह की नज़र में गोबर से भी गया गुज़रा है, हमें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इंसान बनाया, हम अपने साथ वालों को फ़ाएदा पहुंचाएं, घर वालों को फ़ाएदा, रिशतादारों को फ़ाएदा, अपने हमसायों को फ़ाएदा, मुआशरे को फ़ाएदा पहुंचाएं, मोमिन होती ही वही है जो हर एक का ख़ैर ख़्वार हो, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "اَلدِّيْنُ النَّصِيْحَةُ" दीन सरासर ख़ैरख़्वाही है, सुब्हानल्लाह! क्या खूबसूरत तालीम दी हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद मुज्तबा सल्ल0 ने।

अकाबिर के अख़्लाक़ बुलंद होने की वजह

हमारे अकाबिर के अख़्लाक़ अच्छे होने की बुन्यादी वजह यह थी कि उनकी सोच बहुत बुलंद होती थी, बुलंद सोच हाने की वजह से उनके मक़ाम बुलंद हो गए थे, आप ग़ौर करें कि एक पतंगा है, उसको परवाना कहते हैं, उसी से मिलता जुलता एक और है जिसको मक्खी कहते हैं, उसके भी दो पर, इस के भी दो पर लेकिन इसको परवाना नहीं कहते, हालांकि यह उससे मिलता जुलता है, साइज़ भी एक जैसी, मगर उसको परवाना उसको परवाना कहेंगे और इसको मक्खी कहेंगे, इसकी वजह यह है कि इस मक्खी की सोच गंदी है, यह नजासत में बैठती है, गंद ढूंढती है, उसकी गंदी सोच की वजह से उसको मक्खी कहते हैं। और परवाना उसको कहते हैं जो रौशनी के ऊपर, नूर के ऊपर अपने आप को फ़िदा करता है। कहने को हम भी मुसलमान हैं, कहने को हमारे अकाबिर भी मुसलमान थे, मगर अगर दुनिया की मुहब्बत दिल में भर के जीते फिर रहे हैं तो अल्लाह

की नज़र में हमारी मिसाल गंदी मक्खी है और उनकी मिसाल अल्लाह की नज़र में परवाने के मानिंद है, आज हम जो नाम के मुसलमान हैं काम का मुसलमान बनने की ज़रूरत है।

हक़ीक़ी इस्लामी अख़्लाक़ के चंद नमूने

हमारे अकाबिर को देखिये! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क्या सोच दी थी, एक दो वाक़िआत सुन के यह आजिज़ अपनी बात को मुकम्मल कर देगा, ज़रा तवज्जो के साथ सुनियेगा! एक अंग्रेज़ देहली की जामा मस्जिद देखने के लिये आया, वह Architect (तामीरी काम का इंजीनियर) था और उसको पता था कि जामा मस्जिद के अंदर बड़ी अच्छी Calligraphy (कशीदा कारी) की गई है, चूंकि उसके फ़न का काम था, वह देखने के लिये आया, अब देहली की जामा मस्जिद की कई सीढ़ियां हैं और सीढ़ियों पे आप ने देखा होगा कि फ़ुक़रा बैठे होते हैं, साइल बैठे होते हैं, एक मअ़ज़ूर फ़क़ीर था, वह बैठा हुआ था, जब यह क़रीब से गुज़रा तो उसने मांगा, उस अंग्रेज़ ने अपना Wallet (बटवा) निकाला और बटवा निकाल के उसमें से उस फ़क़ीर को कुछ दे दिया और अपना Wallet फिर अपनी जेब में डाल लिया, अपनी दानिस्त में तो उसने जेब में डाला लेकिन हक़ीक़त में उसका बटवा गिर गया, अब यह मस्जिद में चला गया, वहां जाके उसने Calligraphy (कशीदा कारी) देखी, बड़ी पसंद आई, उसने फ़ोटो ग्राफ़ी की, उसकी बीवी भी इसी शोबा से तअल्लुक़ रखती थी, वह घर गया और घर जाकर उसने बीवी को बताया कि कितना अच्छा काम किया हुआ है, Historical (तारीख़ी) काम है, उसकी बीवी कहने लगी कि अच्छा आईंदा Weekend (हफ़्ता का आख़िर) आएगा तो मैं भी आप के साथ जाऊंगी, तो मुझे भी आप वह मस्जिद का काम दिखाएं, अब जब

रात सोने लगा तो उसने देखा कि उसका पैसे वाला बटवा ही नहीं है, तो यह बड़ा परेशान हुआ कि कहां गिरा, बड़ा सोचा मगर उसको याद नहीं आया कि मैंने बटवा कहां गिराया, ख़ैर एक आध दिन के बाद यह ज़हन से बात ही निकाल बैठा, कहने लगा जो दो चार सौ रूपये थे बस वह मेरे गुम हो गए, जब अगला इतवार आया तो यह अपनी बीवी को लेके जामा मस्जिद दिखाने के लिये गया, अब जब सीढ़ियों पे चढ़ रहा था तो उसने देखा कि वही मअ़ज़ूर फ़क़ीर जिस पिछली मर्तबा उसने पैसे दिये थे, वह उसकी तरफ़ आ रहा है, तो उसने सोचा कि पिछली मर्तबा पैसे दिये थे, फिर उसने मुझे देखा तो उम्मीद लगी होगी कि यह ज़रूर देगा, तो यह मुझसे पैसे मांगने आ रहा है, लेकिन वह फ़क़ीर जब क़रीब आया तो वह कहने लगा कि जनाब! वह पिछली मर्तबा आपने जब मुझे पैसे दिये थे तो शायद यह आप का बटवा था, जो गिर गया था, मैंने आपको ढूंढने की कोशिश की मगर आप निकल गए तो मैंने अपने पास रखा हुआ है, आप अपना बटवा ले लीजिये, अब उस अंग्रेज़ ने बटवा देखा, अपनी चीज़ें देखें, Documents (कागज़ात) देखिये, हर चीज़ बिल्कुल ठीक थी, उसके ज़हन में यह ख़्याल आया कि यह फ़क़ीर तो एक एक पैसा मांगता है और मेरे बटवे में तो दो तीन सौ रूपये थे, अगर यह अपने पास रख लेता तो किसी को ख़बर ही न होती, मगर उसने यह मुझे लौटा दिया तो उसने पूछा कि फ़क़ीर! आख़िर तुमने यह अपने पास रख क्यों नहीं लिया? तो मअ़ज़ूर फ़क़ीर ने जवाब दिया कि शुरू में तो एक ख़्याल आया था कि मैं इसे रख लूं, मगर फिर एक दूसरा ख़्याल आया और मैंने कहा कि नहीं, मैं इसे नहीं रखूंगा, उसने पूछा कि ख़्याल आया? तो वह मअ़ज़ूर फ़क़ीर कहता है कि मुझे यह ख़्याल आया कि मैं नबी सल्ल० का उम्मती हूं, आप ईसा अलै० के

उम्मती हैं, अगर मैंने आप का यह बटवा चोरी कर लिया तो ऐसा न हो कि क़्यामत का दिन हो और आप के नबी अलै० मेरे आक़ा सल्ल० को गिला दें कि तुम्हारे उम्मती ने मेरे उम्मती की चोरी की थी, मैं इस ख़्याल को सोच के रह गया कि मेरी वजह से मेरे आक़ा सल्ल० को बात न सुननी पड़ जाए। एक वक़्त था कि फ़क़ीरों की कैफ़ियत यह हुआ करती थी--

फ़रिशतों को दिखाना था बशर ऐसे भी होते हैं

नबी सल्ल० ने ऐसी ख़ुश अख़्लाक़ी की तालीमात दीं कि जिन्होंने उनको अपनाया वह वाक़ई इंसानियत के लिये बाइसे फ़ख़्र हो गए, क्या ख़ूबसूरत सोच होती थी! आप सोचिये अगर हमारी सोच ऐसी हो तो क्या हम किसी का नुक़्सान कर सकते हैं? किसी की इज़्ज़त की तरफ़ मैली नज़र डाल सकते हैं? हरगिज़ नहीं, यह सारी बातें ही ग़फ़लत की वजह से होती हैं, आज इस ग़फ़लत को दूर करने के लिये हम यहां इकट्ठा हुए हैं, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें ग़फ़लत से महफ़ूज़ फ़रमाए और हक़ीक़ी मअ़नों में मुसलमान बन कर ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

आख़िरी वाक़िआ सुन लें! हज का मौक़ा है, एक नौजवान मिना के मैदान में एक बड़े मियां को देखता है कि उसके हाथ में थैला है और उसमें यक़ीनन कुछ पैसे होंगे, तो वह नौजवान वह थैला छीन के भाग जाता है, चूंकि रश बहुत था, पता ही नहीं चला कि हाथ से कौन लेकर गया, उस बड़े मियां ने पूछा भी कि कौन है जो मेरा हमयानी लेकर चला गया, थैला लेके चला गया, लोगों ने कहा कि पता नहीं कि कौन था, वह चले गए, अब जिस नौजवान ने थैला छीना था यह थोड़ा आगे गया तो अचानक उसे चक्कर आए तो उसकी आंखों की बीनाई चली गई, अब यह वहीं ज़मीन पे बैठ गया,

रोना शुरू कर दिया, लोगों ने पूछा कि क्यों रो रहे हो? कहने लगा मैंने एक बड़े मियां का थैला छीना, मुझे लगता है कि उन्होंने बद्दुआ की और मेरी आंखों की बीनाई चली गई, लोगों ने कहा कि वह बड़े मियां कहां हैं? हम तुम्हें ले जाते हैं, उनसे मुआफ़ी मांग लो, चुनांचे जहां उसने थैला छीना था वह उसको पकड़ के वहां लाए, मगर वह बड़े मियां तो घर चले गए थे, क़रीब के लोगों से पूछा, उन्होंने कहा कि वह बड़े मियां पांच वक़्त नमाज़ पढ़ने के लिये आते हैं, हो सकता है कि अगली नमाज़ के लिये फिर आएं, लिहाज़ा आप Wait (इंतेज़ार) कर लें, जब इंतेज़ार किया, तो अगली नमाज़ के क़रीब वह बड़े मियां आ गए जैसे ही पता चला, यह नौजवान उठा, उसने पांव पकड़े कि आप अल्लाह के लिये मुआफ़ कर दें, आपने बद्दुआ की मेरी बीनाई चली गई, मुझसे बड़ी ग़लती हुई, जब उसने मुआफ़ी मांगी तो वह बड़े मियां कहने लगे कि भाई! मैंने तो आप को उसी वक़्त मुआफ़ कर दिया था, अब सारे लोग हैरान है, एक साहब ने पूछा कि भाई! यह आप का थैला लेके चला गया और आप कहते हैं कि मैंने उसी वक़्त मुआफ़ कर दिया था तो वह बड़े मियां कहने लगेः हां! मुझे एक ख़्याल आ गया था, पूछा बड़े मियां क्या ख़्याल आया था? बड़े मियां कहने लगे कि मैंने उलमा से यह सुना है कि नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः क़्यामत के दिन मेरी उम्मत का हिसाब किताब होगा, जब तक आख़िरी उम्मती का हिसाब नहीं होगा मैं उस वक़्त तक जन्नत में नहीं जाऊंगा, तो मेरे ज़हन में ख़्याल आया कि यह नौजवान मेरा थैला लेकर भाग गया, अब अगर उसे मैंने मुआफ़ न किया तो क़्यामत के दिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में मुक़द्दमा पेश होगा और जितनी देर फ़ैसला होने में लगेगी मेरे आक़ा सल्ल0 को उतना इंतेज़ार करना पड़ेगा, मैंने मुआफ़

कर दिया कि न क़्यामत के दिन मुक़द्दमा पेश हो, न मेरी वजह से मेरे आक़ा सल्ल0 को जन्नत में जाने में देर लगेगी। اللہ اکبر کبیرا

अगर हमारी यह सोच हो जाए, मियां बीवी में झगड़े हो सकते हैं? भाई भाई में झगड़े हो सकते हैं? वह मुसलमानों में झगड़े हो सकते हैं? हो ही नहीं सकते, इसलिये कि वह एक दूसरे के ख़ैरख़्वाह होंगे। चुनांचे उमर फ़ारूक़ रज़ि0 का ज़माना है, दो मुसलमानों के दर्मियान एक मुक़द्दमा आया, मुक़द्दमा यह था कि एक साहब ने ज़मीन बेची और दूसरे ने ज़मीन ख़रीदी, ख़रीदने वाले ने जब उसमें हल चलाए तो उसको अंदर से कुछ सोना चांदी का दफ़ीना मिल गया, अब वह सोचने लगा कि मैंने तो ज़मीन ख़रीदी है, यह ख़ज़ाना तो बहुत क़ीमती है, लिहाज़ा यह तो पहले वाले मालिक का है, उसने पहले वाले मालिक को बुलाया और कहाः जनाब! मैंने तो आप को ज़मीन की क़ीमत दी थी और उसमें तो यह ख़ज़ाना निकल आया, यह ख़ज़ाना तो मेरा नहीं, यह आपका है, उसने जवाब दियाः जनाब! मैंने जब ज़मीन बेची तो अब ज़मीन में से जो फ़ाएदा भी निकलेगा वह फ़ाएदा तुम्हारा होगा, अब वह मेरा नहीं हो सकता, अब एक कह रहा है कि यह तुम्हारा माल है और दूसरा कह रहा है कि नहीं, यह आप का माल है। ज़रा सोचिये! यह दो मुसलमानों के दर्मियान मुक़द्दमा उमर फ़ारूक़ रज़ि0 के ज़माने में अदालत में आता है, आज तो मुक़द्दमे यह होते हैं कि एक कहता है कि मेरा हक़ है, दूसरा कहते है कि मेरा हक़ है, एक कहता है कि मैं हक़ लेकर रहूंगा, दूसरा कहता है कि मैं ख़ून का आख़िरी क़तरा बहा दूंगा, यह आजकल के मुक़द्दमें होते हैं, जब हम सही मअ़नों में मुसलमान थे उस ज़माने का मुक़द्दमा सुनिये कि एक कहता है कि मेरा हक़ नहीं, उनका हक़ है, दूसरा कहता हे कि मेरा हक़ नहीं उनका हक़ है,

कअ़ब रज़ि0 की अदालत थी, वह क़ाज़ी थे, अब वह भी हैरान हैं कि इस मुक़द्दमे का फ़ैसला कैसे करें, एक से कहा कि भाई! तुम ले लो, उन्होंने कहा नहीं। यह मेरे भाई का है, तो दूसरे से कहा आप ले लोग, उसने कहा नहीं यह मेरी भाई का है, क्या फ़ैसला किया जाए? अल्लाह ने उन लोगों को सोच भी बड़ी दी थी, कअ़ब रज़ि0 के दिल में एक ख़्याल आया, उन्होंने एक से पूछा कि तुम्हारी औलाद है? उसने कहा जी है, एक जवान बेटा है, दूसरे से पूछा, तो पता चला कि एक जवानुल उम्र बेटी उनके यहां भी है, तो इब्ने कअ़ब रज़ि0 ने फ़ैसला किया कि मेरा मशवरा यह है कि आप अपने बेटे और बेटी का आपस में निकाह कर दें और उन दोनों को जहेज के तौर पर यह ख़ज़ाना दे दें, ताकि दोनों के दोनों मुतमइन हो जाएं, चुनांचे अदालत में निकाह पढ़ा गया और होने वाले मियां बीवी को यह ख़ज़ाना जहेज़ में दे दिया गया, यह उस ज़माने का मुक़द्दमस था।

फ़रिशतों को दिखाना था बशर ऐसे भी होते हैं

ऐसी उम्मत नबी सल्ल0 ने बनाई कि जिनके अख़्लाक़ को किताबों में पढ़ कर दिल कहता है कि वाक़ई उनकी मुबारक ज़िंदगियों को देख कर तो फ़रिशतों को भी हैरत होती होगी कि ज़मीन के ऊपर कितनी ख़ैरख़्वाही चाहने वाले मुसलमान हैं, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें उनके नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आज हम भी नाम के मुसलमान हैं, अल्लाह तआला हमें सही मअ़नों में काम के मुसलमान बना दे।

अमल के अपने असास क्या है बजुज़ नदामत के पास क्या है
रहे सलामत तुम्हारी निस्बत मेरा तो बस आसरा यही है

आज यही तमन्ना लिये बैठे हैं, ऐ अल्लाह! नाम के मुसलमान कहलाते कहलाते उम्र गुज़र रही है, अब अल्लाह तआला रहमत की

एक नज़र डाल के उन मुर्दा दिलों को ज़िंदा कर दे, हमारे मन को जगा दिये, ताकि हम सही मअ़नों में मुसलमान बन कर और अच्छे अख़्लाक़ वाले इंसान बन कर ज़िंदगी गुज़ारें।

وآخر دعوانا أنِ الحمد للهِ ربِّ العالمين

अगले सफ़्हा पर आप जो ख़िताब मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे, वह बंगलौर के हज कैम्प की मस्जिदे क़ादरिया में हुआ था, हज़रते वाला मस्जिद से ख़िताब फ़रमा रहे थे, और ख़्वातीन का इंतेज़ाम ईदगाह के मैदान में था, तारीख़: 21 अप्रेल 2011 ई० बरोज़ जुमेरात, वक़्तः साढ़े ग्यारह बजे दिन, मुहताते तुख़्मीना के मुताबिक़ मस्तूरात की तादाद 30 से 40 हज़ार बताई गई है।

मस्तूरात मजलिस

मग़फ़िरत के दस (10) अस्बाब

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى، اما بعد

اعوذ بالله من الشيطان الرجيم، بسم الله الرحمٰن الرحيم

وتُوبُوا اِلَى اللّٰهِ جَمِيعًا اَيُّهَا الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ

سبحان ربك رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العلمين

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى ال سيدنا محمد وبارك وسلم

गुनाह से दिल सियाह होता है

इंसान जो भी कोई काम शरीअ़त के ख़िलाफ़ करता है उसे गुनाह कहते हैं, अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के हुक्म के ख़िलाफ़ करना, या नबी सल्ल0 की सुन्नत मुबारिका के ख़िलाफ़ करना इसको गुनाह कहते हैं, ऐसा काम इंसान के दिल पर ज़ुल्मत आने का बाइस होता है, नेकी करने से दिल मुनव्वर होता है, गुनाह करने से दिल सियाह होता है, अगर गुनाहों पे गुनाह होते रहें तो यह दिल इतना सियाह हो जाता है कि "ظُلُمٰتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ" कि ज़ुल्मतों के ऊपर ज़ुल्मतें, अंधेरों पे अंधेरा, दिल बिल्कुल सियाह हो जाता है, सख़्त हो जाता है।

दिल का सुकून नेकी के साथ वाबस्ता है

चुनांचे गुनाहों के कुछ असरात है, जिनमें से एक असर यह है कि गुनाह इंसान के दिल को परेशान रखता है, कोई आदमी कितने ही कामियाब तरीक़े से गुनाह क्यों न करे, उसका दिल परेशान होता

है, उसे रोकने वाला कोई न हो, उसे समझाने वाला कोई न हो, उसके लिये गुनाह करने का मौक़ा मयस्सर हो, फिर भी यह गुनाह उसके दिल को परेशान रखेगा, यह एक रोग है जो इंसान अपने दिल में पाल लेता है, जिसकी वजह से दिल का सुकून और चैन लुट जाता है, वह नौजवान बच्चे जो ग़ैर के साथ Involve (मुतअ़ल्लिक़) हो जाते हैं, आप उनकी ज़िंदगियां देखें, न उनको सुकून है, न रात की नींद है, न उनको किसी से बात करने का वक़्त है, हर वक़्त सपने और ख़्यालों में डूबे हुए और उलझे हुए और परेशान परेशान रहते हैं, ऐसे लगता है कि सुकून तो उनसे रूठ गया है, यह असल में उनके गुनाह की वजह से होता है और यह हर वक़्त का डर भी कि किसी को पता न चल जाए, कहीं बेइज़्ज़ती न हो जाए, ज़िल्लत न हो, मां बाप की बदनामी न हो, तो एक गुनाह की वजह से परेशानियों के दरवाज़े खुल जाते हैं। कितने लोग हैं जिनको अल्लाह ने माल व मनाल दिया, दुनिया की हर नेअ़मत दी, वह इयर कंडीशंड कमरों के अंदर कम्बल में लेटे होते हैं, नर्म गद्दे होते हैं, मगर उनको नींद नही आती, करवटें बदलते रहते हैं, बल्कि नींद की गोलियां खाते हैं फिर भी नींद नहीं आती फिर कहते भी हैं कि जो चाहते हैं खाते हैं, पीते हैं, जहां चाहते हैं सोते हैं, लेकिन दिल परेशान है, इसकी वजह यह है कि दिल के सुकून का तअल्लुक़ नेकी के साथ वाबस्ता है--

कितनी तसकीन वाबस्ता है तेरे नाम के साथ
नींद कांटों पे भी आ जाती है आराम के साथ

जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ ध्यान न रहा, गुनाहों में उलझ गए, तो अल्लाह ऐसे लोगों को सुकून से महरूम कर देते हैं, गुनाह करते हैं मज़े लेने के लिये और उल्टा गुनाह करके परेशान हो जाते हैं, तो गुनाहों की एक तासीर तो यह कि इंसान का दिल परेशान

रहता है।

गुनाह की वजह से नेकी की तौफ़ीक़ छीन ली जाती है

और दूसरी बात यह कि गुनाह की वजह से इंसान से नेकी की तौफ़ीक़ छीन ली जाती है, नमाज़ पढ़ने को दिल नहीं चाहता, दुआ मांगने को दिल नहीं चाहता, फ़ज्र में नहीं जाता, पर्दा करना बोझ नज़र आता है, झूट पे झूट बोलने पड़ते हैं, चुनांचे दीन में पाबंदियां ही पाबंदियां नज़र आती हैं, इंसान परेशान होता है कि क्यों मेरी तबीअ़त शरीअ़त की तरफ़ माइल नहीं होती, इसकी बुन्यादी वजह यह है कि गुनाहों की ज़ुल्मत इंसान को नेकी की तौफ़ीक़ से महरूम कर देती है, तिलावत करने बैठें तो आधा सफ़्हा पढ़ के थक जाते हैं, वैसे टी वी देखने बैठें तो घंटों बैठे हैं, फ़िल्में देख रहे हैं, ड्रामे देख रहे हैं, गाने सुन रहे हैं, घंटों तबीअ़त ठीक रहती है, लेकिन मुसल्ले पे आके खड़ा होना मुसीबत नज़र आता है, यह गुनाह की ज़ुल्मत है कि इंसान से नेकी की तौफ़ीक़ छीन ली जाती है। इसलिये हमें चाहिये कि हम गुनाहों को छोड़ कर नेकूकारी की ज़िंदगी गुज़ारने का अहद करें।

इब्ने तैमिया रह0 ने अपनी किताब "الايمان الاوسط" में दस वजूहात लिखी हैं, जिस से इंसान के गुनाह मुआफ़ होते हैं, उम्मीद है कि मस्तूरात इन दस वजूहात को तवज्जो के साथ सुनेंगी और कोशिश करेंगी कि जितने गुनाह बख़्शवा सकें उतना बेहतर है।

गुनाह बख़्शवाने वाली पहली चीज़ः तौबा

सबसे पहली चीज़ जिससे गुनाह मुआफ़ होते हैं उसको "तौबा" कहते हैं, तौबा का मतलब होता हैः "تَنْزِيْهُ الْقَلْبِ عَنِ الذَّنْبِ" कि इंसान दिल को गुनाहों से ख़ाली कर ले, दिल में गुनाह की हसरत न रहे, दिल में गुनाह की चाहत न रहे, दिल पाक हो जाए, पहले दिल

पाक होगा फिर गुनाहों से इंसान का छुटकारा होगा, अहद करे कि अल्लाह! मैंने आइंदा गुनाह नहीं करना है, यह तौबा Delete command (मिटाने का बटन) के मानिंद है, जिस तरह आप के मोबाइल पे Message (पैग़ाम) आया और आप ने Delete (मिटाना, कलअ़दम कर देना) कर दिया तो ऐसे हो जाता है जैसे कि था ही नहीं, इसी तरह तौबा कर लेने से इंसान के किये हुए तमाम गुनाह Delete (मिट जाना) हो जाते हैं, नामए आमाल से ही ख़त्म कर दिये जाते हैं। हदीसे पाक में नबी सल्ल० ने इर्शाद फ़रमायाः "اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَا ذَنْبَ لَهٗ" कि गुनाह से तौबा करने वाला ऐसे होता है जैसे उसने गुनाह किया ही नहीं है।

तौबा, हर इंसान के लिये ज़रूरी है

और यह तौबा हर बंदे को करनी चाहिये, काफ़िर है तो कुफ़्र से तौबा करे, आम मुसलमान है तो गुनाहे कबीरा से तौबा करे, अगर कोई कहे कि मैं तो गुनाहे कबीरा नहीं करता तो वह ग़फ़लत से तौबा करे कि वक़्त ग़फ़लत में गुज़र जाता है, अगर कोई कहे कि मैं अल्लाह से ग़ाफ़िल भी नहीं होता तो उसको भी चाहिये कि वसाविसे नफ़सानी और शैतानी से तौबा करे, नेक लोगों को भी शैतानी नफ़सानी वसावसे आते रहते हैं, हत्ता कि दौराने नमाज़ भी आ जाते हैं, अगर कोई बंदा यह दावा करे कि मेरी जमइयत हुज़ूरी इतनी हो गई कि मुझे नफ़सानी ख़्वाहिशात और शह्वात भी परेशान नहीं करतीं, तो उसको चाहिये कि अपने इख़्लास की कमी पे तौबा करे, कोई बंदा यह दावा नहीं कर सकता कि मैं पूरे इख़्लास के साथ इबादत कर रहा हूं, जब अल्लाह के हबीब सल्ल० ने फ़रमा दियाः "مَا عَبَدْنَاكَ حَقَّ عِبَادَتِكَ" ऐ अल्लाह! हमने आप की इबादत नहीं की जैसे कि करनी चाहिये थी, तो दुनिया का कौन इंसान है जो यह

सोचे कि मैंने तो इबादत का हक़ अदा कर दिया, इसलिये इख़्लास की कमी पर तो सब को तौबा करनी चाहिये। मालूम हुआ कि नेक हो या बुरा हो, हर बंदे को अपने हाल के मुनासिब तौबा करनी चाहिये।

किसी भी गुनाह का छूटना नामुम्किन नहीं

यहां एक सवाल पैदा होता है कि बअ़ज़ गुनाह ऐसे होते हैं कि कोशिश के बावजूद नहीं छूटते, जो नौजवान गुनाह में फंसे होते हैं वह सोचते हैं कि हम तो उसको छोड़ ही नहीं सकते, तो भाई! हमारे लिये छोड़ना मुश्किल है, अल्लाह तआला के लिये छुड़वा देना आसान है, हम अल्लाह तआला की रहमत पे उम्मीद रखें और दुआ मांगें कि ऐ परवरदिगार! आप हमें गुनाह की ज़िल्लत से बचा लीजिये, आप हमें ताआत की इ़ज़्ज़त अता फ़रमा दीजिये। और सच्ची बात तो यह है कि जब नुक़्सान का डर होता है तो फिर इंसान आसानी के साथ गुनाहों को छोड़ देता है। मिसाल के तौर पर बिच्छू के काटने का डर होता है तो कोई भी क़रीब नहीं जाता, सांप का डर होता है तो कोई भी क़रीब नहीं जाता, बिजली का डर होता है कोई भी उसको उंगली नहीं लगाता, आग से डर होता है हर बंदा दूर रहता है, तो जिस तरह देखने में सांप कितना खूबसूरत है, मगर हमने कभी भी उसको नहीं पकड़ा, इसलिये कि हम समझते हैं कि सांप को अगर पकड़ लिया तो मौत हो जाएगी, इसी तरह मोमिन के दिल में यह यक़ीन आ जाता है कि अगर मैंने कबीरा गुनाह कर लिया तो मेरी रूहानी मौत वाक़ेअ़ हो जाएगी। इस तरह इंसान गुनाहों के तक़ाज़े को दबा सकता है और नेकी की ज़िंदगी गुज़ार सकता है।

गुनाह बख़्शवाने वाली दूसरी चीज़ः इस्तिग़फ़ार

दूसरा अमल जिससे कि इंसान के गुनाह मुआफ़ होते हैं

''इस्तिग़फ़ार'' है, कि इंसान अपने गुनाहों पे नादिम हो, जितना इस्तिग़फ़ार करेगा उतना गुनाह ज़्यादा बख़्शने जाएंगे, यह इस्तिग़फ़ार अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को बड़ा महबूब है और इसकी वजह से इंसान को बड़ी नेअ़मतें मिलती हैं। चुनांचे सय्यदना हसन रज़ि0 के पास एक नौजवान आया कहने लगाः हज़रत! मैं बड़ा गुनहगार हूं, कोई अमल बता दीजिये, फ़रमायाः इस्तिग़फ़ार करो, एक नौजवान आयाः हज़रत अर्से से बारिश नहीं हुई, कोई अमल बता दीजिये, फ़रमाया इस्तिग़फ़ार करो, एक तीसरा नौजवान आयाः हज़रत! मैं बड़ा ग़रीब हूं, रिज़्क़ की तंगी है, कोई अमल बता दीजिये, फ़रमायाः इस्तिग़फ़ार करो, एक नौजवान आया कि मैं बे औलाद हूं दुआ कीजिये कि मुझे औलादे नरीना मिल जाए, फ़रमायाः इस्तिग़फ़ार करो, अब नौजवान आया कि मेरा बाग़ है, दुआ कीजिये कि फल अच्छा मिले, फ़रमायाः इस्तिग़फ़ार करो, एक आदमी आयाः दुआ कीजिये कि मेरे घर से पानी का कुंवां निकल आए, चशमा निकल आए, फ़रमायाः इस्तिग़फ़ार करो, सुनने वाला हैरान हुआ कि हर बंदे ने मुख़्तलिफ़ तक़ाज़े सामने रखे, मगर हज़रत ने अमल एक ही बताया, तो उसने पूछा कि हज़रत! यह क्या कि हर काम के जवाब में आपने इस्तिग़फ़ार ही बताया, हसन रज़ि0 ने फ़रमाया कि देखो यह मैंने ख़ुद नहीं कहा, बल्कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने क़ुर्आन मजीद में इर्शाद फ़रमायाः "فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ط اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۰ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا۔" तो देखिये! गुनाह भी मुआफ़ होते हैं, इस्तिग़फ़ार से बारिशें भी नाज़िल हाती हैं, "وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ،" अल्लाह माल के ज़रीआ भी मदद करते हैं तो गुर्बत भी ख़त्म होती है "وَّبَنِيْنَ" और अल्लाह तआला बेटे भी अता करते हैं तो बे औलाद लोगों को अल्लाह तआला इस्तिग़फ़ार करने की वजह से औलादे नरीना भी

अता फ़रमाते हैं "وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ" और अल्लाह तआला फल भी अता फ़रमा देते हैं, कारोबार में बरकत और मुनाफ़ा भी दे देते हैं "وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا۔" और अल्लाह तआला चशमे और नहरें भी जारी फ़रमा देते हैं तो देखिये इस्तिग़फ़ार एक अमल है, इसकी वजह से कितनी नेअ़मतें मिल जाती हैं। तो अगर औरतें इस्तिग़फ़ार की कसरत कर लें तो उनको तावीज़ों की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी, अमलियात वालों के पास जाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी, यह कहने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी कि किसी ने कारोबार बांध दिया, किसी ने बेटी का रिशता बांध दिया, बल्कि इस्तिग़फ़ार के सद्क़े अल्लाह यह सब नेअ़मतें अता फ़रमा देंगे।

नेक अमल के बाद भी इस्तिग़फ़ार करना चाहिये

इस्तिग़फ़ार हर बंदे के लिये करना ज़रूरी है, नेकी करे तो भी इस्तिग़फ़ार करे। ज़रा ग़ौर कीजिये कि नबी सल्ल0 जब वजू फ़रमाते थे तो वजू के बाद भी इस्तिग़फ़ार फ़रमाते थे, हालांकि वजू इबादत है और हुक्मे शरीअ़त है कि जो अजू वजू का धोते हैं उसके गुनाह झड़ जाते हैं, तो गुनाह झड़ने वाला अमल है, मगर इसके बाद इस्तिग़फ़ार करते थे, वजू के बाद नबी सल्ल0 पढ़ते थे: "أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ" नमाज़ कितनी अज़ीम इबादत है कि जो आदमी पाबंदी से नमाज़ पढ़ता है अल्लाह तआला उसके गुनाह इस तरह मिटाते हैं जिस तरह पांच मर्तबा गुस्ल करने वाले के जिस्म से मैल मिटा दी जाती है, लेकिन नमाज़ के बाद भी नबी सल्ल0 इस्तिग़फ़ार फ़रमाते थे। हदीसे पाक में है कि नबी सल्ल0 जब सलाम फैरते तो फ़रमाते: "الله أكبر، أستغفر الله، أستغفر الله، أستغفر الله" इसका क्या मतलब कि बंदे ने तो इबादत की फिर इसके बाद इस्तिग़फ़ार कर रहा है? तो उलमा ने कहा कि इसका मतलब यह है

कि ऐ अल्लाह! मैंने अपनी तरफ़ से तो इबादत की मगर यह उस मेअ़यार की नहीं हुई जो आप की शान के मुताबिक़ हो, लिहाज़ा यह इबादत अब जैसी भी है इसको रद्द न कीजिये, अल्लाह! पिलीज़ क़बूल कर लीजिये, पिलीज़ क़बूल कर लीजिये, तो तीन मर्तबा इस्तिग़फ़ार का मतलब है कि हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने आजिज़ी कर रहे होते हैं कि जैसी भी इबादत है उसको क़बूल फ़रमा लीजिये। तहज्जुद के बाद इस्तिग़फ़ार "كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ۔ وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ۔" तहज्जुद के वक़्त भी अल्लाह वाले इस्तिग़फ़ार करते हैं। हज कितनी बड़ी इबादत है कि इंसान इस तरह गुनाहों से पाक हो जाता है जैसे उस दिन पाक था जब उसकी मां ने उसको जना था, लेकिन क़ुर्आन मजीद में फ़रमायाः "ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ط" कि तुम हज के बाद भी इस्तिग़फ़ार करो। नबी सल्ल0 की मुबारक ज़िंदगी कितनी खूबसूरत इबादत वाली ज़िंदगी थी, फूलों से ज़्यादा पाकीज़ा ज़िंदगी थी, मगर अल्लाह तआला अपने हबीब सल्ल0 को फ़रमाते हैं: "فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ" आप भी अल्लाह की हम्द कीजिये और इस्तिग़फ़ार कीजिये, वह पाकीज़ा ज़िंदगी जिसके ऊपर पाकीज़गी को नाज़ है, अल्लाह तआला उनको भी फ़रमाते हैं कि इस्तिग़फ़ार कीजिये, लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम में से हर बंदा कसरत से इस्तिग़फ़ार करे, استغفر اللّٰه استغفر اللّٰه जितना भी पढ़ सकती हैं पढ़ें और अगर पूरा पढ़ें "استغفر اللّٰه ربّی من کلّ ذنبٍ وّاتوب الیه" तो और भी ठीक है।

गुनाह बख़्शवाने वाली तीसरी चीज़ः नेक आमाल

तीसरा अमल "اَلْحَسَنَاتُ الْمَاحِيَةُ" कि इंसान जो नेक आमाल करता है उनकी वजह से उसके गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं, नमाज़ से

गुनाह धुल जाते हैं, सद्क़ा ख़ैरात करने गुनाह धुल जाते हैं, जो भी इंसान नेकियां करता है उसके गुनाह धुल जाते हैं। हदीसे पाक में फ़रमायाः "اَلْإِسْلَامُ يَهْدِمُ مَا كَانَ قَبْلَهُ" कि जो बंदा इस्लाम ले आता है तो कलिमा पढ़ने से पिछली ज़िंदगी के सारे गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं। एक जगह फ़रमाया कि हज करने से ज़िंदगी के सारे गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं। एक हदीसे पाक में आयाः अल्लाह के लिये हिज्रत करते तो पिछली ज़िंदगी के सारे गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं। बनी इस्राईल की एक फ़ाहिशा औरत थी, उसने प्यासे कुत्ते को देखा तो उसने उसको पानी पिलाया, प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने पर फ़ाहिशा औरत कु गुनाहों को मुआफ़ कर दिया गया।

धोकाबाज़ शैतान मरदूर के धोका में न आएं

यहां पर शैतान एक धोका देता है, दिल में यह डालता है कि तुम तो बेपर्दा फिरती हो, तुम्हारी नमाज़ों का क्या फ़ाएदा? यह बहुत बड़ा धोका है, याद रखिये! बेपर्दा फिरना गुनाह अपनी जगह है, नमाज़ पढ़ने की नेकी अपनी जगह, क्या पता नमाज़ की पाबंदी से अल्लाह पर्दे की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे, मगर शैतान कहता है: तुम मदरसा में पढ़ती हो और तुम्हारे ज़ह्नी ख़्यालात अच्छे नहीं, तो पढ़ने का क्या फ़ाएदा? लिहाज़ा अगर हम गुनाहों को नहीं छोड़ पा रहे हैं तो नेकी करना भी तो न छोड़ें, नेक आमाल नहीं छोड़ने चाहिये, कपड़ा ज़्यादा मैला हो तो साबुन ज़्यादा लगाने की ज़रूरत होती है, यह तो नहीं कि साबुन थोड़ा है, धोने का क्या फ़ाएदा, भाई! जितना साबुन है उतनी मैल तो ख़त्म होगी, फिर और साबुन का बंदोबस्त हो जाएगा, तो इंसान नेकी न छोड़े, बल्कि गुनाह छोड़े, शैतान के इन ख़्यालात की वजह से या लोगों के तअ्ने की वजह से नेकी को छोड़ देना यह शैतान का काम है, तो हरगिज़ नेकी नहीं

छोड़नी चाहिये, नेकी के ऊपर जमे रहना चाहिये, बल्कि अगर गुनाह ज़्यादा हो रहे हैं तो उनको बख़्शवाने के लिये नेकी भी ज़्यादा करनी चाहिये, ज़्यादा तिलावत करनी चाहिये, तहज्जुद बाक़ाइदगी से पढ़ें, दुआएं लम्बी मांगें, लोगों के साथ हुस्ने सुलूक के साथ रहें, ताकि उन गुनाहों की ज़ुल्मत ख़त्म हो जाए, यह चीज़ें गुनाहों को मिटा देते हैं। चुनांचे हदीसे पाक में है कि दो मुसलमान जब आपस में मिलते हैं, एक दूसरे को Shake hand (मुसाफ़हा) करते हैं तो उनके हाथ अलग करने से पहले उनके गुनाह इस तरह झड़ते हैं जैसे पतझड़ के मौसम में दरख़्तों के पत्ते झड़ जाते हैं। लिहाज़ा औरतें औरतों से सलाम करें, मर्द मर्दों से सलाम करें, तो यह फ़ज़ीलत मिल सकती है।

गुनाह बख़्शवाने वाली चौथी चीज़: दूसरों के लिये दुआ करना

चौथा अमल जिससे कि इंसान के गुनाह मुआफ़ होते हैं वह है: "دُعَاءُ الْمُؤمِنِيْنَ لِلْمُؤمِنِ" ईमान वालों का एक दूसरे के लिये दुआ करना, नमाज़ पढ़ें तो अपने लिये भी दुआ मांगें,. अपने वालिदैन के लिये, घर वालों के लिये, रिशतेदारों के लिये, पड़ोसियों के लिये, ईमान वाले जितने भी हैं पूरी उम्मत के लिये दुआ मांगें, इसलिये हमें कुर्आन मजीद में दुआ सिखाई गई: "رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ" ऐ अल्लाह! हमारी भी मग़फ़िरत फ़रमा और हम से पहले जो ईमान वाले गुज़र गए उनकी भी मग़फ़िरत फ़रमा। हदीसे पाक में है: "مَامِنْ رَجُلٍ مُسْلِمٍ يَمُوْتُ فَيَقُوْمُ عَلٰى جَنَازَتِهٖ أَرْبَعُوْنَ رَجُلًا لَا يُشْرِكُوْنَ بِاللّٰهِ شَيْئًا اِلَّا شَفَّعَهُمُ اللّٰهُ فِيْهِ" कि अगर कोई आदमी फ़ौत हो जाए और उसका जनाज़ा चालीस ऐसे बंदे पढ़ें जो ईमान वाले हों तो उनके जनाज़ा पढ़ाने की वजह से अल्लाह मय्यत के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देते हैं, तो एक दूसरे के लिय दुआ करते

रहना चाहिये, दुआ के लिये कहना भी चाहिये, जब उमर रज़ि0 उम्रे के लिये जा रहे थे तो हदीसे पाक में है कि नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः ऐ भाई! हमें अपनी दुआओं में न भूलना, लिहाज़ा हम भी दुआओं के लिये कहें, उस्ताज़ को, मां बाप को, अपने बड़ों को कि वह हमारे लिये दुआ करें और मज़े की बात तो यह है कि हम इतने अच्छे नहीं कि मां बाप की दुआएं लेने वाले बन जाएं, यह दुआ इंसान की ज़िंदगी का सरमाया होती है।

गुनाह बख़्शवाने वाली पांचवीं चीज़ः मय्यत के लिये ईसाले सवाब करना

पांचवीं चीज़ जिससे कि इंसान के गुनाह मुआफ़ होते हैं: "مَا يُعْمَلُ لِلْمَيِّتِ مِنْ أَعْمَالِ الْبِرِّ" कि अगर कोई बंदा फ़ौत हो जाए उसकी तरफ़ से जो नेक आमाल किये जाते हैं तो इसकी वजह से उस मय्यत के गुनाह मुआफ़ होते हैं, मसलन वालिदैन की तरफ़ से हज किया, उम्रा किया, क़ुर्आन की तिलावत कर के उनको बख़्श किया, यतीम की परवरिश की, उनके नाम की नियत करके, उनके नाम पर मदरवा बनवाया, मस्जिद बनवाई, मेहमान ख़ाना बनवाया, किसी ग़रीब की बच्ची शादी में Help (मदद) कर दी तो यह जिने भी नेक आमाल हैं उनका सवाब जो फ़ौत हो चुके हैं उनको पहुंच जाता है।

हज़रत शैख़ुल हदीस रह0 ने लिखा है कि एक अल्लाह वाले थे, वह क़ब्रिस्तान के क़रीब से गुज़रे, उन्होंने कुछ पढ़कर उनको बख़्श दिया, रात को उन्होंने ख़्वाब देखा कि उस क़ब्रिस्तान के सारे मौता इकट्ठे हैं और एक बंदा आता है, उसके पास एक घड़ी है, वह खोलता है तो सारे मय्यत उसकी तरफ़ भागते हैं, एक बंदा अपनी जगह बैठा रहता है, तो उसने उस से पूछा कि क्या यह मुआमला है?

उसने बताया कि देखो यह जो ईमान वालों की दुआएं होती हैं यह एक डाक हमें रोज़ाना पहुंचती है और हर मय्यत की तमन्ना होती है कि मेरी डाक ज़्यादा से ज़्यादा मुझे मिल जाए तो यह अपना हिस्सा लेने के लिये भागते हैं, उसने पूछा आप क्यों नहीं भागे? उसने कहा मेरा एक नौजवान बेटा है जो हाफ़िज़े कुर्आन वह फ़लां बाज़ार में दूकान करता है, और जब गाहक नहीं होते तो बैठ के कुर्आन पढ़ता रहता है, तो मुझे रोज़ाना इतना कुर्आन पढ़ने का सवाब मिल जाता है कि मुझे कोई जल्दी नहीं रहती, सब अपना अपना हिस्सा ले लेंगे तो फिर मैं भी जाके ले लूंगा। आंख खुल गई, उस बंदे ने सोचा कि मैं जा के देखूं तो सही, उस बाज़ार में गया, जाके देखा कि एक नौजवान है, दूकान पे बैठा है, गाहक होते हैं तो वह अपनी चीज़ें बेचता है, गाहक नहीं होते तो वह ज़ेरे लब कुर्आन पढ़ रहा है, यह समझ गए कि मेरा ख़्वाब सच्चा था। अल्लाह की शान कि बहुत सालों के बाद फिर उस क़ब्रिस्तान के क़रीब से गुज़रना पड़ा, उन्होंने फिर कुछ पढ़ के बख़्श दिया, रात को ख़्वाब में देखा कि मौता हैं और कोई डाक लाता है और सब अपना हिस्सा लेने के लिये भागते हैं, और इस दफ़ा बंदा भी भागता है जो पहले बैठा हुआ था, उन्होंने उससे पूछा कि क्या हुआ? उन्होंने कहा कि मेरा वह हाफ़िज़े कुर्आन फ़ौत हो गया, अब कोई नहीं जो मुझे इस तरह कुर्आन पढ़के बख़्शे, अब आम मोमिनों की दुआ में जो मेरा हिस्सा है मैं भी वही हिस्सा लेने के लिये जा रहा हूं। इसलिये अपने बेटियों को बेटों को कुर्आन का हाफ़िज़ बनाना, आलिम बनाना, नेक बनाना, यह चीज़ इंसान को आख़िरत में भी काम आ जाती है।

गुनाह बख़्शवाने वाली छटी चीज़ः मुसीबतों पर सब्र करना

छटी चीज़ जिससे गुनाह मुआफ़ होते हैं: "اَلْمَصَائِبُ الَّتِیْ یُکَفِّرُ

"الـلّـهُ بِهَـا الخَطَايَا فِى الدُّنيَا" मोमिन को दुनिया में जो भी तकलीफ़ पहुंचती है, जो भी मुसीबत मिलती है, उस मुसीबत की वजह से अल्लाह तआला गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देते हैं, बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है: "مَـا يُصِيبُ الْمُؤمِنَ مِنْ وَصَبٍ وَلَا نَصَبٍ وَلَا حُزنٍ اِلَّا كَـفَّـرَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ خَطَايَاهُ" कि इंसान को इस दुनिया में जो मुसीबत मिलती है, जो थकावट हो जाती है, जो ग़म मिलता है, जो परेशानी मिलती है, अल्लाह हर चीज़ के बदले उसके गुनाह को मुआफ़ कर देते हैं। आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 बैठी हुई थीं, चिराग़ जल रहा था, हवा का झोंका आया और चिराग़ बुझ गया, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "اِنَّا لِـلّٰـهِ وَاِنَّـآ اِلَيـهِ رٰجِـعُـوْنَ" तो आइशा रज़ि0 बड़ी हैरान हुई कि ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! चिराग़ के बुझने पर आप ने यह पढ़ा? तो फ़रमाया कि हां, मोमिन को छोटी सी भी अगर कोई मुसीबत पहुंचे और वह اِنَّـا لِلّٰـهِ पढ़ ले तो अल्लाह उस पर भी अज्र अता फ़रमाते हैं। आप ज़रा सोचिये कि जिस मोमिन को चिराग़ के बुझ जाने पे अज्र मिलता है, अगर कोई क़रीबी अज़ीज़ फ़ौत हो जाए, उसकी ज़िंदगी का चिराग़ बुझ जाए और वह सब्र कर ले तो उस पर कितना अज्र मिलेगा?

उलमा ने लिखा है कि एक बंदे की दो जेबें थीं, उसने एक में अपनी घड़ी डाली, निकालने के लिये दूसरी जेब में हाथ डाला, तो घड़ी नहीं थी, तो एक दम उसको Shock लगा, ज़ह्नी सद्मा हुआ कि मेरी घड़ी क्या हुई, अगर्चे उसको दूसरी जेब से मिल भी गई, लेकिन यह जो थोड़ी देर की परेशानी मिली अल्लाह उस पर भी अज्र अता फ़रमा देते हैं, तो मोमिन को तो हर चीज़ पे अज्र, इसलिये हमें करना चाहिये सब्र। शैतान बदबख़्त सब्र ख़त्म कर देता है, हर चीज़ पे एतिराज़, हर चीज़ पे झगड़ा, हर चीज़ पे नापसंदीदगी, इससे अज्र

ही ख़त्म हो जाती है, घरों के अंदर अगर औरतों को सब्र के साथ रहने की आदत पड़ जाए तो घरों के झगड़े ही ख़त्म हो जाएं, कितनी औरतें हैं, जिनको ख़ाविंदों ने मुसीबत में डाल रखा होता है, कितने मर्द हैं, जिनको बीवियों ने मुसीबत में डाल रखा होता है, कितनी बहूएं हैं जिनका सास ने जीना हराम कर रखा होता है, कितनी सासें हैं कि बहू ने उनका जीना हराम किया होता है, यह तो अजीब व ग़रीब हालात होते हैं, बहरहाल जिसने भी जिसको परेशान किया हो, अगर अगला बंदा सब्र के साथ रहे तो उसके गुनाह मुआफ़ होंगे, लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम सब्र के साथ रहें और अपने को अज्र से न महरूम होने दें। बेसब्री से मुसीबत तो ख़त्म नहीं होती, हां मुसीबत पे मिलने वाला अज्र चला जाता है।

एक औरत का सब्रे जमील

कैसी कैसी औरतें सब्र वाली थीं, एक वाक़िआ सुन लीजिये, एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं तवाफ़ कर रहा था, एक औरत को मैंने देखा कि वह कह रही थी कि अल्लाह! मैं इस हाल में भी तुझसे राज़ी हूं, मैं उस हाल में भी तुझ से राज़ी हूं, वह फ़रमाते हैं कि मैंने पूछा कि ऐ ख़ातून! तेरे साथ क्या मुआमला पेश आया? वह कहने लगी कि मैं अपने घर में थी, मेरे छोटी उम्र के तीन बच्चे थे, घर में मैं रोटियां बना रही थी, मेरे दो बच्चे खेल रहे थे और एक छोटा बच्चा मेरे क़रीब रेंग रहा था, वह भी खेल रहा था, तो अचानक मुझे कमरे से एक ज़ोर की आवाज़ आई, मैंने जब जाकर देखा तो असल में घर में एक छुरी थी, जो काफ़ी तेज़ थी, वह कहीं बच्चों के हाथ आ गई तो बच्चों में से एक ने दूसरे भाई को कहा कि तुम्हें पता है कि यह छुरी कितनी तेज़ होती है? उसने कहा नहीं, तो उस बच्चे ने नादानी में छोटे भाई के गले पे छुरी चला दी और उसका Wind

pipe (सांस की नली) कट गया, अब जब वह बच्चा तड़पने लगा तो यह भी परेशान कि यह क्या हुआ, वह औरत कहती है कि जब मैं वहां पहुंची तो मैंने देखा कि मेरा बेटा आख़िरी सांस ले रहा था, मैंने उसकी लाश उठाई और सिहन के अंदर चारपाई पे लाके डाल दिया, फिर मैं फ़िक्रमंद हुई कि मेरा दूसरा बेटा गया कहां? नज़र नहीं आ रहा है, मैं ढूंढने लगी, अब वह बच्चा डर के मारे छिप गया था, हमारे सिहन के अंदर लड़कियां रखी हुई थीं, वह उसके पीछे छिपा था, जब मैंने देखा तो वहां पर एक सांप था जिसने उस बच्चे को काटा और वह बच्चा भी वहां मरा पड़ा था, कहने लगी कि मैं उसकी लाश भी उठा के ले आई और उसको लाके पहले बच्चे के साथ बिस्तर पे लुटाया, फिर मैंने महसूस किया कि मेरा तीसरा छोटा बच्चा कहां, वह तो उधर खेल रहा था, कहने लगी कि जब मैं क़रीब आई तो मैंने देखा कि वह छोटा बच्चा रेंगते रेंगते तनूर के अंदर जा गिरा, मैंने उसकी जली हुई लाश निकाली, तीनों बच्चों को लुटाया, उनको नहलाया, उनको कफ़नाया फिर उनकी तदफ़ीन का अमल हुआ, और मैं उम्रा करने आ गई और मैं अपने अल्लाह से कह रही हूं कि अल्लाह! मैं इस हाल में भी तुम से राज़ी हूं। जिस परवरदिगार ने बेटों की नेअ़मतें दीं उसी पर परवरदिगार ने मुझ से वापस लिया, तो सोचिये कि इन मुसीबतों की हालत में भी सब्र करने वाले सब्र करते हैं।

हदीसे मुबारक है नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं क़्यामत के दिन जब जन्नत में जाने लगूंगा, तो एक औरत होगी जो मेरे साथ साथ जन्नत में दाख़िल होगी, यूं लगेगा कि जैसे यह मुझ से भी पहले दाख़िल होना चाहती है, तो मैं फ़रिश्तों से पूछूंगा कि यह औरत कौन है? तो मुझे बताया जाएगा कि यह आप की उम्मत की एक बेवा

औरत है, उसके बारह बच्चे थे और एक एक बच्चा बचपन के अंदर फ़ौत होता गया, यह आंसू रोक लेती थी, ग़म को पी जाती थी, उसने अपनी ज़िंदगी में बारह बच्चों को नहलाया, कफ़ना के दफ़न के लिये भेजा, इन मुसीबतों पर सब्र करने की वजह से अल्लाह ने उस मां को उतना ऊंचा दर्जा दिया कि यह जन्नत में नबी सल्ल0 के बिल्कुल पीछे पीछे दाख़िल होती है, तो हमें ज़िंदगी में जो भी मुसीबतें और परेशानियां मिलें हम सब्र कर लें, बर्दाश्त कर लें, यह है ही दुनिया, यहां सब्र ही करना पड़ता है "إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ" अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है, ग़म मांगें नहीं, अल्लाह से आफ़ियत मांगें, लेकिन अगर ग़म आ जाए तो सब्र किया करें, ताकि सब्र का अज्र ज़ाए न हो।

गुनाह बख़्शवाने वाली सातवीं चीज़ः ज़ग़तए क़ब्र

सातवीं चीज़ जिससे कि इंसान के गुनाह मुआफ़ होते हैं "مَا يَحْصُلُ فِى الْقَبْرِ مِنَ الْفِتْنَةِ والضَّغْطَةِ وَالرَّوْعَةِ" इंसान जब फ़ौत होगा और क़ब्र में जाएगा तो क़ब्र के अंदर उसको ज़ग़तए क़ब्र पेश आएगा, "ज़ग़तए क़ब्र" उसको कहते हैं कि क़ब्र की दीवारें मिलती हैं और बंदे को Press (दबाना, भींचना) करती हैं, अगर वह गुनहागार हो तो फिर तो इतना दबाती हैं कि दाईं तरफ़ की पसलियां बाईं तरफ़ और बाईं तरफ़ की पसलियां दाईं तरफ़ हो जाती हैं, इतनी तकलीफ़ होती है, इसको ज़ग़तए क़ब्र कहते हैं और यह ज़ग़तए क़ब्र नेकों को भी पेश आएगा और बुरों को भी पेश आएगा। आप हैरान होंगी कि नेकों को क्यों पेश आएगा? नबी सल्ल0 के एक सहाबी सअ़द रज़ि0 फ़ौत हुए तो नबी सल्ल0 ने उनका जनाज़ा पढ़ाया और जब क़ब्रिस्तान की तरफ़ चलने लगे तो अल्लाह के हबीब सल्ल0 पंजों के बल चल रहे थे, एक सहाबी ने पूछा कि ऐ अल्लाह के

हबीब सल्ल0! आप पंजों के बल क्यों चल रहे? आप सल्ल0 ने फ़रमाया कि सअ़द की नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत के लिये इतने फ़रिशते आसमान से उतर आए कि मुझे पांव रखने की जगह नहीं मिल रही है, दूसरी बात नबी सल्ल0 ने फ़रमाई कि सअ़द की मौत पर अल्लाह का अर्श भी तीन दिन तक रोता रहा, यह वह सहाबी रज़ि0 हैं कि जिनकी वफ़ात पर अल्लाह का अर्श भी तीन दिन रोया, ऐसी शख़्सियत थी, मगर अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने फ़रमायाः सअ़द को भी ज़ग़तए क़ब्र पेश आया, तो मालूम हुआ कि ज़ग़तए क़ब्र तो हर एक को पेश आएगा।

हर एक को ज़ुग़तए क़ब्र पेश आने की वजह

तो सवाल पैदा होता है कि अगर नेक हैं तो क्यों पेश आएगा? तो सुन लीजिये कि दुनिया के अंदर जो हमने अल्लाह की नेअ़मतें खाईं, लज़्ज़तें उठाईं, कपड़े पहने, बन संवर के रहे, आसान पुरसुकून ज़िंदगी मिली, इअर कंडीशन कमरे, ख़ूबसूरत महल नुमा घर, गाड़ियों के सफ़र तो यह जितनी अल्लाह की नेअ़मतें हैं उनकी भी तो क़ीमत Pay (अदा) करनी होती है। इसकी मिसाल यूं समझें, आप अगर किसी Restaurant (होटल) पे खाना खाने के लिये जाती हैं तो अपनी मर्ज़ी की डिशिज़ तो मंगाती हैं, लेकिन जब उठने लगती हैं तो बिल तो Pay करना पड़ता है, इसी तरह हम अल्लाह से दुनिया में नेअ़मतें तो मांगते हैं और अल्लाह नेअ़मतें दुनिया में दे भी देते हैं, मगर इन नेअ़मतों की Payment (अदाइगी) भी तो करनी होती है, तो यह ज़ुग़तए क़ब्र मोमिन के लिये इन नेअ़मतों की अदाइगी होती है। इसी लिये ग़रीब होंगे तो ज़ुग़तए क़ब्र थोड़ा होगा, अमीर होंगे तो ज़ुग़तए क़ब्र ज़्यादा होगा, क्योंकि उसने ज़्यादा नेअ़मतों को इस्तेमाल किया, जितनी ज़िंदगी की लज़्ज़तें होंगी उनके

Proportional (तक़ाबुल में) ज़ग़तए क़ब्र पेश आएगा, तो ज़ग़तए क़ब्र तो हर को पेश आना है।

मोमिन और काफ़िर के ज़ग़तए क़ब्र में फ़र्क़

हां मोमिन के ज़ग़तए क़ब्र में और काफ़िर के ज़ग़तए क़ब्र में एक फ़र्क़ है, वह यह कि फ़र्ज़ करो आप का हाथ दरवाज़े में आ गया, Press (दब जाना) हुआ तो तकलीफ़ हुई, कई दिन तक तकलीफ़ नहीं जाती तो यह भी हाथ का दब जाना है, और कई मर्तबा आपके सर में दर्द होता है, आप बेटी को कह देती हैं कि बेटी ज़रा सर दबाओ, तो बेटी भी सर दबाती है, मगर उसके दिहाने से राहत होती है, तो दबाना तो दोनों को कहेंगे, पांव भी दबा, हाथ भी दबे, मगर वह तकलीफ़ का बाइस बने, सर भी दबाया गया, मगर राहत का बाइस बना, तो दुनिया में जो फ़ासिक़ फ़ाजिर होंगे या काफ़िर होंगे, उनको क़ब्र में जो ज़ग़ता पेश आएगा वह तो पसलियां दबा कर तकलीफ़ पहुंचाने वाला होगा, मोमिन को जो ज़ग़तए क़ब्र पेश आएगा वह होगा दर्दे सर की हालत में सर को दबाने वाला, वह उल्टा राहत का सबब बनेगा और जो छोटे मोटे गुनाहों के मैल होंगे, अल्लाह उनको भी ख़त्म फ़रमा देंगे, तो ज़ग़तए क़ब्र को बहाना बना के अल्लाह रहे सहे गुनाहों को भी मुआफ़ कर देंगे।

गुनाह बख़्शवाने वाली आठवीं चीज़ः क़यामत की सख़्तियां

आठवीं चीज़ जिससे गुनाह मुआफ़ होते हैं "أَحْوَالُ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَكَرْبُهَا وَشَدَائِدُهَا" फ़रमायाः क़यामत के दिन जब इंसान अल्लाह के सामने खड़े होंगे तो उस वक़्त बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ की हालत होगी, अंबिया अलै० भी नफ़्सी नफ़्सी पुकारते होंगे और लोग भी उस वक़्त परेशान होंगे, हर इंसान अपने गुनाहों के बक़द्र पसीने में डूबा हुआ होगा, कोई टख़्नों तक पसीने में डूबा होगा, कोई घुटनों तक पसीने

में, कोई कमर तक, कोई गले तक, मगर यह पसीना यह आम पसीना नहीं होगा, हदीसे पाक में फ़रमायाः यह ऐसा पसीना होगा कि जैसे पानी के अंदर आलू उबल रहा होता है, अंडा उबल रहा होता है, इंसान अपने पसीने के अंदर उबल रहा होगा, उस वक़्त सूरत की गर्मी इंतिहा पर होगी, पसीना होगा, ख़ौफ़ होगा, जहन्नम जोश में आएगी और शोले उड़ेंगे, अंगारे पहाड़ों के बराबर बड़े होंगे, और जब वह ऊपर उड़ेंगे तो इंसानों पर आकर गिरेंगे, कोई इंसान ऐसा नहीं होगा जिसको यह डर न हो कि कहीं शोला मेरे ऊपर न आ गिरे, हत्ता कि अंबिया अलै0 भी थर्राते होंगे, वह ख़ौफ़ व दहशत और वह वहशत इंसान के गुनाहों के मुआफ़ होने का सबब बन जाएगी। उस दिन की प्यास और उस दिन की नदामत इंसान के लिये गुनाहों से बचाव का सबब बन जाएगी।

गुनाह बख़्शवाने वाली नवीं चीज़ः नबी सल्ल0 की शफ़ाअत

नवीं चीज़ जिससे गुनाह मुआफ़ होंगे "شَفَاعَةُ النَّبِيِّ ﷺ فِي أَهْلِ الذُّنُوبِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ" क़यामत के दिन अल्लाह के हबीब सल्ल0 अपने गुनहगार उम्मतियों फ़रमाएंगे। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः "خُيِّرْتُ بَيْنَ أَنْ يَدْخُلَ نِصْفُ أُمَّتِي الْجَنَّةَ وَبَيْنَ الشَّفَاعَةِ فَاخْتَرْتُ الشَّفَاعَةَ" अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने मुझे Choice (इख़्तियार) दिया, कि ऐ मेरे हबीब! मैं आपकी आधी उम्मत के गुनाहों को मुआफ़ करके जन्नत दे दूंगा, या फिर आप जिनकी शफ़ाअत करें उनको भेजूंगा, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि मैंने शफ़ाअत को पसंद कर लिया, मेरी शफ़ाअत से आधी से ज़्यादा उम्मत जो गुनहागार लोग होंगे, अल्लाह उनको जन्नत अता फ़रमा देंगे। नगी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया कि हर नबी अलै0 को अल्लाह तआला ने एक ऐसी दुआ मांगने का इख़्तियार दिया कि जैसी दुआ

मांगेगे मन व अन क़बूल कर ली जाएगी तो सब अंबिया अलै0 ने दुआएं मांगे। एक सहाबी रज़ि0 ने पूछाः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! आप को भी इख़्तियार मिला? नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः हां मुझे भी अल्लाह तआला ने इख़्तियार दिया, मगर मैंने दुआ मांगी नहीं, मैंने उसको ज़ख़ीरा बना लिया, क़्यामत के दिन जब मेरी उम्मत का हिसाब हो रहा होगा, उस वक़्त मैं वह दुआ मांगूंगा और उस वक़्त तक जन्नत में नहीं जाऊंगा जब तक मेरा आख़िरी उम्मती भी जन्नत में नहीं दाख़िल हो जाएगा, اللہ اکبر کبیرا، लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम की ज़ात बाबरकात पर कसरत से दरूद शरीफ़ पढ़ा करें, उनकी सुन्नतों से अपने आप को मुज़य्यन किया करें, यह क़्यामत के दिन शफ़ाअत उन लोगों को मिलेगी जो नबी सल्ल0 की सुन्नत का एहतिराम करने वाले लोग होंगे। आज औरतों के तबक़े में सुन्नत की पाबंदी बहुत कम है, उनको फ़ैशन अच्छे लगते हैं, उनको यूरप के डीज़ाइन अच्छे लगते हैं, यह बच्चों को भी वही लिबास पहनाना पसंद करती हैं, उनको ज़बान भी वही अच्छी लगती है, छोटे छोट बच्चों को अल्लाह का नाम सिखाने के बजाए अंग्रेज़ी के लफ़्ज़ सिखाती हैं और बच्चा अंग्रेज़ी के लफ़्ज़ बोले तो बड़ा ख़ुश होके समझती हैं कि हमने बड़ा मैदान सर कर लिया, घरों के अंदर देखो तो रसम व रिवाज़ की ज़िंदगी, सुन्नत का शौक़ बहुत कम हो गया, ख़ुश नसीब औरतें होंगी जो अपने घरों को सुन्नत का गुलशन बनाती हैं, अपने बच्चों को सुन्नत लिबास से सजाती हैं, अपने बच्चों को सुन्नत की तालीम देती हैं, दस्तरख़्वान पे खाना सुन्नत के मुताबिक़ खाती हैं, अपने बच्चों को मसनून दुआओं की तालीम देना, सोने से पहले सुन्नत दुआ पढ़ना, जागने के बाद सुन्नत दुआ पढ़ना, अपने बच्चों को सुन्नत का शैदाई बनाना, यह

काम बहुत कम औरतें आज करती हैं, जिस की वजह से क़यामत के दिन नबी सल्ल0 की शफ़ाअत मिलना मुश्किल होगा, अल्लाह के हबीब सल्ल0 फ़रमाएंगेः तुम ग़ैरों के तरीक़े पसंद करती थीं, तुम्हें लिबास उनका पसंद, गुफ़तार उन की पसंद, तरीक़े उनके पसंद थे, मेरे तरीक़े तो तुझे अच्छे ही नहीं लगते थे, मैं आज तेरी क्या शफ़ाअत करूं, उस दिन एहसास होगा कि जिनसे वफ़ा करनी थी हम दुनिया में उनसे जफ़ा कर बैठे, हमने अपने हबीब सल्ल0 के प्यारे तरीक़ों को गले लगाने के बजाए अपने घरों से निकाल दिया।

चुनांचे आप शादी के मौक़ा पर देखिये, हर किसी को खुश करने की कोशिश होती है, हर रिशतादार को खुश कर लेते हैं, अगर कोई रिशतादार नाराज़ भी हो औरतें मर्दों को लेके जाती हैं, उनसे मुआफ़ी मांग लेती हैं, उनसे Sorry (मुआफ़ी लेना) कर लेती हैं कि शादी का मौक़ा है, सबको मना लो, हत्ता कि घर का ड्राइवर नाराज़ होता है तो उसको भी मना लिया जाता है, घर में काम करने वाली औरत अगर नाराज़ होती है उसको भी पैग़ाम भेज देते हैं कि शादी का मौक़ा है, उसको भी बुला लो, सब रूठे हुओं को मना लिया जाता है, जब शादी का वक़्त आता है अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 के तरीक़ों को घर से निकाल दिया जाता है, जिस घर में सब रूठे आ गए उस घर से अल्लाह और उसके हबीब सल्ल0 के तरीक़ों को निकाल दिया, तो फिर हमने तो उनका मुक़ाम न समझा, उनके साथ तो वफ़ा न की, हमने उनके साथ तो फिर दोस्ती न निभाई, हमने तो फिर मन मर्ज़ियां कीं, अगर ज़िंदगी ऐसी गुज़ारेंगे तो फिर क़यामत के दिन अल्लाह के हबीब सल्ल0 की शफ़ाअत कैसे नसीब होगी? आज वक़्त है कि हम सुन्नत को अपनाएं, सुन्नत वाली ज़िंदगी गुज़ारें और गोद से लेके गोर तक जाने की जितनी सुन्नतें हैं सब को अपनी

ज़िंदगी में लागू करें, अगर कोई बेटा खूबसूरत कपड़े पहन कर मां के सामने आ जाता है तो मां की आंखों में नूर आ जाता है, दिल में सुरूर आ जाता है, जो सुन्नत के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने वाला बंदा होगा, क़्यामत के दिन अल्लाह के हबीब सल्ल0 के सामने जाएगा वह आक़ा सल्ल0 की आंखों को नूर बनेगा, आप सल्ल0 के दिल का सुरूर बनेगा। लिहाज़ा हमें चाहिये कि आज हम नबी सल्ल0 से क़ल्बी तअल्लुक़ को जोड़ें, आप सल्ल0 को अपनी तरफ़ से दरूद शरीफ़ के हदिये और तोहफ़े भेजें, इबादात के तोहफ़े और दुआओं के तोहफ़े भेजें, ताकि कल क़्यामत के दिन अल्लाह के हबीब सल्ल0 की शफ़ाअत हमें भी नसीब हो, ताकि अल्लाह तआला क़्यामत के दिन हमारी भी मग़फ़िरत फ़रमा दे और गुनाहों को अल्लाह तआला मुआफ़ फ़रमा दे।

उलमा ने एक नुक्ता किताबों में लिखा है, वह फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला नबी सल्ल0 के बारे में फ़रमाते हैं कि "فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ، عَسٰى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا" ऐ मेरे महबूब! तहज्जुद के नवाफ़िल अदा कीजिये, अल्लाह तआला आप को मक़ामे महमूदा अता फ़रमाएंगे, तो तहज्जुद के पढ़ने पर नबी सल्ल0 से मक़ामे महमूदा का वादा है, मुफ़स्सिरीन ने लिखा कि जो बंदा दुनिया में उम्मती होकर तहज्जुद की पाबंदी की कोशिश करेगा तो मक़ामे महमूदा पहुंच कर अल्लाह के हबीब सल्ल0 उनके लिये शफ़ाअत करेंगे तो महबूब को मक़ामे महमूद की शफ़ाअत का इख़्तियार मिलेगा और मोमिन को तहज्जुद की पाबंदी से नबी सल्ल0 की शफ़ाअत की नेअ्मत नसीब होगी। हमें चाहिये कि हम नमाज़ों की पाबंदी करें, तहज्जुद की पाबंदी करें, सुन्नत वाली ज़िंदी को अपनाएं, ताकि क़्यामत के दिन की हमेशा हमेशा की ज़िल्लत से हम बच

जाएं, अपने अल्लाह को राज़ी करके हम जन्नत में जाने वालों में से बन जाएं।

गुनाह बख़्शवाने वाली दसवीं चीज़ः रहमते ख़ुदावंदी

अब दसवीं और आख़िरी चीज़ फ़रमाते हैंः "رَحْمَةُ اللّٰهِ وَعَفْوُه وَمَغْفِرَتُهٗ بِلَا سَبَبٍ مِنَ الْعِبَادِ" क़्यामत के दिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने बंदों पर बग़ैर किसी सबब के रहमत फ़रमा देंगे। मां को बच्चे पे प्यार आता है, बच्चा थप्पड़ मारता है, मां उसका हाथ चूम लेती है, वह बदतमीज़ी नहीं समझती, मां जो हुई, वह मुहब्बत की असीर जो हुई, वह बच्चे के थप्पड़ मारने को भी प्यार समझ लेती है, नादानी समझ लेती है और उल्टा बच्चे के हाथों को चूम लेती है, हदीसे पाक में आता है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपनी रहमत के एक हज़ार हिस्से फ़रमाए, एक हिस्सा अल्लाह ने दुनिया में ज़ाहिर किया, इस हिस्से की वजह से मियां बीवी की मुहब्बत, मां बाप की मुहब्बत, औलाद की मुहब्बत, इंसान की एक दूसरे इंसान से मुहब्बत, जानवरों की, परिंदों की, यह जितनी मुहब्बतें नज़र आती हैं यह उस एक हिस्से का करिशमा है और नौ सौ निन्नानवे हिस्से अल्लाह तआला रहमत के क़्यामत के दिन खोलेंगे, सोचिये तो सही कि अल्लाह तआला ईमान वालों पर कितने करीम, कितने रहीम, कितने मेहरबान होंगे, फ़रमायाः "وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا" ऐ मेरे बंदो! तुम दुनिया में ईमान बचा के चले आओगे तो फिर देखना मैं क़्यामत के दिन तुम्हारा क्या इक्राम करता हूं, मैं तुम्हारे लिये क्या मेहरबानियां करता हूं, तो अल्लाह क़्यामत के दिन अपने बंदों पर मेहरबानी फ़रमाएंगे और उनके गुनाहों को मुआफ़ करेंगे, सिर्फ़ इस वजह से कि "اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ" मां बच्चे पे मामता की वजह से शफ़ीक़ होती है, अल्लाह अपनी रहमत की वजह से अपने बंदों पे

शफ़ीक़ हैं, इतनी रहमत होगी कि हज़रत क़ारी मुहम्मद तय्यब रह0 ने लिखा कि क़्यामत के दिन अल्लाह तआला की इतनी रहमत होगी कि एक वक़्त आएगा कि शैतान भी सर उठा कर देखेगा कि शायद मेरी भी मग़फ़िरत हो जाए, अगर शैतान को भी उम्मीद लग सकती है तो फिर कलिमा वालों को तो मज़े होंगे, जो ईमान बचा के दुनिया से चले गए, उन पर अल्लाह की रहमत होगी और अल्लाह की रहमत से सारे जन्नत में चले जाएंगे।

इमाम ग़ज़ाली रह0 ने एक अजीब वाक़िआ लिखा है, फ़रमाते हैं कि सब लोग जिन पर अल्लाह की रहमत होगी जन्नत में चले जाएंगे, फिर अल्लाह अंबिया अलै0 को शफ़ाअत की इजाज़त देंगे, लोग जन्नत चले जाएंगे, फिर उलमा, शुहदा, सुल्हा और आम जन्नती भी शफ़ाअत करेंगे, हत्ता कि जिसके दिल में ज़र्रा बराबर भी ईमान होगा सारे के सारे बिलआख़िर जहन्नम से निकाल के जन्नत में डाल दिये जाएंगे इसके बाद वह जहन्नमी रह जाएंगे जो या तो मुश्रिक, काफ़िर और मुनाफ़िक़ होंगे या ऐसे होंगे कि जिनके दिल में ज़र्रे से भी थोड़ा ईमान था, वह लोग जहन्नम में रह जाएंगे, वह आग में जलते रहेंगे, जब अल्लाह तआला चाहेंगे या अल्लाह की रहमत जब जोश में आएगी अल्लाह तआला उन जहन्नमियों में और जो मुश्रिक काफ़िर होंगे उनके दर्मियान की आग को अल्लाह तआला शीशे की तरह Transparent (आरपार दिखाई दे सकने वाला) बना देंगे, वह एक दूसरे को देखेंगे, तो मुश्रिक को तअ़ना देंगे कि हम तो थे ही बुतों को पूजने वाले, हम तो थे ही ईमान न लाने वाले, हम तो थे ही ईमान से महरूम लोग, अरे तुम तो अपने आप को मुसलमान कहलाते थे, तुम भी यहीं हमारे साथ इस आग में जल रहे हो, जब मुश्रिक तअ़ना देंगे, तो वह जहन्नमी रोएंगे, अल्लाह तआला दिलों के

भेद जानने वाले हैं, मगर जिब्राईल अलै0 को भेजेंगे कि जिब्राईल! जाओ देखो जहन्नमी क्यों रो रहे हैं, जहन्नमी कहेंगे अल्लाह! अब तो मुश्रिकों ने भी तअ़ने देने शुरू कर दिये कि तुम भी उसी आग में हो जिसमें हम जल रहे हैं, अल्लाह तआला फ़रमाएंगेः जिब्राईल! मेरे उन बंदों को निकाल लो जिनको काफ़िर मुश्रिक तअ़ने देते हैं, उनको जहन्नम से निकाला जाएगा, उनके जिस्म जलने की वजह से सियाह हो चुके होंगे, उनको एक जगह पर ले जाया जाएगा और कहा जाएगाः "اِغْتَسِلْ فِى هٰذَا الْغَدِيْدِ" उस तालाब के अंदर तुम गुस्ल कर लो, वहां आबे हयात होगा, चुनांचे जब उसमें गुस्ल करेंगे तो दोबारा सही शक्लों में आ जाएंगे, फिर अल्लाह तआला अपनी रहमत से उनको जन्नत में दाख़िल करेंगे, मगर उनके माथे पे एक मुहर लगा दी जाएगीः "عُتَقَاءُ الرَّحْمٰن" पे रहमान की रहमत की वजह से बख़्शे गए, यअ़नी यूं समझें कि यह रिआयती पास लोग हैं, हक़ीक़त में तो फ़ैल थे, मगर मुम्तहन ने रिआयती नम्बर दे के "मुतरक़्क़ी" पास कर दिया, उनको जन्नत भेजेंगे, जब वह जन्नत में आएंगे, रहना शुरू करेंगे, इमाम ग़ज़ाली रह0 फ़रमाते हैं कि जन्नती उनसे मज़ाक़ करेंगे कि देखो हम तो अल्लाह की रहमत से पहले जन्नत आ गए और तुम रिआयती पास हो तुम जहन्नम के Through (वहां से होकर) होकर आए हो, जन्नती मज़ाक़ करेंगे, तो एक वक़्त आएगा कि वह सारे عُتَقَاءُ الرَّحْمٰن जन्नत में फिर अल्लाह से फ़रयाद करेंगे कि मेरे मौला! जब आपने जन्नत में दाख़िल कर ही दिया, तो यह मुहर क्या लगा दी, इसको तो हटा दीजिये, फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपनी रहमत से वह मुहर हटा देंगे, और वह जन्नतियों के साथ मिलकर जन्नत की ज़िंदगी गुज़ारेंगे, इमाम ग़ज़ाली यह हदीसे मुबारक लिखने के बाद फ़रमाते हैंः काश! मुझे भी क़्यामत के दिन

عُتَقَاءُ الرحمٰن में शामिल कर लिया जाता, काश कि मुझे भी क़्यामत के दिन इन रिआयती पास लोगों में शामिल कर लिया जाता, ताकि मैं भी अल्लाह की रहमत से जन्नत में चला जाता। दुआ है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हम पर रहमत फ़रमाए और हमें अपने बख़्शिश किये हुए गुनहगारों की क़तार में शामिल फ़रमाए।

وآخرُ دعْوانا أنِ الحمد للهِ ربِّ العالمين

☆☆☆

आइंदा सफ़्हात से जो ख़िताब पेश किया जा रहा है, वह बंगलौर की ईदगाह कुद्दूस, हज कैम्प के मैदान में 21 अप्रेल 2011 ई0 बरोज़ जुमेरात, बअ़्द नमाज़े मग़रिब हुआ था, मग़रिब के बाद घंघोर घटा के साथ पहले धीरे फिर तेज़ बारिश शुरू हो गई, मुन्तज़िमीन परेशान, मज्मा पर भी बेचैनी की लहरें दौड़ने लगीं, बारिश थी कि थमने का नाम नहीं ले रही थी, लग यह रहा था कि प्रोग्राम नहीं हो पाएगा, एक कपड़े के शामियाने के नीचे मज्मा भीग रहा था, मगर हज़रते वाला तशरीफ़ लाए, तेज़ बारिश के दौरान बयान हुआ और मज्मा भीगने के बावजूद पुरसुकून पूरा बयान सुनता रहा। हाज़िरीन की तादाद 80 हज़ार से एक लाख बताई गई है।

इत्तिबाए सुन्नत में ही कामियाबी है

الحمد للّٰه و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى، ام بعد

اعوذ باللّٰه من الشيطان الرجيم، بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ. وقال اللّٰه تعالىٰ فى مقام

آخر: قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰه فَاتَّبِعُوْنِى يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ

سبحان ربك رَبِّ العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد للّٰه رب العلمين

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارك وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارك وسلم

اللهم صل على سيدنا محمد و على ال سيدنا محمد وبارك وسلم

हुज़ुर सल्ल0 की ज़िंदगी तमाम इंसानों के लिये नमूना

जब हम बा जमाअत नमाज़ पढ़ते हैं तो एक इमाम होते हैं और बाक़ी मुक़्तदी होते हैं, मुक़्तदियों के ऊपर लाज़िम होता है कि इमाम की इक़्तदा करें, अगर कोई मुक़्तदी इमाम की इक़्तदा न करे तो उसकी नमाज़ सही न होगी, जिस तरह नमाज़ में एक इमाम है, उसी तरह हमारी पूरी ज़िंदगी के इमाम सय्यदना रसूलुल्लाह सल्ल0 हैं, हमारा यह फ़र्ज़ मंसबी है कि हर काम हम नबी सल्ल0 के तरीक़े के मुताबिक़ करें, खाना पीना पहनना ओढ़ना, मुआशरत, मईशत, हर चीज़ नबी सल्ल0 के तरीक़े के मुताबिक़ हो, यह हर मुसलमान के ऊपर लाज़िम है। नबी अक्रम सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः "عَلَيْكُمْ بِسُنَّتِى" तुम्हारे ऊपर मेरी सुन्नत की इत्तिबा लाज़िम है, आने देखा होगा कि शादी के मौक़ा पर दुल्हन को सजाते हैं, वह यह समझती है कि अगर मेरी उंगलियों में अंगूठी पहना दी गई तो उंगलियां खूबसूरत

बन जाएंगी, अगर बाजूओं में चूड़ियां डाल दी गईं तो बाजू ख़ूबसूरत बन जाएंगे, अगर गले में लाकिट डाल दिया गया तो मेरा गला ख़ूबसूरत बन जाएगा और अगर मेरे कानों में बालियां डाल दी गईं तो मेरे कान ख़ूबसूरत हो जाएंगे, ग़र्ज़ दुल्हन का यह ख़्याल होता है कि जिस अजू को ज़ेवर से सजा दिया जाएगा वह मेरे ख़ाविंद की नज़र में ख़ूबसूरत बन जाएगा। हूबहू मिसाल है कि मोमिन अपने जिस अजू को सुन्नत के मुताबिक़ बना ले तो सजे हुए इंसान की तरह वह अल्लाह की नज़र में प्यारा हो जाता है, इर्शाद फ़रमायाः "قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰه" ऐ मेरे महबूब! फ़रमा दीजिये कि अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो, "فَاتَّبِعُوْنِىْ" तुम मेरी इत्तिबा करो "يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ" इसका नतीजा यह होगा कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तुम से मुहब्बत फ़रमाएंगे, तुम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के महबूब बन जाओगे।

कामियाबी का मदार सुन्नत की इत्तिबा पर है

जिस शख़्स ने सुन्नत को अपनाया उसने नजात पाई, इमाम मालिक रह0 फ़रमाते थेः "اَنَّ السُّنَّةَ مِثْلَ سَفِيْنَةِ نوحؑ" कि नबी सल्ल0 की सुन्नत नूह अलै0 की कशती के मानिंद है "مَنْ رَكِبَهَا" जो उस कशती पर सवार हो गया वह नजात पा गया "وَمَنْ نَجَا" "تَخَلّٰى عَنْهُ غَرِق" और जो इस कशती से पीछे रह गया वह दुनिया के तूफ़ानों के अंदर ग़र्क़ होगा। एक हदीसे मुबारक में है, नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः "مَنْ حَفِظَ سُنَّتِى اَكْرَمَهُمُ اللّٰهُ بِاَرْبَعِ خِصَالٍ" जो शख़्स मेरी सुन्नत का इक्राम करता है, उसकी इज़्ज़त करता है, उस पर अमल पैरा होता है, अल्लाह तआला चार तरीक़ों से उस बंदे का इक्राम फ़रमाते हैं, एक "اَلْمَحَبَّةُ فِى قُلُوْبِ الْبَرَرَةِ" नेक लोगों के दिलों में अल्लाह तआला उस बंदे की मुहब्बत डाल देते हैं। दूसरी

बात "وَالْهَيْبَةُ فِي قُلُوبِ الْفَجَرَةِ" जो फ़ासिक़ व फ़ाजिर होते हैं उनके दिलों में अल्लाह का रोअ़ब बैठा देते हैं "وَالسَّعَةُ الرِّزْقِ" अल्लाह उसका रिज़्क़ खुला फ़रमा देते हैं, रिज़्क़ में कुशादगी अता फ़रमा देते हैं। और चौथी चीज़: "وَالثِّقَةُ فِي الدِّيْنِ" अल्लाह दीन में उस बंदे को मज़बूत बना देते हैं, तो मालूम हुआ कि नबी सल्ल0 की सुन्नत इंसान के लिये फ़लाह पाने का ज़रीआ है।

सय्यदुत्ताइफ़ा शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह0 का क़ौल है: "أَسَاسُ الْخَيْرِ مُتَابَعَةُ النَّبِيِّ ﷺ فِي قَوْلِهِ وَفِعْلِهِ" कि ख़ैर की बुन्याद नबी सल्ल0 की क़ौल में और फ़ेअ़ल में इत्तिबा है। शाह अब्दुल अज़ीज़ रह0 फ़त्हुल क़दीर में लिखते हैं: "مَنْ تَهَاوَنَ بِسُنَّةٍ عُوْقِبَ بِحِرْمَانِ الْفَرَائِضِ" जो शख़्स सुन्नत का एहतिमाम नहीं करता, उसको हल्का समझता है, उसका वबाल यह होता है कि उस बंदे को फ़राइज़ से महरूम कर दिया जाता है। नबी सल्ल0 ने फ़रमाया: "مَنْ أَحَبَّ سُنَّتِي فَقَدْ أَحَبَّنِي" जिसने मेरी सुन्नत से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की "وَمَنْ أَحَبَّنِي كَانَ مَعِي فِي الْجَنَّةِ" और जिसने मुझसे मुहब्बत की वह जन्नत में मेरे साथ होगा। एक हदीसे पाक में नबी सल्ल0 ने फ़रमाया: "مَنْ تَمَسَّكَ بِسُنَّتِي عِنْدَ فَسَادِ أُمَّتِي فَلَهُ أَجْرُ مِائَةِ شَهِيْدٍ" कि जो मेरी सुन्नत का उस वक़्त इल्तिज़ाम करे जबकि सुन्नत की तरफ़ से बेतवज्जुही की जा रही हो, उसको छोड़ा जा रहा हो तो नबी सल्ल0 ने फ़रमाया कि उस बंदे को एक सौ शहीदों का सवाब अता किया जाएगा।

नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमाया: "تَرَكْتُ فِيْكُمْ أَمْرَيْنِ" मैं तुम्हारे दर्मियान दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूं "لَنْ تَضِلُّوْا اِنْ تَمَسَّكْتُمْ بِهِمَا" तुम हरगिज़ गुमराह नहीं होगे अगर तुम इन दोनों को पकड़े रहोगे "كِتَابَ اللّٰهِ وَسُنَّةَ نَبِيِّهِ" एक अल्लाह तआला की किताब और दूसरा

उसके नबी सल्ल० की सुन्नत की इत्तिबा करना, इसलिये हमें चाहिये कि हम सुन्नत की पैरवी करें और ज़िंदगी को सुन्नत से मुज़य्यन करें, अपने ज़ाहिर को नबी सल्ल० की सुन्नत से मुज़य्यन करें और अपने बातिन को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की मअ़रिफ़त से मुनव्वर करें।

आमाल की कबूलियत का मेअ़यार इत्तिबाए सुन्नत है

आम तौर पर अगर कोई Model (नमूना) हो तो फिर उसको अपनाना आसान होता है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने प्यारे हबीब सल्ल० को भेजकर इतमामे हुज्जत फ़रमा दी कि मेरे बंदो! मेरे महबूब सल्ल० तुम्हारे दर्मियान ज़िंदगी गुज़ार चुके, अब उनकी एक एक बात महफ़ूज़ है, तुम हर अमल उनके मुताबिक़ अगर कर लोगे तो क़्यामत के दिन मेरी निगाह में तुम महबूब होगे, प्यारे होगे, इसलिये कि "اِنَّ الْمُحِبَّ لِمَنْ يُحِبُّ مُطِيْعٌ" मुहिब्ब जिससे मुहब्बत करता है उसका मुतीअ़ होता है, तो तुम अगर मेरे महबूब सल्ल० से मुहब्बत के दावेदार हो तो तुम्हें चाहिये कि तुम उनकी सुन्नत की पैरवी करो। आपने तजर्बा किया होगा कि जब कोई चीज़ Market (बाज़ार) में आती है तो उसके ऊपर हुकूमत के मुतअल्लिक़ा महकमे की मुहर लगी हुई होती है, कोई भी फ़ूड आइटम खाने पीने की चीज़ें तो गोर्वमेंट उस पर मुहर लगा देती है कि तमाम क़वानीन के मुताबिक़ यह खाना तैयार किया है, अब मुहर लगे हुए उस फ़ूड की कुछ और क़ीमत होती है, अगर कोई ऐसा फ़ूड आ जाए कि जिस पर रजिस्टर्ड होने की मुहर नहीं लगी हुई है तो उसको तो अव्वल दूकानदार ही नहीं रखते और अगर रख भी दे तो गाहक उसको नहीं ख़रीदता। बिल्कुल क़्यामत के दिन यही होगा, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के फ़रिशते मुतअय्यन होंगे, इंसान का नामए आमाल पेश किया जाएगा, जिस

अमल पर सुन्नत की मुहर लगी होगी उसको Approve (मंज़ूर) कर लिया जाएगा, क़बूल कर लिया जाएगा और जिस पर सुन्नत की मुहर नहीं होगी उसको रद्द कर दिया जाएगा, कह दिया जाएगा कि आज के दिन मेरे महबूब सल्ल0 की सुन्नत ही को क़बूल किया जाएगा।

आप अगर दर्ज़ी के पास जाएं कि यह मेरा एक कपड़ा है, करता है, मुझे उसके बिलमुताबिक़ आप एक और कुर्ता बना के दे दें, तो आप जब वसूल करने जाते हैं तो पहले कुर्ते के बिल्कुल मुताबिक़ उसकी पैमाइश देखते हैं, लम्बाई भी, चौड़ाई भी, डीज़ाइन भी, अगर कोई भी चीज़ उससे ज़रा भी मुख़्तलिफ़ हो तो आप दर्ज़ी को कहते हैं कि जनाब जब मैंने आप को माडल दिया था तो तुमने क्यों उसके मुताबिक़ न बनाया? क़्यामत के दिन यही होगा, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इर्शाद फ़रमाएंगे: मेरे बंदो! मैंने तुम्हारे दर्मियान एक नमूना भेज दिया था, अपने हबीब सल्ल0 को भेजा था, तुम्हें चाहिये था कि तुम हर काम उनके तरीक़े के मुताबिक़ करते, तो अब तुम्हारे आमाल क़बूल कर लिये जाते। याद रखिये कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपने तक आने के तमाम रास्ते बंद कर दिये, सिवाए उस रास्ते के जिस रास्ते पर नबी सल्ल0 चले और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तक पहुंचे, जो बंदा चाहे कि मैं भी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तक पहुंच जाऊं, अल्लाह से वासिल हो जाऊं तो उसको चाहिये कि वह भी हर हर काम में अल्लाह के हबीब सल्ल0 के तरीक़े को अपनाए।

इस सुन्नत की अल्लाह के यहां इतनी अहमियत है कि मूसा अलै0 को हुक्म हुआ कि इन जादूगरों का मुक़ाबला कीजिये, अल्लाह तआला का हुक्म हुआ: "اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى" आप जाइये फ़िरऔन के पास वह बाग़ी ताग़ी बन गया है, मूसा अलै0 जाते हैं,

वहां जादूगरों से मुक़ाबला हुआ, अल्लाह की शान कि जादूगरों ने ईमान क़बूल कर लिया तो मूसा अलै० हैरान हुए कि ऐ अल्लाह! आपने तो नाम लेकर मुझे फ़रमाया था कि जाओ फ़िरऔन के पास वह बाग़ी ताग़ी बन गया और अब फ़िरऔन को तो हिदायत न मिली, जादूगरों को हिदायत मिल गई तो इसकी वजह यह थी कि उस ज़माने में जब दो पार्टियों में मुक़ाबला होता और बादशाह को कोई मुक़ाबला देखना होता था तो उनकी एक यूनीफ़ार्म हुआ करती थी, अब जब मूसा अलै० और जादूगर आमने सामने हुए तो वहां के जो अफ़सर थे उन्होंने कोशिश की कि मूसा अलै० जादूगरों वाला लिबास पहनें, वह तो अल्लाह के नबी थे, उन्होंने इंकार कर दिया, वह बड़े हैरान कि करें तो क्या करें, चुनांचे उन्होंने यह फ़ैसला लिया चलो यूनीफ़ार्म तो एक जैसी होगी, हम जादूगरों को ही मूसा जैसा चौग़ा पहना देते हैं, चुनांचे उन्होंने मूसा अलै० जैसे कपड़े पहना दिये, जब मूसा अलै० ने पूछाः अल्लाह! फ़िरऔन को हिदायत न मिली बल्कि जादूगरों को मिल गई तो अल्लाह करीम ने फ़रमायाः ऐ मेरे प्यारे मूसा अलै०! जब मैं हिदायत का फ़ैसला करने लगा तो मेरी रहमत ने उस चीज़ को ज़्यादा पसंद किया कि मैं उनको हिदायत पहले दूं जो मेरे एक नबी से मुशाबहत रखते हैं। अब सोचिये कि वह जादूगर जो अपने शौक़ से भी नहीं बल्कि मजबूर होकर मुशाबहत इख़्तियार करते हैं अल्लाह तआला को उनकी मुशाबहत पसंद आती है तो जो लोग अपनी मुहब्बत से, चाहत से, लगन से, और शौक़ से नबी सल्ल० के आमाल को अपनाएंगे तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को कितना वह इंसान प्यारा लगेगा।

सहाबए किराम रज़ि० में हुज़ूर सल्ल० की सुन्नत से इश्क़

चुनांचे सहाबा रज़ि० की ज़िंदगियों को देखिये तो एक से बढ़

कर एक आप को सुन्नत का नमूना आएगा, उनमें इतनी सुन्नत की इत्तिबा थी कि बाहर से आने वाले को पूछना पड़ता था: "مَن مِنكم محمد" तुम में से मुहम्मद सल्ल० कौन हैं? लिबास में, ज़ाहिर में, तौर तरीक़े में, गुफ़्तगू में, इतनी मुशाबहत हुआ करती थी, हत्ता कि सय्यदना सिद्दीक़े अक्बर रज़ि० नबी सल्ल० की मईय्यत में जब मदीना तय्यबा हाज़िर हुए तो मदीना तय्यबा के बड़े बूढ़े दाना बीना लोग इस्तक़बाल के लिये आए, मगर उनको समझ में नहीं आ रहा था कि उन आने वाले मेहमानों में आक़ा कौन हैं गुलाम कौन हैं, उनमें अल्लाह के नबी कौन हैं और उनकी इत्तिबा करने वाले कौन हैं तो वह देखते रहे और उन्होंने दोनों को देख कर बिलआख़िर सिद्दीक़े अक्बर को आगे बढ़ कर सलाम किया, सिद्दीक़े अक्बर रज़ि० ने सबको सलाम करना शुरू कर दिया, क्योंकि आक़ा सल्ल० थके हुए आ रहे हैं तो आक़ा सल्ल० को मज़ीद थकावट न हो, जब सलाम हो चुका तो बैठ गए और बादलों में से सूरज निकला और उसकी किरनों ने नबी सल्ल० के रुख़सार मुबारक के बोसे लिये, तब मदीना के लोग यह देखकर हैरान हुए कि जिसको उन्होंने पहले सलाम किये वह उठे और उन्होंने अपनी चादर अपने साथी के ऊपर डाल कर यह साबित कर दिया कि आक़ा कौन है और गुलाम कौन है, ताबेअ़ कौन है मत्बूअ़ कौन है, तब उनको समझ में आया कि वाक़ई उन्होंने नबी सल्ल० की इस क़दर मुशाबहत इख़्तियार की थी, आप यूं समझें कि नक़्ल अस्ल के इतना मुताबिक़ बन गई थी कि देखने वालों को नक़्ल और अस्ल में फ़र्क़ करना दुशवार हो गया था।

एक सहाबी रज़ि० हब्शा के रहने वाले ईमान ले आए, अब अक्सर उनके दिल में यह शौक़ रहता कि यह जो मेरे सर पे बाल हैं यह छोटे हैं और घुंघरियाले हैं और नबी सल्ल० की तरह मैं सर पे

मांग नहीं निकाल सकता, काश कि मेरे बाल ऐसे होते कि मैं भी मांग निकाल सकता, मुझे और भी मुशाबहत हो जाती, यह उनके दिल में एक तमन्ना थी जो चुटकियां लेती थी, सर्दी का मौसम था, एक दिन अंगीठी जल रही थी और वह एक लोहे की सलाख़ से अंगारों को ज़रा सेट कर रहे थे, जब देखा कि यह सलाख़ गर्म हो गई तो पता नही उनके ऊपर मुहब्बत का क्या जज़्बा आया कि उन्होंने उस सलाख़ से अपने सर के दर्मियान निशान लगा लिया, गर्म सलाख़ थी, जिल्द जल गई, ख़ैर जब उस पर मरहम लगाई गई तो वह ठीक तो होगई, लेकिन जलने की वजह से एक लाइन नज़र आती थी, लोगों ने कहा कि आप ने अपने आप को क्यों तकलीफ़ में डाला? जवाब दिया कि वह तकलीफ़ तो ख़त्म हो गई अलबत्ता इस बात की खुशी बाक़ी है कि अब मेरा सर मेरे आक़ा सल्ल0 के मुबारक सर के साथ मुशाबहत पा चुका है। अंदाज़ा कीजिये कि क्या मुहब्बत थी।

सय्यदना अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 मदीना तय्यबा से मक्का मुकर्रमा की तरफ़ जा रहे हैं, एक जगह जाकर रुक गए, नीचे उतरे, क़रीब में एक दरख़्त था, उसकी तरफ़ गए और वहां जाकर वह इस तरह बैठे जैसे क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ होते हैं, मगर फ़ारिग़ नहीं हुए, वैसे ही उठ के आ गए और सफ़र शुरू कर दिया, तो साथ वालों ने पूछा कि हज़रत अगर आप को हाजत नहीं थी तो आपने क्यों सफ़र को रोका, खुद भी रुके दूसरों को भी रोका? अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 ने जवाब दिया कि गो मुझे ज़रूरत न थी, मगर एक दफ़ा मैंने नबी सल्ल0 के साथ सफ़र किया, मैंने देखा कि मेरे आक़ा सल्ल0 उस जगह पर रुके और आप सवारी से उतरे, फ़ारिग़ हुए, अब मैं गुज़र रहा था तो मेरे दिल में ख़्याल आया कि मैं भी वही अमल

करूंगा जो मेरे आक़ा सल्ल0 ने किया तो मैं गया और थोड़ी देर बैठ के वापस आ गया, मेरा टाइम तो लग गया, मगर मुझे आक़ा सल्ल0 की एक याद को ताज़ा करने का एक मौक़ा नसीब हो गया। इससे अंदाज़ा लगता है कि सहाबा रज़ि0 किस क़द्र नबी सल्ल0 की सुन्नतों के शैदाई थे--

वही समझाएगा शैदाई जमाले मुस्तफ़ा
जिसका हाल हाले मुस्तफ़ा हो काल काले मुस्तफ़ा

सय्यदना सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 का हाल देखिये कि नबी सल्ल0 जब ग़ारे हिरा से आए तो उस वक़्त ख़दीजतुल कुब्रा रज़ि0 ने फ़रमाया कि आप क्या महसूस करते हैं? फ़रमायाः "خشيت على نفسى" फ़रमाया कि मुझे अपनी जान का ख़तरा है, तो ख़दीजा रज़ि0 ने फ़रमायाः "كلّا" हरगिज़ नहीं "اِنّك لتصل الرحم" आप तो सिला रहमी करने वाले हैं "وتكسب المعدوم وتقرى الضيف وتعين على نوائب الحق" तो उन्होंने नबी सल्ल0 की कुछ सिफ़ात गंवाईं, हैरत की बात है कि बाद के ज़माने में एक मर्तबा सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 ने नबी सल्ल0 से इजाज़त ली कि मैं हब्शा की तरफ़ हिज्रत करके जाता हूं, नबी सल्ल0 ने इजाज़त दे दी, सिद्दीक़ रज़ि0 अक्बर गए, रास्ते में थे कि एक काफ़िर देखा तो उसने कहाः अबू बक्र! क्यों जा रहे हो मक्का से? फ़रमाया कि मक्का के लोग रहने नहीं देते, उसने कहा जैसे अच्छे आदमी क्यों मक्का छोड़के जाएं: "انك لتصل الرحم" जो सिफ़ात ख़दीजतुल कुब्रा रज़ि0 ने नबी सल्ल0 की गंवाई थीं हूबहू वही सिफ़ात इन्हीं अलफ़ाज़ में एक काफ़िर ने सिद्दीक़े अक्बर रज़ि0 की गंवाई, इस क़दर कामिल मुशाबिहत थी।

नबी सल्ल0 की सुन्नतों के आशिक़ हुज़ैफ़ा बिन अलयमान

रज़ि0 ईरान की तरफ़ आते हैं, दस्तरख़्वान पे खाना खाते हुए लुक़्मा गिर गया, अब सुन्नत यह है कि दस्तरख़्वान पर लुक़्मा अगर गिर जाए तो उसे उठा के खा लो, पाक साफ़ होता है, चुनांचे उन्होंने खा लिया, क़रीब वाले ने कहा जनाब! यहां के अम्रा मौजूद हैं और यह इस चीज़ को अच्छा नहीं समझते, यह मअ़यूब समझते हैं तो हुज़ैफ़ा रज़ि0 ने आशिक़ाना जवाब दिया, फ़रमायाः "أَأُتْرِكُ سُنَّةَ حَبِيبِي لِهٰؤُلَاءِ الْحَمْقَاءِ" इन अहमक़ों की ख़ातिर मैं अपने आक़ा सल्ल0 की सुन्नत को छोड़ दूंगा? इससे पता चलता है कि उनकी नज़र में नबी सल्ल0 की सुन्नतों की क्या क़ीमत हुआ करती थी।

सलफ़े सालिहीन के यहां सुन्नत का एहतिमाम

हमारे सलफ़े सालिहीन की ज़िंदगियों को आप पढ़ के देख लीजिये आप को यह मिज़ाज उन सब में मुशतरक नज़र आएगा, सारे के सारे सुन्नत के शैदाई और उसके ऊपर अमल कर वाले उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने वाले मिलेंगे। अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 एक मुहद्दिस हैं, इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह0 के ख़ास शागिर्द हैं, उनके जो चालीस फ़ुक़हा थे जो मसाइल के इस्तिंबात में उनके मुआविन बनते थे, यह उनमें से एक हैं, उनकी ज़िंदगी इतनी सुन्नत के मुताबिक़ थी कि उनके एक हम जमाअत हमदर्स इस्माईल रह0 थे, वह कहते हैं कि मैंने अब्दुल्लाह बिन मुबारक की ज़िंदगी को कई साल क़रीब से देखा और मैं इस नतीजा पर पहुंचा कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह0 और सहाबए किराम रज़ि0 की ज़िंदगी में सिर्फ़ एक फ़र्क़ था, वह यह कि सहाबा रज़ि0 को नबी सल्ल0 के दीदार का शर्फ़ हासिल था, यह शर्फ़ अब्दुल्लाह बिन मुबारक को हासिल नहीं था, इसके अलावा उनकी ज़िंदगी और सहाबा रज़ि0 की ज़िंदगी में मुझे कोई फ़र्क़ नज़र नहीं आता था। यह कितनी अज़ीम बात है

कि साथ रहने वाला गवाही दे। वाक़ई हमारे अकाबिर इस क़दर सुन्नत का एहतिमाम करने वाले थे।

जुनैद बग़दादी रह० के पास एक सालिक आया और नौ दस साल रहा, एक दिन कहने लगा हज़रत मैं जाता हूं, पूछा क्यों जाते हो? कहा हज़रत! मैं तो आया था कि कोई करामत देखता और मैंने तो दस में कोई करामत ही नहीं देखी, तो पूछा कि यह बताओ कि इन दस सालों में तूने कोई अमल सुन्नत के ख़िलाफ़ देखा? कहने लगा सुन्नत के ख़िलाफ़ तो कोई अमल नहीं देखा, फ़रमाया कि यह सब करामतों से बड़ी करामत है कि इंसान बेइख़्तियार सुन्नतों के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने वाला बन जाए, हर अमल उसको ऐसा हो कि नबी सल्ल० की सुन्नत के मुताबिक़ हो।

शाह वली अल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह० लिखते हैं कि मुझे नबी सल्ल० की ख़िदमत में मुवाजा शरीफ़ पर हाज़िरी नसीब हुई तो फ़रमाते हैं कि जो लोग मुत्तबअ़ सुन्नत होते हैं और जिनको हदीस का शौक़ होता है तो मैंने देखा कि नबी सल्ल० के मुबारक क़ल्ब से इस तरह नूर की किरनें फूटती हैं जैसे सूरज की शुआएं होती हैं और वह उस आने वाले बंदे के दिल के ऊपर पड़ रही होती हैं तो सुन्नत का एहतिमाम करने वाला बारगाहे नबवी के अंदर मक़्बूल इंसान होता है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ऐसे बंदे को बहुत पसंद फ़रमाते हैं।

हमारे अकाबिर उलमाए देवबंद की ज़िंदगियों को देखिये, एक एक सुन्नत का शैदाई नज़र आएगा, चुनांचे हज़रत नानूतवी रह० को फ़िरंगी ने गिरफ़्तारी का हुक्म सुना दिया, जब इत्तिला मिली तो हज़रत रूपोश हो गए, तीन दिन के बाद फिर बाहर फिर रहे हैं, किसी ने कहा कि जनाब! अगर गिरफ़्तारी का हुक्म है, जान का बचाना फ़र्ज़ हे, आप बाहर क्यों फिर रहे हैं? तो हज़रत नानूतवी रह०

ने जवाब दिया कि मैंने अपने आक़ा सल्ल० की मुबारक ज़िंदगी को देखा तो मुझे नबी सल्ल० पूरी ज़िंदगी में तीन दिन ग़ारे सौर के अंदर रूपोश हालत में मिले, फिर आप बाहर तशरीफ़ लाए, मैं भी तीन दिन रूपोश रहा, अब बाहर आ गया हूं, अगर कोई पकड़ कर फांसी भी चढ़ाएगा तो मैं फांसी का फंदा चूम कर झूल जाऊंगा, क्या मुहब्बत थी उनकी नबी सल्ल० की मुबारक सुन्नतों से!!

हज़रत गंगोही रह० की आख़िरी उम्र में मोतिया बिंद आ जाने की वजह से, बीनाई नहीं रही थी फिर भी आप पाबंदी के साथ सुर्मा लगाते थे, किसी ने कहा जनाब! सुर्मा तो लगाते हैं बीनाई बढ़ाने के लिये, तेज़ करने के लिये और आप की तो बीनाई है ही नहीं? फ़रमाया कि लोग बीनाई तेज़ करने की नियत से लगाते होंगे, मैं तो अपने आक़ा की सुन्नत की इत्तिबा की नियत से सुर्मा रोज़ लगाता हूं, सुन्नत का इतना एहतिमाम उनकी ज़िंदगियो में था।

हज़रत शैखुल हिंद रह० वितर के बाद नफ़िलें बैठ के पढ़ते थे, अब आम मस्ला तो यही कि खड़े होकर पढ़ने का सवाब दो गुना है और बैठ के पढ़ने का सवाब आधा, तो किसी तालिबे इल्म ने पूछ लिया कि हज़रत! आप तो सवाब के बड़े हरीस हैं, हर ऐसा अमल करते हैं कि ज़्यादा से ज़्यादा सवाब मिले, मगर नफ़िल बैठ के पढ़ते हैं? तो फ़रमाने लगे कि आधा सवाब मुझे ज़्यादा पसंद है, मगर नबी सल्ल० वितर के बाद नफ़िल बैठ कर पढ़ते थे, मैं अमल तो वह करूंगा जो मेरे आक़ा सल्ल० ने किया है। हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० जब मदीना तय्यबा से तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त दारुल उलूम देवबंद में दारुल हदीस के बिल्कुल सामने एक बाग़ीचा था, बाग़ीचा तो फूलों के लिये होता है, हज़रत ने फ़रमाया कि यहां कीकर का दरख़्त लगा दो, अब जिसने भी देखा हैरान हुआ कि

समझ में नहीं आता था कि फूलों का यह बाग़ है और उसमें कांटों वाला कीकर का दरख़्त, उससे कोई फ़ाएदा भी आम बंदे को नज़र नहीं आता तो किसी तालिबे इल्म ने पूछा कि हज़रत! आप ने कीकर का दरख़्त लगवाने का हुक्म दिया? फ़रमायाः हां, उसने पूछा कि हज़रत वजह क्या है? तो फ़रमाया कि मैंने किताबों में पढ़ा कि नबी सल्ल0 ने बैअ़त रिज़वान कीकर के दरख़्त के नीचे ली थी, मैंने यह दरख़्त इसलिये लगवाया कि मैं दारुल हदीस में आया जाया करूंगा तो कीकर का दरख़्त देख के मुझे अपने आक़ा की याद आ जाया करेगी।

हज़रत मौलाना क़ासिम नानूतवी रह0 ने जब यहां बाग़ लगवाया तो उसमें एहतिमाम के साथ गुलाब के फूल लगवाए, किसी ने कह दिया कि हज़रत! मोतिया के फूलों की ख़ुशबू बड़ी अच्छी होती है, फ़लां फूल की ख़ुशबू बड़ी अच्छी होती है, आप गुलाब के पीछे ही पड़ गए! फ़रमाया कि नहीं, गुलाब लगाओ, फ़रमाने लगे कि मैं इसलिये कह रहा हूं कि मैंने किताबों में पढ़ा है कि नबी सल्ल0 के मुबारक पसीने से ख़ुशबू आती थी वह गुलाब की ख़ुशबू से सबसे ज़्यादा क़रीब मिलती है, इसलिये मैं गुलाब का फूल यहां लगवाना चाहता हूं। सुब्हानल्लाह! हर काम में नबी सल्ल0 उनके सामने रहते थे।

मौलाना यहया रह0 जो हज़रत शैखुल हदीस रह0 के वालिद गिरामी हैं, वह फ़रमाया करते थे कि अगर कोई बंदा सुन्नत के मुताबिक़ पाख़ाना कर लेगा उसको इतना सवाब मिलेगा कि ख़िलाफ़े सुन्नत नफ़िलें पढ़ने पर भी उसको वह सवाब नहीं मिल सकता, तो हमारे अकाबिर उलमाए देवबंद को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सुन्नत के एहतिमाम में एक इम्तियाज़ी शान अता फ़रमाई थी। और बिल्कुल

यही मुआमला था हमारे अस्लाफ़ अकाबिर मशाइख़ नक़्शबंद का भी, वह भी एक एक अमल में सुन्नत की रिआयत करते थे, चुनांचे मशाइख़ नक़्शबंद ने अपनी किताबों में लिखा कि लोग तो मुजाहिदे के ज़रीआ सुलूक को तै कराना चाहते हैं, हम सुन्नत के एहतिमाम के ज़रीआ सुलूक को तै करवाते हैं। इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़ सानी रह0 की सुन्नत के एहतिमाम का यह हाल था कि एक मर्तबा दांत में दर्द था, तो हज़रत ने एक सालिक को कहा कि कुछ लोंग लेके आओ, उस ज़माने में लोंग ही इलाज होता था, उसका तेल ज़रा दर्द को कम कर देता था, जब वह लेकर आया तो आपने अपने हाथ पर रखकर देखा तो वह लोंग चार थे, या छः थे, ताक़ अदद नहीं थे, तो आपने फ़रमाया कि देखो यह सूफ़ी बना फिरता है और उसको इतना भी पता नहीं कि "اللّٰه وتر ويحب الوتر" अल्लाह तआला ताक़ हैं और ताक़ अदद को पसंद करते हैं, मक़्सद यह था कि उसको उन लोंग के लाने में भी ताक़ अद की रिआयत करनी चाहिये थी, اللّٰه اكبر كبيرا- इतने छोटे से काम में भी सुन्नत का एहतिमाम था। उनके मक्तूबात को पढ़ें तो सुन्नत की जो अज़्मत पैदा होती है वह बचान से बाहर है। ज़रा सुनिये अपने मशाइख़ की इत्तिबाए सुन्नत के बारे में इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फ़सानी रह0 एक बात फ़रमाते हैं, उलमा और तलबा तवज्जो के साथ सुनें और इसके मज़े लें कि सुन्नत की क्या वक़्अत उन्होंने समझाई, फ़रमाते हैं: "हमारे अकाबिर शर्अ़ शरीफ़ के नफ़ीस मोतियों को बच्चों के मानिंद वज्द व हाल के जो ज़ूमूयज़ के बदले नहीं देते।" यअ़नी अहकामे शरीअ़त को नफ़ीस मोतियों से तशबिया दी ताकि सालिक के दिल में शरीअ़त की अज़्मत आए। जो ज़ूमूयज़ कहते हैं मुनक़्क़ा और अख़रोट को, यअ़नी बच्चे हीरा मोती दे देंगे और इसके बदले अख़रोट ले लेंगे,

फ़रमाया कि यह तो बच्चों का काम होता है, तो यह जो वज्द व हाल है यह अख़रोट मुनक़्क़ा है और शर्अ़ शरीफ़ के अहकाम नफ़ीस मोतियों के मानिंद हैं, इबारत का ज़ोर देखिये कि कितनी कुव्वत के साथ उन्होंने यह बात कही कि "हमारे अकाबिर शर्अ़ शरीफ़ के नफ़ीस मोतियों को बच्चों के मानिंद वज्द व हाल के जोजूमूयज़ के बदले नहीं देते" फिर फ़रमाते हैं: "नस से फ़स की तरफ़ माइल नहीं होते।" फ़स से मुराद तसव्वुफ़ की किताब "فصوص الحكم" फ़ुतूहाते मदीना से फ़ुतूहाते मक्किया की तरफ़ इल्तिफ़ात ही नहीं करते," "फ़ुतूहाते मक्किया" यह इब्ने अरबी रह0 की तसव्वुफ़ की किताब है और फ़ुतूहाते मदीना से हदीसे पाक मुराद है। आप अंदाज़ा लगाइये कि किस क़दर सुन्नत का एहतिमाम उन्होंने समझाया कि हमें एक एक काम सुन्नते नबवी सल्ल0 के मुताबिक़ करना चाहिये।

मिर्ज़ा बीदल ने एक शेअ़र लिखा, वह शेअ़र एक ईरानी शैख़ को अच्छे लगे, उन्होंने दिल में फ़ैसला किया कि मैं जाऊंगा और मिर्ज़ा बीदल से मिलूंगा, जब वह आए तो मिर्ज़ा बीदल एक हज्जाम के पास बैठे थे और वह अपनी रीश कटवा रहे थे, जब उस ईरानी शैख़ ने देखा तो उसेने एक ठंडी सांस ली, एक आह खींची, जब उसने देख के आह खींची तो मिर्ज़ा बीदल ने कहा कि आप आ क्यों खींचते हैं "रैशमी ख़राशम दिले कसे नमी ख़राशम" में अपनी दाढ़ी को काट रहा हूं, किसी के दिल को ईज़ा नहीं पहुंचा रहा हूं, तो उन्होंने जवाब में कहा: "बले! दिले रसूलुल्लाह सल्ल0 मी ख़राशी" तो आम बंदे का दिल नहीं दुखा रहा, तू आक़ा सल्ल0 के मुबारक दिल को दुखा रहा है, जब उन्होंने यह बात कही तो मिर्ज़ा बीदल के दिल पे चोट लगी उसने कहा:

जज़ाक अल्लाह कि चशमम बाज़ कर्दी

मरा बा जान जां हमराज़ कर्दी

हमारे मशाइख़ में नबी सल्ल0 की सुन्नतों का इतना एहतिमाम था कि एक एक सुन्नत के ऊपर वह अपने आप को क़ुर्बान कर दिया करते थे। चुनांचे एक बुज़ुर्ग थे जिनका मामूल यह था कि एक लाख मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़कर कुछ अर्से बाद नबी सल्ल0 को तोहफ़ा भेजा करते थे, फिर एक लाख दरूद शरीफ़ पढ़ कर फिर तोहफ़ा भेजा करते थे, उनकी ज़िंदगी का यह मामूल था कि लाखों मर्तबा उन्होंने नबी सल्ल0 की ख़िदमत में दरूद व सलाम का तोहफ़ा भेजा, उनको एक मर्तबा ख़्वाब में नबी सल्ल0 की ज़ियारत नसीब हुई, वह फ़रमाते हैं कि मैंने नबी सल्ल0 को देखा आप का सीनए अनवर गिरेबान खुला था और कुछ दाग़ थे जैसे ज़ख़्म के होते हैं तो मैं देख कर ज़रा हैरान हुआ, क़रीब होकर मैंने कहाः ऐ आक़ा सल्ल0! मुझे आपका सीना छलनी नज़र आता है, ज़ख़्म के निशान नज़र आते हैं, ख़ैरियत तो है? नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः हो जो लोग मेरी सुन्नत को चीरते हैं वह मेरे सीने पे ज़ख़्म लगाते हैं, मैंने कहाः ऐ आक़ा सल्ल0! यह कुफ़्फ़ार हैं ज़िंदगी भर जिन्होंने आप को तकलीफ़ पहुंचाई, अब भी वह तकलीफ़ पहुंचाने वाले काम करते हैं, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः मैं कुफ़्फ़ार की बात नहीं कर रहा, मुझे मेरे रिशते दारों ने तकलीफ़ें पहुंचाई, मैं सज्दे में गया तो ओझड़ी ऊपर डाल दी गई, मैं गली में चलता था तो लोग मेरी तरफ़ देख कर बसा औक़ात थूका करते थे, मेरे चेहरे पे मट्टी फैंका करते थे, मुझे उनसे कोई गिला नहीं, इसलिये कि वह तो कुफ़्फ़ार थे, गिला तो मुझे उनसे है जो कलिमा पढ़ते हैं, मुझे अपना आक़ा और सरदार मानते हैं और जब अमल का वक़्त आता है वह मेरी सुन्नतों को ज़ब्ह कर देते हैं, उनको एहसास ही नहीं होता, उनकी वजह से आज मेरा सीना ज़ख़्मी

है, ग़ैरों से गिला नहीं होता, गिला अपनों से हुआ करता है, फ़रमायाः मुझे अपनी उम्मत से गिला है, इसलिये कि यह मानने वाले लोग थे, जब उन्होंने मेरी सुन्नत का एहतिमाम न किया तो ग़ैरों से क्या उम्मीद की जा सकती है, नबी सल्ल0 ने जब यह बात फ़रमाई तो उन बुजुर्ग की आंखों में आंसू आ गए फ़रमायाः

तुम तो ग़ैरों की बात करते हो हमने अपने भी आज़माए हैं
लोग कांटों से बच निकलते हैं, हमने फूलों से ज़ख़्म खाए हैं

मेरे आक़ा सल्ल0 ख़्वाब के अंदर ग़मज़दा हालत में हैं कि मुझे अपनी उम्मत की वजह से ग़म है, जो कलिमा पढ़ने वाले सुब्ह उठते हैं, चेहरे से सुन्नत को हटाकर उसको गढ़ के अंदर डाल देते हैं, खाने की सुन्नत का एहतिमाम नहीं, पीने की सुन्नत का एहतिमाम नहीं, घर के अंदर दस रूपये का अगर कोई बल्ब टूट जाए तो मां बच्चे को थप्पड़ लगा देती है, वही बच्चा मेरे सुन्नत को तोड़ देता है मां के सर पर जूं नहीं रेंगती, वह टस से मस नहीं होता, उसका बाप कोई नोटिस नहीं लेता, तो मालूम होता है कि मेरी सुन्नत उनकी नज़र में एक रूपये के बराबर भी अहमियत नहीं रखती यह मेरे वह उम्मती हैं जो मेरी शफ़ाअत की हर वक़्त दिल के अंदर हसरतें रखते हैं, लेकिन मेरी सुन्नत का मज़ाक़ उड़ाते हैं और फिर और भी ज़्यादा देखिये कुछ तो वह लोग हैं जिन्होंने अंग्रेज़ी तालीम पाकर दुनियादारी का रास्ता इख़्तियार कर लिया, अल्लाह के हबीब सल्ल0 को ज़्यादा तकलीफ़ तो उनसे पहुंचती है जो तालिबे इल्म भी कहलाए, घरों को छोड़कर मदरसे में भी आ गए, यह लोग ज़ो कल मेरे वारिस बनने के उम्मीदवार हैं, यह भी मेरी सुन्नतों का इतना एहतिमाम नहीं करते जितना करना चाहिये था, मुझे इनसे ज़्यादा तकलीफ़ पहुंचती है।

उलमा ने लिखा है कि हम जितने भी आमाल करते हैं क़्यामत

के दिन अल्लाह के हबीब सल्ल0 उस पर गवाह बनेंगे, क़ुर्आन की आयत से यह साबित है, वह ऐसे कि हफ़्ता में जितने हम आमाल करते हैं यह आमाल जुमेरात के दिन नबी सल्ल0 की ख़िदमत में पेश किये जाते हैं, ज़रा ग़ौर कीजिये आक़ा सल्ल0 जब हम मुसलमानों के आमाल को देखते होंगे, हमारे घरों की ज़िंदगी को देखते होंगे तो आक़ा सल्ल0 को कितनी तकलीफ़ होती होगी कि यह मेरे वह उम्मती हैं जिनकी ख़ातिर मैं रात को सज्दे में पड़ कर उम्मती उम्मती कह के अल्लाह से दुआएं मांगा करता था, मैं इतने लम्बे सज्दे करता था कि मेरी आइशा उठ कर मेरे पांवों के तलबे देखती थी कि मेरे आक़ा सल्ल0 की रूह तो परवाज़ नहीं कर गई, मैं अल्लहा से एक ही दुआ मांगता था: يـــا رب امتـــى، ऐ अल्लाह! उम्मत का हिसाब आसान कर देना, मैं कभी अपनी बेटियों के लिये न रोया, कभी मैं अपनी ज़ैनब कहके न रोया, रुक़य्या कहके न रोया, उम्मे कुल्सुम कह के न रोया, मैं फ़ातिमा कहके न रोया, अगर मैं कभी रोया तो अपनी उम्मत के लिये रोया। लोगो! दुनिया में अगर कोई अपनी औलाद के लिये एक साल या दो साल रोता है, तो फिर मां भी अपने जवान बच्चे को भूल जाती है, मगर मैं तो अपनी उम्मत के लिये कई साल रोता रहा, कोई मां बाप 23 साल नहीं रोते, मैं तहज्जुद में इतना खड़ा होता था "حتـى تـورّمتْ قدماه" क़दमैन मुबारक मुतवर्रिम हो जाते थे, और अल्लाह से दामन फैला के एक ही दुआ मांगता था कि अल्लाह! मेरी उम्मत की बख़्शिश कर देना। लेकिन मेरी उम्मत ने मेरे आंसू की क़दर न की, वह जो खुद अपने हाथों से मेरी सुन्नतों को मिटाने वाले बन गए और मेरी सुन्नतों को तोड़ने वाले बन गए।

ज़रा उनके घरों को देखो तो आज मेरी सुन्नतों की मज़बहगाहें बन चुकी हैं, जब शादी का मौक़ा होता है हर एक को मना लेते हैं,

रिशतादार नाराज़ हो, जाकर मना लाते हैं, क़रीब में हमसाया हो उसको भी मना लिया जाता है, घर का ड्राईवर नाराज़ हो उसको भी मना लिया जाता है, घर में काम करने वाली ख़ादिमा नाराज़ हो उसको भी पैग़ाम भेज देते हैं कि शादी का मौक़ा है सबको बुला लेना चाहिये, कोई बात नहीं हम सोरी कर देते हैं, सब नाराज़ लोगों के मना के घर बुला लिया जाता है, जब शादी का वक़्त आता है तो मेरी सुन्नत को घर से निकाल दिया जाता है, उनकी नज़र में मेरी सुन्नत की कोई अहमियत नहीं, क्यों यह मुझे नहीं मनाना चाहते? क्यों यह मुझे ख़ुश नहीं करना चाहते? तो वाक़ई अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने अगर क़यामत के दिन हमसे पूछ लिया कि मेरे उम्मती! तूने मेरी सुन्नत की क्या क़द्र की? हम क्या जवाब देंगे?

अहादीस में आता है कि नबी सल्ल0 होज़े कौसर के ऊपर होंगे, उस वक़्त कुछ उम्मती आएंगे लेकिन उनको इस तरह दूर भगा दिया जाएगा जैसे ऊंट को हंका दिया जाता है, कह दिया जाएगा ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0 यह आपके उम्मती तो थे लेकिन सुन्नतों को तोड़ के ख़ुश होते थे, ग़ैरों के रस्म व रिवाज पे अमल करने वाले, ग़ैरों के तरीक़ों को अपनाने वाले, "سحقا سحقا" चले जाओ यहां से, दूर हो जाओ यहां से, अल्लाह के हबीब सल्ल0 उस वक़्त आंख उधर नहीं देखेंगे, क्योंकि तुम ने मेरी सुन्नत का एहतिमाम न किया, अगर क़यामत के दिन हम नबी सल्ल0 की बारगाह में हाज़िर हुए कि ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! हमारी शफ़ाअत कर दीजिये और नबी सल्ल0 ने जवाब में इतना पूछ लिया कि बताओ तुमने ज़िंदगी में मेरी सुन्नतों को कितना अपनाया था? तो उस वक़्त हम क्या जवाब देंगे? अल्लाह के हबीब सल्ल0 ने फरमा दिया तुम ऐसे वक़्त में पैदा हुए जब लोग अपनी चीज़ों का तआरुफ़ करवा रहे थे,

जब तशहीर का ज़माना था, हर बंदा अपने प्रोडक्ट को पूरी दुनिया के अंदर Advertise (तशहीर) करने के चक्कर में लगा हुआ था, लोग तो अपने पीतल और तांबे को भी सोना बना के पेश कर रहे थे, ओ मेरे उम्मती! तुम्हारे हाथ में तो मेरी सुन्नतें सोने के मानिंद थीं, बताओ तुमने मेरे सुन्नतों का कितना तआरुफ़ करवाया? लोगों ने मोबाइल फ़ोन जैसी चीज़ को कच्चे और पक्के मकान में पहुंचा के दिखा दिया तुमने मेरी सुन्नत के लिये क्या कुर्बानी दी? कितनी कोशिश की? तुमने कहां तक मेरी सुन्नत को उम्मत के सामने पेश किया? हम उस वक़्त कोई जवाब न दे पाएंगे कि ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0 हमने आप की सुन्नतों के लिये क्यों न कोशिश की।

नबी सल्ल0 अरफ़ात के मैदान में रोए उम्मत के लिये, मनी के अंदर रूए उम्मत के लिये, मुज़्दल्फ़ा के अंदर रूए उम्मत के लिये, ग़िलाफ़े कअ़बा को पकड़ के रूए उम्मत के लिये, नबी सल्ल0 अपने घर में तहज्जुद के वक़्त मुसल्ले पे रूए उम्मत के लिये जिस महबूब सल्ल0 ने उम्मत के लिये इतने आंसू बहाए, हम अपनी ज़िंदगियों को देखें कि हम आज उनकी सुन्नतों को एहतिमाम नहीं करते जैसे करना चाहिये था, किसी ने क्या अच्छी बात कहीः

किसी ग़म गुसार की मेहनतों को अजीब मैंने सिला दिया
जिसे मेरे ग़म ने घुला दिया, उसे मैंने जी से भुला दिया
मैं तेरे मज़ार की जालियों की मेहनतों में लगा रहा
तेरे दुशमनों ने तेरे चमन ख़ज़ां का जाल बिछा दिया
मेरे मेहरबां तेरा शुक्रिया भला किस ज़बां से करूं अदा
मेरी ज़िंदगी की अंधेरी शब में चिराग़े फ़िक्र जला दिया

वह आक़ा सल्ल0 जिन्होंने हमें ज़िंदगी गुज़ारने का तरीक़ा समझाया, अल्लाह से वासिल होने का तरीक़ा समझाया, आज उस मुहसिने

इंसानियत की सुन्नतों का हम एहतिमाम नहीं करते, हम अपने घरों में औरतों बच्चों को देखें कि आज अगर खाने का तरीक़ा पसंद है तो ग़ैरों का, लिबास पसंद है तो ग़ैरों का, घर की सजावट देखें तो ग़ैरों जैसी, हर चीज़ ग़ैरों की अगर पसंद है तो क़्यामत के दिन होज़े कौसर नबी सल्ल0 के सामने पेश होकर हम फिर क्या कह सकेंगे कि ऐ अल्लाह के नबी सल्ल! हमारी शफ़ाअत फ़रमाइये।

एक आठ साल का बच्चा उसने जब यह ख़्वाब सुना कि एक बुज़ुर्ग लाख मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़ कर भेजा करते थे, उन्होंने ख़्वाब में नबी सल्ल0 के सीनए अनवर को छलनी देखा तो उस बच्चे के दिल में इतना दर्द हुआ, घर आके कहाः अम्मी! आज के बाद मैं खाना खाऊंगा सुन्नत के मुताबिक़, मैं कपड़े पहनूंगा सुन्नत के मुताबिक़, अगर सात साल का बच्चा सुन्नत का इतना एहतिमाम करता है, क़्यामत के दिन कहा जाएगा ओ उलमा के गिरोह,! ओ हुफ़्फ़ाज़ और क़ुराअ! ज़रा बताओ तो सही, सात साल के बच्चे जैसी ग़ैरत भी तुम्हारे दिल में बेदार न हुई और तुमने दिल में नियत न की कि हम नबी अलै0 क सीना को राहत पहुंचाएंगे, हम ज़ख़्म पे ज़ख़्म नहीं लगाएंगे, सोचिये तो सही क़्यामत के दिन हम अपने आक़ा सल्ल0 को क्या जवाब देंगे? अफ़सोस की बात है कि जिनसे वफ़ा करनी थी आज हम उनसे जफ़ा कर रहे हैं, जिनसे जफ़ा करती थी आज उनके तरीक़ों को अपनाते फिर रहे हैं, फिर क़्यामत के दिन हमारा क्या मुआमला होगा?

हमने बहुत सारे लोगों को देखा है कि अपने मां बाप का दिल दुखाते हुए झिजकते हैं कि अम्मी रूठ जाएगी, अब्बू रूठ जाएंगे, मैं यह काम करना पसंद नहीं करता, वही बंदा जो मां और बाप के दिल दुखने का इतना ख़्याल करता है जब सुन्नत का वक़्त आता है

बेदरीग़ सुन्नत को तोड़ देता है, एहसास तक नहीं होता कि उससे मेरे आक़ा सल्ल0 का दिल दुखेगा, मैं नबी सल्ल0 के दिल को ख़ुशी पहुंचाने के बजाए उनको तकलीफ़ पहुंचाने का बाइस बन जाऊंगा। लिहाज़ा आज वक़्त आ गया है कि हम नबी सल्ल0 की सुन्नतों का एहतिमाम करने का अहद करें कि आक़ा सल्ल0! आप की एक एक सुन्नत पर हम अमल करेंगे और नबी सल्ल0 की सुन्नतों से अपने आप को मुज़य्यन करेंगे।

ज़रा तवज्जो कीजियेगा! एक बात मिसाल के तौर पर समझये, किसी मां को बेटे से इतनी मुहब्बत होती है कि अगर उसके हाथ में उसी तसवीर हो और कह दिया जाए कि ज़रा बच्चे की तसवीर आग में डाल दो, मां कहेगी यह कैसे हो सकता है कि मैं अपने बच्चे की तसवीर आग में डाल दूं? उससे कहो कि उसको फाड़ दो, वह कहेगी कि मैं फाड़ती भी नहीं, इस मुहब्बत की वजह से जो मां को अपने बेटे से है, मां अपने बेटे की तसवीर पर कभी आग में नहीं डालती, सोचिये! अगर कोई बंदा क़्यामत के दिन अपने ज़ाहिर को नबी सल्ल0 की सुन्नतों से सजा कर अल्लाह के हुज़ूर खड़ा होगा तो क्या अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने महबूब की शबिया को जहन्नम की आग में डालना पसंद करेंगे? कभी नहीं करेंगे, फ़रमाएंगेः मेरे बंदे! तू लगता है मेरे महबूब सल्ल0 का नमूना बना हुआ है, मैं तेरे बातिन को एक तरफ़ करके तेरे ज़ाहिर की वजह से तुझे जन्नत अता कर देता हूं।

हमने दुनिया में देखा कि ज़ाहिर की वजह से मुहब्बत की जाती है, चुनांचे एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं मैं लड़कपन में मदरसे जाया करता था, एक गली में एक औरत रहती थी, वह जब भी मुझे देखती, अपने घर बुलाती, बैठा लेती, खाना खिलाती, चीज़ें देती, पैसे देती,

बोसे लेती, और सीने से लगाती और कहती बच्चे! फिर कभी आ जाना, मैं कभी कभी चला जाता था, हर मर्तबा वह मेरे साथ मुहब्बत का इज़्हार करती थी, एक दफ़ा मैंने पूछ लिया अम्मां! आप मुझसे इतनी मुहब्बत का इज़्हार क्यों करती है? तो उसने जवाब यह दिया कि मेरे बेटे! असल बात यह है कि मेरा एक बेटा बिल्कुल तेरा हम उम्र था और उसकी शक्ल तेरी शक्ल से बहुत ज़्यादा मिलती है, बच्चे! तुम जब मेरे सामने आते हो, मुझे अपना बेटा याद आ जाता है, अगर मां अपने बेटे की मुशाबहत देख कर अपने बेटे को याद करती है तो अगर कोई बंदा नबी सल्ल0 की सुन्नत की इक़्तिदा करने वाला होगा तो अल्लाह तआला को देख के अपने महबूब याद आते होंगे, हमारे अकाबिर की तो कैफ़ियत यही थी--

यहां तक जज़्ब कर लूं काश तेरे हुस्ने कामिल को
तुझी को सब पुकार उठें गुज़र जाऊं जिधर से मैं

ऐ आक़ा सल्ल0! मैं सुन्नत का ऐसा नमूना बन जाऊं कि मैं जिधर से गुज़र जाऊं लोगों को मेरे आक़ा सल्ल0 याद आ जाएं, काश! हमारे दिलों में वह सुन्नत की मुहब्बत आ जाए, सुन्नत की वह अज़मत आ जाए, फिर देखिये अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के हबीब सल्ल0 को क़्यामत के दिन हमें देख कर कितनी राहत होगी। चुनांचे नबी सल्ल0 की उम्मत से मुहब्बत का यह आलम था कि आप सल्ल0 के पास मलकुल मौत आए, ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! अल्लाह ने आपको याद फ़रमाया है, नबी सल्ल0 ने फ़रमायाः मलकुल मौत! पहले मुझे अल्लाह तआला से यह पूछ के बताओ कि मेरे बाद मेरी उम्मत का क्या हाल होगा? मलकुल मौत ने पूछा, रब्बे करीम ने जवाब दिया, मेरे हबीब सल्ल0 हम आप के बाद आपकी उम्मत को अकेला नहीं छोड़ेंगे, बेआसरा नहीं छोड़ेंगे, जिस महबूब सल्ल0 को

उम्मत के साथ इतनी मुहब्बत थी कि आख़िरी लम्हे में भी उम्मत की फ़िक्र लगी हुई है, आज वही उम्मत अगर सुन्नत को तोड़ने वाली बन जाए तो सोचिये आक़ा सल्ल0 के लिये किस क़दर यह ग़म की बात है? हमें चाहिये कि आज हम दिल में यह अहद कर लें कि हम बैठ कर अपनी ज़िंदी का जाइज़ा लेंगे, एक एक अमल को सुन्नत के मुताबिक बनाएंगे, हत्ता कि गोद से लेके गोर में जाने तक की जितनी सुन्नतें हैं हम सब को अपनाएंगे, ताकि नबी सल्ल0 की सुन्नतों का ऐसा नमूना बन जाएं कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त क़्यामत के दिन इस ज़ाहिर को ही क़बूल फ़रमा लें, हमने दुनिया में देखा है बअ़ज़ तलबा एक नम्बर से मुम्ताज़ आ जाते हैं, बअ़ज़ तलबा एक नम्बर से फ़ैल हो जो हैं, ज़रा सोचिये तो सही, अगर एक नम्बर इतनी अहमियत रखता है तो हम अगर एक एक सुन्नत को अपनाएंगे तो हो सकता है कि यही सुन्नत हमारे लिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की निगाहों में मुम्ताज़ होने का ज़रीआ बन जाए, अल्लाह को यह बात प्यारी लगे और अल्लाह हमारे लिये सुन्नत भरी ज़िंदगी गुज़ारनी आसान फ़रमा दे, अल्लाह तआला के लिये यह बात कोई मुश्किल नहीं, हां हम ज़ाहिर को सजा सकते हैं, बातिन का मुआमला तो अल्लाह के ज़िम्मा है, मगर इतनी बात ज़रूर है कि क़्यामत के दिन होगा अगर हम अपनी सुन्नत के साथ शबाहत को लेके अल्लाह के हुज़ूर पहुंच गए और रब्बे करीम ने पूछाः उलमा तलबा! तुम दुनिया से क्या लेकर आए तो इतना तो कह सकेंगेः

तेरे महबूब की या रब शबाहत ले के आया हूं
हक़ीक़त इसको तू कर दे मैं सूरत ले के आया हूं

ऐ मेरे मौला! सूरत तो बनाए फिरते हैं, उसमें हक़ीक़त को भर देना यह तो आप का काम है, आप रहमत की एक नज़र डाल

दीजिये, हमारे मन की कैफ़ियतों को भी सुन्नत के मुताबिक़ बना दीजिये, ताकि ज़ाहिर व बातिन सुन्नत के नूर से मुनव्वर हो जाए, अल्लाह तआला आज की इस महफ़िल में हमें सुन्नतों भरी ज़िंदगी गुज़रने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, हत्ता कि जब मौत का वक़्त आए, मलकुल मौत आए, दिलों को टटोले तो इश्क़े नबवी से भरा हुआ पाए, दिमाग़ों को टटोले इल्मे नबवी से भरा हुआ पाए, हमारे अअ्ज़ा को टटोले सुन्नते नबवी से मुज़य्यन नज़र आए और वह भी उसको गवाही दे दे कि यह बंदा मुझे अपने आक़ा का ग़ुलाम नज़र आता है, रब्बे करीम हमें एक एक सुन्नत पर मुहब्बत के साथ अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और उस सुन्नत के नूर को पूरी दुनिया के अंदर फैलाने और पहुंचाने की अल्लाह तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

وآخرُ دعْوانا أنِ الحمد للهِ ربِّ العالمين

अगले सफ़्हा पर आप जो खिताब मिला खुतबा मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे; वह खिताब इस तारीख़ी दौरए हिंद अप्रेल 2011 ई० की आख़िरी उमूमी मजलिस में हुआ था, और तक़्दीरे इलाही से जुम्आ का दिन था, यह खिताब 22 अप्रेल 2011 ई० बरोज़ जुम्आ नमाज़े जुम्आ से पहले "मस्जिदे क़ादरिया" में हुआ था, हाज़िरीन की तादाद का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस वसीअ़ मस्जिद में तीन जुम्आ की जमाअ़तें कराई गईं, और एक जमाअ़त ईदगाहे कुद्दूस के मैदान में कराई गई।

हाज़िरीन की तादाद एक लाख से तजाविज़ की गई थी।

खिताबे जुम्आ

तेरे हाथ में हो कुर्आन और तू दुनिया में रहे परेशान?

الحمد للّٰہ و کفی وسلام علی عباده الذین اصطفی، ام بعد
اعوذ باللّٰہ من الشیطان الرجیم، بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم
اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَیْنَ اَنْ یَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ط اِنَّهٗ کَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا. وقال اللّٰہ تَعَالٰی فی مقام آخر: الٓرٰ قف کِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَیْکَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ لا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ اِلٰی صِرَاطِ الْعَزِیْزِ الْحَمِیْدِ.
وقال رسولُ اللّٰہ ﷺ: تبرّک بالقرآن فانهٗ کلامُ اللّٰہ

سبحان ربک ربِّ العزة عما یصفون، وسلام علی المرسلین، والحمد للّٰہ رب العلمین
اللھم صل علی سیدنا محمد و علی ال سیدنا محمد وبارک وسلم
اللھم صل علی سیدنا محمد و علی ال سیدنا محمد وبارک وسلم
اللھم صل علی سیدنا محمد و علی ال سیدنا محمد وبارک وسلم

कुर्आन क्या है?

"کِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَیْکَ" यह किताब है जिसे हमने आप की तरफ़ नाज़िल किया, لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ कि आप इंसानों को जुल्मतों से निकाल कर रौशन की तरफ़ लाएं, क़ुर्आन मजीद फ़ुर्क़ाने हमीद अंधेरों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ लाने वाली किताब, क़अ्रे मज़ल्लत में पड़े हुओं को औजे सुरय्या पे पहुंचाने वाली किताब, अल्लाह से बिछड़े हुओं को अपने अल्लाह से मिलाने

वाली किताब है, यह किताब हिदायत है, इसे भेजा ही इसलिये गया कि यह इंसानों को अपने परवरदिगाह के साथ वासिल कर दे, यह किताब हक़ीक़तों का मज्मूआ, यह सच्चाईयों से भरी हुई किताब, Ultimate Trugh रब्बुल इज़्ज़त ने काइनात की सदाक़तों को इस किताब के अंदर इकट्ठा फ़रमा दिया, यह इंसानियत के लिये दस्तूरे हयात है, यह इंसानियत के लिये मन्शूर हयात है, यह इंसानियत के लिये ज़ाब्तए हयात है, बल्कि पूरी इंसानियत के लिये आबे हयात है। आप ने लोहे का खींचने वाला मक़्नातीस देखा होगा, जहां भी हो तो लोहे को अपनी तरफ़र खींचता है, क़ुर्आन मजीद फ़ुर्क़ाने हमीद अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रहमतों को खींचने वाला मक़्नातीस है, इर्शादे बारी तआला है: "وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ" जब क़ुर्आन पढ़ा जाए तो ख़ामोश रहो, तवज्जो से सुनो, ताकि तुम पर रहमतें बरसाई जाएं, जहां क़ुर्आन मजीद पढ़ा जाता है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की रहमतें छम छम बरसती है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को क़ुर्आन मजीद सुनना बहुत पसंद है, हदीसे मुबारक में है कि लोग गाना सुनाने वाली औरत का गाना इतनी तवज्जो से नहीं सुनते जितनी तवज्जो से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त क़ुर्आन पढ़ने वाले के क़ुर्आन को सुनते हैं। फ़रिशते क़ुर्आन की तिलावत नहीं कर सकते, हज़रत जिब्रईल अलै0 को यह इम्तियाज़ी शान हासिल है कि वह क़ुर्आन लाते थे और वह नबी सल्ल0 के साथ तिलावत फ़रमाते थे, इसके अलावा बाक़ी फ़रिशतों को यह सआदत हासिल नहीं, यह सआदत अल्लाह ने फ़क़त इंसान को अता की है, जो ख़ूबी बंदे के अंदर न हो, जब वह किसी दूसरे के अंदर हो तो बड़ा अच्छा लगता है। चुनांचे क़ुर्आन मजीद पढ़ने वाला पढ़ता है तो फ़रिशते इकट्ठे हो जाते हैं, इससे क़रीब तर होते

हैं, हदीसे मुबारक में फ़रमाया कि वह उस पढ़ने वाले के लबों पर अपने लब रख देते हैं, क़ुर्आन मजीद पढ़ने वाले के लबों को मुहब्बत से बोसा देते हैं।

चुनांचे इमाम आसिम रह0 एक क़ारी थे मस्जिदे नबवी में क़ुर्आन मजीद पढ़ाया करते थे, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उनको यह ख़ूबी दी थी कि उनके मुंह से ख़ुशबू आया करती थी, उनके शार्गिद पीछे पड़े रहे कि आप के मुंह से ख़ूशबू क्यों आती है? कोई इलाईची रखते हैं या कोई और ख़ुशबू रखते हैं? वह बतलाते कि मैं तो मुंह में कुछ भी नहीं डालता, शार्गिद पूछते कि हज़रत! आख़िर यह ख़ुशबू कैसी आती है? तो बिलआख़िर उन्होंने एक दिन राज़ खोला, फ़रमाने लगे कि मैं सोया हुआ था, ख़्वाब में नबी सल्ल0 का दीदार नसीब हुआ, फ़रमाया आसिम! तुम मेरी मस्जिद में क़ुर्आन पढ़ाते हो, लाओ मैं तुम्हारे लबों को बोसा दूं, जब से नबी सल्ल0 ने मेरे लबों को बोसा दिया तब से मेरे मुंह से यह ख़ुशबू आती है, क़ुर्आन मजीद का पढ़ना अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को बहुत महबूब है।

क़ुर्आन मजीद का पहला फ़ाएदा

यह किताब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने भेजी ताकि हम इससे फ़ाएदा उठाएं पहला फ़ाएदा कि जहां क़ुर्आन मजीद पढ़ा जाता है वहां रहमतें छम छम बरसती हैं, जिन घरों में पढ़ा जाता है वह आसमान वालों के नज़दीक इस तरह नूर से चमकते हैं जैसे ज़मीन वालों के नज़दीक आसमान के ऊपर सितारे चमक रहे होते हैं, तो हम अपने घरों को क़ुर्आन मजीद के पढ़ने से मुनव्वर करें, ताकि हमारे घर पर रहमत की बारिश बरसे। नबी सल्ल0 ने इर्शाद फ़रमायाः "تبرّك بالقرآن فانه كلام الله" तुम क़ुर्आन से बरकत हासिल करो कि यह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का कलाम है, यह एक

बाबरकत ज़ात का कलाम है, "تَبَارَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ" बरकत वाली है वह ज़ात जिसके हाथ में है मुल्क, "تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ" बरकते वाला नाम है तुम्हारे रब का, तो जिसका नाम भी बरकत वाला, जिसकी ज़ात भी बरकत वाली, उसका यह कलाम भी बरकत वाला कलाम है, जो पढ़ेगा उसकी ज़िंदगी में बरकतें आएंगी।

आज कुर्आन मजीद को नज़र अंदाज़ करने की वजह से आम मुसलमान की ज़िंदगी से बरकतें निकल चुकी हैं, जितने घर के लो हैं उतने कमाते हैं ख़र्चे भी पूरे नहीं होते, लंगोट कस के मैदान में उतरते हैं कि परेशानियों को ख़त्म करेंगे, परेशानियां ख़त्म नहीं होतीं, रिज़्क़ में बरकत नहीं, वक़्त में बरकत नहीं, कुव्वते याददाश्त में बरकत नहीं, इज़्ज़त में बरकत नहीं, यह बेबरकती असल में कुर्आन मजीद के ज़िंदगियों में से निकल जाने की वजह से है। आज कल जिन घरों में बाक़ाएदगी अख़्बार पढ़ा जाता है उन मुसलमान घरों में भी बाक़ाएदगी से कुर्आन पढ़ने वाला कोई नहीं है, यह अजीब बात है कि बरकतों का ख़ज़ाना हमारे पास मौजूद है और हम आलिमों के पीछे तअ़वीज़ों के लिये भागते फिर रहे होते हैं। ज़रा सोचने की बात है कि यह कुर्आन मजीद अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने भेजा ही इसलिये है कि हम इससे अपनी ज़िंदगियों को बाबरकत बना लें।

कुर्आन मजीद की मुहब्बत ईमान की हिफ़ाज़त का ज़रीआ

कुर्आन मजीद की मुहब्बत का सबसे अदनी अज्र यह है कि इंसान का ईमान महफ़ूज़ रहता है।

एक वाक़िआ सुनें! एक नौजवान इंजीनियर था, बेहतरीन तालिबे इल्म था, उसने तालीम हासिल करने के बाद बैरूने मुल्क में मुलाज़मत के लिये Apply किया (दरख़्वास्त दी) तो उसे अच्छी मुलाज़मत मिल गई, चुनांचे एक साफ़्ट वियर कम्पनी में उसने

मुलाज़मत कर ली, जब वहां वह काम कर रहा था तो उसी की कम्पनी में एक इंजीनियर लड़की भी थी, अब काम के दौरान चूंकि उनको बहुत एक दूसरे के साथ मिलना जुलना पड़ता था तो तबीअतें एक दूसरे की तरफ़ माइल हुई, आपस में दिल मिल गए, यह नौजवान चाहता था कि अगर इस हूर परी से मेरी शादी हो जाए तो क्या बात!! जब उसने पैग़ाम दिया तो उस लड़की के वालिदैन बहुत कट्टर ईसाई थे, उन्होंने पहले तो इंकार कर दिया कि हम किसी मुसलमान से अपनी बच्ची की शादी नहीं कर सकते, यह नौजवान उसकी जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकता था, उसने उसको कहा कि अपने मां बाप से पूछो जिन शराइत पे वह शादी कर सकते हैं मैं उनको मानने के लिये तैयार हूं, उसके मां बाप ने चार शर्तें लगाईं पहली शर्त यह कि आज के बाद तुम वतन अपने मुल्क में वापस कभी भी नहीं जाओगे, उसने तसलीम कर लिया। दूसर शर्त कि शादी के बाद तुम अपने वालिदैन, अज़ीज़, रिशतादारों से कोई भी तअल्लुक़ नहीं रखोगे, उसने इसको भी क़बूल कर लिया। तीसरी शर्त कि यहां जो तुम्हारे मुसलमान दोस्त हैं तुम उनसे भी क़त्अ़ तअल्लुक़ करके किसी दूसरी रियासत में मुंतक़िल हो जाओगे और मुसलमान तुम्हारा दोस्त कोई नहीं होगा, उसने इसको भी क़बूल कर लिया। चौथी शर्त कि तुम लड़की के वालिदैन के घर के क़रीब अपना घर लेकर रहोगे और कभी उनके साथ तुम संडे के दिल चर्च में भी जाया करोगे, उसने इस शर्त को भी क़बूल कर लिया। इससे अंदाज़ा लगाइये कि कितना जुनून उसके दिमाग़ में था, उस लड़की से शादी करने की इतनी भारी क़ीमत उसने अदा कर दी कि किसी तरह यह लड़की मेरी बीवी बन जाए, ख़ैर शादी हो गई, शादी से पहले वह अचानक जिस जगह पर रहता था वहां से ग़ाएब हो गया, न किसी

दोस्त को पता कि कहां गया, न किसी को मालूम, लोग हैराम कि आसमान ने उठा लिया या ज़मीन उसको निगल गई, हुआ तो क्या हुआ, वालिदैन से राबता किया, उन्होंने कहा हमें भी कोई इत्तिला नहीं, हत्ता कि यूं समझये कि जैसे घर में मातम हो गया हो, उसकी वफ़ात का ग़म मनाया गया, दोस्त अहबाब भी परेशान, मगर वह तो बिल्कुल गुम ही हो गया, और वह मुल्क कितना बड़ा मुल्क कि वहां पे एक रियासत से दूसरी तरफ़ की रियासत में जाकर रहो तो किसी को पता भी नहीं चलता कि कौन कहां है, चुनांचे दो साल यह बंदा इसी तरह गुम रहा और अपनी ज़िंदगी बीवी के साथ गुज़ारता रहा, एक दिन यह अपनी पहली जगह पर वापस आया और जिस मस्जिद में यह नमाज़ पढ़ता था, फ़ज्र की नमाज़ के वक़्त बैठा वहां वज़ू कर रहा था, इमाम साहब ने देखा तो उन्होंने कहा कि मुझे अपनी आंखों पे यक़ीन नहीं आ रहा है कि तुम कहां से बरआमद हो गए, उसने कहा नमाज़ के बाद मैं बात सुनाऊंगा, नमाज़ अदा की, इमाम साहब उसको अलग कमरे में ले गए, पूछा कि तुम्हारे साथ क्या मुआमला पेश आया? तब उस नौजवान ने बताया कि मैं उस लड़की की मुहब्बत में इस क़दर पागल हो गया था कि मैंने उनकी यह तमाम शराइत मान लीं और मैं उसके साथ ज़िंदगी गुज़ारने लगा, मैं नमाज़ पढ़ता था, न मैं कोई और नेकी का काम करता था, हां एक अमल मेरी ज़िंदगी में था, वह यह कि घर में कुछ किताबें रखी हुई थीं, उनमें सब्ज़ जल्द में कुर्आन मजीद था, मैं जब दफ़्तर जाता तो भी नज़र डालता कि यह मेरे अल्लाह का कलाम है, वापस आता तो भी नज़र डालता और मैं अपने दिल में कहताः तू नफ़्स का गुलाम है, तू नफ़्स का बंदा है, तूने इस लड़की की ख़ातिर अपना दीन अपनी दुनिया सब कुछ ही कुर्आन कर डाली, मैं मुहब्बत की नज़र से

कुर्आन को देखता था, मेरी ज़िंदगी के दो साल इसी तरह गुज़र गए, मैं शराब पीता, सुअर खाता, उनके साथ चरचों में जाता, उन्हीं के रंग में रंगने लग गया, मगर मेरी ज़िंदगी में एक अमल था कि जब मैं गुज़रने लगता या आने लगता तो मेरी नज़र उस सब्ज़ किताब पर पड़ती तो मैं अपने दिल में नादिम व शर्मिंदा होता कि तुमने देखो क्या कुछ छोड़ दिया, मैं समझता था कि यह मेरे अल्लाह की किताब है, यह कुर्आन है, एक दिल मैं अपने दफ़्तर से वापस आया तो मैंने देखा कि वह सब्ज़ किताब अपनी जगह पर नहीं थी, मैंने बीवी से पूछा कि एक किताब यहां थी वह कहां है? उसने कहा मैंने आज अपने घर की सफ़ाई की, जिन किताबों को न तुम पढ़ते हो न मैं पढ़ती हूं मैंने उन सारी किताबों को उठा के कोड़े कर्कट के ढेर में डाल दिया, वह कहता है कि मेरे अंदर एक बिजली का करंट लगा और मैंने कहाः मेरे अल्लाह का कुर्आन Trash can के अंदर? मैं उसी वक़्त भागा और बाहर से जाके उस कुर्आन मजीद को उठाया, उसको चूमा, सीने से लगाया, वह खिड़की में से मुझे देख रही थी, जब मैं उस किताब को लेकर आया तो उसने पूछा कि तुम यूं पागलों वाली हरकतें क्यों कर रहे थे? मैंने उसे बताया कि यह कुर्आन है, अल्लाह का कलाम है, वह कहने लगी अच्छा! अभी तुम्हारे अंदर से मुसलमानी के जरासीम बाक़ी हैं? मैं अपने वालिदैन को बताती हूं, वह लड़की अपना ब्रीफ़ केस उठा कर घर छोड़ कर वालिदैन को बताने चली गई और मैं वहां से निकल कर यहां आ गया, नमाज़ का वक़्त हो गया, मैं मस्जिद में अपने अल्लाह को मनाने के लिये आ गया اللّٰہ اکبر کبیراً। कुर्आन मजीद की मुहब्बत ने ऐसे नफ़्स की बिचारी नौजवान के ईमान को भी महफ़ूज़ कर दिया--तो सबसे कम दर्जे की नेअ़मत यह है कि इंसान का ईमान महफ़ूज़ रहता है, यह

कुर्आन आया ही दुनिया में इंसानों को ईमान की रौशनी अता करने के लिये है। इसी लिये जहां कुर्आन मजीद पहुंचा वहां ईमान की रौशनी पहुंच गई।

ज़रा ग़ौर कीजियेगा नबी सल्ल0 मक्का मुकर्रमा में हैं, मदीना तय्यबा के लोग अर्ज़ करते हैं कि कोई मुअल्लिम हमारे साथ भेज दीजिये, तो नबी सल्ल0 ने मसअब बिन अमीर रज़ि0 को मदीना तय्यबा भेजा, वह वहां गए, लोगों को कुर्आन सुनाते, वह ईमान ले आते, अभी साहिबे कुर्आन मदीना में नहीं पहुंचे, फ़क्त कुर्आन पहुंचा है और कुर्आन ने वहां के लोगों की ज़िंदगियों को बदलना शुरू कर दिया, हत्ता कि सअद रज़ि0 जो कबीला के सरदार थे, उन्होंने असद बिन ज़रारा रज़ि0 से कहा: वह आ गया है जो हमारे ग़रीबों को हमारा मुख़ालिफ़ बनाता है और अपने तरीक़े पर लेकर आता है, जाओ और ज़रा जाकर उसको यहां से निकाल दो, वह आते हैं, उनके सामने मसअब बिन अमीर रज़ि0 कुर्आन पढ़ते हैं, कुर्आन सुन कर वह कलिमा पढ़कर खुद भी मुसलमान हो जाते हैं, फिर वह एक बहाने से हज़रत सअद रज़ि0 को भेजते हैं, वह भी गुस्से में आते हैं कि मैं इस क़बीले का सरदार हूं और तुम लोगों ने यह क्या तरीक़ा इख़्तियार कर रखा है? बात करनी है तो मुझसे बात करो, मसअब बिन अमीर रज़ि0 ने फ़रमाया: मैं तुम्हारे सामने कुछ पढ़ता हूं अगर वह हक़ और सच लगे तो सच के मानने में कोई रुकावट नहीं होनी चाहिये, चुनांचे उन्होंने इसी कुर्आन मजीद की तिलावत की जिसको सुन कर सअद रज़ि0 मुसलमान होते हैं, वापस लौट कर सअद रज़ि0 ने सारे क़बीले के मर्द और औरतों को इकट्ठा क्रिया और उनके सामने उन्होंने यह बात कही कि मैं इतने साल से तुम्हारे क़बीले का अमीर था, मेरे किसी काम पर कोई Objection (एतिराज़) नहीं,

मेरी इमारत किसी को नामंज़ूर नहीं, फ़रमाने लगे मैं आज के बाद इस क़बीले का अमीर नबी बन सकता, लोग रोने लगे कि जब हम चाहते हैं तो आप क्यों नहीं बन सकते? फ़रमायाः इसलिये कि मैं कलिमा पढ़ के मुसलमान हो चुका हूं और तुम लोग मुसलमान नहीं हुए, मेरी शर्त यह है या तो सारे क़बीले के लोग इस्लाम क़बूल कर लें तो मैं तुम्हारा अमीर रहूंगा, वर्ना मैं इमारत को छोड़ दूंगा, शाम हाने से पहले क़बीले के तमाम मर्द और औरतें इस्लाम से बहरावर हो चुके थे। अभी साहिबे क़ुर्आन सल्ल0 नहीं पहुंचे, क़ुर्आन ज़िंदगियों को बदल रहा था, यह इंक़लाबी किताब है ज़िंदगियों को बदल के रख देती है।

उमर रज़ि0 जैसे जवान बहादुर जो हाथ में तलवार लेकर चल पड़े कि मुसलमानों के पैग़म्बर का काम निमटाते हैं, उनको किसने बदला? अपनी बहन के घर गए, एक थप्पड़ लगाया, बहन गिरी, उठ कर खड़ी हुई, कहने लगीः उमर! जिस मां का दूध तूने पिया है उसी मां का दूध मैंने पिया है, तुम मेरे जिस्म से जान तो निकाल सकते हो, मेरे दिल से ईमान कभी नहीं निकाल सकते, उम्र कहने लगे अच्छा सुनाओ क्या पढ़ रहे थे? उनके सामने क़ुर्आन मजीद की तिलावत होती है, कहते हैं कि अच्छा मुझे तुम ले चलो मैं भी कलिमा पढ़ के मुसलमान होता हूं, अभी नबी सल्ल0 की ख़िदमत में नहीं गए, क़ुर्आन ने उनके दिल को पहले से बदल के रख दिया।

चुनांचे नजाशी के दरबार में साहिबे क़ुर्आन तशरीफ़ नहीं ले गए फ़क़त जाफ़र बिन तय्यार रज़ि0 गए, उनके साथ और भी सहाबा रज़ि0 थे और उन्होंने वहां जाकर क़ुर्आन की तिलावत की, अल्लाह तआला ने नजाशी को ईमान की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी। तो क़ुर्आन जहां पहुंचा ईमान लाने का सबब बनता चला गया, इसलिये कि यह

इंक़लाबी किताब है, सहाबा रज़ि0 इसी को सीने से लगाकर निकले, उनको दुन्यादारी का पता नहीं था,

बात क्या थी कि न क़ैसर व किस्रा से दबे
चंद वह लोग कि ऊंटों के चराने वाले
जिनको काफ़िर पे होता था नमक का धोका
बन गए दुन्या की तक़्दीर बदलने वाले

दुनिया की तक़्दीर को क़ुर्आन ने बदल के रख दिया था।

उतर कर हिराअ से सूए क़ौम आया
और एक नुस्ख़ए कीमिया साथ लाया
वह बिजली का कड़का था या सूत हादी
अरब की ज़मीं जिसने सारी हिला दी

वह क़ुर्आन मजीद था जिसने अरब की ज़मीन को हिला के रख दिया, लोगों के दिल ईमान से मअ़मूर हो गए।

सहाबा रज़ि0 क़ुर्आन मजीद के आशिक़ थे, उनके घरों में रात के आख़िरी पहर में इस तरह भिनभिनाहट की आवाज़ आती थी जैसे शहद की मक्खियों के भिनभिनाने की आवाज़ होती है, वह क़ुर्आन मजीद पढ़ रहे होते थे। चुनांचे एक सहाबी रज़ि0 घर के सिहन में क़ुर्आन मजीद पढ़ रहे हैं, क़रीब में घोड़ा बंधा है और चारपाई पर बच्चा भी लेटा है, दिल चाहता है कि क़ुर्आन ऊंचा पढ़ूं मगर घोड़ा बिदकता है, आहिस्ता पढ़ते हैं, फिर जी चाहता है कि ऊंचा पढ़ूं फिर घोड़ा बिदकता है, दिल में डर लगता है कि कहीं बच्चे को नुक़्सान न पहुंचा दे, तो आहिस्ता चढ़ते हैं, यूं ही सारी रात गुज़र गई, जब दुआ के लिये हाथ उठाने लगे तो उन्होंने कुछ रौशनियों को ऊपर आसमान की तरफ़ जाते हुए देखा, सहाबा रज़ि0 की एक ख़ूबसूरत आदत यह थी कि हर पेश आने वाली नई बात नबी सल्ल0 की ख़िदमत में अर्ज़

करते थे, चुनांचे सहाबी रज़ि0 ने भी अपना वाक़िआ नबी सल्ल0 को सुनाया कि आज मेरे साथ यह होता रहा, महबूब सल्ल0 ने फ़रमायाः अल्लाह के फ़रिशते थे, तुम्हारा कुर्आन सुनने के लिये अर्श से नीचे उतर आए थे, अगर तुम कुर्आन पढ़ते रहते तो आज मदीना के लोग अपनी आंखों से फ़रिशतों को देखते, उनके घरों में फ़रिशतों के परों से रहमतें हुआ करती थीं।

चुनांचे इब्ने कअ़ब रज़ि0 एक सहाबी हैं, कुर्आन मजीद के आशिक़ सय्यदुल क़ुराअ़ हैं, नबी सल्ल0 तशरीफ़ लाते हैं, इब्ने कअ़ब! सूरए बय्यिना सुनाओ, ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! कुर्आन मजीद आप पर नाज़िल हुआ, मैं आपके सामने कुर्आन पढ़ूं? तो आप सल्ल0 ने जवाब में फ़रमायाः हां, मगर वह भी बड़े समझदार थे, उन्होंने महसूस कर लिया कि शायद ऊपर से कोई पैग़ाम आया है, तो आप सल्ल0 से पूछते हैंः ऐ अल्लाह के हबीब सल्ल0! "اَللّٰهُ سَمَّانِي" क्या अल्लाह ने मेरा नाम लेकर हुक्म फ़रमाया है कि मैं कुर्आन सुनाऊं? नबी सल्ल0 ने जवाब में फ़रमायाः "نَعَمِ اللّٰهُ سَمَّاكَ" अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने तेरा नाम लेकर कहा कि इब्ने कअ़ब से कहो कुर्आन पढ़े मेरे महबूब आप भी सुनेंगे, मैं परवरदिगार भी सुनूंगा। कैसे कुर्आन पढ़ने वाले लोग थे जिनसे कुर्आन सुनने की फ़रमाइश अर्श के ऊपर से आया करती थीं।

यह कुर्आन मजीद इंसान की ज़िंदगी को बदल के रख देता है। चुनांचे एक यहूदी था सलाम बिन जुबैर, मदीना तय्यबा के क़रीब रहता था, वह वहां से बिलाद शाम आया कि मैं कुछ तिजारत के लिये कोई चीज़ ख़रीदूं, उसने अपनी सारी चीज़ें ख़रीद लीं, वापस जाने लगा तो एक गुलाम बिक रहा था मगर वह कमज़ोर भी था, रंग भी काला था, न शक्ल नज़र आती थी न अक़्ल नज़र आती थी,

मगर देने वाला बड़ी भारी क़ीमत में उसको बेच रहा था, तो सलाम बिन जुबैर ने सोचा इसको भी ले लेता हूं, कुछ न कुछ तो मुझे मुनाफ़ा मिल जाएगा, वह उसको लेके मदीना तय्यबा पहुंचा, वहां पर तीन दिन में उसका जितना तिजारती सामान था सब बिक गया, गुलाम ख़रीदने वाला कोई नहीं था, जो देखता था सोचता था कि काम तो कर नहीं सकता, बीमार नज़र आता है, हड्डियों को ढांचा है, न शक्ल है न अक़्ल है, न इल्म है, चुनांचे सलाम ने उसको कहा कि देखो तुम्हारी वजह से मैं अपने घर नहीं जा पा रहा हूं, मेरा बाक़ी काम सिमट गया, तुम यहां सारा दिन खड़े रहो, शायद तुम्हारा भी कोई गाहक आ जाए, तो वह बच्चा जिसका नाम सालिम था वह उस जगह पर सारा दिन खड़ा रहता, अब मदीना की चिलचिलाती धूप, पसीने में शराबोर वह कमज़ोर नौजवान, उठती जवानी, धूप में खड़ा है, कोई उसको साए में जाने की इजाज़त नहीं देता था, देखने वालों को तरस आता था, मगर ख़रीदना भी कोई नहीं चाहता था, अपने गले कौन डाले, फिर उसकी ख़बरगीरी रखनी पड़ेगी, एक जवानुल उम्र लड़की मदीना तय्यबा में रहती थी, जिसका नाम शैबा था, उसके दिल में रहम आ गया, उसने जब दो दिन देखा कि यह लड़का सालिम यहां पर धूप में खड़ा होता है, पसीना में शराबोर रंग काला हो गया, सूरज की शुआओं ने उसकी जिल्द को जला के रख दिया, उसको पानी पिलाने वाला कोई नहीं, कसमपुर्सी की हालत में उसका ग़मगुसार कोई नहीं, तो उसने सलाम बिन जुबैर से पूछाः तुम इस गुलाम को बेचना चाहते हो? उसने कहा हां, पूछा कितने में? कहने लगा जो मैंने रक़म लगाई उतनी भी दे दो तो मैं जान छुड़ाना चाहता हूं, शैबा ने इतनी रक़म देके उसको ले लिया, चुनांचे यह नौजवान सालिम शैबा का गुलाम बन गया, शैबा ने उसको अपने पास रखा,

थोड़ा अर्सा गुज़ारा तो एक और अरब ताजिर जो मक्का मुकर्रमा से शाम आए थे, वह अपने सामान को लेकर वापस चले, मदीना तय्यबा ठहरे, उनको भी यह वाक़िआ किसी ने सुनाया कि एक जवान लड़की इतनी रहमदिल है कि उसने बच्चे पे तरस खा के उसको ख़रीद लिया, उसको यह बात अच्छी लगी, उसने शैबा के घर निकाह का पैग़ाम भेज दिया, वालिदैन को पसंद आया कि मक्का मुकर्रमा का रहने वाला ताजिर है, बाइज़्ज़त है, तो बच्ची के लिये इतने अच्छे रिशते कहां आते हैं, उन्होंने अपनी बेटी शैबा का निकाह कर दिया, उसका नाम था अबू हुज़ैफ़ा, वह कुछ दिन तो वहां रहे, फिर उन्होंने कहा कि मुझे तो मक्का मुकर्रमा जाना है, वह अपनी बीवी शैबा को भी लेकर चले, यह सालिम चूंकि शैबा का गुलाम था, यह भी चल पड़ा, मक्का मुकर्रमा पहुंचे तो वहां जाकर अबू हुज़ैफ़ा ने एक तबदीली महसूस की, उसके दोस्तों में एक दोस्त थे जिन का नाम था उस्मान बिन अफ़्फ़ान, वह उससे मिले तो सही, मगर बड़ी सर्द मह्री के साथ, उन्होंने उनको कोल्ड का रनर दिया, वह जो गर्म जोशी पहले होती थी वह नहीं थी, अबू हुज़ैफ़ा बड़े परेशान हुए, पूछा उस्मान! बात क्या है? तुम तो एक दूसरे के बड़े क़रीबी दोस्त थे, और अब......

बदले बदले मेरे सरकार नज़र आते हैं

तो उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि0 ने जवाब दिया कि वजह यह है कि मैं कलिमा पढ़ के मुसलमान हो चुका हूं और तुम अभी मुसलमान नहीं हुए, लिहाज़ा मेरी और तुम्हारी यह दोस्ती कैसे आगे चलेगी? उसने कहा कि अच्छा कैसे मुसलमान हुए? बताया कि नबी सल्ल0 की ख़िदमत में, अबू हुज़ैफ़ा ने कहा कि मुझे भी ले चलो, नबी सल्ल0 की ख़िदमत में आते हैं, नबी सल्ल0 उनके सामने क़ुर्आन

की तिलावत करते हैं, अबू हुज़ैफ़ा कलिमा पढ़कर मुसलमान हो जाते हैं, घर आके बताया तो उसकी बीवी शैबा भी कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो जाती है, अब जब गुलाम ने यह सुना तो उसने भी कलिमा पढ़ा, अब यह पूरा घराना मुसलमान हो जाता है, चंद दिन के बाद नबी सल्ल0 ने औरतों से नसीहत की कोई बात की, जिसमें फ़रमाया कि जो अपने गुलाम को आज़ाद करेगा अल्लाह तआला उसको इतना अज्र अता करेगा, शैबा घर आई, उसने आकर गुलाम को कहा कि मेरी तरफ़ से तू आज़ाद है, सालिम रोने लग गए कि मेरी मां नहीं, बाप नहीं, मैं यहां परदेसी हूं, आप भी मुझे यहां छोड़ देंगी तो मेरा क्या बनेगा, अबू हुज़ैफ़ा रज़ि0 ने कहा कोई बात नहीं, मैं तुम्हें अपना बेटा बना लेता हूं, चुनांचे उनका नाम पड़ाः सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ा रज़ि0। अब यह छोटा बच्चा जिसकी दुनिया के अंदर कोई क़ीमत नहीं थी, अहमियत नहीं थी, शक्ल अच्छी नहीं थी, अक़्ल अच्छी नहीं थी, दुनिया उसको गिरी पड़ी चीज़ का दर्जा देती थी, यह नौजवान नबी सल्ल0 की ख़िदमत में आने लगा और उसने कुर्आन सीखना शुरू कर दिया, कुर्आन यूं इज़्ज़तें देता है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उस सालिम की ज़बान पे कुर्आन को ऐसा जारी किया कि यह इतना खूबसूरत कुर्आन पढ़ने लगे कि एक मर्तबा नबी सल्ल0 ने उसे पढ़ते सुना तो फ़रमायाः सब तारीफ़ें हैं उस ज़ात की जिसने मेरी उम्मत में ऐसे कुर्आन पढ़ने वाले पैदा फ़रमा दिये, उस नौजवान के बारे में यह नबी सल्ल0 का तब्सिरा है, चुनांचे जब मदीना तय्यबा हिज्रत हुई तो चंद सहाबा पहले हिज्रत करके आ गए थे, उमर रज़ि0 भी उनमें थे और उनमें यह सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ा भी थे, जब यह लोग कुबा में आए तो वहां नमाज़ पढ़ते थे, नमाज़ की इमामत के लिये लोगों ने सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ा को चुना,

चुनांचे सालिम इमामत करवाते थे और उनके मुक़्तदियों में उमर बिन अलख़त्ताब रज़ि0 भी थे, मदीना तय्यबा के यहूदियों को अपनी आंखों पे यक़ीन नहीं आता था कि यह वही लड़का है जो चौबीस घंटे धूप में खड़ा रहता था, जो सारा सारा दिन धूप में खड़ा रहता था, उसे ख़रीदने वाला कोई नहीं था, आज उस बच्चे को इतनी इज़्ज़त मिली कि इमामत के मस्ले पर खड़ा है और उसकी इक़्तिदा में उमर फ़ारूक़ रज़ि0 भी नमाज़ अदा फ़रमा रहे हैं?

नबी सल्ल0 ने एक मर्तबा सालिम को देखा तो फ़रमायाः सालिम का दिल अल्लाह की मुहब्बत से पूरा का पूरा भरा हुआ है, सहाबा उनका इकराम करते थे, अल्लाह ने फिर सालिम को वह इज़्ज़त दी कि किताबों में लिखा है कि उमर बिन अलख़त्ताब रज़ि0 की शहादत का वक़्त है, आख़िरी वक़्त में एक ठंडी सांस लेते हैं, फ़रमाते हैं कि काश सालिम ज़िंदा होता, किसी ने कहा क्यों? फ़रमाने लगे कि फिर मुझे ख़लीफ़ा बनाने के लिये किसी और का नाम लेने की ज़रूरत नहीं थी, और इसके साथ यह भी कहा कि अगर क़्यामत के दिन उमर बिन अलख़त्ताब से पूछा जाता कि तुमने सालिम को ख़लीफ़ा क्यों बनाया, तो मैं अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने जवाब देता कि अल्लाह! मैंने आपके सच्चे पैग़म्बर की सच्ची ज़बान से यह सुना उन्होंने फ़रमायाः सालिम का दिल पूरा का पूरा अल्लाह की मुहब्बत से भर चुका है। वह बच्चा जिसे कोई ख़रीदने वाला नहीं था देखिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को क्या बुलंदी अता फ़रमाते हैं, क़ुर्आन मजीद दुनिया में आया ही इसी लिये है कि यह गिरे पड़ों को उठा दे, क़अरे मुज़ल्लत में पड़े हुओं को इवज शरयापा पहुंचा दे।

उमर रज़ि0 का अपना वाक़िआ है कि अपने दौरे ख़िलाफ़त में

मक्का मुकर्रमा की तरफ़ जा रहे हैं, पीछे फ़ौज भी है, एक जगह पहाड़ी पर टर्न लेते हुए रुक गए और नीचे Valley (वादी) में देखना शुरू किया, लोगों ने कहा हज़रत! आप के खड़े होने की वजह से पीछे इतने लोग चिलचिलाती धूप में खड़े हैं, पसीना है, खड़ा होना मुश्किल हो गया, उमर रज़ि० फ़रमाते हैं: मैं उस वादी को देख रहा हूं जहां इस्लाम लाने से पहले मैं अपने ऊंट चराने आया करता था, मगर ऊंट चराने का मुझे सलीक़ा नहीं था, मेरे ऊंटा ख़ाली पेट जाते, मेरा वालिद ख़त्ताब मुझे कोसता था, डांटता कहता था: उमर तू कैसे अच्छी ज़िंदगी गुज़ारेगा, तुझे ऊंट चराने भी नहीं आते, मैं अपने उस वक़्त को याद कर रहा हूं और आज उस वक़्त को देख रहा हूं जब इस्लाम और क़ुर्आन के सदक़े अल्लाह ने उमर को अमीरुल मोमिनीन बना दिया है, जिनको ऊंट चराने नहीं आते थे, यह क़ुर्आन उनको भी अमीरुल मोमिनीन बना देता है। इसी लिये यह बात बिल्कुल साबित है कि: "اِنَّ اللّٰهَ يَرفَعُ بِهٰذا الكتابِ أقواماً" अल्लाह तआला इस किताब के ज़रीआ क़ौमों को बुलंदी अता फ़रमा देते हैं।

इस किताब की एक और खूबी यह है कि यह इंसानों के दिल के लिये रूह के मानिंद है, याद रखिये! एक हमारे जिस्म की रूह है, वह भी अल्लाह का अम्र है: "وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ط قُلِ الرُّوْحُ اَمْرِ رَبِّی" जब वह रूह आती है तो जिस्म ज़िंदा हो जाता है, रूह निकल जाती है तो जिस्म बेजान हो जाता है। बिल्कुल इसी तरह हमारे दिल की भी एक रूह है, उस दिल की रूह का नाम क़ुर्आन अज़ीमुश्शान है, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: "وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَا اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا" क़ुर्आन को अल्लाह ने रूह फ़रमाया, दिलों की रूह है, जिस बंदे की ज़िंदगी में क़ुर्आन की तालीमात आती हैं यह क़ुर्आन उसके दिल को ज़िंदा कर देता है, वह ज़िंदा दिल वाला इंसान होता

है। सहाबा रज़ि0 के दिलों में वह रूह उतर आई थी, इसलिये वह जाहं जाते थे कामियाबी उनके क़दम चूमती थी। रबई बिन आमिर रज़ि0 ने रुस्तम के दरबार में यही तो कहा था कि "جِئْنَا لِنُخْرِجَ الْعِبَادَ مِنْ عِبَادَةِ الْعِبَادِ إِلَى عِبَادَةِ رَبِّ الْعِبَادِ" हम आए हैं इंसानों को इंसानों की गुलामी से निकाल के अल्लाह की बंदगी सिखाने की ख़ातिर, यह कुर्आन इस तरह इंसान को ज़िंदा कर देता है, जिस क़ौम में कुर्आन आ जाता है वह क़ौम ज़िंदा बन जाती है, जिस शख़्स में कुर्आन आ जाता है उस शख़्स को कुर्आन ज़िंदा कर देता है।

कुर्आन से बेतअल्लुक़ी के नुक़्सानात

आज कुर्आन के साथ वह मुहब्बत न होने की वजह से, रोज़ाना उसकी तिलावत न करने की वजह से, कुर्आन को न समझने की वजह से, आज हमारे दिल बेरूह बन चुके, हमारे दिलों में दिल नहीं, सीनों के अंदर सिल मौजूद है, चूंकि बातिनी तौर पर हहम आज ज़िंदा नहीं, इसलिये हमारी नसीहत का असर नहीं होता, हमारी बात कोई क़बूल नहीं करता, हम अपने आप को भी इस दुनिया के अंदर महफ़ूज़ नहीं कर सकते। याद रखिये! जिस बंदे की ज़िंदगी से रूह निकल जाए वह तो मुर्दा होता है, मय्यत होता है, उसे तो समेटा जाता है कि जल्दी ले जाओ, उसको ज़मीन के अंदर दफ़्र कर दो, दफ़न करने वालों से लोग ख़ुश होते हैं, वर्ना उसमें तअफ़ुन फैलता, आज कुर्आन मजीद के बग़ैर हम बातिनी तौर पर मुर्दा बन गए हैं। आज देखो हम मुसलमानों का क्या ज़िल्लत का हाल हो चुका है, इसलिये कि मय्यत बन गए, मुर्दा बन गए, अगर हम चाहते हैं कि हमें ज़िंदगी नसीब हो तो हमें चाहिये कि हम कुर्आन मजीद को फिर अपनी ज़िंदगियों में लागू करें, उसकी तालीमात को अपनी ज़िंदगियों में लागू करें, फिर देखें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त जिस तरह कुर्आन

मुअज़्ज़ज़ है उसी तरह हमें भी इज़्ज़तों से नवाज़ेंगे। कहने वाले ने यही तो कहा थाः

हर लहज़ा है मोमिन की नई आन नई शान
किर्दार में गुफ़्तार में अल्लाह की बुरहान
यह बात किसी को नहीं मालूम कि मोमिन
क़ारी नज़र आता है हक़ीक़त में है क़ुर्आन

जब यह क़ुर्आन को अपने सीने से लगा लेता है तो फिर क़ुर्आन की तरह मुअज़्ज़ज़ बन जाता है, जहां जाता है इज़्ज़तों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं

वह ज़माने में मुअज़्ज़ज़ थे मुसलमान होकर
हम हुए ख़्वार तारिके क़ुरां होकर

हमने क़ुर्आन को अपनी ज़िंदगियों से निकाल दिया, सिर्फ़ एक बरकत की किताब ताक़चों के अंदर सजा कर रख दी, ख़ुशबूएं लगी दीं, यह क़ुर्आन उस वक़्त याद आता है जब निकाल पढ़ना हो, जब क़सम उठानी हो, जब यक़ीन दिहानी करवानी हो, क़ुर्आन हमें आगे पीछे याद नहीं आता, हमारी ज़िंदगी मन मर्ज़ी की है, तो फिर उसकी बरकतें कैसे होंगी? चुनांचे फ़रमायाः تَبَـرَّكْ بِـالـقُـرآنِ فَانَّهُ كَلامُ اللّٰهِ، क़ुर्आन के ज़रीआ बरकत पाओ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का कलाम है।

अजीब बात है यह बरकतों को ख़ज़ाना आज हमारे घरों में मौजूद है; हमें चंद मिनट नहीं मिलते कि हम उसकी तिलावत कर सकें, कितने घराने ऐसे हैं कि घर में से एक बंदा भी रोज़ाना इसकी तिलावत करने वाला नहीं होता, यह क़ुर्आन मज़लूम किताब है, हमें चाहिये कि हम में झगड़ा करेगा, अल्लाह! आपने मुझे इन लोगों के पास भेजा था, इनके पास किताबें पढ़ने का वक़्त था, अंग्रेज़ी पढ़ने का वक़्त था, News paper (अख़्बार) पढ़ने का वक़्त था, टी

वी पे News (ख़बरें) सुनने का वक़्त था, दोस्तों के साथ मोबाइल फ़ोन पे घंटों बातचीत करने का वक़्त था, अल्लाह! इनके पास मुझे पढ़ने का वक़्त नहीं था, यह दिन में एक मर्तबा भी मुझसे हाल भी नहीं पूछा करते थे। उस वक़्त अल्लाह के नबी भी फ़रमाएंगेः "وَقَالَ الرَّسُوْلُ يَا رَبِّ اِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هٰذَا الْقُرْآنَ مَهْجُوْرًا" सोचिये फिर हमारा क्या बनेगा? आज वक़्त है कि हम अपनी ग़लती को तसलीम करके इस क़ुर्आन को पढ़ने, समझने, ज़िंदगियों में लागू करने की नियत कर लें, अल्लाह तआला आज भी हमें बातिनी तौर पर ज़िंदा फ़रमा देंगे, और हमें इज़्ज़तों की ज़िंदगी अता फ़रमा देंगे।

अगर आप अगर किसी डाक्टर से गोलियां लिखवा लें, घर में लाकर रख लें, लेकिन खाएं नहीं तो वह गोलियां फ़ाएदा नहीं देंगी, बिल्कुल इसी तरह क़ुर्आन को घर में लाकर रख लिया जाए, पढ़ा न जाए, अमल न किया जाए, तो इसकी बरकतों से फ़ाएदा नहीं होता, अगर कोई चाहे कि मैं क़ुर्आन मजीद की बरकतों से फ़ाएदा उठा लूं तो उसे चाहिये कि क़ुर्आन मजीद को अपना नसीबुल ऐन बना ले, अपनी ज़िंदगी का मक़्सद बना ले, इस क़ुर्आन को पढ़ें, क़ुर्आन मजीद में कहा गयाः "يَا يَحْيٰى خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ" इसका मतलब यह नहीं कि हाथ से मज़बूती से पकड़ो, बल्कि उसकी तालीमात को लागू कर लो। आज हम अपने नफ़्स को मुख़ातिब करके कहेंः "يَا يَحْيٰى خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ" इस किताब को मज़बूती से पकड़ लो, फिर देखो अल्लाह कैसे इज़्ज़तों से नवाज़ते हैं।

अब आख़िर में एक वाक़िआ सुन लीजिये ताकि बात और ज़्यादा वाज़ेह हो जाए, एक दीहाती नौजवान जा रहा था, उसने देखा कि एक जगह एक बंदूक़ का कारतूस पड़ा हुआ है, उसने उठा लिया, उसकी समझ में नहीं आता था कि यह क्या है, उसने किसी दूसरे से

पूछा कि यह क्या चीज़ है? बताने वाले ने बताया कि यह बंदूक़ का कारतूस है और इसके अंदर बड़ी ताक़त है, यह तो हाथी को मार सकता है, शेर को मार सकता है, बड़े से बड़े बंदे को लिटा सकता है, वह दीहाती बड़ा खुश हो गया कि चलो मुझे ताक़तवर चीज़ मिल गई, उसने उसका कारतूस को जेब में डाल लिया, उसको लेके फिरता रहा, एक दिन शह से अपनी बस्ती वापस आ रहा था, शाम का वक़्त था, उसके पीछे एक छोटा सा कुत्ता भाग पड़ा, उसने तो पहले अपनी जान बचाने के लिये दौड़ लगाई, मगर वह कुत्ता ज़्यादा तेज़ रफ़्तारी से दौड़ रहा था, उसको डर हुआ कि मुझे काट लेगा, फिर उसको ख़्याल आया कि मेरे पास तो इतनी ताक़त वाली चीज़ है, उसने अपनी जेब से कारतूस निकाला और कुत्ते की तरफ़ फैंका, वह कुत्ते को लगा तो सही, मगर कुत्ता भागता गया वह उसकी तरफ़ आ चढ़ा, यह सरपट दौड़ा, जान बचा के मुश्किल से बीच बस्ती में पहुंचा, आगे वही बंदा मिल गया जिसने कहा था कि यह तो बड़ी ताक़तवर चीज़ है, हाथी को लिटा देती है, शेर को मार देती है, उसने अपना पसीना पौंछा और उस बंदे को कहाः यार! आपने मुझे बड़ा Misguide किया, खुला धोका दिया, इसलिये कि आपने तो कहा था कि यह बड़ी ताक़त वाली चीज़ है, मैंने कुत्ते को मारा, लेकिन कुत्ते को असर नहीं हुआ, यह हाथी को क्या लिटाएगा, उस वक़्त उस बंदे ने समझाया कि अल्लाह के बंदे! यह वाक़ई ताक़त वाली चीज़ है, लेकिन इसकी ताक़त ऐसे नहीं ज़ाहिर होती, इसके लिये एक चीज़ है जिसको बंदूक़ कहते हैं, अगर यह कारतूस इस बंदूक़ के अंदर डाल दिया जाए और फिर फ़ायर किया जाए, तब इसकी ताक़त ज़ाहिर होती है, फिर यह हाथी को लिटा देता है।

बिल्कुल यही मिसाल है, यह क़ुर्आन मजीद ताक़तवर कारतूस के

मानिंद है, लेकिन इसकी ताक़त घर में रखने से ज़ाहिर नहीं होती, इसकी ताक़त तब ज़ाहिर जब यह 6 फ़िट की जो जिस्म की बंदूक़ है हम इसमें इसको लागू करें, फिर इसके बाद तहज्जुद का वक़्त होगा, यह साहिबे क़ुर्आन अल्लाह के सामने हाथ उठाएगा, क़ुर्आन की ताक़त ज़ाहिर होगी, अल्लाह दुनिया का नक़्शा बदल के रख दिया करते हैं, अल्लाह तआला हमें क़ुर्आन मजीद के साथ वालिहाना मुहब्बत अता फ़रमा दे।

हमारे हज़रत रह0 फ़रमाते थेः "तेरे हाथ में हो क़ुर्आन, और तू दुनिया में रहे परेशान, तेरे हाथ में हो क़ुर्आन, और तू दुनिया में रहे नाकाम, तेरे हाथ में हो क़ुर्आन और तू दुनिया में रहे ग़ुलाम, ग़ुलामी नफ़्स की हो, शैतान की हो, या किसी इंसान की हो, ना ना ना, हमें कहता है यह क़ुर्आनः ओ मेरे मानने वाले मुसलमान! तू पढ़ क़ुर्आन, तेरा रब करेगा तेरा इक्राम, "اِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ" तू पढ़ क़ुर्आन, तेरा रब तेरा इक्राम करेगा, तेरा रब तेरे ज़ाहिर व बातिन को निखार देगा और तेरा रब तुझे इज़्ज़तों की ज़िंदगी अता फ़रमा देगा।" अल्लाह तआला हमें इज़्ज़तों भरी ज़िंदगी नसीब फ़रमाए।

وآخر دعوانا أن الحمد لله رب العٰلمين

☆☆☆

मेरा कोई नहीं अल्लाह तेरे सिवा

मैं तेरे सामने झुक रहा हूं ख़ुदा
मेरा कोई नहीं अल्लाह तेरे सिवा

मैं गुनहगार हूं मैं सियाकार हूं
मैं ख़ताकार हूं मैं सज़ावार हूं

मेरे सज्दों में तेरी ही हम्द व सना
मेरा कोई नहीं अल्लाह तेरे सिवा

मेरी तौबा है तौबा ऐ मेरे इलाह
मुझ गुनहगार को न देना सज़ा

मेरी आहों को सुन ले ऐ हाजते रवा
मेरा कोई नहीं अल्लाह तेरे सिवा

मुझ पे जब भी मुसीबत बनी है
वह तेरे नाम से ही टली है

मुश्किलें हल करो सब के मुश्किल कुशा
मेरा कोई नहीं अल्लाह तेरे सिवा

मैं तो ग़फ़्फ़ार हूं तूने ख़ुद ही कहा
नहीं कोई नहीं है शहबाज़ का

बख़्शिश दूंगा मैं तुझको यह है वादा तेरा
मेरा कोई नहीं अल्लाह तेरे सिवा

☆☆☆